किरपाल अजायब सन्देश

साधु राम

किरपाल अजायब सन्देश

प्यारयो, सत्संग को समझो,

हर दूजे को अपने से सवाया समझना है।

संत साधु राम जी के सत्संग सन्देश और उपदेशों का संग्रह

सावन सिंह जी महाराज किरपाल सिंह जी महाराज और सतगुरु
अजायब सिंह जी महाराज की पवित्र याद में समर्पित

यह सब मेरे गुरु परम संत सतगुरु अजायब सिंह जी की कृपा है।

गुरु प्यारी साध संगत जी, गुरु-शब्दों को किताब का रूप देने में काफी गलतियां अनजाने में हुई हैं,
इसके वास्ते सतगुरु और साध संगत से माफ़ी मांगते हैं

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि जिस भी तरह से हम दूसरों को देखते हैं, और दूसरों के प्रति महसूस करते हैं, ठीक उसी तरह, वह सर्वशक्तिमान परमात्मा हमें देखता है और हमारे बारे में बिल्कुल वैसे ही महसूस करता है।

दूसरों की तुलना में अपने को कम समझें और दूसरे को हमेशा अपने से बेहतर समझें। जिस तरह पानी निचाई की तरफ बहता है, वैसे ही सतगुरु निमाण वाली जगह पर आता है।

जो सोचते हैं कि वे दूसरों से अच्छे हैं, उन्हें नुकसान उठाना पड़ता है ।

जो अपने को नीवां सोचता है, उसे सुख मिलता है।

जो दूसरों को बेहतर मानता है, वह किसी प्रकार के विवाद और मतभेदों में नहीं पड़ता।

दिल को चोट पहुंचाना एक पाप है - हर किसी से प्यार करना है - प्यार से बेहतर कुछ भी नहीं है।

जो शांत रहता है और विनम्र रहता है, उसे सब कुछ मिल जाता है।

भक्त शांत रहता है।

भक्त कभी भी बहस नहीं करता और ना ही दूसरे की गलती निकालता है।

श्रद्धालु चुप रहकर जीत प्राप्त कर लेते हैं।

जो चुप रहता है, अंत में वही जीत प्राप्त करता है।

एक भक्त के जीवन में भी कई परेशानियां आती हैं, लेकिन उसे अपने मालिक पर पूरा विश्वास होता है।

जो काम उसे करना होता है, वही काम करता है, और दूसरों को जो भी वे चाहते हैं, करने देता है। वह उन्हें कुछ नहीं बताता।

जो चुप रहता है और बहस नहीं करता या दोष नहीं निकालता, हजारों खुशियां उसके खाते में लिखी जाती है।

सबसे पहले हमें शब्द से और अपने गुरु से प्यार करना है।

जब हम सत्संग में आते हैं तो हमें अपने मन की गलतियों का पता चलता है।

किसी भी किताब ने हमें कुछ नहीं देना। जो देना है, वह गुरु ने देना है, देह गुरु ने देना है।

जो कुछ संत-महात्माओं ने अंतर में देखा, वह किताबों में लिख दिया। यह उन्होंने जीवों के फायदे के लिए किया। हमारा फायदा ऐसे है कि जब हम गुरुओं की लेखनियों को पढ़ते हैं, तो हमारे मन में गुरु भक्ति की भावना जागती है। हमारे अंदर भगवान से मिलने की जिज्ञासा पैदा होती है। आत्मा में भी भगवान से मिलने की इच्छा, लगन पैदा होती है। संत किताबें नहीं पढ़ते, वे अंदरूनी किताब पढ़ते हैं। शब्द की किताब पढ़ते हैं, वे यह छह फुट (शरीर) की किताब पढ़ते हैं।

संत अजायब सिंह महाराज जी ने लिखा है, "ऐ पै गईयां होर हिस्साबाँ नूं, पई वेखण रोज़ किताबां नूं"।

अलग-अलग किताब पढ़ कर हम बहस में पड़ जाते हैं। अगर किताब ने ही देना था तो संत महात्माओं के पास जाने की क्या जरूरत थी? हमें ज्ञान घर बैठ कर ही मिल जाना था।

एक बच्चे के पास किताब है तो क्या उसे शिक्षक की जरूरत नहीं? हमें गुरु की सख्त जरूरत है, किताबों में मुक्ति नहीं है।

साधु राम

जनरल इंडेक्स

भाग १

सत्संग

संत साधु राम जी के सत्संग............................. ११

भाग २

क्या हम सत्संगी बन गए हैं?

क्या हम सत्संगी बन गए हैं?................................ १४५

भाग ३

गुरुमुख अपने मन को समझाता है

अनुभाग १ – संतमत.. १८८

अनुभाग २ – विधाता और सृष्टि…………................. २१९

अनुभाग ३ – वक्त का महात्मा - सतगुरु………....... २४८

अनुभाग ४ – सिक्ख और सिक्खी.............................. २७०

अनुभाग ५ – भजन सिमरन अभ्यास...........................३०७

अनुभाग ६ – एक सत्संगी का जीवन…......................३३७

भाग ४

भजन सिमरन

संत साधु राम जी का सन्देश.................................... ३५७

भाग १

सत्संग

“गुरु प्यारी साध संगत जी, जितना सतगुरु अजायब सिंह जी ने बुलाया है, बोल दित्ता है। बोलण विच कोई गलती है, ते संगत कोलों माफी मंगदे हां जी।”

संत साधु राम जी के सत्संग

भाग १ इंडेक्स

परमात्मा कहां रहता है?........ १३
संत इस दुनिया में क्यों आते हैं?........ १९
आत्मा परमात्मा से कैसे मिलती है?........ २३
प्रभु परमात्मा से मिलने में क्या रुकावटें हैं?........ २७
भक्ति........ ३२
परमात्मा किसे मिलता है?........ ३७
सतगुरु, सत्संग और भक्ति........ ४०
सत्संग कौन करता है?........ ४४
एक भगत का दुनियावी व्यवहार........ ४६
संतमत विश्वास पर कायम है........ ५०
सत्संग सुनने के बाद किसी को कैसे जीना चाहिए?........ ५२
सतगुरु कौन सा नाम देते हैं?........ ५६
संत-महात्मा की निशानी और उनके नूरी दर्शन कब होते हैं?........ ६१
कर्म क्या हैं और आत्मा इनके जाल से कैसे मुक्त होती है?........ ६७
आत्मा के सारे पापों को कौन माफ और खत्म करता है?........ ७७
कोई अनंत सुख कैसे पाता है?........ ८०
कर्मकांड और नाम की कमाई क्या है?........ ८५
क्या हमने मन गुरु को दे दिया है?........ ९१
गुरु से अंदर कब मुलाकात होती है?........ ९४
आत्मा भवसागर कैसे पार करती है?........ ९६
हमारी बुरी आदतें कौन बदल सकता है?........ १००
हमारी तृष्णा और आशाएं कैसे खत्म होती हैं?........ १०६
अपनी जिंदगी कैसे सफल बनानी है?........ ११०
प्यार गुरु से कैसे करें?........ ११५
संतमत अपने आप को सुधारने का मत है........ ११९
मन जीते जग जीत........ १२३
सत-संगत और मन का सुधार........ १२९
सतगुरु के सेवक का क्या कर्तव्य है?........ १३२
मन कब काबू में आता है?........ १३८

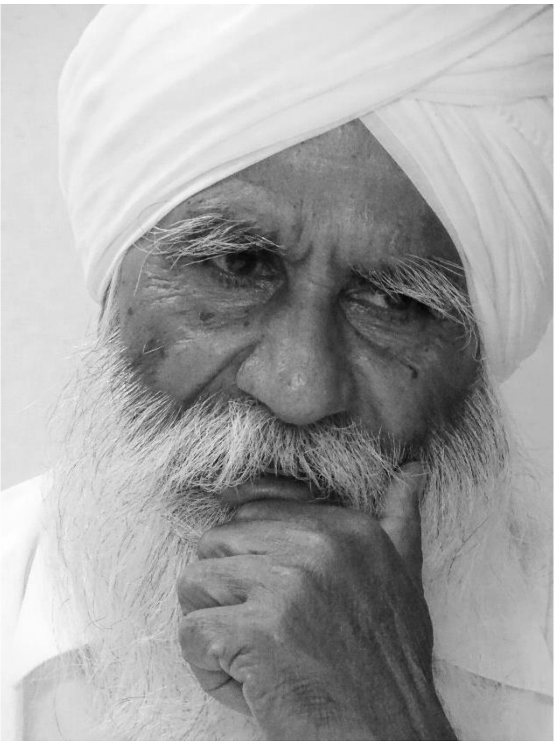

परमात्मा कहाँ रहता है?

परमात्मा हमारे शरीर के अंदर है। हमारा मन बाहरमुखी हो गया है और उस परमात्मा को बाहर ढूंढ रहा है।

सतगुरु अजायब सिंह जी कहते थे कि मैंने बहुत कर्मकाण्ड किए लेकिन बाहर कुछ नहीं मिला। जब महाराज किरपाल के चरणों में गए, तो पता लगा कि पूरे गुरु की जरूरत है।

गुरु के बिना ना तो हम अंदर जा सकते हैं, और ना ही उस धुनबाणी को सुन सकते हैं।

जिसने यह दुनिया बनायी है, इस सृष्टि की रचना की है, उसका ही यह रास्ता बनाया हुआ है।

अगर कोई तीर्थ है तो वह हमारा शरीर है। शरीर के अंदर ही आत्मा और मन की मैल उतरती है।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि जितना हम पढ़ने में वक्त लगाते हैं, अगर उतना ही सिमरन में लगाएं तो मन की सफाई हो जाती है। मन साफ़ हो जाता है।

सुबह तीन बजे अमृत-वेला होता है। उस समय कोई आवाज नहीं होती है। मन और आत्मा बाहर से घूम कर आए होते हैं। अमृत-वेले भजन सिमरन ज्यादा हो जाता है। सुबह तीन बजे उठकर, एक आसन पर बैठ कर, दो-तीन घंटे सिमरन प्यार के साथ करें।

यह मन हठीला है, और हठ करता है। जब यह हठ करता है तो इसे सिमरन में बार-बार बिठाओ। जो अंदर धुन आवाज आ रही है, उसे सुनना है। जब यह मन भजन में बैठ जायेगा, और सिमरन के साथ जुड़ जायेगा, तो वह शब्द धुन इसे सुनाई देने लग जायेगी। अब हम बाहर देख रहे हैं। जब आंखें बंद कर मन का ख्याल अंदर जाता है, तो जैसा हम बाहर देख रहे हैं, वैसा ही अंदर देखने लग जाते हैं।

महाराज जी कहते हैं, "आया बन्दे तरण दा वेला, लगयां ऐ तू करण कवेला, दिन राती करके बंदगी नूं, दुनिया दे बंधन तोड़ दयो"।

आत्मा मन के काबू आयी हुई है और मन इन्द्रियों के काबू आया हुआ है। इन्द्रियां भोगों के रस में मिली हुई हैं। यह सारा उलटा हो गया है। मन ने आत्मा का कहना मानना था, और इन्द्रियों ने मन का कहना मानना था। हमारा हृदय उलटा हो गया है।

पल्टू साहब कहते हैं कि हृदय में जोत जग रही है, और बिना बत्ती और तेल से जल रही है। हमारे जन्म से लेकर हमारी मृत्यु तक यह जोत अंदर जलती रहती है।

अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं कि तू वक्त को क्यों बर्बाद कर रहा है, यह चार दिन की जिंदगी मिली है। दुनिया के बंधन तू सिमरन करके तोड़ ले।

बाहर स्थूल माया है, और अंदर सूक्ष्म माया है। हठ-कर्म के साथ हम शरीर को तो रोक लेंगे, पर मन अंदर कल्पना करता जा रहा है। जब तक गुरु नहीं मिलता, नाम नहीं मिलता, और सत्संग नहीं मिलता है, तब तक हमारे मन के बंधन ढीले नहीं होते हैं।

मन ने बड़े, बड़े ऋषि-मुनियों की मिट्टी-पलीत कर दी। अगर उन्हें पूरा गुरु मिल जाता तो सोने पर सुहागा था, लेकिन उनको कोई गुरु पीर नहीं मिला।

गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैं, "छोड़ अन्न करे पाखण्ड, ना ओह सुहागन ना ओह रंड"। अन्न-पानी शरीर की खुराक है, यह तो इसे देना ही पड़ेगा। बियाबान में चले गए, शरीर को हड्डी की तरह सुखा लिया, पर ऐसे परमात्मा नहीं मिलता।

गुरबाणी का फरमान है, "अपने सेवक की आपे राखै, आपे नाम जपावै। जह, जह काज किरत सेवक की, तहां तहां उठ धावै"।

सतगुरु संगत बनाता है। संगत सतगुरु नहीं बनाती है। नाम अपने आप ही अपनी आत्माओं को इकट्ठा कर लेता है, या उन्हें अपने पास बुला लेता है, या फिर उनके पास चला जाता है। अपने आप ही वह नाम जपवाता है। आप ही कहता है कि तेरा लंगर भरपूर रहे।

सब कुछ परमात्मा के हाथ में है, उसके हुक्म में है।

हमारे मन को हौमें रोग चिपका हुआ है। नाम की कमाई के बिना हौमें रोग, जो मन का रोग है, नहीं उतरता है। बाहरी तौर पर अगर हम बीमार हो जाएं तो डॉक्टर के पास जाना पड़ता है। अब डॉक्टर की दी दवाई हम समय-समय पर लेते रहेंगे तो तंदरूस्त हो जायेंगे। डॉक्टर हमें परहेज बताता है, और कहता है कि अगर मीठा या खट्टा खाओगे तो मर जाओगे।

जहां काम है वहां नाम प्रगट नहीं होता है। काम और नाम की दुश्मनी है। क्रोध के साथ ख्याल एकाग्र नहीं होता है। क्रोध के साथ मन का ख्याल फैल जाता है।

अगर हम रूहानी मंडल के डाक्टर से दवाई लाते हैं, नाम लेकर आते हैं, और समय-समय पर अगर हम नाम जपेंगे, तो हमारी बीमारी दूर हो जाएगी। मगर हम नाम दवाई लाकर आले में रख देते हैं, और लेते नहीं हैं। नाम समय पर जपें तो मन साफ़ हो जायेगा।

महाराज जी भी कहते हैं, "नाम गुरु दा हर दम रट्ट लै"।

गुरु अर्जुन देव जी महाराज कहते हैं कि अगर हम गुरु को एक पल के लिए भूल जाते हैं, तो पचास बरस जितना विछोड़ा हो जाता है। गुरु से हम दूर चले जाते हैं।

महाराज जी भी कहते हैं, "सिमरन बाजों बन्दे तैनूं, भैड़ियां जूनां विच जाणा पवे, मन भौंदा नहीं खाणा मिलदा, गंद फूस नूं खाणा पवे"।

ऐसा ना हो की पशु पक्षी बन जाएं, फिर कौन पानी पिलायेगा, खाना खिलायेगा? जो समझ मानस जामें में आ सकती है, वह कैसे आएगी?

पशु-पक्षी को कोई खाना खिलाये तो खिलाये नहीं खिलाये तो ना ही खिलाये, कोई पानी पिलाये तो पिलाये नहीं पिलाये तो ना पिलाये। जीव भोग-जूनी में चला जाता है और फिर भोगता ही है।

महाराज जी कहते हैं कि जो अंदर ताला लगा हुआ है, उसकी चाबी नाम है। अंदर जो वज्र किवाड़ लगा हुआ है वह उसकी दया मेहर से ही खुलता है।

सच्चे गुरु के बिना पता ही नहीं है कि वह दरवाजा है कहाँ? यह शब्द-रुपी गुरु को ही पता है कि यह ताला कैसे खोलना है।

सेवक को जब नाम मिल जाता है तो फिर वह दिन-रात अभ्यास करता है। यह उस सतगुरु को पता है कि उसने कितना अभ्यास करवाना है। सेवक मन-मत त्याग कर गुरुमत पर आ जाता है। सतगुरु हम तेरे बन गए हैं। यह आत्मा तेरी है। "चंगे हैं या माड़े हैं, तूं आपे ही समझा लै"।

गुरु की शरण में जब सेवक आ जाता है फिर सब कुछ गुरु के हाथ में होता है, और गुरु को फिक्र होता है।

हम अपने आप नाम भी नहीं जप सकते हैं। अपने आप हम जी भी नहीं सकते हैं। अगर अपने आप जी सकते होते तो मरने की क्या जरूरत है? ना ही हम अपने आप मर सकते हैं।

अगर हम पारिवारिक हैं तो हम सब का एक साथ दाना-पानी होता है। जब तक हमारा दाना-पानी इकट्ठा है, उतने तक ही हम एक साथ इकट्ठे रह सकते हैं। दाना-पानी खत्म हो जाता है तो हम अपने-अपने राह चले जाते हैं।

हमारा मन दूसरे का काम होता देख कर परेशान हो जाता है कि यह ठीक नहीं कर रहा है। कबीर साहब ने कहा है कि तू अपनी गठरी संभाल, दूसरों की ना फोल।

जब जीव सत्संगी बन जाता है तो किसी की निंदा-चुगली नहीं करता है। कबीर साहब ने कहा है कि अगर निंदा करनी है तो अपने मन की कर, अगर बड़ाई करनी है तो सतगुरु की करो।

महाराज जी भी कहते हैं, "दर्श पिया किरपाल दा पा लै"।

वैसे जब हम कोई भी सेवा करते हैं, जैसे सफाई की है या लंगर की है, यह सब शब्द-गुरु की सेवा है। इस सेवा से तन और मन दोनों साफ़ हो जाते हैं, अच्छे हो जाते हैं। **लेकिन जो उत्तम सेवा है, वह नाम शब्द की सेवा है**। यह तो उस सतगुरु की मौज है कि उसने हमसे कौन सी सेवा लेनी है।

महाराज जी कहते थे कि हठ-कर्म के साथ मन शांत नहीं होता है। ऋषि मुनियों ने बड़े हठ-कर्म किये हैं, लेकिन मन ने उन सब को मिट्टी में गिरा दिया।

जिस तरह अग्नि के ऊपर राख आ जाती है तो कहते हैं कि आग बुझ गयी है, मगर वास्तव में वह बुझती नहीं है। जब हवा चलती है तो वह अग्नि फिर से सुलग जाती है।

काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार, यह पांच अग्नियां ही हैं, जो हमारे अंदर हैं। चाहे अग्नि का भवसागर है या पानी का, यह दोनों ही गुरु के बिना पार करने मुश्किल हैं।

गुरबाणी का फरमान है, "पूरे गुरु का सुन उपदेश, पारब्रह्म निकट कर देख"।

गुरु हमारे शरीर के अंदर ही सतगुरु का घर दिखा देता है। हमें कहीं बाहर नहीं जाना पड़ता है।

कबीर साहब ने कहा है, "हींग लगे ना फटकड़ी"। हमें कोई खर्चा भी नहीं करना पड़ता उस परमात्मा को मिलने के लिए।

गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैं कि हम गृहस्थ हैं। "हसंदयां, खिलेंदयां, खवंदयां बीचे होवे मुक्त"।

"गुरुमुख मन समझाई।"

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि अपनी-अपनी जात में रहो, अपनी-अपनी बोली बोलो, अपना-अपना पहनावा पहनो, अपने-अपने धर्म में रहो। लेकिन जो संत सतगुरु तुम्हें युक्ति बताते हैं, वह करो।

हमें नाम मिल गया है, हम सत्संगी बन गए हैं।

हम गृहस्थी हैं, हम किसी का दिल ना दुखाएं। **दूसरों को अपने से सवाया समझना है। फीका नहीं बोलना**। द्वैत भावना नहीं रखनी। मन को नम्र बनाना है। पानी निवाण की तरफ चला जाता है।

कबीर साहब ने भी कहा है कि तराजू के दो पलड़े होते हैं, लेकिन जो पलड़ा झुक जाता है, वह वजनदार हो जाता है। जहां काम है वहां क्रोध है, जहां दया है वहां धर्म है। जहां माफ़ी है वहां परमात्मा आप है।

हमें माफ़ी देनी चाहिए और माफ़ी मांगनी भी चाहिए, ताकि परमात्मा हमें माफ कर दे। माफ़ी मांगनी भी है, और देनी भी है, ताकि हमारा प्यार बना रहे।

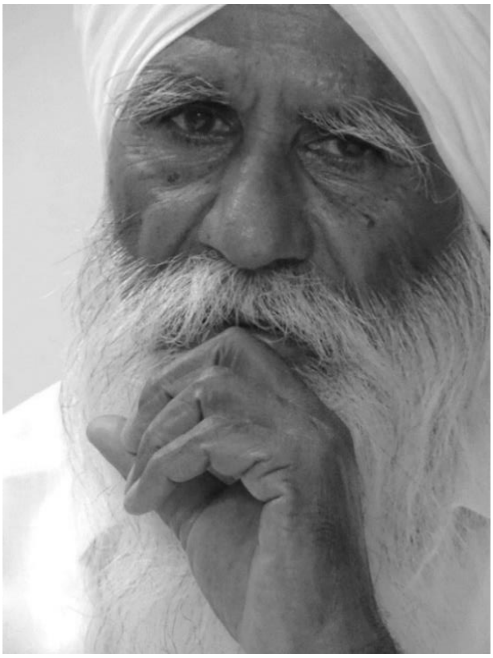

संत इस दुनिया में क्यों आते हैं?

प्यारयो, हम काल के देश में बैठे हैं। जिसने हमें नरक में से निकाल कर सचखंड ले जाना है, जो हमारे लिए आया है और दुःख सहन करता है, उसका नाम जप कर ही हम इस भवसागर से पार हो सकते हैं।

गुरु ने सेवक की जिम्मेवारी ली है कि मैं इसे सचखंड पहुंचा दूंगा। सेवक की भी जिम्मेवारी बनती है कि मैं गुरु का कहना मानूँ।

महाराज जी एक बार विदेश गए और बीमार हो गए। हम जब भी गुरु से मिलते हैं तो अपने दुखों की गठरी गुरु के आगे रख देते हैं। महाराज जी से पूछा गया कि सेवा ठीक नहीं हुई या रहने के लिए मकान ठीक नहीं है। महाराज जी ने कहा कि जो देह गुरु है वह पाप लेता है। जितने भी प्रेमी मिलने के लिए आते हैं, वे अपने पापों का बोझ मेरे ऊपर डाल देते हैं, तो कुछ पाप नाम पर ढल जाते हैं और कुछ शरीर पर लेने पड़ते हैं, जिससे बीमारी आ जाती है।

संतों की शिक्षा और संतमत में नाम की कमायी कैसे करनी है?

"सतगुरु दा सिमरन करिए, सिर उत्ते मौत खड़ी सजना।"

महाराज जी कहते हैं कि प्यारयो, अगर सबसे ऊँचे भाग हैं तो हमें गुरु मिलता है।

माया की मीठी नींद में मन सो रहा है। अगर यह जागेगा तो नाम शब्द की कमाई से ही जागेगा।

जब हम चौकड़ी मार कर बैठते हैं और गुरु का ध्यान लगाते हैं। अगर हम दो-चार-छः घंटे भी सिमरन करें, तो उसमें हमारी काफी मदद हो जाएगी। कुछ हम बैठना सीखें।

भजन करना सूरमे का काम है, कायर का नहीं है। प्रेमी मैदाने-जंग में निकलता है भजन करने के वास्ते, लेकिन गिर जाता है।

अजायब सिंह महाराज कहते थे कि प्यारयो, भजन करना है। हार जाना इतना बुरा नहीं है जितना हार मान लेनी है। मन के साथ संघर्ष करना है। मन से हार नहीं मान लेनी है। मन के साथ मुकाबले करना है, कभी ना कभी तो गुरु देखेगा और हम जीत प्राप्त कर लेंगे।

महाराज जी भी कहते हैं कि आत्मा एक चेतन शक्ति है। इसका मुकाबला कोई नहीं कर सकता है। हम ही हैं जो हार मान लेते हैं। यह परमात्मा का खेल है। यह उसकी मौज है।

कबीर साहब कहते हैं कि उस मालिक के हुक्म के बिना पत्ता तक नहीं हिल सकता है।

महाराज जी भी कहते हैं कि प्यारयो, जिसने सच्चे मन से भजन सिमरन किया है, गुरु को याद किया है, उसका काम बन जाता है।

माता का बच्चा जब छोटा होता है तब माता का दूध पी कर ही बड़ा होता है। माता के दूध की कोई और चीज बराबरी नहीं कर सकती है।

गुरु नाम देता है। अमृत रस जो ऊपर से बरस रहा है, वह अपने सेवक को गुरु पिलाना चाहता है। सेवक के लिए नाम ही अमृत है। जिसको जप के वह मर जाने के बाद सर्जीवित हो जाता है, और मुक्ति हासिल कर लेता है।

महाराज जी भी कहते हैं, "पाप शाप त्रय ताप मिटाए, गुरु का पावन नाम"। यह तीनों बीमारियां भजन करने से खत्म हो जाती हैं।

"नाम कट दिंदा सारियां बीमारियां।

प्यारयो, बाहरी तौर पर हम देखते हैं कि जब डाक्टर कोई दवाई देता है तो परहेज भी बताता है, कि मीठा नहीं खाना, खट्टा नहीं खाना है। हम जब परहेज रखते हुए समय पर दवाई लेते हैं तो तंदुरुस्त हो जाते हैं।

संत, महात्मा, मालिक के प्यारे नाम दवाई देते हैं और जिम्मेवारी भी लेते हैं। प्यारयो, आप नाम जपो, परमात्मा जिम्मेवार है।

नाम दवाई जो संत देते हैं, उसे हम आले में लाकर रख देते हैं और फिर कहते हैं कि टांग में दर्द है, बांह में दर्द है, घुटने दर्द कर रहे हैं। मन हमारा बहाने करता है, और नाम नहीं जपता है।

महाराज जी अपने सत्संग में कहते थे कि टीवी या फिल्म हम देखते हैं तो हमने क्या कभी कहा है कि मेरा कुछ दर्द कर रहा है?

प्यारयो, हम दुनिया का कोई भी कारोबार करते हैं, उस समय मन ने कभी नहीं कहा कि यह नहीं होता है।

मन को प्यार के साथ समझाओ और सीधे रास्ते पर इसे चलाओ।

अजायब सिंह महाराज जी भी एक भजन में कहते हैं, "अड़ी छड अड़या, रस्ते लग अड़या, किते मिल जाए दंड करारा ना, बिना बंदगी कोई चारा ना"।

महाराज जी भी कहते हैं कि जब हमें गुरु मिल गया, नाम मिल गया, सत्संग मिल गया है, फिर हमें "गुरु गुरु" बोलना है।

अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि अगर दया लेनी है तो "गुरु, गुरु" कहना ही पड़ेगा।

प्यारयो, दुनिया के काम के लिए, पैसा कमाने के लिए, रोजी-रोटी कमाने के लिए हम घर बार छोड़ देते हैं। विदेश भी जाना पड़े तो हम जाते हैं।

हमारे शरीर में मन भी रह रहा है, आत्मा भी रह रही है, और परमात्मा भी रह रहा है। जिससे हम नाम लेंगे, वह हमारी इमदाद करेगा।

प्यारयो, दूसरे से काम लेने के लिए हमें अपना मन तो नरम करना ही पड़ेगा।

गुरबाणी में आता है, "निंव के चल और मीठा बोल"।

प्यारयो, अजायब महाराज जी भी कहते हैं, "गुरु, गुरु, गुरु, गुरु, गुरु बोल प्रेम से गुरु गुरु"।

प्यारयो, जिसने हमारी जिम्मेवारी ली है, उसे हम याद करें।

वह कौन था? वह सतगुरु अजायब था। वह कुल मालिक, करण-कारण प्रभु था।

"आई है इक जोत निराली, आपे तारे ते आपे तारण वाली।"

"नाम जपा सुख पाया, जिसने नाम जपा।

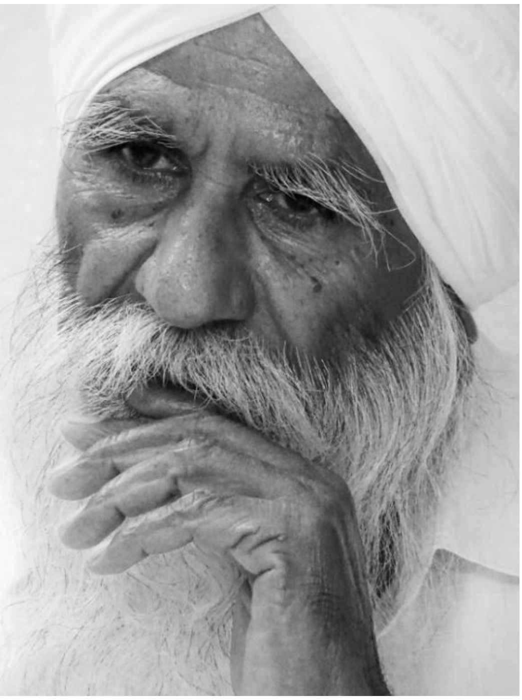

आत्मा परमात्मा से कैसे मिलती है?

सतगुरु अजायब सिंह जी महाराज कहते हैं, "जप नाम गुरु दा ओए, मिलया मानस जनम अमोला, जे मिलना मालिक नूं, कोई लब्ब लै गुरु विचोला।"

वह परमात्मा हमारे घट में बैठा हुआ है।

जो नाम की दात है, वह गुरु ही हमें देता है।

सतगुरु अजायब सिंह जी महाराज कहते थे, कि सत्संग वहां है, जहां सिर्फ वह परमात्मा है। वहां पर ना किसी की निंदा है, ना ही किसी की चुगली है।

गुरु नानक देव जी कहते हैं, "सत्संग ओत्थे जाणिए, जित्थे एको नाम विखाणिये।"

नाम की महिमा है, सत्संग की महिमा है, और गुरु की महिमा है।

सत्संग आत्मा का परमात्मा से मिलना है।

"गुरु विचोला बण करदा मिलाप है, घट घट विच बैठा आप भगवान है।"

यह सतगुरु अजायब का दरबार है।

वह अपनी आत्माओं को पास और दूर से इकट्ठा करके नाम जपवाता है।

अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि पहले गुरु नाम देता है, फिर भगत के अंदर बैठ जाता है और उसकी बैटरी की चार्जिंग होती रहती है। महाराज जी कहते थे कि यह शरीर उस मालिक का मंदिर है। जब हम प्रेम-प्यार से सिमरन करते हैं, तो फिर हम अंदर हो रही धुन बाणी को सुनते हैं। उस आवाज को पकड़ कर हम ऊपर आ जायेंगे, जहां नूरी प्रकाश हो रहा है। गुरु शब्द रूप होता है।

हमने उस धुन आवाज को सुनना है, जिससे हमारी जिन्दे जी मुक्ति है।

इस धुन को हम तब सुन सकते हैं जब हम बाहरमुखी मन के ख्याल को बाहर से हटा कर शब्द के साथ जोड़ लेते हैं। अगर मन थिर है, तो फिर ही तन थिर होता है।

जब हम सिमरन करें, उस समय ना जीभ हिले, ना आंखें हिलें, और ना शरीर का कोई भी भाग हिले, तब यह मन सिमरन में जुड़ेगा। तभी उस परमात्मा के हम दर्शन कर सकते हैं।

कबीर साहब कहते हैं, "सिमरन से सुख होत है, सिमरन से दुःख जाए, सिमरन माहिं साईं समाये"।

क्रोध की आग सब के अंदर होती है, लेकिन जो शांति, माफ़ी, दया, और धर्म हैं, ये किसी-किसी के अंदर हैं।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी भी कहते थे कि प्यारया, जग को छोड़ना पड़ेगा। गुरु से इतना प्यार होना चाहिए कि हम सोते हुए, प्यार के साथ सिमरन करें तो जो सपना आए वह गुरु का ही आए।

कबीर साहब कहते हैं कि हमारा सिमरन कैसा होना चाहिए? जैसे पनिहारी अपने सिर पर पानी का घड़ा उठाये खुले हाथ चलती है, और बातें भी करती है, मगर उनका ध्यान घड़े में रहता है।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि प्यारयो, सिमरन हमारा हर समय होना चाहिए, चाहे हम बैठे हैं, चाहे बात कर रहे हैं, चाहे कोई कारोबार कर रहे हैं, या व्यापार कर रहे हैं। चाहे खेती करते हैं, लेकिन हमारा ध्यान सिमरन की तरफ हो, और हमारा सिमरन चलते रहना चाहिए।

कबीर साहब कहते हैं कि सिमरन ऐसा होना चाहिए, जैसे एक गरीब मिले हुए पैसे को पल-पल देखता है। सिमरन ऐसा होना चाहिये, जैसे एक गाय अपने बछड़े का ख्याल करती है। जब भी गाय चरने के लिए बाहर जाती है, उसका ध्यान अपने बछड़े में ही रहता है। हमारा सिमरन भी ऐसा ही होना चाहिए।

सतगुरु अजायब सिंह जी कहते हैं, "क्यों भूलया दाते नूं, जिसने बक्श्या मानस जामा"।

जब बच्चा मां के पेट में होता है तो वह मालिक के साथ जुड़ा होता है। उस परमात्मा से वायदा करके आता है कि मैं तुम्हें हमेशा याद करूंगा, सिमरन करूंगा। जन्म लेते ही वह उस दाते को भूल जाता है। फिर इसका प्यार माता, पिता, भाई, और बहन के साथ हो जाता है।

जब इसका प्यार बाहरी माया में होता जाता है, तो सतगुरु अजायब सिंह जी भी कहते हैं - "माया नागनी बड़ी भयानक, जाए अपने खाये, डाडा जाल बिछाया इसने, कोई विरला गुरमुख बच के जाये"।

तो इस माया के, मन-माया के देश में से निकालने के लिए गुरु है, नाम है। भवसागर को पार करवाने के लिए नाम जहाज है।

अगर सिमरन के साथ प्यार है, नाम के साथ प्यार है, तो हमारी जिंदगी बेहतर और अच्छी बन गयी है।

महाराज जी भी कहते हैं कि प्यारयो, इस दुनिया की धन और दोलतें ना तो किसी के साथ गयी हैं और ना ही जा सकती हैं।

अपने बड़े बडेरे इस दुनिया से चले गए, लेकिन दौलत यहीं रह गयी। दौलत किसी के साथ गयी नहीं है, अगर यह जाती तो इसे कोई भी यहां नहीं छोड़ता। प्यारयो, यह शरीर

भी पचास-सौ साल किराए का मकान है। यह भी यहीं छोड़ जाना है, साथ इसने भी नहीं जाना। यह या तो अग्नि के स्पुर्त हो जाना है, या जमीन में दबा दिया जाना है, जहां इसमें कीड़े पड़ जाने हैं।

हर एक महात्मा ने सिमरन पर जोर दिया है। प्यारयो, सिमरन करो जिंदगी सफल हो जाएगी।

सभी संत महात्माओं ने सुबह के तीन बजे को अमृत-वेला कहा है।

गुरबाणी में आता है, "सतगुरु का जो सिख अखावे, भलके उठ हरी नाम ध्यावे, उद्द्म करे भल्के परभाती, इशनान करे अमृतसर नहावे"।

"जप नाम गुरु दा ओए, मिलया मानस जनम अमोला, जे मिलना मालिक नूं, कोई लब्ब लै गुरु विचोला।"

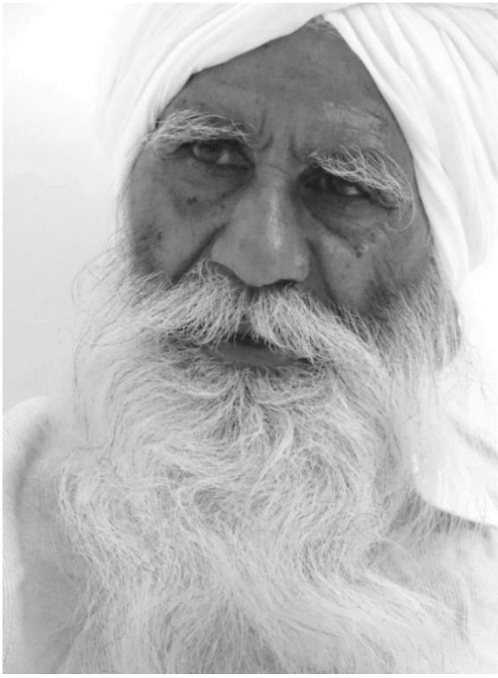

प्रभु परमात्मा से मिलने में क्या रुकावटें हैं?

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "चोरां तेरा घर लुटया, तैनू सुतयां जाग ना आई"। शब्द नाम की कमाई के बिना ये पांच डाकू लूट लेते हैं।

हम दुनियादार जीव हैं। जो कर्मकांड हम करते हैं, उसमें जप, तप, तीर्थयात्रा सभी आ जाते हैं। जीव चाहे धरती और आसमान एक कर दे, लेकिन सतगुरु अगर दया ना करे तो वह परमात्मा नहीं मिलता है। जब हमारी सोती हुई किस्मत जागती है तभी वह मिलता है।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि एक इंसान, इंसान नहीं बनता और दूसरा भगवान बन जाता है।

माया और विषयों का जाल मन पर ज्यादा चढ़ा है, जिसके प्रभाव में आकर जीव कर्मकांड ज्यादा करता है।

गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैं, "धन-धन सतगुरु मेरा, जेहड़ा विछड़यां नूं मेलदा"।

हम जीवों ने कई कर्म और पाप किये होते हैं। पहले भी पाप किए हैं, अभी भी पाप कर रहे हैं। पापों को उतारने के लिए शब्द-नाम की कमाई करनी पड़ेगी। सुरत-शब्द का अभ्यास करना पड़ेगा।

गुरु के बिना नाम नहीं मिलता और नाम के बिना मुक्ति नहीं है।

कबीर साहब ने कहा है, "पांच विषयों में लटपट रहता सदा मतंगे चूर, इनको सुख सपने में भी नाहीं, रहें मालिक से दूर"।

बेशक कोई भी धर्म पुस्तक हम पढ़ रहे हैं। लेकिन किताब ने बोलना नहीं है।

गुरु ने एक बार गलती की माफी दे देनी है। दूसरी बार करने पर कहना है कि बेटा यह मंदे पाप ना कर।

हम किताब पढ़ी जा रहे हैं, किताबें पढ़ कर हमें अहंकार हो जाता है कि मैंने इतने ग्रन्थ पढ़ लिए हैं, या मैंने इतनी पोथियां पढ़ ली हैं।

गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैं, "पढ़हि जेते बरस-बरस, पढ़हि जेते मास, पढ़िए जेती आरजा, पढ़हि जेते सास, नानक लेखै इक गल, होरु हौमे झखणा झाख"। चाहे हम चार युग पढ़ लें, सांस, सांस पढ़ लें, सारी उम्र पढ़ते रहें, लेकिन पढ़ने से हमारा जो मसला है वह हल नहीं होना है।

बुल्लेशाह सवाल करते हैं कि रब्ब कैसे मिलता है? जवाब में कहते हैं, जिसकी नीयत साफ़ है, रब्ब उसको मिलता है। उनको मिलता है जिनका मन साफ़ है। मन साफ़ सिमरन के साथ होता है। मन को साफ़ करने के लिए सिमरन है, नाम है, और शब्द है।

नाम में यह ताकत है कि सारे पाप खत्म कर सकता है। सारी दुनिया की रचना करने वाला नाम ही है।

करनी और कथनी में फर्क होता है। करनी शब्द नाम की कमाई है और कथनी वह है जो किताबों से पढ़ कर बनाई हुई है।

महाराज जी कहते हैं, "ऐ पै गईयां होर हिस्साबाँ नूं, पई वेखण रोज़ किताबां नूं"। हम कहते हैं की इस किताब में यह लिखा हुआ है, उस किताब में ऐसा लिखा हुआ है, किसी और में वैसा लिखा है, इससे हमारा मन भ्रम में पड़ जाता है।

मन किसी पर भी सवार ना हो। मन जिस पर भी सवार होता है, उसकी मिट्टी पलीत कर देता है।

संतों को मन की कमजोरी का पता होता है। इसलिए हम शब्द-नाम के साथ जुड़ें। हम डिसिप्लिन के साथ मन को घेर कर लाते तो हैं, पर यह फिर निकल जाता है।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि सबसे पहले अपने मन को इसके घर पहुंचाओ।

मन ब्रह्म की अंश है। इसको जब अमृत-रस मिल जाता है, फिर यह नीचे नहीं आता है। यह विषय, वासना छोड़ देगा। नीचे के इंद्री-स्थान को छोड़ देगा। इसलिए मन को पहले इसके घर पहुंचाओ।

संत महात्मा का इतिहास अगर हम पढ़ें तो पता चलता है कि उन्होंने कितना कठिन अभ्यास किया। महाराज सावन सिंह जी ने अंधेर कोठरी में सारी-सारी रात अभ्यास किया और सुखी रोटी खाई। किरपाल सिंह महाराज जी ने रावी के ठंडे पानी में अभ्यास किया।

अजायब सिंह महाराज जी ने कुछ दिन पानी पर रहकर अभ्यास किया उसके बाद दाल फुलका खाया। बहुत सख्त अभ्यास उन्होंने किया।

मन बातों से अपने घर नहीं पहुँचता है। "मन मारना पवे, सिर वारना पवे, तां पहुंचे सतगुरु कोल वे, बाहर ना भुलके टोल वे।"

मैंने भी अपने सतगुरु की दया से सिर्फ पानी के साथ रोटी खाई, और यह मैंने पंद्रह साल किया। उसके बाद मैंने दाल-फुलका खाया।

अजायब सिंह महाराज भी कहते थे कि जब तक मन भजन नहीं करता इसको कुछ खाने को नहीं दो। मन से पहले भजन करवाओ।

कबीर साहब ने कहा है, "सुरत सिमृत वेद की रीति, सत्संग करो जरूर, जन्म जन्म के पाप कटेंगे, हो जायेंगे माफ़ कसूर"।

गुरु नानक ने कहा है, "सत्संग ओत्थे जाणिये, जित्थे एको नाम विखाणिये"।

वह कुल मालिक सत्य है और उसकी सत्संग होती है। यह नहीं की गपशप मार कर आ गए और सत्संग हो गयी। सत्संग सतगुरु की है।

संगत सतगुरु नहीं बनाती, बल्कि सतगुरु संगत बनाता है। परमात्मा की बनायी हुई सत्संग होती है।

"सतगुरु आ जावीं, सानूं प्यार सिखा जावीं।" भगत तो प्यार सिखाते हैं। प्यार ही परमात्मा है। "जिन प्रेम कियो, तिन ही प्रभ पायो।"

गुरबाणी में आता है, "पांच धुन तै बाजे, बाजे शब्द निशान"।

नाम डोरी है और इस डोरी के अंदर प्रकाश है, और प्रकाश में आवाज है। उस आवाज को पकड़ कर हमने ऊपर जाना है। रात अँधेरी हो, लेकिन अगर हाथ में टोर्च है तो हम रास्ता तय कर सकते हैं।

"गुरमुख मन समझाई।" वह शब्द से अपने मन को समझाता है।

साधु मन को साध कर बनता है। हमारा मन और आत्मा दोनों ही बाहर हैं। सारे शरीर में से आत्मा को निकाल कर एकाग्र करना है, और ऊपर चले जाना है। आत्मा नों द्वारों में से निकल कर दसवें में पहुंच जाती है। आत्मा ही परमात्मा का अनुभव कर सकती है। जितनी देर तक आत्मा शरीर से नहीं निकलती है, तब तक हमें अनुभव नहीं हो सकता है।

जब हम भजन पर बैठे बार-बार हिलते हैं, तो मन ऊपर नहीं जाता है। हम एक आसन पर बैठ कर सिमरन करें। यह दर्द मन के होता है। अगर दर्द हो रहा है तो इसे होने दें।

मन ने पाप किये हुए हैं, बाद में यह पाप नहीं करेगा। यह दर्द बार-बार नहीं होना है। एक बार जब मन अपने घर पहुँच गया तो फिर यह दर्द खत्म हो जाएगा। हम जब सिमरन पर बैठते हैं, तभी यह दर्द होता है। सिमरन छोड़ देते हैं, तो दर्द नहीं होता है।

जिस तरह झाड़ी पर कोई कपड़ा जब सुखाते हैं और अगर उसे धीरे, धीरे उठाते हैं तो बिना किसी नुकसान के उठा लेते हैं। अगर एकदम उठाते हैं तो कपड़ा फट सकता है।

कबीर साहब ने कहा है, "सहज पाके तो मीठा होवे"।

अगर हम प्रतिदिन का एक मिनट सिमरन का बढ़ाएं तो एक महीने का आधा-घंटा बन जाता है। हमें नाम मिले काफी समय हो गया है। एक दिन में एक मिनट काफी छोटा होता है। मन को समझाएं कि प्रतिदिन एक-एक मिनट सिमरन का बढ़ाना है। इस तरह साल का काफी बन जाता है। नाम-धन को जोड़ें, क्योंकि भूखा क्या खायेगा।

आज से ही भजन सिमरन करना और बढ़ाना शुरू कर दें। अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि एक घंटा तो शुरू का होता है, फिर हम इसे बढ़ाना शुरू करें। मन अड़ियल है। अड़ी कर लेता है। कभी ठीक से भजन सिमरन में बैठ जाता है और कभी अड़ी कर लेता है तो बैठता ही नहीं है। "गुरुमुख मन समझाई।" हे मन, इतना समय तो भजन में लगाना ही है। चाहे तू चीख या चिल्ला। चाहे दुखी रह या सुखी रह, मगर इतना समय तो भजन में लगाना ही पड़ेगा। अगर प्यार के साथ हम इसे सिमरन में बिठायें तो यह जरूर बैठ जायेगा।

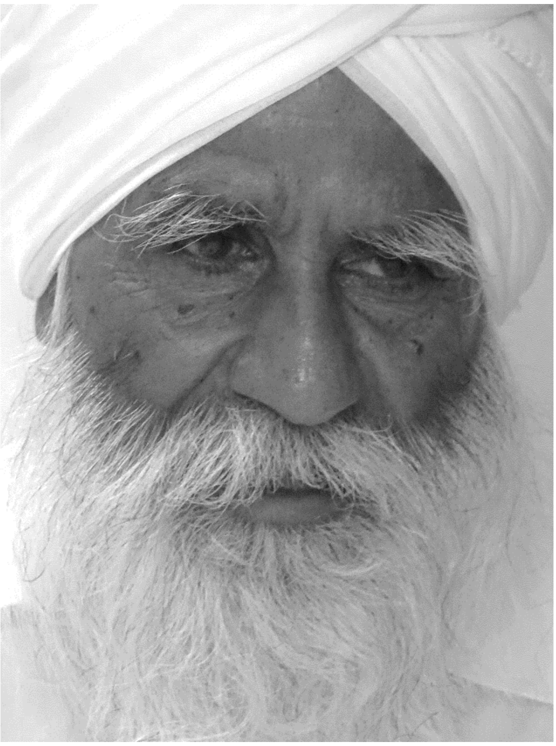

भक्ति

कबीर साहब कहते हैं, "भक्तिदान मुझे दीजे, करूँ संत की सेव, सर्व सुखां का सुख नाम है, मुझ पे कृपा कीजे"।

बाहरी कर्मकांड, तीर्थयात्रा, और दान-पुण्य उस परमात्मा को पाने में हमारी मदद नहीं कर सकते हैं।

जब वह परमात्मा किसी पर दया करता है तो उसे भक्ति का दान देता है।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, "जगत भाव भय लज्जा छोड़ो, सुन प्यारे तू कर भक्ति ।

जाति बरन भय लज्जा त्यागो, सुन प्यारे तू कर भक्ति।

शत्रु मित्र डर दूर हटाओ, सुन प्यारे तू कर भक्ति।

माता पिता डर छोड़ गंवाओ, सुन प्यारे तू कर भक्ति।

जोरू लड़के मत डर इनसे, सुन प्यारे तू कर भक्ति।

भाई भतीजों का डर मत कर, सुन प्यारे तू कर भक्ति।

सास ससुर डर मन से छोड़ो, सुन प्यारे तू कर भक्ति।

बहु जमाई इन का डर तज, सुन प्यारे तू कर भक्ति।

यार आशाना सब डर छोड़ो, सुन प्यारे तू कर भक्ति।

नातेदार कुटुम्बी जितने, इनका डर तज कर भक्ति।

भक्ति अंग में जब तू बरते, छोड़ झिझक इन कर भक्ति।

जो मुर्ख हैं मर्म न जाने, इनका डर क्या कर भक्ति।

इनका डर कुछ मत कर मन में, सुन प्यारे तू कर भक्ति।

भेष भेष को देख लजावे, सो भी कच्चा कर भक्ति।

जब लग सब से निडर न होवे, तब लग कच्चा कर भक्ति।

जिल्लत इज्जत जो कुछ होवे, मौज विचारो कर भक्ति।

गुरु का बल ह्रदय धार अपने, सुन प्यारे तू कर भक्ति।

यह बिगाड़ कुछ करें ना तेरा, क्यों झिझके तू कर भक्ति।

बिना मौज गुरु कुछ नहीं होता, सुन प्यारे तू कर भक्ति।

तू कच्चा यह करे कचाई, और कहूँ क्या कर भक्ति।

करते करते पक्का होगा, और उपाव न कर भक्ति।

कच्ची से पक्की होय इक दिन, छोड़ कपट कर भक्ति।

कपट भक्ति कुछ काम न आवे, सच्ची कच्ची कर भक्ति।

राधास्वामी कहत सुनाई, जैसी बने तैसी कर भक्ति"।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, परिवार के सदस्य हमें भक्ति नहीं करने देते, वे कहते हैं कि अभी छोटी उमर है, मस्ती करो, भक्ति की अभी क्या जरूरत है, दुनिया का आनंद लो।

सतगुरु अजायब सिंह जी के भाई ने डाक्टर से उनका इलाज कराने की बात की तो महाराज जी ने कहा कि नहीं, मैं ठीक हूं।

सभी भक्तों के साथ ऐसा होता है। परमात्मा और गुरु की कृपा से ही वह भक्ति कर सकते हैं। परमात्मा अपनी दया से यह काम किसी से भी करवा सकता है।

वह बेपरवाह है। वह बेअंत है। उसकी शक्ति को मापा नहीं जा सकता।

वह उस पोल पर प्रकट होता है जहां उसने अपना काम करना होता है।

वह शिष्यों का मान बनाए रखता है। वह भक्ति करवाता है।

गुरबाणी का फरमान है, "अपने सेवक की आपे राखै, आपे नाम जपावै। जह जह काज सेवक की, तहा तहा उठ धावै"।

वह खुद सेवकों को इस मार्ग पर लाता है। हे दाता हम पापी हैं।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी भी कहते हैं, "बेड़ी मंझदार है, कर दयो पार है।"

मेरे में कोई अच्छा गुण नहीं है, साधु तेरा गुलाम है।

मेरे माता-पिता ने मेरा नाम लाधु रखा, सतगुरु अजायब सिंह जी ने इसे बदलकर साधु कर दिया। यह उसकी कृपा थी। १९८८ में जब सतगुरु अजायब सिंह जी महाराज ने भजन अभ्यास का एक कार्यक्रम रखा, उसमें उसकी दया से शामिल होने का मौका मुझे भी मिला। उस समय उन्होंने मुझसे भजन अभ्यास करवाकर मुझे साधु का नाम दे दिया। मेरे पास कोई अच्छा गुण नहीं था, उसने दया बरसाई।

"सच्चा तेरा प्यार है, तेरा ही आधार है।"

गुरबाणी में आता है कि मेरी आंखों में नींद नहीं आती, मुझे खाना-पीना पसंद नहीं है।

भगवान से मिलने की इच्छा दिन-रात बढ़ती चली जाती है। गुरु से मिलना भगवान से मिलना ही है।

परमात्मा कहता है, गुरु की पूजा में ही मेरी पूजा है। परमात्मा और गुरु एक ही हैं।

भगवान और गुरु की पूजा में जो भी समय बीतता है, वह समय हमें बेअंत लाभ देता है, यह खराब नहीं जाता है।

"असीं मैले सतगुरु जी, उज्जल कर दे, उज्जल कर दे"।

"करना दीदार है, रूह शर्मशार है।"

अगर पूरे गुरु से नहीं मिले, नाम नहीं मिला, और सत्संग में नहीं गए, तो वह कैसे उज्जल हो सकता है? सतगुरु हमें नाम देकर साफ करते हैं।

यदि कोई सत्संग में आता है तो उसका फायदा होता है।

सत्संग में आने वाले जीव को जरूर कुछ हासिल होता है। जो जीव सत्संग में आते हैं, या तो गुरु उन्हें नाम देकर मुक्ति दिलाता है, या फिर दूसरा जन्म देता है, और फिर नाम देकर मुक्ति दिलाता है।

"गुरु माफ़ी दा खजाना, माफ करदा गुनाह।"

"खड़क रही तार है, तेरी इंतज़ार है जी, तेरी इंतज़ार है।"

अजायब आपको बुला रहा है। वह कुल मालिक, करण-कारण था।

अगर दिल की तार हमारे अंदर हिल रही है, तो इसका मतलब है कि वह हम पर अपनी दया बरसा रहा है। नाम की धुन हमारे अंदर बज रही है। वह खुद बोलता है, और खुद ही सुनता है।

गुरु के बिना, कोई भी इस बाणी को देख या सुन नहीं सकता है। यह सतगुरु की मौज में है कि वह किसे दिखाना चाहता है, और सुनाना चाहता है।

यह बाणी सचखंड से आकर सोती हुई आत्माओं को जगाती है।

अगर वह दया करे, तो ही उस ध्वनि को कोई सुन सकता है। केवल बड़े भाग्य से ही किसी को यह मिलती है। केवल ऊंचे भाग से ही पूरा गुरु मिलता है।

बड़े भाग्य से ही गुरु को अच्छा सेवक मिलता है।

यह आत्मा और परमात्मा की कहानी है। यह गुरु और सेवक की कहानी है। यह शब्द और आत्मा की कहानी है। आत्मा सेवक है, गुरु शब्द है। कहानी गुरु और सेवक की है।

अंदरूनी बाणी को ध्यान से सुनें, इससे आप मुक्ति प्राप्त करेंगे, और आप अपने असली घर चले जाएंगे।

सिमरन को मजबूत इरादे से प्यार और विश्वास के साथ करें। जिसका सिमरन हम करते हैं, वह हमेशा हमारे साथ हैं।

जब तक हमारी भक्ति पूरी नहीं होती तब तक हम पर मन का और विषय विकारों का असर रहता है।

दसवां दरवाजा, जो हमारा स्कूल है, वहां तक हमें पहुंचना होगा। एक बार वहां पहुंचने पर मन परेशान करना बंद कर देता है।

सतगुरु अजायब सिंह जी महाराज कहते हैं, "झूठा संसार है, जिंदगी लाचार है। आओ किरपाल जी तेरी इंतज़ार है, तेरी इंतज़ार है"।

किरपाल महाराज जी कहते थे, "दुनिया से क्या गरज़ है? दुनिया से पूछना क्या, मैं तुझसे पूछता हूँ"।

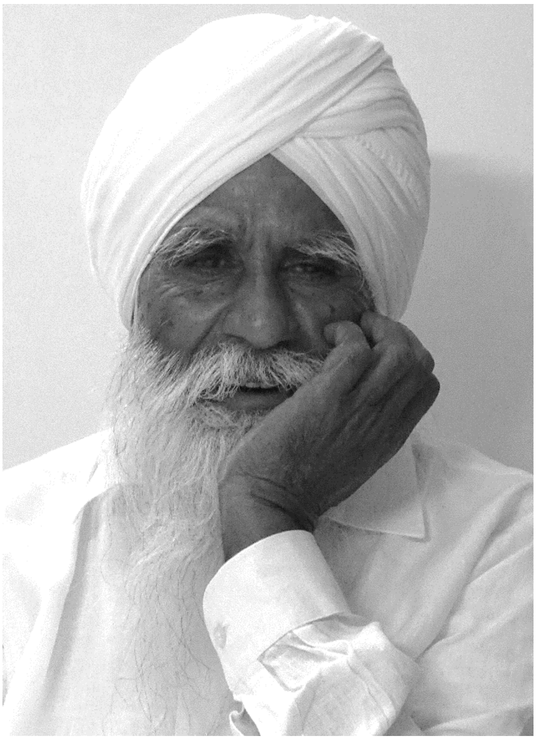

परमात्मा किसे मिलता है?

वह सत्पुरुष परमात्मा सच है, शब्द है, जिसने यह रचना रचाई है। वह ताकत सावन सिंह जी महाराज, किरपाल सिंह जी महाराज, और सतगुरु अजायब सिंह जी महाराज के रूप में आई।

उस सत्पुरुष परमात्मा की याद में हुज़ूर अजायब सिंह जी ने अपना जीवन लगाया।

अगर सिमरन कोई प्यार से करता है तो सिमरन में मन लग जाता है।

जब हम सिमरन करना शुरू करते हैं, तो हमारा मन चिंता पैदा करता है कि क्या मेरे पास पर्याप्त धन है? क्या मैं ठीक हो जाऊंगा? आगे क्या होने वाला है?

मन जड़ है और संदेह पैदा करता है।

अपना काम करते समय मन सिमरन में लगाकर रखें। इसे खाली ना घूमने दें।

कबीर साहब कहते हैं, "मन लाग्यो मेरो यार फकीरी में, जो सुख पावो नाम भजन में, सो सुख नाहिं अमीरी में"।

मन को बार-बार सिमरन में लगाएं। जब यह भटक कर दूर चले जाये, तो इसे घेर कर वापस लाएं।

सभी संत इस बात के गवाह हैं कि हमें नाम जपना होगा। भजन सिमरन के बिना मुक्ति नहीं मिलती।

शाह मस्ताना जी कहते हैं, "सतगुरु के गुण गाले बन्दे, जन्म मरण मुक जायेगा"।

दिन-रात भजन सिमरन करने से संसार के सारे बंधन कट जाते हैं। उस परमात्मा को खुश करने के लिए मन का बलिदान देना होगा।

इस जीवन को गुरु को अर्पण करें, और लेखे में लगाएं। हर सत्संगी का फर्ज है कि मन पर कड़ी नजर रखे। भगत अपने मन को खाली दुनिया में नहीं घूमने देते। हर समय उस परमात्मा को याद करें, और सिमरन हर समय चलता रहे। मन इच्छाएं पैदा करता है, और लोगों को एक दूसरे के साथ लड़ाता है।

सतगुरु अजायब सिंह जी महाराज कहते हैं, "मन जदों हठीला होवे, तां बदियाँ वलों मोड़ लयो। अगर फेर बाज ना आवे, तां गुरु चरणां विच जोड़ लयो"।

इस शरीर के साथ रोजी-रोटी कमाने के लिए काम लेना होता है। सिमरन में तरक्की तभी कर सकते हैं जब आप दसां नोहां की कमाई, ईमानदारी और कड़ी मेहनत की कमाई के साथ जीवन चलाते हैं। हाथ काम की तरफ और मन यार की तरफ।

गलत तरीकों से बहुत ज्यादा पैसा या अधिक मुनाफा कमाने की कोशिश न करें। इनसे हमें कोई फायदा नहीं होगा। हम जो भी काम करते हैं, उसे ईमानदारी और कड़ी मेहनत से करना चाहिए।

हमारे भीतर एक मजबूत ताले वाला दरवाजा है। यह गुरु है जो तय करता है कि इस मजबूत ताले को कब और कैसे खोलना है। सेवक केवल अरदास कर सकता है। हमें सिमरन करते रहना चाहिए। प्यार से सिमरन करना अरदास ही करना है। हमें इस मजबूत दरवाजा खोलने के लिये उस सतगुरु का इंतजार करना चाहिए।

भीख मांगना भिखारी का काम होता है, और गृहस्थी का कि कब उसे खैर डालनी है।

हे सतगुरु, अपनी शरण में रख, मैं सिर्फ यही मांगता हूँ। मेरा मान तेरे हाथों में है।

सब का मान रख। तूं हर किसी का मान रखता है, कृपया मेरा भी मान रख।

हर उस प्रेमी का मान रख जिसने तेरी शरण ली है।

परमात्मा केवल उन्हें मिलता है जिन्होंने गुरु के साथ प्रीत लगा ली है।

सतगुरु केवल उन लोगों को मिलता है, जो पांच शब्दों के रास्ते पर चलते हैं। इन पांच वचनों का सिमरन करने से कोई भी भक्त बन सकता है। गुरु के पास इन पांच शब्दों का राज़ है।

सतगुरु ने सिमरन किया है, और उसके पास जो भी आता है, उससे भी सिमरन करवाता है।

परमात्मा हमारे भीतर है, वह हमारे अंदर बोलता है। प्रकाश और धुन अंदर से बुला रहे हैं - "अंदर आके मुझसे मिलो"। परमात्मा सब के लिए एक है।

अगर कोई सिमरन को प्यार से करता है तो परमात्मा खुश हो जाएगा। यह सबसे उत्तम और पवित्र सेवा है। सिमरन से ही गुरु खुश होता है।

सिमरन दिन-रात, २४ घंटे होना चाहिए। सिमरन करना भक्ति का मार्ग है। उससे मिलने का एक ही रास्ता है। प्यारयो, यदि आप परमात्मा से मिलना चाहते हैं तो अपनी आत्मा को शब्द के साथ एकजुट करें।

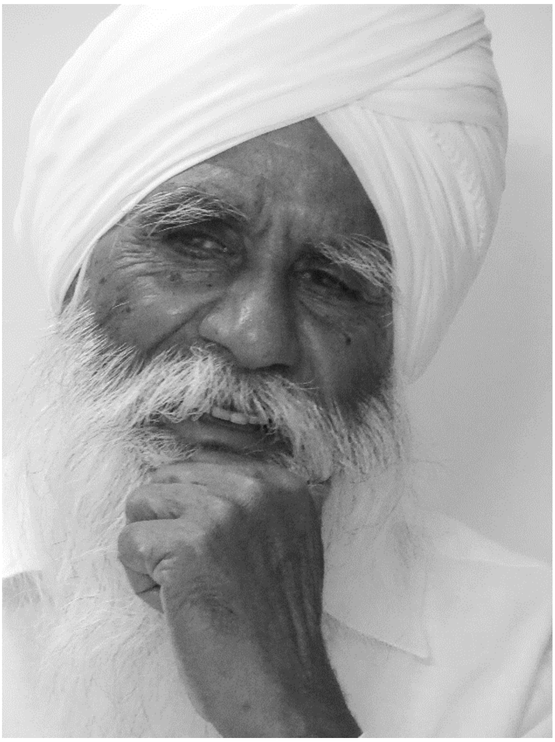

सतगुरु, सत्संग और गुरु-भक्ति

जो सतगुरु की भक्ति करना चाहता है, भजन सिमरन करना चाहता है, उसे अपना तन, मन, धन गुरु पर वारना पड़ता है। वह इसके बाद वही करता है जो गुरु कहता है, और वह नहीं जो मन कहता है।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि गुरु-भक्ति विश्वास पर है। जिसे एक बार विश्वास आ गया, उसका काम बन गया।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "गुरु तो बगैर बन्दे जिंदगी ना रोल"। जंगलों पहाड़ों में अपनी जिंदगी ना बर्बाद कर। जब भी परमात्मा मिलेगा, अच्छे भागों से अगर सोती किस्मत जाग गयी, तो अंदर से ही मिलेगा।

महाराज जी कहते थे कि गुरु को ढूंढने की जरूरत नहीं होती है। गुरु सेवक को अपने आप ढूंढ लेता है। हम जो भी पूजा करते हैं, वह प्रभु परमात्मा के मिलने के लिए करते हैं।

महाराज जी भी कहते हैं, "हृदय साफ़ बनाये वे, ओत्थे ही मालिक आए वे"। क्योंकि परमात्मा का निवास हृदय में है।

शरीर के जो नों द्वारे हैं, वे बाहर की तरफ खुलते हैं। वह सच्चा-सुच्चा परमात्मा इन नों में नहीं आता है, वह दसवें द्वार में आता है। वह परमात्मा इतना उच्चा-सुच्चा है तो हृदय को भी वैसा ही बनाना पड़ेगा।

"गुरुमुख मन समझाई"। महाराज जी अपने मन को समझाते हैं कि तूं विषय में इतना मस्त ना हो।

जब तक हमारा सिमरन नहीं पकता है, तब तक हमें अनुभव नहीं होता है।

हमें नाम मिल गया, गुरु मिल गया, और सत्संग मिल गया, लेकिन जब गुरु दया करता है, तब ही हमें अनुभव होता है। चाहे हम पास हैं या दूर हैं, दिन है या रात है, औरत है या मर्द है, लेकिन अनुभव गुरु की दया से ही होता है। हम सिमरन की कोशिश करें और नाम के साथ जुड़ें।

जब हम सिमरन पर बैठते हैं तो हमारे शरीर में दर्द होता है। जब यह मन अपने घर आ गया, तब यह दर्द खत्म हो जाना है और यह फिर नहीं होगा। मन के साथ लड़ाई होती है। मन जब हार जाता है तो अपने घर में बैठ जाता है। इसके बाद बाहर नहीं जाता है, और अनुभव फिर होता ही रहता है।

हम प्यार और भरोसे के साथ अगर थोड़े दिन ही सिमरन करें, तो हमारी गुरु भक्ति पूरी हो जाए। फिर मन बाहर नहीं जाएगा, और अपने घर में बैठ जायेगा।

मन भी हमारे अंदर है, आत्मा भी हमारे अंदर है, और परमात्मा भी हमारे शरीर के अंदर है। गुरु अर्जुन देव जी महाराज कहते हैं कि एक घर में रहते हुए बोलते नहीं हैं।

गुरु नानक कहते हैं, "हौमें रोग बुरे"। जो हौमें रोग है, इसकी वजह से हमारी अंदर बात नहीं होती है।

सतगुरु अजायब कहते थे कि जब हमारा पर्दा खुल जाता है तो जैसे हम स्थूल शरीर में बात करते हैं, वैसे ही हम गुरु के साथ अंदर बात कर सकते हैं। यहां स्थूल रूप में है, और अंदर सूक्ष्म, नूरी-स्वरूप है। अपनी बात सीधे होने लग जाती है।

गुरबाणी का फरमान है, कि देवी-देवता भी इस शरीर को लोचते हैं। वे अरदास करते हैं कि हे परमात्मा, अगर यह मानस देह मिल जाए तो हम गुरु भक्ति करके, जो मुक्ति का रास्ता है, वह हासिल कर लें, और अपना जन्म-मरण खत्म कर लें।

महाराज जी कहते थे कि ऋषि-मुनि, जिन्हें पूरा गुरु नहीं मिला, मन ने उनकी मिट्टी पलीत कर दी।

हमारा मन अड़ियल है, और अड़ जाता है। कभी सिमरन करता है और कई बार नहीं भी करता। सतगुरु ने जो पांच पवित्र नाम दिए हैं, उन्हें जप कर ही यह मन सही हो सकता है। अच्छा बन सकता है।

आत्मा और मन की मैल उतारने वाली कोई चीज अगर है तो वह नाम है, सिमरन है, और गुरु की दया है।

"नाम सच्चा, गुरु सच्चा, सत्संग सार है।"

गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैं, "सत्संग ओत्थे जानिये, जित्थे इको नाम वखाणीऐ"।

सत्संग के जरिये हमें अपने मन की कमजोरियों का और गलतियों का पता चलता है। मन हम से गलती करवा भी लेता है और फिर कह भी देता है कि मैंने तुमसे यह गलती करवा ली है।

महाराज जी भी कहते हैं, "नाम सच्चा, गुरु सच्चा, सत्संग सार है"।

"गुरु तो बगैर बन्दे, जिंदगी ना रोल वे।"

महाराज जी भी कहते थे कि सिमरन अभ्यास से ही मन की मैल उतरेगी।

सिमरन ही हमारा सार है, और सिमरन ही हमारी जिंदगी बनाता है। इससे हमारा प्यार गुरु के साथ बनेगा। मालिक के साथ जुड़ा हुआ जोड़ सकता है, और मिला हुआ मिला सकता है।

परमात्मा जीवों पर दया करने के लिए ही आता है।

सत्संग कौन करता है?

सत्संग उस परमात्मा की है, सत्पुरुष की है। वाहेगुरु अकाल-पुरख की संगत है, जिसे काल नहीं खाता।

भगत नाम का सन्देश देते हैं। उस सच्चे, पिता-परमात्मा का संदेश देते हैं, और उनका अपना कोई सन्देश नहीं होता है।

सत्संग परमात्मा की तरफ से होता है। भगत परमात्मा के बेटे होते हैं, और उनसे जैसा परमात्मा बुलवाता है वैसा बोल देते हैं। वे अपनी तरफ से या अपनी मान बड़ाई के लिए नहीं करते हैं। सिर्फ परमात्मा की बड़ाई करते हैं।

सत्संग उस परमात्मा का है, सत्संग में हमारा काम बन जाता है।

"दाणे भुज्जे होए कल्लर उगांवे, जे हो जाये तेरी मौज दातया।"

यह मन है जो चिंता करता है।

बिना विश्वास के मुक्ति नहीं मिल सकती।

"एक घड़ी, आधी घड़ी, आधी तो भी आध, संगत साध की काटे कोट अपराध।"

सत्संग आत्मा को नाम के रंग में रंग देता है।

अंत में केवल सतगुरु हमारी मदद करता है। सतगुरु के बिना पछताना पड़ेगा।

भवसागर को पार करने के लिए हमें सत्संग, नाम और गुरु की जरूरत है।

नाम का सिमरन करने से सभी दुखों से मुक्ति मिल जाती है।

"जन्म मरण दा दुख है भारी, मिल गए सतगुरु कट गई बीमारी।"

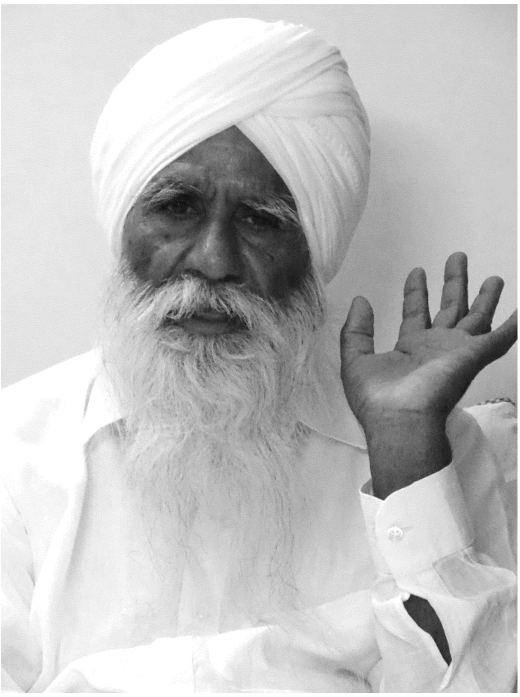

एक भगत का दुनियावी व्यवहार

जो गुरुमत है इसमें ध्यान है, और सिमरन है। गुरुमत में ध्यान और सिमरन दो रास्ते हैं, जिनसे हम अंदर जा सकते हैं।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज कहते थे कि प्यारयो, जो सचखंड से आया है, वह हमें सचखंड ही ले कर जाएगा।

जो गुरु यह शिक्षा देता है, वह मंडल दर मंडल तय करके शब्द नाम में मिला होता है।

अगर हम दुनिया का ध्यान करते हैं तो हमें दुनिया में जन्म लेना पड़ेगा।

अजायब सिंह महाराज जी भी कहते थे कि अगर हम दौड़ कर आये, और दौड़ते हुए चले गए इस दुनिया से, तो कोई फायदा नहीं हुआ।

जिस घट में वह सत्पुरुष, अकाल-पुरख शब्द बैठ गया, वह सचखंड लेकर जायेगा।

गुरबाणी में भी आता है, "अपने सेवक की आपे राखे, आपे नाम जपावै, जह जह काज किरत सेवक की, तहां तहां उठ धावै"।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "इक जोत रब्ब दी है आई, आपे तारे ते आप तारण वाली"।

शब्द-नाम और प्रकाश उस परमात्मा का असली रूप हैं। अंत में सच्चे गुरु को सारी वडयाई मिलती है।

सतगुरु शब्द रूप है। वह परिपूर्ण परमात्मा संतों को खुश होकर भेजता है कि जा, मैं तेरी संभाल करूंगा। भक्तों की रक्षा परमात्मा ही करता है।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "मांवां नूं है पुत्र प्यारे, तैनू भक्त प्यारे हों"। वह कहते हैं, "जित्थे भेजे दाता जावां, तेरा दित्ता सदा ही खावां"।

भक्त केवल गुरु के आगे अरदास करता है। वह कुल-मालिक, करण-कारण दाता सब की प्रार्थना को सुनता है ।

गुरबाणी कहती है कि हौमें बहुत खतरनाक बीमारी है। अहंकार तब आता है जब कोई यह सोचता है कि मैं होशियार हूं, मैं बुद्धिमान हूं, पढ़ा-लिखा हूँ, स्याना हूँ।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि भक्त एक चालीस दिन के बच्चे की तरह होता है।

तुलसी साहब कहते हैं, अगर कोई किसी भक्त को पहचानने का दावा करता है तो अपने दोनों कानों को हाथ लगता हूँ, क्योंकि उन्हें पहचानना संभव नहीं है।

भक्त सब कुछ जानता है, लेकिन ऐसे जताता है, जैसे कुछ भी नहीं जानता हो।

कबीर साहब कहते हैं कि जब तक मैं अंदर थी तब तक वह परमात्मा वहां नहीं था। जब मैं चली गयी, वहां परमात्मा प्रगट हो जाता है।

जैसा बीज बोते हैं, वैसी ही फसल काटते हैं।

गुरुमत कहती है कि किसी का दिल नहीं दुखाना। फीका नहीं बोलना। द्वैत भावना नहीं रखनी।

यदि कोई अपने को दूसरों से बेहतर मानता है, तो परमेश्वर उसे क्या देगा?

गुरुमत में दूसरों को अपने से सवाया समझना पड़ता है। यह समझना पड़ता है कि मैं मंदा हूँ, मेरे से सारे अच्छे हैं।

कबीर साहब का कहना है, "बुरा जो देखन मैं चला, बुरा ना मिलिया कोई, जो मन खोजया आपना, तो मुझसे बुरा ना कोई"।
जब वह परमात्मा एक है, और सब देख रहा है, तो उसके आगे क्या होशियारी चलेगी?

गुरुमत में मन जड़ है। मन अंधा और बोला भी है। अंधा है, तभी इसे पता नहीं है कि कल क्या होना है। बोला है, कि किसी की मानता ही नहीं है, और अपनी ही चलाता है।

कबीर साहब ने कहा है, "हाथ में दीप है और कुंए पड़े"।

मन को पता है कि बुरे कर्मों से हाल बुरा ही होना है, लेकिन काल के वस में यह बुरे कर्म कर लेता है।

सारी सृष्टि का मालिक शब्द-नाम है, और उसने सारी दुनिया बनाई है। उस प्रभु परमात्मा की बनाई दुनिया बुरी नहीं है।

हमारे मन ने काम, क्रोध, लोभ, मोह, और अहंकार का साथ ले लिया है।

जिस तरह समुद्र में से बादल उठते हैं और बरसात हो जाती है। ऊँची-नीची जगहों में बरसात का पानी गिरता है, और गंदगी कूड़े-करकट का साथ ले लेता है। जो भी इस पानी के पास से गुजरता है तो कहता है कि पानी गंदा है। जब सूरज की किरणों की तपिश लगती है तो पानी बुखारात बन कर उड़ जाता है, और जहां से आया था वहीं वापस चल जाता है। समुद्र में से पानी आया और समुद्र में वापस चला गया।

आत्मा ने मन का साथ ले लिया है। मन ने इंद्रियों का साथ ले लिया है, और इन्द्रियों ने आगे भोगों का साथ ले लिया है।

सेवक को चाहिए कि वह सतगुरु की शरण में रहे। गुरु के हुक्म और भाणे में रहे।

सतगुरु शब्द है, और सेवक को विश्वास होना चाहिए कि मेरा गुरु कुल-मालिक, परमात्मा है।

"साधु शब्द में यूं मिल जा, ज्यों पानी में पतासा। शब्द में यूं मिल जा, ज्यों पानी में पानी। शब्द में यूं मिल जा, ज्यों आटे में लूण।"

कबीर साहब कहते हैं, "कागां सेती प्रीत लगा के हंस बनेगा नाहिं रे, शब्द संग मिलके हंसा तूं हो जाई रे।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "तैनू वारो वारी आखे, मना ओए वेला बंदगी दा, ओए वेला बंदगी दा"।

संतमत विश्वास पर कायम है

अगर सेवक को यह विश्वास है कि मेरा गुरु परमात्मा है, तो उसके लिए वह परमात्मा ही है। यदि वह सोचता है कि मेरा गुरु एक इंसान है, तो उस के लिए वह एक इंसान ही है। गुरु सेवक के लिए वही है जैसा सेवक सोचता है।

संतमत विश्वास पर खड़ी है।

गुरु मिल गया, नाम मिल गया, सत्संग मिल गया, तो फिर मन को भटकने ना दें, उसे डोलने ना दें।

"अंदर साफ जिन्हां दे सच्चे, ओह हर दम करदा संभाल, सोचां क्यों करदा।"

जो कुछ भी होता है, वह सब उसकी कृपा से होता है। आप जो कुछ भी हासिल करना चाहते हैं, उस पर अपना पूरा ध्यान लगाएं।

नित्तनेम के साथ हर दिन भजन सिमरन करें, फिर मन शांत हो जाएगा। तब आप तरक्की कर पाएंगे। अब मन में हर मिनट में एक नया विचार उठ रहा है।

नामदान के वक्त सतगुरु सेवक के सभी पापों को ले लेता है। गुरु सूली की सूल बना देता है। वह हमारा सच्चा हमदर्द, सच्चा दोस्त है।

यह सुनहरा मौका आपके हाथ में है।

गुरु संगत के जोड़े झाड़ता है।

वह आपके लिए मुफ्त में काम करता है, उसका फायदा उठाएं।

सत्संग सुनने के बाद जीवन कैसा होना चाहिए?

हम नाम लेवा हैं। हम सत्संगी हैं। गुरु के सेवक हैं, लाल हैं। सतगुरु के बेटे हैं।

गुरबाणी में आता है कि पति और पत्नी दो होते हैं, "एक ने कही दूजे ने मानी, कहे नानक दोनों ब्रह्म-ज्ञानी।"

पति या पत्नी, बेटा या बेटी, भाई या बहन, या और जो भी रिश्तेदार हैं, सभी उस परमात्मा के जोड़े हुए हैं। सब में एक ही परमात्मा है। एक परमात्मा की यह सल्तनत बनाई हुई है।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज कहते थे कि इस धरती पर रहने का हक़ सभी को है।

सवाल यह है कि रंग-रूप, मान-बड़ाई, जमीन-जायदाद, और बच्चे हमारे पिछले प्रालब्ध कर्मों के हिसाब के अनुसार उस सत्पुरुष ने दिए हुए हैं।

गुरु अर्जन देव जी कहते हैं, यह संसार कर्मों का खेत है। जैसा बीज बीजा है, वह हमें ही काटना है।

जो आदमी मान-बड़ाई चाहता है, वह आदमी दबाता है।

अब पति-पत्नी हैं। दोनों को नाम मिला हुआ है। यदि गुरु पर विश्वास है, तो कौन बोल रहा है? वह गुरु ही बोल रहा है।

अब सवाल पैदा होता है कि सुख किसने दिया है? गुरु ने सुख दिया है। गुरु एक सुख का समुंदर होता है। वह सुख ही देता है।

कर्मों करके हमें थोड़ा बहुत दुःख आता है। बीमारी आ जाती है तो वह कर्मों के कारण है। मंदे कर्म किये हुए हैं, तभी बीमारी आती है।

जीव को समझाया जाता है कि प्यारयो, हम शादीशुदा हैं। अब क्या हम एक दूसरे का कहना मानते हैं, या एक दूसरे पर भरोसा या विश्वास है हमें? अगर शादी कराई है और पति पत्नी का एक दूसरे पर विश्वास नहीं है, तो शादी नहीं करानी थी। हमने शादी करवाने का मतलब कभी सोचा नहीं है। हमने इतना ही सोचा है कि जब प्यार जागा तो एक दूसरे से बात कर ली, और जब प्यार पूरा हो गया तो अलग-अलग हो गए। एक दूसरे को दुःख देने लग गए हैं। प्यारयो, शादी करवाने का मतलब यही है कि एक दूसरे की मदद करो।

यदि हम दूसरों का भला सोचते हैं, तो परमात्मा अपने आप हमारा भला कर देता है। गुरबाणी में आता है,"कर भला, सो हो भला"।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि जब कोई गुरु का सच्चा सेवक बन जाता है, तो उसमें नम्रता आ जाती है।

पति-पत्नी को ऐसे रहना चाहिए जिससे उनका प्यार बना रहे। गुरु के वचनों पर हम अपना जीवन ढालें।

किसी भी संत की आप हिस्ट्री पढ़ कर देख सकते हैं, उन्होंने कभी झगड़ा नहीं किया है।

"गुरुमुख मन समझाई।"

यदि किसी से कोई गलती हो जाती है तो हमें माफी देनी चाहिए। हमें माफी मांगनी भी चाहिए और माफ़ी देनी भी चाहिए, ताकि हमारा प्यार बना रहे।

सावन सिंह महाराज जी कहते थे कि यदि पति-पत्नी शादीशुदा हैं, और दोनों ही अगर आपस में झगड़ते हैं तो गुरु उन्हें अपने चरणों में जगह नहीं देता है।

अगर सोच-विचार किया जाए तो हमने सिर्फ दूसरों को दुःख ही दिया है। सुख का तो कभी सोचा ही नहीं, कि सुख भी देना है।

गुरु नानक देव महाराज जी कहते हैं कि माँ धन है। मां जिसने सूरमें को जन्म दिया है, संतों को जन्म दिया है, उसमें क्या बुराई है?

बीबीओं का दिल नरम होता है। जब बच्चा कोख में होता है तो वह ऐसा खाना भी नहीं खाती है जिससे बच्चे को नुकसान पहुंचे, और तकलीफ हो।

जब बच्चा बाहर आता है और अगर मिट्टी लग जाती है तो उसे वह नहलाती है, पोशाक डालती है। उसको तैयार करती है, स्कूल भेजती है, और खाना खिलाती है।

माता-पिता बच्चे के लिए परमार्थी होते हैं और परोपकार करते हैं।

बच्चों को समझना चाहिए कि माता-पिता ने मुझे पाला है, मेरी संभाल की है, जवान किया है, तो मैं भी अपने माँ-बाप की सेवा करुं।

जो बच्चा माँ-बाप की सेवा करता है, उनके आशीर्वाद से वह कामयाब हो जाता है।

अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि जो दया यहाँ मिलती है, उसे लेकर सीधे घर जाओ। कोई भी घर का काम करना है, तो वह बाद में करो। जो दया मिली है वह रास्ते में खराब ना करो।

हमारे सतगुरु कहते थे कि दया मिली है, सीधे अपने घर जाओ।

पति पत्नी हैं, अगर चाय या खाना बना है तो उसको भी खिला दे और आप भी खालें।

गुरबाणी में आता है कि गुरुमुख के पास जो कुछ भी है वह उसे साँझा करता है।

इस तरह हमारा रहन-सहन अच्छा बन जाता है।

कर्मों के अनुसार दाना-पानी मिलता है। जैसा भी कर्मों के हिसाब अनुसार उस सतगुरु - परमात्मा ने रुखा, सूखा, मिस्सा, जैसा भी दिया है, उसे हम प्यार के साथ खा लें।

जो भी खाना मिल गया है, उसमें गलती ना निकालें और उसे प्यार के साथ खा लें। सतगुरु का जो सिमरन मिला है, उसे करते हुए अगर खाना बनाया है तो वह सतगुरु का परशाद बन गया है।

सत्संग तो हमने काफी सुने हैं, लेकिन उसी सत्संग का फायदा है जिसको सुनने के बाद हमने अपना जीवन उस पर ढाल लिया है।

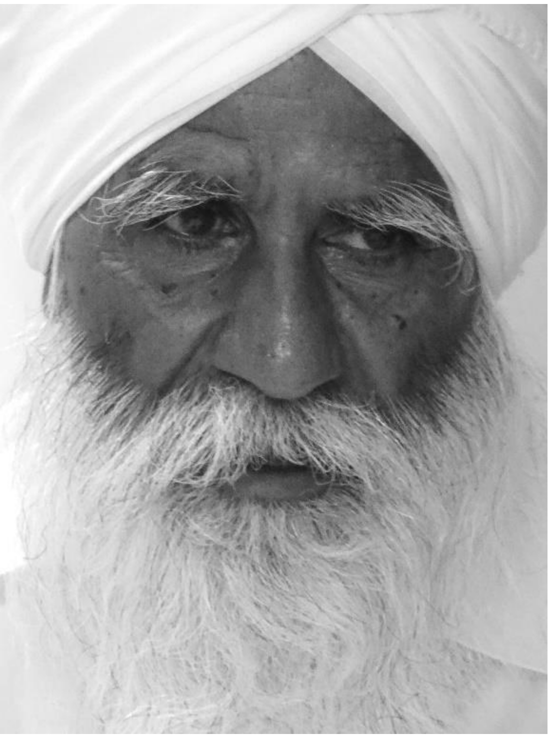

सतगुरु कौन सा नाम देते हैं?

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "अड़ी वे अड़ी, न कर बन्दे वे अड़ी, लग्गी नाम दी झड़ी, नाम जप सोहनया वे, मोत सिर ते खड़ी"।

कुल मालिक को मिलाने के लिए ही संत सतगुरु नाम देते हैं।

नाम जो है, उसे संत किताबों से पढ़ कर नहीं देते हैं। उनकी अपनी कुर्बानी की होती है उस नाम पर। उस नाम की कमाई करके ही नाम देते हैं।

उस नाम से संत-महात्मा मालिक के साथ मिलाप कराते हैं, और मालिक उस नाम की कमाई से खुश हो कर प्रगट हो जाता है।

जो भगत होते हैं, वह उस सत्पुरुष का सन्देश देते हैं, और कहते हैं कि प्यारयो सब में वह सत्पुरुष है। उससे मिलने की युक्ति भी बताते हैं।

कबीर साहब कहते हैं कि **नाम जपने से सारे दुःख खत्म हो जाते हैं, और सारे सुख मिल जाते हैं।**

अब हमें नाम मिल गया है, नाम का सहारा हो गया है। अब झूठ, निंदा, चुगली, चोरी, जारी, और ईर्ष्या को छोड़ना है।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "रूह मालिक तो होई दूर, एनुं समझौना नी, हुण मिलया मानस जामा, कंत नूं पौणा नी"।

अब हमारी आत्मा का प्यार लगा हुआ है इस दुनिया में। सारी ही दुनिया को मोह ने फंसा रखा है। मन के साथ हमारी आत्मा की दोस्ती है। मन का विचार भोगों में है। इस प्रकार इन्द्रियों ने भोगों में मन को फंसा लिया है। जितने भोग हैं, उतने रोग हैं।

अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं प्यारयो, "सिमरन करिये, नाम सिमरिये, जिंदगी सफल बना लईए, प्यार गुरु नाल पा लईए"।

महाराज जी भी कहते हैं कि प्यारयो, यह जो समा हाथ में आया हुआ है, यह सदा नहीं रहेगा।

हम देखते हैं कि इंसान जवान होता है, फिर बूढ़ा हो जाता है। उससे चला फिरा भी नहीं जाता है। पूरा देख भी नहीं होता है। किस चीज का मान है? क्या जवानी का मान है? क्या माया का मान है? नाम जपेंगे तो सुख पाएंगे।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं प्यारयो, "मान बड़याई मेरा पीछा ना छोड़ें, ये बड़ी दुखदायी री"।

भगत उस भगवान की ही बड़ाई करते हैं, अपनी बड़ाई नहीं चाहते, और ना ही करते हैं। भगवान ने अपने आप ही उनकी बड़ाई करवा देनी है।

"जे हो जाये तेरी मौज दातया, दाणे भुज्जे होए कल्लर उगांवें।"

महाराज जी भी कहते हैं, "असीं हैं यतीम, साडा रखना ख्याल वे"।

शब्द-रूप परमात्मा गुरु के रूप में प्रगट होता है। वह शब्द का सन्देश देते हैं। सब भगत, संत, और महात्मा उस परमात्मा का सन्देश देते हैं।

स्वामी जी महाराज ने भी कहा है, "हंसनी दूध पियो, दूध पियो छान"।

पानी और दूध मिला कर रख देते हैं तो हंसनी पानी छोड़ देती है। यह तासीर उसकी चोंच में होती है। जिससे वह दूध पी लेती है और पानी छोड़ देती है। इसी तरह विषय विकार हैं, जो छोड़ने हैं।

अब हमें नाम मिला हुआ है, और जब हम प्यार से नाम जपते हैं तो उसमें जो अमृत रस है, वह हमारी जीभ पर आता है। हमें फिर पता लगता है कि गुरु ही अमृत रस पिलाता है।

जैसे बच्चा है, उसकी माँ का दूध उस बच्चे के लिए अमृत का काम करता है। वह दूध अमृत के बराबर होता है।

नाम के अमृत को पीकर ही हम भगत बन सकते हैं। विषय-विकार छोड़ सकते हैं। काम वासना को छोड़ सकते हैं। जब तक उस अमृत को नहीं पिया जाता है, या गुरु दया नहीं करता है, तब तक हम विषय-विकार छोड़ नहीं सकते हैं।

हम भजन पर बैठते तो हैं, और अच्छे तरीके से बैठते हैं, लेकिन हिल जाते हैं। इससे वह अमृत रस मिलता नहीं है।

हम उस अमृत रस को कैसे पी सकते हैं?

जब हम चोंकड़ी मार कर बैठते हैं और उसका ध्यान दोनों आँखों से थोड़ा सा ऊपर करते हैं।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं कि प्यारयो, मैंने अपने सतगुरु को रो-रो कर याद किया।

हम बैठते हैं, पर हमारा मन टिकता नहीं है, फिर अफ़सोस भी है कि मन टिकता नहीं है। कुछ अंदर दिखता नहीं है, अँधेरा ही है।

प्रेमी अपना अनुभव भी बताते हैं। एक बार ही बैठना है जितना समय बैठना है। चार-छः-आठ-बारह घंटे बैठना है, और एक बार ही बैठना है। शरीर को हिलने नहीं देना है। अब शरीर के पीछे ही मन है। शरीर बैठा रहेगा तो मन भी बैठा रहेगा।

प्यारयो, सबसे पहले जिस चीज की जरूरत है, वह है विश्वास। अगर पूरा विश्वास हो गया तो गुरु भक्ति पूरी हो गयी है। जब मुझे नाम मिला तो मुझे पूरा विश्वास था कि मेरा गुरु परमात्मा है।

दूर और पास का कोई फर्क नहीं होता है। औरत मर्द का कोई फर्क नहीं होता है। रात दिन का कोई फर्क नहीं होता है। बात हमारे मन की है।

कबीर साहब ने भी कहा है, "मन लागयो मेरा यार फकीरी में, जो सुख पायो राम भजन में, वो सुख नहीं अमीरी में, मन लागयो मेरो यार फकीरी में"।

अब क्या है कि दुनिया की सारी चीजों की तस्वीर सामने रख देता है मन। जब तक मन दुनिया की आस नहीं छोड़ता है, तब तक मन अंदर नहीं जा सकता।

राम को मिलना है, तो छोड़ जगत की आस।

हम दुनिया के भी जो रस-भोग हैं लें, और राम को भी मिलना चाहें, तो यह दोनों काम एक साथ नहीं होंगे, प्यारयो। जब वह राम का रस मिलता है तो दुनिया के सारे रस फीके लगने लग जाते हैं। दुनिया के रस लेंगे तो प्यारयो नरकों में चले जाएंगे। भोगों में जायेंगे, तो भी नरक हो जाएंगे।

अगर वह राम-रस पीयेंगे तो सदा के लिए अमर हो जायेंगे, और सारे सुख अपने पास आ जायेंगे।

हमारी आत्मा कमजोर हो गयी है। आत्मा की खुराक सिमरन ही है।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "लभ गया लाल एनुं रख लै संभाल वे, नाम जप सोहनया वे, मौत सिर ते खड़ी"।

प्यारयो, नाम बड़े भाग्य से मिलता है। अच्छे कर्म हों तो नाम मिलता है। जब नाम मिल गया है तो इसे संभाल कर भी रखना है।

बुरी संगत को भी छोड़ना है। गंदी चीज है प्यारयो। शराबी के पास जायेंगे तो मन को शराब पीने की आदत पड़ जायेगी। बंदा तो अच्छा है, मगर जब नशा खा या पी लेता है तो बुरा हो जाता है, गंदा हो जाता है, क्योंकि नशे की जो आदत है वह गंदी है।

कबीर साहब ने कहा है, "मना रे तेरी आदत ने कोई बदलेगा हरी-जन सूर, चोर जुआरी क्या बदलेंगे माया के मजदूर, भांग धतूरा चिलम छतूरा रहे नशे में भरपूर। पांच विषयों में लट पट रहता मतंगे चूर, इनको सुख सपने में भी नाहिं, रहें मालिक से दूर"।

तो प्यारयो हमें नाम मिला हुआ है, सात्विक भोजन खाना है। दाल-फुलका खाना है।

महात्मा मालिक के प्यारे अपने मन को समझाते हैं। जो उन्होंने खाया है वह लिख दिया है कि मैंने यह खा कर सतगुरु की भक्ति की है।

संत-महात्मा की निशानी और उनके नूरी दर्शन कब होते हैं?

वह नूर-इलाही, प्रकाश बनकर इस धरती पर आया था।

"अज खुशी दिन आया जी, मनाया संगता ने।"

"ओह जोत निराली आई, आपे तारे ते आपे तारण वाली।"

दुखी आत्मा को मुक्ति देने के लिए ही वह नूर-इलाही इस जग में अवतार लेता है।

वह गुरु जिस कुल में आता है, जिस घर में आता है, उसके बड़े ऊँचे भाग्य होते हैं।

वह कुल मालिक, करण-कारण इस दुनिया में आया, उसकी जो ज्योति है, निराली है और उसके ऊपर ही चमकती है।

संत महात्मा की क्या निशानी है?

उनकी जो ज्योति है, वह चमकती है। इस ज्योति के दर्शन करके ही हमारे पाप खत्म हो जाते हैं, नष्ट हो जाते हैं।

वह ज्योति इन दोनों आंखों से थोड़ा ऊपर माथे पर चमकती है। जब हमारा मन एकाग्र होता है तब हमें उस ज्योति के, अंदर भी और बाहर भी, दर्शन होते हैं।

उस ज्योति के दर्शन कौन करता है?

आत्मा करती है, बाकी सब जड़ है।

उस ज्योति के दर्शन करने के लिए आत्मा तड़फती है।

उस ज्योति के लिए ऋषि मुनियों ने घर-बार छोड़ा और बियाबान में गए।

पारस मुनि ने साठ हजार वर्ष उस प्रकाश के लिए तप किया। शृंगी मुनि ने साठ हजार वर्ष तप किया। नारद मुनि ने भी साठ हजार वर्ष तप किया, कि वह परमात्मा मुझे मिल जाए और मैं उसके दर्शन करके निहाल हो जाऊं।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि आत्मा अपना श्रृंगार करती है। जप है, तप है, तीर्थ है, दान पुण्य है, यह सब उस परमात्मा को पाने के लिए करती है।

"जे हो जाये तेरी मौज दातया, दाणे भुने होये कल्लर उगावें, जे हो जाये तेरी मौज दातया। आप ही तूं राजयां तो भीख मंगवोंना ऐं, आप ही भिखारियां नूं तख्त बिठौना ऐं।"

हम तो तेरी खुशी मनाते हैं कि तूं अच्छे कर्मों करके ही हमें मिला है, इस धरती पर आया है।

तेरी आत्मा ख़ुशी मनावे। तेरी आत्मा, तू चरण शरण में रख।

११ सितंबर को तू इस धरती पर आया। दीन-दुनिया का सहारा बनकर तू आया। आत्मा को नाम का पानी दिया और हरी भरी कर दिया।

जिस तरह शरीर की खुराक अन्न-पानी की है। **आत्मा की जो खुराक है, वह सिमरन भजन है**। गुरु नहीं मिला है, सत्संग नहीं मिला है, तो आत्मा कमजोर हो गई है।

आत्मा के अंदर प्यार और तड़फ होती है।

अजायब सिंह महाराज जी ने बहुत अभ्यास किया था। उस परमात्मा की याद में उन्होंने बहुत कड़ा अभ्यास मकान के अंदर बैठ कर किया। जब किरपाल महाराज जी की मौज हुई, उनके पास खुद चले गए।

अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं कि मुझे जो राम मिला है, वह परमात्मा, कुल-मालिक, करण-कारण, सतगुरु किरपाल सिंह है।

गुरबाणी में भी आता है, **बड़ाई करनी है तो परमात्मा की करो,** अगर निंदा करनी है तो अपने मन की करो। वह बड़ाई करने के लायक है।

अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "गीत गुरु दे गा लईए, प्यार गुरु नाल पा लईए"।

गीत गुरु के गाएंगे तो रंग गुरु का ही चढ़ जायेगा, प्यारयो। हमारी आत्मा भी खुश हो जाएगी, परमात्मा भी खुश हो जाएगा, और हमारा मन भी खुश हो जाएगा।

"जित्थे भेजे दाता जावां, तेरा दित्ता सदा ही खावां।"

"ओह जोत निराली आयी।"

कबीर साहब ज्योति-रूप होकर समुद्र के किनारे आये और एक छोटे से बच्चे का रूप धारण किया। नीरू और नीमा के संतान नहीं थी तो वे उस बच्चे को अपने साथ घर ले गए।

अपनी-अपनी बोली में चारों खाणीयां उस परमात्मा को याद करती हैं। पशु हैं, पक्षी हैं, जानवर हैं, चिड़िया है, सब अपनी-अपनी बोली में याद मनाते हैं।

"अज देवी देवते मनौण सारे खुशियां, ते परियां शब्द अज गौन्दियां।"

इंसान भी खुशी मानते हैं कि हे परमात्मा, आपने सुख दिया है।

भगत और संत भी खुशी मानते हैं। उस प्रभु परमात्मा के मिलने का रास्ता संत महात्मा से ही मिलता है।

वैसे, हमारा मन भी अपने तरीके से उस परमात्मा को याद करता है।

जो संतों का रास्ता है, वह खुद उस परमात्मा ने चलाया है।

सारे रास्ते मन के हैं। वैसे चलाये हैं, तो ठीक हैं। जप, तप, तीर्थ, दान-पुन हैं। यह वैसे ठीक हैं। ठीक किस तरह हैं? यह करने से हम पाप से, नशे से बचे हैं।

कबीर साहब ने भी कहा है, "तीन लोक में गुरु से बड़ा ना कोए, करता करे ना कर सके, गुरु करे सो होए।

कबीर साहब ने भी कहा है कि सारे काम तो ठीक हैं। लेकिन वह जो ज्योति है, वह इस तरह से हमारे पापों का नाश कर देती है, खत्म कर देती है, जैसे हम किसी सुखी लकड़ी या घास पर आग की चिंगारी गेर दें तो वह सारे को खत्म कर देती है, राख बना देती है।

जिस तरह पानी है। हम नहाते हैं तो पानी शरीर तो साफ़ कर देता है, लेकिन पानी को यह ताकत नहीं कि यह पाप किसी के ले लेगा।

पाप खत्म करने वाली चीज है, राम नाम। इससे ही पाप खत्म हो सकते हैं।

गुरबाणी के अंदर भी ऐसा आता है "धन-धन राजा जनक है, जिस सिमरन कियो विवेक, तेरा दर ऐसा, लख पापी तर गए जी"।

संत महात्मा ने मालिक के प्यार में आके नाम रखे हैं। किसी ने धुन-बाणी, आकाश-बाणी, रब्बी-बाणी कह दिया। अपने-अपने तरीके से उसको याद किया है।

संत महात्मा उस राम का ही गुणगान करते हैं। प्यारयो, राम-नाम में वह ताकत है जिससे पापों का नाश हो सकता है। जब पापों का नाश होता है तो उस परमात्मा ज्योत रूप के हमें दर्शन हो सकते हैं। अभी हम पापों के नीचे दबे हुए हैं।

हमारे में से किसी के पाप ज्यादा होते हैं, और किसी के थोड़े।

जब महात्मा हमें नामदान देते हैं, और हम उसे प्यार से जपते हैं, तो हमारे पाप खत्म हो जाते हैं। उसके बाद ही हमें अंदर उस ज्योति के दर्शन होते हैं।

जब संत महात्मा नाम की बख्शीश देते हैं तो आत्मा को दान देते हैं। आत्मा का दान ही नामदान है।

नामदान के समय कई प्रेमियों को अनुभव हो जाता है, कईयों को नहीं भी होता है।

जब गुरु के आगे बैठ कर हम भजन सिमरन करते हैं तो दर्शनों के साथ कुछ पाप कट जाते हैं। कुछ सिमरन के साथ कट जाते हैं। प्यार के साथ हम जितनी भी कोशिश करेंगे, तो कइयों को जल्दी या कुछ को बाद में, पर दर्शन सब को हो जाते हैं।

यह तो हमने खुद अपने मन के अंदर विचार करना है कि हम कितना उस परमात्मा के साथ प्यार करते हैं।

जितना हमें विश्वास होगा उतना ही हमारे अंदर उस परमात्मा के लिए प्यार पैदा हो जायेगा।

"तेरे हुक्म दी करां उड़ीक, सतगुरु हुक्म करो"।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं कि प्यारयो भजन करो। इससे अपना जो फैला हुआ ख्याल है, जो गंदा ख्याल है, वह पवित्र हो जाएगा और साफ़ हो जायेगा। फिर हमें अंदर ज्योति के दर्शन हो जायेंगे।

यह तो अपने विचार की बात है। अगर विचार सही हैं, खाना-पीना सही है, अपनी कमाई भी सही है, तो सारे काम ठीक हो जाते हैं। फिर सिमरन अच्छा बन जाता है।

अजायब सिंह महाराज जी बताते होते थे कि उन्होंने सिर्फ दाल-फुलका ही खाया है। जिसके साथ ख्याल पवित्र, मन पवित्र और तन भी पवित्र।

किरपाल महाराज भी कहते थे उन्होंने कि सिर्फ दाल-फुलका ही खाया। मैंने भी अपने सतगुरु की दया से दाल-फुलका ही खाया है।

इस लिए शराबी, कबाबी का मन तो वैसे ही शांत नहीं होता है, तो वह नाम किस तरह जपेगा।

प्यारयो, इस तरह है कि जितने भी पाप हुए हैं, वह नशे से और बुरी संगति के कारण हुए हैं।

प्यारयो, यह जो शरीर है, यह पचास-सौ साल के लिए है, सिर्फ इतनी ही इसकी उम्र है। लेकिन जो वह ज्योति है, वह सदा के लिए कायम रहती है। वही गुरु है, वही नाम है, और हमारे पाप काटने वाली चीज़ है।

परमात्मा ने सारी सृष्टि की रचना की है।

हमारा शरीर उतने समय तक ख़ूबसूरत है, अच्छा है, जितना समय इसमें आत्मा है।

हमारी मौत परमात्मा के हाथ में है।

जो परमात्मा चाहता है वैसा ही होता है। उसके हुक्म से ही होता है।

"आई है इक जोत निराली, आपे तारे ते आपे तारण वाली।"

वह ज्योति ही जीवों को लेकर आती है, और नाम जपवाती है।

जो शब्द गुरु है, वही परमात्मा है।

वह दूर और पास से आत्माओं को इकट्ठा करके नाम जपवाता है।

"नाम जपा सुख पाया, जिसने नाम जपा।"

कर्म क्या हैं और आत्मा इनके जाल से कैसे मुक्त होती है?

सतगुरु अजायब सिंह जी महाराज कहते हैं, "चढ़े चेत हर चेत प्राणी, बिन सिमरन पछतावेंगा।"

महाराज जी चेतावनी देते हैं कि ना तो कोई गुरु मिला, ना कोई सत्संग मिला, ना नाम मिला, और ना ही हम सत्संग में गए, तो हम कहां जायेंगे? हम कर्मों के जाल में फंसे हुए हैं।

उस दयालु ने दया की और अपना नाम दिया। अपना सिमरन दे के अपने में मिलाया और अपने जैसा बनाया।

कबीर साहब कहते हैं, "कीट क्या जाने भृंग को, गुरु कर ले आप समान"।

गुरु परमात्मा है। गुरु तो गुरु ही बनाना चाहता है। परमात्मा कुल मालिक, करण-कारण है। जब वह दया करता है, तो खुद मानस-जामा धार कर इस संसार में आता है।

उस दयालु को दया आई, तो उसने अपना नामदान दे के अपने में मिला लिया। उस दयालु ने दया की वरना हम तो इस भवसागर में बहते जा रहे थे।

अगर सतगुरु अजायब सिंह दया नहीं करते, तो पता नहीं अपना जन्म घास-फूस, पशु, पक्षी या किसी और जून में हो जाना था।

उसने ना तो हमारी बोली बदलवाई और ना ही पहनावा बदलवाया। सतगुरु ने कहा कि अपनी बोली बोलो, अपना पहनावा पहनो, अपने-अपने धर्म और जात में रहो, यह जो शिक्षा मैं दे रहा हूँ, यह तो शब्द-नाम की है। यह शरीर से अलग है, और अपना शरीर भी रखो।

गुरु के बिना नामदान नहीं मिलता, और मुक्ति नाम में है।

इंसान से नीचे की जूनियों पर अगर हम विचार करें, जैसे ऊंट है, उस पर भार लादा हुआ है, और वह तंग है। तांगे में घोड़ा जोड़ा हुआ है, तांगे में सवारी बहुत बैठी हैं और उसको चलाने वाला चाबुक मारता है, गिर कर भी उस बोझ को उठाता है, वह कितना दुखी है। इसी तरह बैल है, किसान जमींदार उसे पूरा दिन खेतों में इस्तेमाल करता है, और अगर वह गिर जाये, तो लोहे की तीखी कील वाले डंडे से उसको मार कर खड़ा कर लेता है, वह भी बेचारा बहुत दुखी है।

गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैं, "नानक दुखिया सब संसार"।

जहां मन माया का राज है, प्यारयो, वहां कहां सुख है। जहां भगवान है, सुख वहां है।

गुरबाणी कहती है, सारी दुनिया दुखी है, लेकिन **जो नाम के साथ लग जाता है, वह सुखी हो जाता है**। या तो वह परमात्मा सुखी है, और या जो उसका नाम जपता है।

कबीर साहब कहते हैं, कि अगर हम दुनिया का सिमरन करते हैं, तो दुखी हैं। यदि हम उस परमात्मा का सिमरन करते हैं, तो हमें सारे सुख मिल जाते हैं।

विचार करने योग्य बात है, कि एक सिमरन में दुःख है, और दूसरे में सुख है।

गुरु का या परमात्मा का अगर हम सिमरन करते हैं, तो कर्म जाल से मुक्त हो जाते हैं, यह काटे जाते हैं। सदा के लिए हमें अमर सुख मिल जाता है।

अगर संसार का सिमरन करेंगे तो दुखों को बुलावा देंगे, चौरासी में चले जायेंगे, जन्म-मरण में चले जायेंगे।

महाराज जी कहते थे कि प्यारयो, चाहे अपनी उम्र एक हजार साल हो जाये, या एक लाख साल हो जाए, या इससे भी ज्यादा हो जाये, मगर हम कर्मों के जाल से बच नहीं सकते हैं। अगर मालिक दया करके अपने सत्संग में बुलाए और अपने निज-धाम का भेद बताये, सचखंड का राह बताये, तब पता चलता है कि हम बहे जा रहे हैं। सचखंड अगम देश है, सुखों का देश है। वहां दुःख क्लेश नहीं हैं।

काल हमें भटका देता है।

प्यारयो, सब के अंदर एक ही भगवान है। **काल के भटकाए जब हम एक दूसरे को मंदा बोलते हैं,** भला बुरा बोलते हैं, तो वह भगवान को ही कह रहे होते हैं।

सत्संग में आ कर ही हमें अपने मन की गलतियों का पता लगता है। यह मन हम से पहले गलती करवा देता है, और फिर हमें कह भी देता है, कि मैंने यह गलती तुम से करवायी है।

हम इस इंसानी जीवन पर विचार करें - कोई बीमारी करके दुखी है, कोई बेरोजगारी करके दुखी है, किसी को कर्जा लेने का दुःख है और किसी को कर्जा देने का दुःख है। किसी की पत्नी रूठ जाती है तो दुख है। किसी का पति नाराज है तो वह दुखी है।

सतगुरु अजायब सिंह जी कहते थे कि मैंने सारे संसार को अच्छी तरह से देखा है, सब एक फोड़े की तरह भरे हुए हैं, और दुखी हैं।

नाम के सहारे ही हम कष्टों को सह सकते हैं।

गुरु भक्ति तो भरोसे पर है।

यह जीवन तो कर्मों का खेत है। आज जो हमें मिला हुआ है वह हमें अपना किया हुआ ही मिला है। हमारे मन का किया हुआ ही मिला है।

यदि दुख बुरे कर्मों के कारण होता है, तो क्यों ना ऐसा सोच कर विचार बना लें कि कोई मंदा कर्म ही नहीं करना है।

एक सत्संगी इस जीवन के बारे में विचार करता है कि मन का किया हुआ कर्म ही मुझे मिला हुआ है।

गुरबाणी में भी ऐसा आता है, "दुख में सुख मनावें"।

हमारे मन के किये हुए कर्म प्रालब्ध बन गए हैं, और हमें ये भुगतने पड़ेंगे।

कर्मकांड में दुःख है।

कर्म तीन प्रकार के होते हैं: क्रियमान, प्रालब्ध, और संचित।

सतगुरु जब नाम देता है तो उस समय सभी संचित और क्रियमान कर्मों को खत्म कर देता है। केवल प्रालब्ध कर्म ही रह जाते हैं। उस में से भी खास ख़ास ही भुगतने पड़ते हैं। अगर १०० किलो का वजन है, तो गुरु उसमें से दो किलो ही उठवाता है कि इतने से तू भुगत ले।

हमारा शरीर प्रालब्ध करके है। अगर प्रालब्ध कर्म गुरु खत्म कर दे, तो हमें यह शरीर उसी समय छोड़ना पड़ जाए। इसलिए, शरीर करके हमें थोड़े-बहुत प्रालब्ध कर्म भोगने पड़ते हैं।

महाराज जी भी कहते हैं, "**नाम भुलावें, बहु दुःख पावें, पुठी खल लहावेंगा**"।

सतगुरु अजायब सिंह कुल मालिक है, बख्शने वाला है। तू दाता है, हम भिखारी हैं। तू बख्शने वाला दीन-दयाल है। अगर तू मेरे कर्मों का लेखा-जोखा करे तो मैं माफ़ी का हकदार ही नहीं। तू दयालु है, दया कर और कर्म ना देख।

जब नामदान सतगुरु देता है तो उस समय जीव बख्शा जाता है।

हमारी भूलें माफ कर दे। हम भूल कर गलत रास्ते पर चले गए हैं। तू कृपालु है कृपा कर, मेहर कर।

"तेरी आत्मा तड़फ रही है, दर्शन को प्रभु तरस रही है।"

महाराज जी कहते हैं, "ऐ मन पापी ओगुण हारे को, तू मोड़ कदो घर लयावेंगा"।

यह मन पापी है, इसे मोड़ कर कब घर लेकर आएगा?

यह तो जो गुरु वाले हैं, उन्हीं को पता लगता है कि मन हमसे कितने पाप करवाता है।

अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि सत्संग में बैठा हुआ भी यह सोचता रहता है, किसी की निंदा या चुगली करता रहता है।

अगर हम कोई गलती करते हैं तो हमें सतगुरु से प्रार्थना करनी चाहिए। सतगुरु दयालु है, और वह हमें माफ कर सकते हैं।

हे सतगुरु मैं एक निमाणी आत्मा हूं, कृपया मुझे माफ कर दो।

अगर हम अपनी गलती मानते हैं, और इसके लिए पश्चाताप करते हैं, तो सतगुरु हमें इसका इनाम देता है।

कबीर साहब ने कहा है, "तेर मेर की यह जेवड़ी, बट बांटया संसार"।

तेरी-मेरी की रस्सी के साथ संसार को बांध दिया है।

कबीर साहब ने कहा है कि बकरा मैं-मैं करता है तो छुरी तैयार हो जाती है।

यह जो संसार है, यह ना तेरी है और ना मेरी। **यह सारी संसार तो उस परमात्मा की है।**

सतगुरु संत अजायब सिंह महाराज जी के दरबार में माफ़ी है।

महाराज जी भी कहते थे कि **काल देश में क़ानून है।** अगर किसी ने अपराध किया है तो वह सजा भुगतता है।

संत यहां माफ़ी देकर आत्मा को सचखंड ले जाते हैं। माफ़ी के बिना लेकर नहीं जा सकते हैं।

महाराज जी भी कहते हैं, "चढ़े चेत हर चेत प्राणी, बिन सिमरन पछतायेगा"।

मन के पाप किए हुए हैं। इसको मौका मिला है गुरु भक्ति करने का, और अपने पाप माफ करवाने का।

गुरु नाम शब्द है, वह इसे बख्श देता है।

यह सतगुरु अजायब सिंह की मौज है। सतगुरु अजायब आया है।

उस परमात्मा की इच्छा में सतगुरु अजायब आए।

"बख्शो बख़शणहार पिया जी, बख्शो दीन दयाल पिया।"

सतगुरु अजायब सिंह जी महाराज ने लिखा है, "कोई ना किसे दा बेली, दुनिया मतलब दी"।

कबीर साहब का कहना है, "घर की त्रिया संग लागि रहे, जब हंस तजि काया, प्रेत-प्रेत कर भागी रे"।

हमारे पीछे किये कर्म ही हैं जो हमारे दुखों का कारण बनते हैं। यह हमारे पिछले बुरे कर्मों करके है।

जब कोई बूढ़ा आदमी मर जाता है तब यह आशा या उम्मीद नहीं रहती है कि अब हमें कुछ देगा।

सारी दुनिया को संत-सतगुरु ने देखा होता है, कि यह अपने मतलब की है।

हमारे मन का प्यार दुनिया से लगा हुआ है। अब दुनिया में से प्यार निकाल कर उस परमात्मा के साथ लगाना है।

सतगुरु अजायब सिंह जी महाराज कहते हैं, "झूठी दुनिया च फसया दिल मेरा, कोई आ के बंधन तोड़ गया, लख वारी ओ जी सदके, जेड़ा सुरत शब्द नू जोड़ गया"।

यहां इस दुनिया में हम सब मोह-माया में फंसे हुए हैं। अगर हमें कोई ऐसा संत महात्मा मिल जाए, या भगत मिल जाए, जो हमें उस परमात्मा के साथ जोड़ दे, या उससे मिलवा दे, या अपने घर सचखंड ले जाए, तो उसका शुक्र है, शुक्र है।

हमारा मन अपने घर को भूल गया है। मन अपना खान पान भी भूल गया है। अगर हमें कोई ऐसा महात्मा मिल जाए, जो हमारे मन को उसके घर तक पहुंच दे, तो हमें उसका धन्यवाद करना चाहिए। जब मन अपने घर ब्रह्म में था, तो यह शांत था।

नौ द्वारों से निकल कर मन बाहरमुखी हो गया है और भटक रहा है। आंख, कान, जीभ, नाक, और नीचे दो इन्द्रियों के सुराख हैं, जो बाहर की तरफ खुलते हैं।

मन अपने घर से बाहर भूल गया है, तो जो भी चोर है, इसे पकड़ लेता है। कभी काम पकड़ लेता है, कभी क्रोध, और इसे तबाह कर देते हैं।

मन के अंदर कल्पनाएं उठती हैं। हर चीज के लिए कलपता है। यह कल्पना शांत तब होती है **जब कोई पूरा गुरु शब्द भेदी मिल जाए, और नाम शब्द का दान दे दे**। इसके बाद मन नाम की कमाई करे, और यह चोर घर से बाहर निकल जाएं, तब जाकर मन के अंदर शांति आएगी। यह शांत हो जायेगा।

ये चोर हर जीव को ख़त्म कर देते हैं। ऐसा देख कर ही सतगुरु दयाल होता है। जब जीव को चोरों ने पकड़ा होता है, उस समय इसका कोई हमदर्द आ जाये, गुरु आ जाए और इसे छुड़ा दे, तो हम गुरु का शुक्राना करें।

सतगुरु अजायब सिंह जी महाराज का कहना है कि हम अकेले हैं और शादी की इच्छा रखते हैं, कि हमें पत्नी मिल जाये, और पत्नी मिल भी जाती है। लड़की कहती है मुझे पति मिल जाये, और उसे मिल जाता है। शादी के बाद बच्चा हो जाता है, और अगर वह कहे-कार नहीं है, कहना नहीं मानता है, तो हमने अपना दुःख खुद बना लिया है।

जीव परमात्मा को कब भूल जाता है?

सतगुरु अजायब सिंह जी महाराज कहते थे कि प्यारयो, जब कोई बूढ़ा बुजुर्ग मर जाता है तो उस समय जीव परमात्मा को भूल जाता है। हमें अगर ख़ुशी प्राप्त होती है, तो उस समय हम परमात्मा को भूल जाते हैं। जैसे बच्चे का जन्म होता है, या शादी होती है, उस समय हम परमात्मा को भूल जाते हैं।

महाराज जी कहते हैं, जीव जवान हो जाता है, और इसे परमात्मा याद नहीं रहता है। "मुछां फुटियां रंग दमक मारी, मारे विच असमान उडारी।"

कबीर साहब कहते हैं, "चार पहर खाये और चार पहर सोये"।

सतगुरु अजायब सिंह जी का कहना है, "अपणा घर हुण होया बेगाना"।

अपना शरीर एक किराए का मकान है। इस कराये के मकान को जब खाली करवा लेना है तो अपना क्या है? अपना कुछ भी नहीं है।

"नाम ध्यायेंगा, ते सदा सुख फल पायेंगा।"

नाम अमर है, मरता नहीं है। नाम के साथ लग कर ही हम अमर होंगे।

राम नाम ही सच है, बाकी सारा झूठ है।

झूठ वह है जिसने सदा रहना नहीं है, फनाह हो जाना है। जिसने खत्म ही हो जाना है, तो फिर इसके साथ प्यार लगा कर कोई कहां जायेगा? जहां मोह है, प्यार है, वहां ही जीव जन्मेगा, मरेगा।

कबीर साहब कहते हैं कि **राम-राम कहने से राम नहीं मिलता है**। वहां जाकर राम को मिलना है जहां वह राम है। पानी-पानी कहने से कौन सा प्यास बुझती है? पानी पीने से ही प्यास बुझती है। अगर हम रोटी-रोटी कहें, तो कौन सा भूख मिटती है? रोटी को खाने से ही भूख मिटती है।

राम हमारे घट में बैठा हुआ है। हमारी दो आंखों से ऊपर, अंदर गुप्त रूप में है। वह अंदर भी है और बाहर भी। उसने अपने मिलने का रास्ता अंदर खुद बनाया है, और अंदर ही मिलेगा।

अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं कि प्यारयो, हमारे शरीर के अंदर उसने रास्ता बनाया है। छः फुट की पक्की सड़क है, और उस सड़क पर हम अगर चलें तो वह खुद अपना दरवाजा खोल देगा।

हमारा प्यार दुनिया में लगा हुआ है, तो हम दुनिया में आ रहे हैं। दुनिया में से प्यार निकाल कर अगर हम परमात्मा के साथ प्यार लगा दें, तो वह दरवाजा खोल देता है।

महाराज जी भी कहते हैं कि जब घर में मान-बड़ाई हो जाती है, तो मालिक याद ही नहीं रहता है।

माँ के पेट में वायदा करके आया था कि मुझे बाहर निकाल, मैं तेरा गुणगान करूँगा, तेरा भजन सिमरन करूंगा।

महाराज जी भी कहते हैं, "बंदा नाम जपने नूं आया, माया ने जंजाल पा लया"।

महाराज जी भी कहते हैं कि माया खाई, माया पी, और माया में ही रहे, तो सपना किसका आएगा? माया का ही आएगा।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "कर ठगियाँ घर नूं लयावे, धियां पुत्रां नूं आन खवावें, तैथों पुछना हिसाब, किवें देवेंगे जवाब, तेरी कदर ना पैनी ढेली, दुनिया मतलब दी"।

बूढ़ों के लिए वृद्धाश्रम बन गए हैं। परिवार कहता है कि बूढ़ों को वृद्धाश्रम छोड़ आओ, अब यह काम के नहीं रहे हैं।

ना कभी सत्संग सुना, और ना ही किसी संत महात्मा के पास गए। विचार भी कभी नहीं बदला, नाम भी नहीं लिया, तो कैसे बचाव होगा?

महाराज जी ने भी इस बात पर बहुत जोर दिया कि बूढ़ों को वृद्धाश्रम नहीं छोड़ कर आओ। जो बेटे बेटियां हैं, वे उन्हें संभालें और सेवा करें।

जब कोई बूढ़ा हो जाता है तो कौन संभाल करता है? "दुनिया मतलब दी।"

अगर जवानी में नाम मिल जाता है तो नाम जपना आसान होता है। अब बूढ़े हो गए हैं। अगर पहले नाम नहीं मिला और अब नाम मिल भी जाए, तो कौन सा नाम जपा जाएगा।

नाम जब किसी बूढ़े को या जवान को मिल जाता है तो वह गुरु के घर में जन्म ले लेता है।

वैसे तो जब कोई जीव सत्संग में आ जाता है तो उसकी संभाल होती है। गुरु उसे या तो नाम दान देता है, या अच्छे घर में जन्म देकर सतगुरु उसे नाम दान देगा।

सत्संग में आया जीव आशा लेकर आता है और वह खाली नहीं जाता है। कुछ ना कुछ उसे मिलता है। **परमात्मा सत्संग में आने का इनाम जरूर देता है।**

सत्संग उस परमात्मा की है, सत्पुरुष की है। वाहेगुरु, अकाल-पुरख की संगत है, जिसे काल नहीं खाता।

सत्संग परमात्मा की तरफ से होता है। भगत परमात्मा के बेटे होते हैं। उनसे **जैसा परमात्मा बुलवाता है, वैसा बोल देते हैं**। वे अपनी तरफ से या अपनी मान बड़ाई के लिए नहीं करते हैं। सिर्फ परमात्मा की बड़ाई करते हैं।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "दुनिया दे दुखड़े सिर ते उठावे, विछड़या मालिक फेर मिलावे"।

जब सतगुरु नाम दान की जीव को बख्शीश करते हैं तो उसके पाप ले लेते हैं।

जीव के पाप लेकर ही उसे मालिक के दरबार में भेजते हैं।

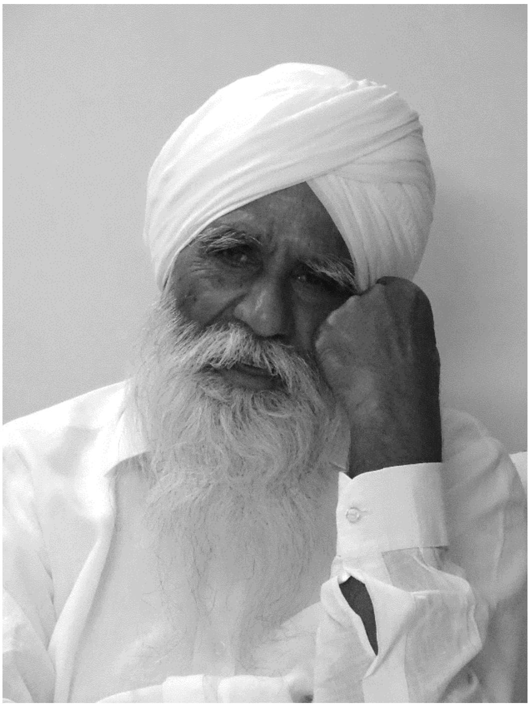

आत्मा के सारे पाप कौन माफ और खत्म करता है?

जब उस कुल मालिक, करण-कारण प्रभु को दया आई, तो इंसान का जामा धारण किया। सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी भी कहते हैं, "बंदा बन के आया, रब बंदा बन के आया, आ के जग जगाया"। उसने नाम दिया, और नाम जपवाया।

जब आत्मा उस प्रभु परमात्मा के आगे पुकार करती है तो वह अपने प्यारे बेटे को भेजता है।

जीव जब सतगुरु के दरवाजे पर आ जाता है तो सतगुरु कहता है कि हे प्रभु, यह जीव अपने आप को बख्शवाने के लिए आया है, तू इसे बख्श दे।

महाराज जी कहते हैं कि गुरु के बिना नाम नहीं मिलता, और नाम के बिना मुक्ति।

गुरु का ध्यान परमात्मा में है, और सेवक का ध्यान भी वह परमात्मा में लगाता है।

गुरबाणी का फरमान है कि जब जीव बख्शा जाता है और उसे नाम मिल जाता है, तो पिछले सारे पाप खत्म हो जाते हैं।

गुरबाणी में आता है कि हमारे जन्मों जन्मों के भैड़े, खोटे और बुरे पाप किये होते हैं। उनको इस दुनिया में अगर कोई लेने वाला है, तो वह गुरु ही है।

नामदान के समय गुरु हमारे संचित और क्रियमान कर्म खत्म कर देता है। प्रालब्ध हमारे शरीर के साथ है। उसमें से भी ख़ास-ख़ास ही भुगतने पड़ते हैं। बाकी के कर्म गुरु दया करके, दर्शन देकर, और सिमरन करवा कर खत्म कर देता है।

महाराज जी कहते हैं कि हे सतगुरु, तेरी आस पर सारी जिंदगी निभाई है, और कोई दूसरी आस नहीं रखी है।

अगर हमें गुरु नहीं मिला, नाम नहीं मिला, सत्संग नहीं मिला तो कहां जायेंगे? हमारी जहां आशा है, वहीं जन्म हो जायेगा।

उस प्रभु-परमात्मा को जब आत्मा पुकारती है, तो वह अपने बेटे को भेजता है। गुरबाणी का फरमान है कि जिन रूहों को प्रभु परमात्मा मिलना है, वह पहले से ही तय होता है।

महाराज जी कहते हैं, "दुनिया दे दुखड़े सिर ते उठावे, विछड़या मालिक फेर मिलावे"।

पिता, माता, भाई, बहन या परिवार का कोई और सदस्य किसी के दुःख नहीं ले सकता है। क्योंकि वे आप ही पापों के नीचे दबे हुए हैं। दूसरों के कर्म वे कैसे ले सकते हैं?

महाराज जी एक बार नाम देने जा रहे थे, तो एक चौधरी ने पूछा कि सुना है संत जीवित मरना सिखाते हैं। महाराज जी ने जवाब दिया, हाँ मैं जीवित मरना ही सिखाता हूँ। महाराज जी ने उसे कहा कि तुम्हें अगर सीखना है तो आओ, लेकिन उसने कहा, मैं तो सिर्फ पूछ ही रहा था। अब जीव किसके भाग लेकर आये।

जब गुरु नाम दान देता है तो वह हमें जीवित मरना ही सिखाता है। हम बैठ कर गुरु का ध्यान लगाते हैं, गुरु शब्द रूप है, और चौथे लोक में से आता है।

अगर हमें नाम नहीं मिला, गुरु नहीं मिला, तो ध्यान किसका लगाएंगे? दुनिया का जो सामान या चीज़ बनी हुई हैं, यह ढह जानी हैं, खत्म हो जानी हैं। इनका ध्यान लगाकर जीव कहां जाएगा?

गुरु बिना जीव जमता है, मरता है। जब गुरु मिल जाता है, तो वह हमारे कर्मों का कागज फाड़ देता है। धर्मराज का कोई लेखा नहीं रहता है।

जब लेखा ही नहीं रहा, तो गुरु ही अंत में आएगा, और शब्द में आत्मा समा जाएगी।

जैसे समुद्र का पानी है, और बूँद अकेली है। इसी तरह परमात्मा और आत्मा हैं। अंत में आत्मा परमात्मा में समा जाती है।

महाराज जी कहते थे कि सतगुरु धन है। मैं कितने युगों से बिछड़ी तेरी आत्मा हूँ। अब तेरा साथ मिल गया है, और सब सुख प्राप्त हो गए हैं।

गुरु मिल गया, नाम मिल गया, सत्संग मिल गया, तो अब हमारा जनम मरण समाप्त हो गया है।

कोई अनंत सुख कैसे पाता है?

किरपाल सिंह जी महाराज जब सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी के आश्रम में पहली बार आए, तो बाबाजी ने उनसे पूछा कि आप इतनी दूर चलकर किस लिए आए हैं?

संत किरपाल सिंह जी ने जवाब दिया कि मैं यहां तुम्हारा दिल और दिमाग खाली देख कर आया हूं। मतलब कि तुम्हारे दिल में मेरे लिए जगह है। उनका दिल और दिमाग गुरु के लिए पहले से ही खाली था।

अपने पिछले जन्मों में सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी ने उस सत्पुरुष की बहुत भक्ति की थी।

उस ईश्वर के प्यारे दुनिया को अपने दिल में नहीं बसाते हैं। वे अपने दिल में सिर्फ उस परमात्मा को बसाते हैं।

संत किरपाल सिंह जी ने कहा कि हमने अपना मन, कुछ पत्नी को, कुछ बच्चों को, कुछ यारों दोस्तों को, और कुछ दुनिया की शक्लों में बांट दिया है। यह अब हमारा है ही नहीं तो इसे हम उस परमात्मा को कैसे दे सकते हैं?

यह सब उस दाते की मौज है।

"जे हो जाए तेरी मौज दातया, दाणे भुजे होए कल्लर उगावें,

जे हो जाए तेरी मौज दातया, झोलियाँ भरें तूं पल विच खाली।"

कबीर साहब कहते हैं कि सारी दुनिया ही दुखी है।

अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि मुझे सारी दुनिया को मिलने का मौका मिला है, चाहे वह झोंपड़ी में रह रहा प्राणी है, या महलों में रहने वाला है। हर कोई दुनियावी बातें करता है। सतगुरु के दरबार में मन की आस तो पूरी हो जाती है, लेकिन हम दुःख पाते हैं। जैसे किसी लड़की ने पति मांग लिया और उसे मिल भी गया, लेकिन अगर वह कहेकार नहीं तो दुःख हो गया है।

हमने या तो सत्संग सुना नहीं है, और अगर सुना है, तो उसे मन पर नहीं ढाला है। किसी की पत्नी रूठी है, तो किसी का पति रूठा हुआ है। कोई माया से दुखी है, और किसी के पास माया नहीं है तो वह भी दुखी है। अगर लड़के ने पत्नी मांग ली और उसे मिल भी गयी हो, अगर वह उसके कहेकार नहीं तो दुःख खरीद लिया है।

गुरबाणी में आता है, "बिन तुध होर जे मंगणा सिर दुखां दे दुःख, दे नाम संतोखिआ उतरे मन की भुख"।

अजायब सिंह महाराज जी भी कहते थे कि माया खायी, माया पी, और माया में रहे, तो सपने भी माया के ही आएंगे।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "माया नागनी बड़ी भयानक, जाए अपने खावे, डाडा जाल बिछाया इसने, कोई गुरमुख ही बच जावे"।

"सावन दा नाम सच्चा जिंदगी बनोंदा ऐ, जन्मा दी मैल लग्गी पल विच लौंदा ऐ"।

नाम सभी बीमारियों की दवा है। हम चाहे कितने भी पापी हैं, हमें कितने भी रोग हैं, लेकिन नाम ही वह दवाई है जो इन रोगों को खत्म करती है।

हम मन के कहे अनुसार भक्ति करते हैं। बियाबान में चले जाते हैं, या समुंदर की तह में, या धर्म-स्थान पर छुपकर हम भक्ति करते हैं। लेकिन हमने किसकी भक्ति की? हमने मन की भक्ति की, और जब भी मन का दांव लगा तो इसने गिरा दिया।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि सबसे पहले आप मन को इसके घर पहुंचाओ।

मन के काबू में आत्मा है। मन इंद्रियों के काबू में है। बुद्धि भी मन के बस में हो गयी है। इतना विरोध है तो ध्यान किस तरह लगे? यह लग ही नहीं सकता है।

आत्मा और मन स्थूल गाँठ से बंधे हैं, हमने पहले उस गांठ को खोलना है।

इसके लिए भजन सिमरन करना बहुत जरूरी है।

मन कोई छोटी ताकत नहीं है। हमें मन को बस में करना है। हठकर्म करने से इसे कोई काबू नहीं कर सकता है। सब का मालिक शब्द है, और **शब्द-धुन से मन काबू आ जाता है**। जिसने इसे बनाया है, वही इसे काबू कर सकता है। इसका कोई और उपाय नहीं है। किसी भी तरह की दवाई या कर्म नहीं है जो मन को बस में कर सके। हमने चाहे काफी साल जप-तप भी किया है, यह ना तो जप से काबू आता है, और ना ही किसी तरह के तप से काबू आता है।

कबीर साहब कहते हैं, "हे मुसाफिर जागते रहना, नगर में चोर आते हैं।"

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि सोते हुए किसी ने भगवान को कभी नहीं पाया। काल के डर से ही सब ने भक्ति की है।

अगर हमारा प्यार काल की तरफ जाएगा तो पहले ही काफी जन्म हो चुके हैं। अगर और जन्म ले लेंगे तो क्या अच्छा हो जायेगा? अगर यह काल की तरफ लग गया तो इंसान की जून से नीचे की जितनी जूनियां हैं, जैसे सांप, कौआ, गधे, बिल्ली, या घास-फूस है, या बाकी और चौरासी लाख योनियों में अगर जन्म लेंगे और मरेंगे तो दुःख ही सहेंगे।

अगर दयाल की तरफ झुकाव और प्यार होगा तो हमेशा के लिए हमें इस जन्म और मरण के दुःख से छुटकारा मिल जाएगा। हमेशा के लिए हमें अमर सुख मिल जाएगा। हमें कभी भी दुःख नहीं आएगा।

सतगुरु अजायब सिंह जी महाराज कहते हैं, "वड्डा काल दा पसारा, दया करके बचा लवो"।

प्रभु-परमात्मा आत्मा पर दया मेहर करता है। आत्मा परमात्मा की अंश है।

आत्मा एक चेतन ताकत है। आत्मा ने जड़ चीजों के साथ प्यार डाल लिया है।

आत्मा को जब कोई संत या साधु मिलता है तो इसे चेतावनी देता है, कि तूने जड़ के साथ प्यार डाल लिया है। महा-चेतन शक्ति, महा-चेतन समुंदर जो है, वह परमात्मा है।

परमात्मा भी चाहता है कि मेरी आत्माएं मुझे मिलें। आत्मा भी चाहती है कि मुझे मेरा परमात्मा मिल जाए, और मुझे जन्म-मरण से छुटकारा मिल जाए। आत्मा का प्यार परमात्मा से है, क्योंकि अंशो-अंशी प्यार होता है।

अब आत्मा मन के काबू में आई हुई है, और मन आत्मा को भजन नहीं करने देता है। जो प्रेमी नाम, सत्संग, और सतगुरु को समझते हैं, वे भजन सिमरन में लग जाते हैं।

हमें अपना बचाव खुद करना है। महाराज जी भी कहते थे कि भजन करना किसी पर अहसान करना नहीं है। भजन सिमरन नहीं करने पर हम अपना गला खुद चाकू से काट रहे होते हैं।

कबीर साहब कहते हैं, "गुरु विचारा क्या करे, जे सिखण में चूक"?

सत्संग करने का मतलब है, सत का संग, गुरु का संग करना और सारी इच्छाओं को छोड़ना है।

सतगुरु अजायब सिंह जी महाराज कहते हैं, "तू हैं अलख अनामी, तेरा नूरी सरूप है, देखां मैं जिधर दिसदा, तेरा ही रूप है"।

सतगुरु अजायब सिंह जी महाराज कहते थे कि जो आत्मा गुरु की मौजूदगी में प्यार से भजन सिमरन करती है, उसे कुछ अनुभव होता है। वह प्रकाश के साथ-साथ जो अंदर अनहद धुन बज रही है, उसको भी सुन लेती है।

जिन प्रेमियों को अनुभव होता है, वे किसी को ना बताएं, मगर गुरु के साथ अपना अनुभव साँझा कर सकते हैं। यह तो हमारे मन की बात है, अगर मन साफ़ और पवित्र है, तो अंदर दर्शन हो सकते हैं।

सतगुरु अजायब सिंह जी महाराज कहते हैं, "साडा ना कोई वे लोको, असीं ना जहान दे, सावन किरपाल बाजों, किसे नूं नहीं जाणदे"।

"छडके जहान सारा, तैनूं ही पुकारया।"

सिर्फ भजन सिमरन करने से ही यह मन इस संसार को और इस संसार की शक्लों को छोड़ सकता है।

हम सुबह तीन बजे उठें, और दो-तीन घंटे एक आसन पर बैठ कर, प्यार से भजन सिमरन करें तो सतगुरु जरूर दया करेगा। अगर हम गुरु के साथ प्यार करेंगे तो सतगुरु, जो शब्द है, सतगुरु अजायब सिंह है, वह जरूर दया करेगा।

कर्मकांड और नाम की कमाई क्या है?

संत सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "नाम जप बंदया, लाहा खट बंदया, बंदगी बिना होर सहारा ना"।

पहले जन्मों में हमने बंदगी करी, लेकिन गुरु नहीं मिला, नाम नहीं मिला। अब सत्पुरुष, सतगुरु दयालु अजायब ने दया की, तो पता लगा कि गुरु का नाम जपना चाहिए।

आत्मा का पति परमात्मा है। अगर हमने कर्मकाण्ड किए हैं, तो झोंपड़ी से निकल कर महलों में चले जायेंगे, हाथ में से झाड़ू निकल जायेगा और हुकूमत की बागडोर मिल जाएगी।

"साधु जे सुख लैणे सारे, तो नाम जप सतगुरु दा।"

उस दयालु ने दया की और ना घर-बार छुड़वाया, ना कोई जात बदलवाई, ना कोई बोली बदलवाई, और ना पहरावा बदलवाया। ना कोई धर्म ही बदलना पड़ा। इस इंसान के जामें में ही मिल गया, और हमारे शरीर के अंदर ही हमें मिल गया।

कबीर साहब ने कहा, "ना हींग लगी ना फिटकड़ी"। नाम जपने में कोई पैसा नहीं लगता।

कबीर साहब कहते हैं, कि हमें कैसे रहना चाहिए? हमें ऐसे रहना चाहिए, जैसे पानी में जलमुरगई रहती है। वह पानी में रहती है, वहीं खान पान करती है, लेकिन जब उडारी मारती है तो सूखे परों के साथ उड़ जाती है।

कबीर साहब कहते हैं, मकड़ी मोह के साथ अपना जाल बनाती है और उस जाल में फंस कर आप ही मर जाती है। पतंगे का आग के साथ प्यार है। जहां आग देखता है, उसमें जाकर खत्म हो जाता है।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "जो वी मन भेंट चढ़ौन्दा ऐ, ओह हाज़र रब्ब नूं पौंदा ऐ"।

गुरु नानक देव महाराज जी ने भी कहा है, कि अगर मुझे मिलने का चाव है तो शीश तली पर रख कर आओ।

कबीर साहब भी कहते हैं, "भक्ति मार्ग यों कहिये, ज्यों खंडे की धार। कामी क्रोधी लालची इनसे भगत ना होये, भक्ति करे कोई सूरमा, जात वर्ण कुल खोये"।

काम से आत्मा चढ़ाई नहीं कर पाती और गिर जाती है। सिमरन करके मन का हम ख्याल एकाग्र करते हैं, लेकिन जब क्रोध आता है, तो ख्याल फैल जाता है।

कबीर साहब कहते हैं कि लोभी आदमी भक्ति नहीं कर सकता।

महाराज जी कहते हैं, "रंग ते तमाशे कुछ दिनां लई रहणगे, किते होए कर्मा दे दुःख सहने पैणगे।"

हुज़ूर महाराज जी कहते थे कि मुझे उस किरपाल का हुक्म था कि सब से मिल। सबसे मिलने के बाद पता चलता था कि एक फोड़े की तरह भरे हुए हैं, मतलब की हर आदमी दुःख से भरा है।

हमारे कर्म किये हुए हैं। पति और पत्नी दो हैं, लेकिन किसी का पति रूठा हुआ है, तो किसी की पत्नी रूठी हुई है। किसी का बेटा रूठा है, तो किसी का बाप रूठा हुआ है।

कोई बेरोजगारी से दुखी है। किसी के पास माया बहुत ज्यादा है, और उसे गोली के बिना नींद नहीं आती है। तड़फता है सारी रात, क्योंकि माया की राखी करनी पड़ती है। कोई परिवार से दुखी है, तो कोई बीमारी से दुखी है। सब दुखी हैं।

गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैं कि ये कर्म हमारे मन के किये हुए हैं, तो हमें ही भुगतने पड़ते हैं।

किसी के यहां हमने जन्म लिया है, और किसी ने हमारे जन्म लिया है।

महाराज जी कहते हैं, "बुरे करमां दी सजा सोहण्यां, धक्के खांदा ऐ फिरदा, गुरु बिना कोई बात नहीं पुछ्दा, विछुड़ गयों कई चिर दा"।

मंदे कर्मों की वजह से किसी को हम दुःख देते हैं, और कोई हमें दुःख देता है। यह मंदे कर्मों की सजा ही है, प्यारयो।

गुरबाणी में आता है कि दुःख किसी को नहीं दीजिये, और इनके लिए किसी को दोष मत दो। दुःख जो है वह अपने कर्मों करके है। अगर दुःख दिया है, तो अपने आप ही आ जाता है। इसलिए ऐसा है प्यारयो, कि जो हमें किसी ने दुःख दिए हैं, तो वह भुगत लेने हैं, और आगे के लिए किसी को दुःख देना नहीं है।

कबीर साहब ने भी कहा है, "बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय, जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय"।

किसी की अगर निंदा या चुगली करते हैं, तो उसके पाप हमारे खाते में जुड़ जाते हैं, और हमारे पुण्य उसके खाते में चले जाते हैं। यही कुछ मिलता है निंदक को।

सावन सिंह जी महाराज ने अंधेर कोठड़ी में भजन-अभ्यास किया। उन्होंने सुखी रोटी खाकर सारी-सारी रात अभ्यास किया। हुजूर महाराज जी भी कहते थे कि प्यारयो, जिसने २०-३० साल अभ्यास किया है, और रात-दिन अभ्यास किया हुआ हो। आप उसके पास जाओ, उसके पास गुरु है।

कबीर साहब कहते हैं, "राम स्नेही संत हैं, संत स्नेही राम"।

भगत नाम का सन्देश देते हैं। उस सच्चे, पिता-परमात्मा का संदेश देते हैं, और उनका अपना कोई सन्देश नहीं होता है।

चौथी पातशाही गुरु राम दास जी कहते हैं, सब का परम-पिता, सब का राम, वह साझा राम है। उसका सन्देश भगत देते हैं।

"नाम तुम्हारा हिरदे वासे, सन्तन का संग पावो।"

नाम एक चाबी है। नाम की चाबी जिस किसी भी ताले को लगा देंगे तो वह खुल जायेगा। उस भगवान ने संतों को नाम की चाबी देकर भेजा है।

अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि संत भवसागर के उस पार से आते हैं। उनके पास नाम की चाबी है। नाम का जहाज है।

नाम जहाज है, और जो पक्के मन से इस पर सवार हो जाते हैं, उनको संत इस भवसागर के पार सुरक्षित लंघा देते हैं। महाराज जी भी कहते हैं कि बिना बंदगी कोई चारा नहीं है।

दुनिया की आस दिल से ही निकाल देनी है। दुनिया क्या देगी? दुनिया कुछ भी नहीं देती है। अपने कर्मों का फैसला खुद ही हो जाता है। अपनी दसां-नोहां की, मेहनत की कमाई करी हुई ही इंसान को मिलती है। झूठ और लालच नहीं टिक पाते हैं।

भगतों ने सच को देखा होता है, शब्द को देखा होता है, नाम को देखा होता है, और गुरु को देखा होता है। इनको देख कर ही उनका संदेश देते हैं।

भगत के अंदर वह परमात्मा बैठ कर ही नाम देता है।

हमारे बस में कोई भी चीज नहीं है। सब कुछ नाम के बस है।

"जिसने नाम ध्याया है, उसने सर्व सुख पाया है।"

महाराज जी कहते हैं कि प्यारयो, हम उस परमात्मा को सच्चे मन से याद करें। हमारी सच्ची-सुच्ची तड़फ उस परमात्मा को मिलने के लिए हो।

अगर एक प्रेमी भजन करता है तो उसे देख कर दूसरा भी करता है।

फरीद साहब कहते हैं कि एक खरबूजे को देख कर दूजा रंग पकड़ जाता है।

फरीद साहब लिखते हैं, "काले मेंडे कपड़े, काला मेरा वेश, अवगुण भरया मैं फिरां, ते लोक आखण दरवेश"।

महाराज जी कहते हैं, "नाम जप बंदया, लाहा खट बंदया, बंदगी बिना होर सहारा ना, बिना बंदगी कोई चारा ना"।

प्यारयो, इस समय यह काम आसान है।

जो शरीर मिला है, यह ५०-१०० साल कराये का मकान है। लेकिन यह एक बार ही मिलता है। यह बार-बार ना तो किसी को मिला है और ना ही मिल सकता है।

रूहानियत का जो स्कूल है, वह आंखों से ऊपर है। आंखों से ऊपर वह परमात्मा बैठा है। स्कूल तक जाना सेवक का धर्म बनता है। जो प्यार के साथ बंदगी करते हैं, सिमरन करते हैं, उनको अनुभव हो जाता है।

स्वामी जी महाराज ने कहा है, "जो जो चोर भजन के प्राणी, सो सो दुःख सहें, आलस नींद सतावे उनको, लोभ नदी में डूब मरें"।

शुरू-शुरू में हमें यह मुश्किल लगता है। जो भजन करता है, उसके लिए यह आसान भी है।

हम ४-५ घंटे एक आसन पर बैठें, तो गुरु भी देखता है कि यह मेरी याद में बैठा हुआ है, और इस पर मैं कुछ दया करूं।

गुरु का सिख वह है जो तीन बजे अमृत-वेले उठे, और अमृतसर (अमृत के सरोवर) में नहाये।

संतों ने जो तीन बजे का मुहूर्त निकाला है। यह हमारा खाली समय होता है, और कोई खड़का भी नहीं होता। तीन बजे का मुहूर्त अच्छा है, इस समय उठें और सिमरन में समय लगायें। इस समय की हुई सिमरन की कमाई काफी बढ़ती फूलती है।

नाम सच्चा है, और अगर हमारा मन भी सच्चा है तो उसकी की हुई कमाई व्यर्थ नहीं जाएगी। उसका जरूर कुछ मिलेगा।

हे सतगुरु अजायब, तेरी आत्मा तड़फ रही है, दर्शन को प्रभु तरस रही है।

तूं करण-कारण प्रभु परमात्मा है, दया कर।

जल और थल में तेरा ही पसारा है।

प्यारयो, सच्चे मन से शब्द-नाम की कमाई करें।

क्या हमने मन गुरु को दे दिया है?

यदि गुरु को मन दिया है, तो क्या कोई सिमरन में बैठे हुए हिलेगा? क्या हम किसी को चोट पहुंचाएंगे या गाली देंगे? क्या हम किसी के लिए बुरे विचार करेंगे? यदि इनमें से कोई भी ख्याल हमारे साथ होता है, तो **हमने अपना मन गुरु को अभी नहीं दिया है**।

एक बार सतगुरु को मन दे दिया है, तो सबसे अच्छी बात यह है कि चुप रहो।

यदि हम गुरु की शरण में हैं तो वह जो कुछ भी कहता है, वह हमारे लिए सच्च है, और सही है।

"तेरे हुक्म दी करां उडीक, सतगुरु हुक्म करो।"

सतगुरु जानता है किस प्रेमी का मन सख्त है और उसे कैसे नरम करना है।

प्यारे सतगुरु ने मुझे धुन सुनाई और धुन सुन कर उससे मुझे प्यार हो गया।

अगर सेवक को पूरा विश्वास है कि मेरा गुरु परमात्मा है, तो काल उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज कहते थे कि प्यारयो, अगर सेवक सोचता है कि मेरा गुरु इंसान है, तो उसके लिए वह इंसान है। अगर वह सोचता है कि वह भगवान है, तो फिर भगवान ही है। सेवक जैसा सोचता है, वह वैसा ही है। यह तो सेवक का विश्वास है।

अगर सेवक सोचता है कि मेरा गुरु परमात्मा है, तो वह करण-कारण परमात्मा ही है।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज कहते थे कि अगर जांच या छानबीन करनी है तो नाम मिलने से पहले कर सकते हैं, लेकिन जब नाम मिल गया है, और गुरु ने दया कर दी है, तो फिर हम अपने मन को सही रखें।

प्यारयो सत्संग मिल गया है, गुरु मिल गया है, नाम मिल गया है, तो फिर मन को डांवांडोल ना होने दें।

महाराज जी भी कहते हैं, "अंदर साफ जिन्हां दे सच्चे, ओहो हर दम करदा संभाल, सोचां क्यों करदां। तेरी सोच करे किरपाल, सोचां क्यों करदां"।

प्यारयो, मन जो है वह हर चीज के लिए कल्पित है, और कल्पना हर पल उठती रहती है।
प्यारयो, अपने मन को एकाग्र करो, और उसे एक जगह पर खड़ा करो।

रोज-रोज सिमरन अभ्यास करो, इसके साथ यह मन रुक जायेगा। एक जगह पर बैठ जायेगा।

महाराज जी भी कहते थे प्यारयो, गुरु सूली की सूल बना देता है।

प्यारयो, जब गुरु ने नाम दे दिया है तो उस जीव के पाप ले लिए हैं। दुनिया में प्यारयो, बहन, भाई, माता, पिता और रिश्तेदार सभी होते हैं, लेकिन हमारे पाप लेने के लिए कोई भी तैयार नहीं है। प्यारयो, पूरी दुनिया में हमारा अगर कोई हमदर्दी है, तो वह गुरु ही है जो हमारे पाप लेता है।

प्यारयो, गुरु जब नाम देता है तो आत्मा को जीवनदान देता है।

गुरु ने पहले माता के पेट में हमारी संभाल की, फिर जीव को जन्म दिया। गुरु की दया के बिना हमें यह मानस जन्म मिल ही नहीं सकता है। बाहरी तौर पर प्यारयो जो भी सुख-सुविधा मिली है, यह सब गुरु का दिया हुआ है।

सतगुरु ने हमें नामदान दिया है। हमारे उसने पाप ले लिए हैं, तो कम से कम उसका धन्यवाद तो कर दें, कि शुक्र है, शुक्र है तेरा।

महाराज जी भी कहते हैं, "तेरी सोच करे किरपाल, सोचां क्यों करदां"।

साधु भी कहता है कि हे सतगुरु-दयाल अजायब सिंह, अगर तू नहीं मिलता तो पता नहीं कब काल ने ले जाना था। पता नहीं कहाँ जन्म दे देना था। यह कोई पता नहीं है। प्यारयो, उसने नाम दिया है, ना जात छुड़ाई है, और ना धर्म बदलवाया है। ना ही बाहरी तौर पर कहा है कि तुम किसी चीज को छोड़ो, बल्कि यह कहा है कि अपने परिवार में रहते हुए नाम जपो।

अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि गुरु मुफ्त का नौकर है। उन्होंने गुरु को संगत के जोड़े झाड़ने वाला भी कहा है।

प्यारयो, उनकी कोई फीस भी नहीं होती है। वे संगत के मुफ्त के नौकर बनते हैं।

प्यारयो, ऐसा नौकर कोई हमें अगर मुफ्त में मिल जाए तो हमें पूरा फायदा उठा लेना चाहिए।

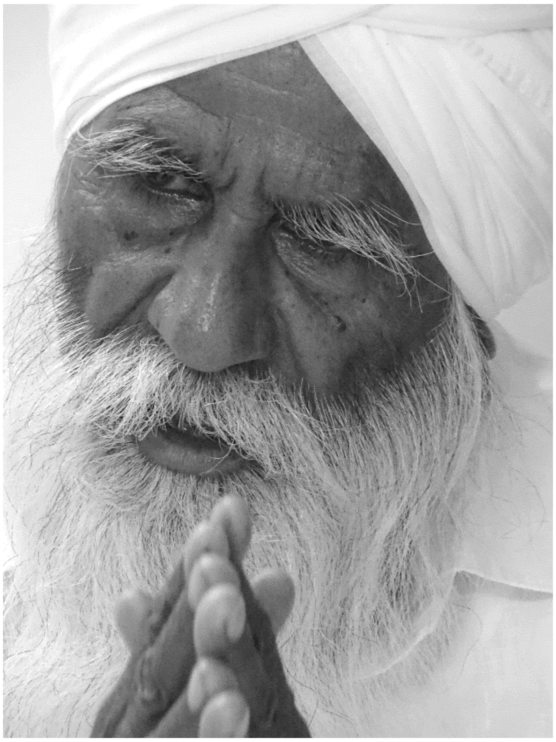

गुरु से अंदर कब मुलाकात होती है?

जीव गुरु से तभी मिलता है जब वह सच्चे दिल से उसको पुकारता है। अंदर मिलना फिर आसान हो जाता है। मानस जामें में ही उस परमात्मा से मिला जा सकता है, उससे जुड़ा जा सकता है।

"जप नाम गुरु दा ओए, मिलया मानस जन्म अमोला, जे मिलना मालक नूं, कोई लभ लै गुरु विचोला।"

यह जीवन बहुत छोटा है। **हमें उन चीजों पर समय बर्बाद नहीं करना चाहिए जो हमारी मदद परमात्मा को मिलने में नहीं करेंगी।** हमें इस समय को उसकी याद में ही लगाना चाहिए।

हम गुरु का दिया हुआ सिमरन अगर प्यार से करेंगे, और मन को एकाग्र करेंगे, तो द्वैत भावना हट जाएगी, एकता आ जाएगी। जब सतगुरु के दिए हुए नाम को उसकी दया के साथ सिमरते हैं तो मन भी साफ़ हो जाता है और अपने ज्योति-स्वरूप को देख लेता है। जब मन एकाग्र हो जाएगा, तो हम जब भी देखेंगे तो उस गुरु-स्वरुप को देखेंगे।

कबीर साहब कहते हैं, "भक्ति दान मुझे दीजे, करूँ संत की सेव, सर्व सुखां का सुख नाम है, मुझपे कृपा कीजे"।

राम-नाम (अविनाशी प्रभु) की पूजा और गुरु-पूजा में सारी पूजाएं आ जाती हैं।

महाराज जी भी कहते थे कि प्यारयो, दुनिया की जो सारी दौलत है, वह यहीं रह जाती है। अपने बुजुर्ग भी चले गए और वह यहीं रह गयी। अब हम क्या आशा करते हैं कि इसको साथ ले जायेंगे? यह यहीं रह जानी है।

प्यारयो, जब इंसान मर जाता है तो उसे तो लकड़ों के साथ जला देते हैं, और मुट्ठी राख की बन जाती है। या फिर मिट्टी में दबा देते हैं, जहां उसे कीड़े खा जाते हैं।

प्यारयो, मौत तो सब को आती है। नाम-वाले, गुरु-वाले सेवक की भी आती है और एक दुनियादार को भी आती है। मगर थोड़ा फर्क है, क्योंकि गुरु से नाम मिला है तो उस सेवक की सुरत उसने शब्द-रुपी परमात्मा के साथ जोड़ी होती है और शरीर छोड़ने के बाद आत्मा शब्द के साथ मिल जाती है। सचखंड पहुँच कर सदा सुहागन हो जाती है, और उसे सर्व-सुख नसीब हो जाता है।

आत्मा भवसागर कैसे पार करती है?

उस सत्पुरुष परमात्मा ने आत्मा के साथ वायदा किया था कि मैं इंसान के रुप में आऊंगा। जो आत्मा मुझे पुकारेगी उसे वापिस सुखों के देश, सचखंड ले जाऊंगा। जहां जन्म मरण नहीं है, और सर्व-सुख हैं।

इस जीव को अगर परमात्मा बख्शे तो ही बख्शा जा सकता है, और कोई इसको बख्शने वाला नहीं है।

सारे जीव आपो अपने कर्मों के हिसाब से दबे हुए हैं।

परम-पिता परमेश्वर कर्मों से आजाद है। उस पर कोई कर्म लागू भी नहीं है।

कर्म हमारे शरीर करके लागू है। जहां शरीर है, वहीं कर्म लागू हैं।

परम-पिता परमात्मा शब्द-रूप है, उसको ना कोई पाप है, और उसका ना कोई पुण्य है।

परमात्मा अगर बख्श ले तो उसकी मौज है। ना बख्शे तो जीव की क्या ताकत है, या रोब है? कोई रोब नहीं है। उसके आगे सिर्फ फ़रियाद है, बिनती है, अर्ज है।

परमात्मा के आगे बिनती है, और सच्ची-सुच्ची बिनती वह जरूर सुनता है।

वह कौन था? वह सतगुरु अजायब सिंह कुल-मालिक, परमात्मा था। तूं मेरा पिता है, मैं तेरा बालक हूँ। "बोढ़ पिता को लाज।" मेरी लाज तो आपके हाथ में है।

अगर तू मेरे कर्मों को देखे तो मैं पार हो ही नहीं सकता हूं।

तेरी कृपा ने ही पार उतारना है।

महाराज जी भी कहते हैं कि आत्मा तेरी है, और पुकारती है। तू बिनती सुन, अर्ज सुन। "मन करदा है मन मानी।"

आत्मा और मन की स्थूल गांठ लगी हुई है जो ऊपर जाकर खुलती है। सतगुरु इसे द्वैत भावना से एकता में लाता है। आत्मा का छुटकारा अगर होना है तो भजन से ही होना है, और कोई उपाय नहीं है।

गुरु तो दया करता है, और दया करके उसने नाम दे दिया है।

हमारी आत्मा जन्मों-जन्मों से कमजोर हो गयी है। जो हम भजन करते हैं, सतगुरु का दिया सिमरन करते हैं, वह आत्मा की खुराक है। भजन-सिमरन से आत्मा बलवान हो जाती है, और धुन-शब्द को सुनने के काबिल हो जाती है। इसे शब्द-धुन सुनाई देने लग जाता है।

हम गुरु का दिया हुआ सिमरन अगर प्यार से करेंगे, और मन को एकाग्र करेंगे, तो द्वैत भावना हट जाएगी, एकता आ जाएगी।

गुरु-भक्ति में रुकावट मन की है, और जब मन एकाग्र हो गया, तो रूकावट खत्म हो जाती है।

"गुरुमुख मन समझाई"। जब कोई गुरुमुख हो जाता है, तो अपने आपको समझाता है और अपने मन को विषयों से दूर हटाता है।

सतगुरु अजायब कहते हैं कि आत्मा पुकारती है, "लगी प्रीत ना तोड़यो, चरणी अपनी जोड़ियो, सानूं बक्श देयो सच्ची बाणी"।

गुरु मन को साफ़ करता है, कुछ सिमरन के साथ और कुछ दर्शनों के साथ। सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि संतों के अंदर जीता-जागता प्रभु-परमात्मा ज्योत स्वरुप होता है। जब प्रेमी उनके दर्शन करते हैं तो उनके कुछ पाप कट जाते हैं।

फरीद साहब कहते हैं, "उठ फरीदा सुत्त्या, तू झाड़ू दे मसीत, तू सुत्ता रब्ब जागदा तेरी ढाढे नाल प्रीत"।

हमारा मन माया और मोह की मीठी नींद सोया हुआ है। इसने अगर जागना है तो शब्द के साथ जागना है, गुरु की दया के साथ जागना है।

"दया करी गुरुदेव मेरे ने, मोह का बंधन तोड़ दिया।"

महाराज जी भी कहते हैं कि तेरी आत्मा बिछड़ गयी थी, तानी जो टूट गयी थी तुमने उसे दोबारा गांठ मार दी है। तू धन हैं।

"धन-धन सतगुरु मेरा, जेहड़ा विछड़यां नूं मेलदा।"

यह तेरी कृपा है, तेरी दया है, तेरी मौज है, तेरी मेहर है कि तू बख्शता है। तू बख़शणहार है। तू बख्श।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी भी कहते हैं, "सतगुरु जी बख्श लयो, दर तेरे ते जिंद आयी निमाणी"। जब सतगुरु बख्शिश करता है और बख्श लेता है, फिर सेवक का कोई पाप नहीं रह जाता है।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "जे हो जाए तेरी मेहर दातया, दाणे भुज्जे होए कल्लर उगावें"। दाने अगर भुने हुए बीज दें, तो वे भी उग जायेंगे। बंजर जमीन में भी दाने उग जायेंगे, अगर तेरी मौज हो।

यह सत्संग परमात्मा का है, उस कुल मालिक, करण-कारण का है। परमात्मा जिसे चाहे उसे भेजता है।

महाराज जी भी कहते थे, प्यारयो जो आत्माएं संतों की होती हैं, बच्चे होते हैं, वे उन्हें ले जाने के लिए आते हैं। उनको बड़ा कुछ सत्संग में सुनाते हैं। उन्होंने सत्संग में जो सुना था, उससे क्या करना था? तैयारी वापिस जाने की करनी थी, पर वे संतों के विरोधी हो जाते हैं।

जब गुरु सेवक को नामदान की बख्शिश करता है तो उसके सारे पाप ले लेता है।

संत सेवकों के सिर्फ पाप लेने के लिए आते हैं। यहां से जीव को माफ़ी देकर ही ले जा सकते हैं। डाक्टर कोई भी दवाई दे दे, पर सेवक की बीमारी तो केवल सतगुरु ही दूर कर सकता है।

सतगुरु को जो भी मिलने आता है वह पापों की गठरी बांध कर लाता है, और कहता है कि मेरा यह काम हो, मेरा वह काम हो। वह पाप फिर उसको लेने पड़ते हैं।

कबीर साहब कहते हैं, "संत न होते जगत में तो जल मरता संसार"।

प्यारयो, सेवक गुरु को कभी नहीं ढूंढ सकता है। यह तो गुरु की दया है, मेहर है अगर वह थोड़ा बहुत अनुभव दे दे या अपना पता दे दे, तो दे दे।

हमारी बुरी आदतें कौन बदल सकता है?

कबीर साहब कहते हैं, **"मना रे तेरी आदत ने, कोई बदलेगा हरिजन सूर"**।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि आपो अपनी जात में रहो, आपो अपनी बोली बोलो, आपो अपना पहरावा पहनो, लेकिन जो संत तुम्हें शिक्षा देते हैं, उसको समझो। मन की आदत को सही करना है।

गुरबाणी का फरमान है कि संत अगर किसी पेड़ की छांव में बैठ जाएं तो उसे मानस जन्म मिलता है। जिस पेड़ का फल खा लें तो उस पेड़ को मानस जन्म सीधा मिलता है। अगर संत घोड़े की सवारी करते हैं, तो उसको भी मानस जन्म सीधा मिलता है। संत जब चलते हैं, और अगर कोई कीड़ा उनके पैर के नीचे आकर मर जाए तो उसे भी मानस जन्म मिलता है।

वैसे कानून-कायदा तो यह है कि चौरासी लाख जिया-जून भुगत कर ही इंसान बनता है। लेकिन संत दया करते हैं और उस आत्मा को नाम के बेड़े में चढ़ा देते हैं।

संत परमात्मा के नाम की भक्ति करवाते हैं।

नामदान के समय सतगुरु के घर जन्म हो जाता है। अब जो सिमरन मिला है, उसे बढ़ाना है, और प्यार के साथ करना है।

कबीर साहब कहते हैं -

"चोर जुआरी क्या बदलेंगे, माया के मजदूर,

भांग धतूरा चिलम छतूरा, रहे नशे में भरपूर।

पांच विषयों में लटपट रहता, सदा मतंगे चूर,

इनको सुख सपने में भी नाहीं, रहें मालिक से दूर"।

कबीर साहब कहते हैं कि हमें नाम मिल गया है, अब हम सत्संगी बन गए हैं। तो अब **हमने अपना ख्याल पवित्र करना है, ताकि अपनी जिंदगी अच्छी और सफल हो जाये**।

जैसे भाई बहन की तरफ देखता है, तो ख्याल पवित्र है, ऐसे ही जब बहन भाई की तरफ देखती है, तो ख्याल पवित्र है। ख्याल पवित्र रखना है।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "बंदा नाम जपने नूं आया, माया ने जंजाल पा लया"।

हमारा मन इस दुनिया को अपना बनाने में लगा हुआ है। ना तो यह आज तक किसी की बनी है और ना ही बन सकती है।

हमारा मन दुनिया से प्यार करता है। दुनिया पांच तंत की बनी हुई है। यह पांच तंत हवा, पानी, अग्नि, आकाश, और पृथ्वी हैं।

हमारा शरीर ख़ूबसूरत दिखता है। जब हंस-रुपी आत्मा उडारी मार जाती है, तो ये सारे तंत अपने-अपने मूल में मिल जाते हैं। हवा, हवा में मिल जाती है, अग्नि में अग्नि मिल जाती है, पानी, पानी में मिल जाता है, पृथ्वी, पृथ्वी में, और आकाश में आकाश तंत मिल जाता है।

मन शरीर को प्यार करता है, पर यह मिट्टी का बना है, यह तो पहले भी मिट्टी था, और बाद में भी मिट्टी है। गुरु रामदास जी महाराज कहते हैं कि एक डब्बा है, जिसमें जेवर है। कीमत किसकी है? कीमत जेवर की है। उसी तरह, इस शरीर में कीमत सांस की है।

आत्मा के शरीर से निकलने के बाद यह शरीर केवल मिट्टी ही रह जायेगा। इसे अग्नि के सुपुर्द कर देंगे तो एक मुट्ठी राख की बन जाएगी, या फिर मिट्टी में दबा देंगे तो कीड़े खा जायेंगे।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "तैनू वारो वारी आखे, मना ओए वेला बंदगी दा, ओए वेला बंदगी दा"।

तुझे यह जो सांस मिले हुए हैं, वे पचास-सौ साल किराए पर मिले हुए हैं। तू बंदगी कर सतगुरु की।

सिमरन-बंदगी करता है तो बंदा अच्छा है। सिमरन-बंदगी नहीं करता तो बंदा गंदा है। अच्छी जिंदगी तो गुरु के सिमरन के साथ ही बनती है। सतगुरु का हम सिमरन करते हैं तो हमें सारे सुख मिल जाते हैं।

कबीर साहब कहते हैं, "पांच विषयों में लटपट रहता"। पांच विषय क्या हैं? काम, क्रोध, लोभ, मोह, और अहंकार हैं। किसी ने इन्हें डाकू कहा है, और किसी ने भूत कहा है।

यह पांचो विषय सारे संसार का रस ले रहे हैं, सारे संसार को नचा रहे हैं।

कबीर साहब ने कहा है, कि जब हम सतगुरु का दिया हुआ सिमरन करते हैं, तो यह जो पांच विषय इंसान की शक्ल में हैं, हमारे शरीर से निकल जाते हैं।

मन इच्छा पैदा करता है, फिर इसी इच्छा को पूरा करने के लिए रस-कस लेता है। हम कहते हैं, कि हमने भोग को भोग लिया है। लेकिन नहीं, यह उलटा है। मन को यह भोग लेते हैं।

गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैं कि जितने भोग हैं, उतने रोग हैं।

चाहे इंद्री का भोग है, या खाने का भोग है, और या रंग-रूप का भोग है। कोई भी भोग है, ये सारे रोग हैं।

हमारा इस दुनिया में मोह है। प्यारयो, अगर लकड़ी को याद करेंगे तो लकड़ी बनना पड़ेगा। किसी मूर्ति या पत्थर को याद करेंगे तो पत्थर बनना पड़ेगा। हमने मकान बनाया है, और आखिरी समय पर अगर आशा मकान में रह गयी है, तो भूत बन जायेगा। अगर आशा माया में है, तो माया का असली रूप सर्प का है।

इंसान बन के अगर सांप बनना है, तो अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि प्यारयो, सांप को क्या मिलता है? वह हर जगह पेट के बल चलता है, और दुःख पाता है।

हमें नाम मिला हुआ है। और सतगुरु के घर हमने जाना है। सतगुरु के दरबार जाना है तो दो तरीकों से जा सकते हैं। एक तरीका तो आँखों से ऊपर ध्यान है, और दूसरा सिमरन है।

आंखों से नीचे जो शरीर है, वह मृतक है। यह मरता है, जन्मता है। हम आंखों के ऊपर चले जाएं तो जन्म-मरण खत्म हो जाता है।

हमें नाम मिला हुआ है। जब पांच पवित्र नाम हम प्यार के साथ सिमरते हैं तो ज्योति के दर्शन कर लेते हैं। उस ज्योति में जो प्रकाश है, उसमें से धुन-शब्द की आवाज निकल रही है। जिसको सुन कर हमारा दुनिया का मोह कम हो जाता है। कबीर साहब ने भी कहा है कि जलमुरगई पानी में रहती है। खान-पान पानी में करती है, मगर जब उडारी मरती है, तो सूखे परों के साथ उड़ जाती है।

गुरबाणी का फरमान है, "**सतगुरु को राखिये सीस माथे, चलिए आज्ञा माहे, तीन लोक डर नाहें**।"

कबीर साहब कहते हैं, "सुरत स्मृति वेद की रीती, सत्संग करो जरूर, जन्म-जन्म के पाप कटेंगे, हो जायेंगे माफ कसूर"।

जो हमारे वेद, ग्रंथ, पोथी, और धर्म पुस्तकें हैं, ये सभी कहते हैं कि **मुक्ति नाम में है**।

जैसे समुद्र में से बादल उठते हैं और बरसात हो जाती है। बरसात का पानी ऊंची नीची जगहों में गिरकर गंदगी और कूड़े का साथ ले लेता है। समुद्र में पानी साफ़ था। लेकिन कूड़े का साथ लिया तो पानी गंदा हो गया। जो भी इसके पास से निकलता है, वह कहता है कि पानी में से बदबू आ रही है। जब फिर सूरज की गर्मी पानी को मिलती है, और पानी उड़कर पानी में मिल जाता है, तो पता लगता है कि पानी तो पहले की तरह साफ़ था, लेकिन गंदगी का साथ ले लिया था।

आत्मा सचखंड की वासी थी, और जब कारण देश में से सूक्ष्म देश होते हुए स्थूल मंडल में आयी, तो यहां इसने मन का साथ ले लिया। मन ने इन्द्रियों का साथ ले लिया है, और इन्द्रियों ने भोगों का साथ ले लिया है।

हमें पहले संत-महात्मा नहीं मिला। अगर पहले संत-महात्मा मिला होता तो हम सब ने सचखंड चले जाना था। ऐसे यहां नहीं बैठे होना था।

हमारी सोई हुई किस्मत जागी तो हमें संत-सतगुरु मिले। हम भी उस कुल मालिक की याद मना रहे हैं, जो करण-कारण, परमात्मा था।

प्यारयो, हम इस इंसानी जून में भी हैं, तो क्या है कि अहंकार आ जाता है। भाई से भाई लड़ पड़ता है, माँ बेटी लड़ते हैं। परिवार में लड़ाई हो जाती है। यह कौन लड़ाता है? यह हमारा मन ही लड़ाता है।

प्यारयो गुरु नानक देव जी भी कहते हैं कि हम एक मेहमान मुसाफिर की तरह आये हुए हैं। सब ने चले जाना है। साथ क्या जाना है? सिमरन और नेक कमाई जानी है, बाकी सब सामान यहाँ का यहीं रह जाना है।

जिसने हमें नाम दिया है, वह हमारी रक्षा यहां भी करता है और आगे भी करता है।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि आओ, करो, और देखो।

जो संतों ने कहा है, वह अंदर देख कर कहा है।

अपने अंदर छः फुट की सड़क है, जो सीधी सचखंड ले जाती है। शाह मस्ताना जी कहते हैं, "अंदर वड़के, पौड़ी चढ़ के, नजारा देख लै, सारे जग दा प्यारा देख लै"।

कबीर साहब कहते हैं कि हमें गुरु भक्ति मिली है। कबीर साहब के गुरु रामानंद जी

थे। उन्होंने उनकी भक्ति करी। पहले संत कबीर साहब हुए हैं।

"बाजे अनहद धूर।" वह आवाज हमारे अंदर रात और दिन बज रही है।

जैसे बाजा ढोलकी तंबूरा हैं, इनकी या तो तार खराब हो जानी है या बजाने वाले ने थक जाना है। हमारे अंदर जो बाजा बज रहा है, वह कभी खराब नहीं होता। वह जन्म से हमारे मरने तक बजता है।

"अंतर जोत निरंतर बाणी, साचे साहेब सयों लिव लाई।" हमारे हृदय में जो ज्योत जग रही है, ना उसको बाती की जरूरत है, और ना तेल की। वह हमेशा वास्ते जग रही है। महाराज जी भी कहते हैं, "अंतर जोत जग रही, बाहर मन भुला फिरे"।

हमें गुरु भक्ति मिली हुई है। कबीर साहब ने भी कहा है, "भक्ति दान मुझे दीजिये, करूं संतन की सेव, सर्व सुखां का सुख नाम है, मोह पर कृपा कीजे"।

गुरबाणी में आता है, "कर लै भजन, सांस मुक जाणगे, छड जावें बंदया महल बंगले"।

जो भजन बंदगी करते हैं, वे अपना जन्म सफल करते हैं, अच्छा बनाते हैं।

परमात्मा जब दया करता है, अपने भगत को भेजता है। भगत दया करता है तो सत्संग देता है।

हमें गुरु-भक्ति मिली है। गुरु-भक्ति में सारे काम पूरे हो जाते हैं।

हमारी तृष्णा और आशाएं कैसे खत्म होती हैं?

संत सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "सांईया तूं पार लंघावी, छड्ड के ना जावीं"।

आत्मा परमात्मा की अंश है। आत्मा परमात्मा में है और परमात्मा आत्मा में, और ये दोनों ही हमारे शरीर में रह रहे हैं।

आत्मा ने मन का साथ ले लिया है। मन ने इन्द्रियों का साथ ले लिया है। इन्द्रियों ने भोगों का साथ ले लिया है, और मन भोगों का आशिक है। यह लज्जत का आशिक है, और बाहर से लज्जत ले रहा है।

हमारे पीछे किये कर्म ही हैं जो हमारे दुखों का कारण बनते हैं। दुख हमारे पिछले बुरे कर्मों करके है।

गुरबाणी में आता है, "दसवें द्वार गुरु प्रगट होये आये, अमृत रस चुआई"।

गुरु अमृत-रस सेवक को पिलाता है।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी गुरुमुख थे। गुरुमुख वह है जिसने गुरु ने जो कहा वह मान लिया। गुरुमुख वह है जो गुरु के हुक्म से शब्द में मिल गया है ।

गुरबाणी में ऐसा आता है कि जीव निर्बल है, इसमें बल नहीं है।

महाराज जी भी कहते हैं कि तू बख्शिंद है, बख्श ले। जब नामदान मिलता है तो उस वक्त जीव बख्शा जाता है।

यह सतगुरु अजायब सिंह दरबार है। वह कुल-मालिक, करण-कारण प्रभु परमात्मा है।

चंगे हैं या माड़े हैं, तेरे ही जीव हैं। दाता तू बख्श। तूं कृपालू है, जीवों पर दया कर। तेरी दया मेहर के साथ ही हम भवसागर पार कर सकते हैं और तेरे साथ मिल सकते हैं। तूं दया कर और अपनी ज्योति में हमारी ज्योत मिला। वह बिनती सुनता है। वह दयालु है, दया जरूर करता है। अपने सेवक की तू आप ही लाज रख।

कर्मों का कानून अटल होता है। गुरबाणी के अंदर ऐसा आता है कि कर्मों से बना खेत है हमारा। यह सब को भुगतना पड़ता है।

जब पृथ्वी पर पाप ज्यादा फैल जाता है तो परमात्मा के हुक्म के अनुसार अवतार आते हैं, और पाप को शांत करते हैं।

देह धार के जो भी आते हैं, उनके लिए कर्मों का कानून अटल है। कर्मों का हिसाब देना पड़ता है।

परमात्मा देह नहीं है और आत्मा भी देह नहीं है। परमात्मा पर कर्मों का कोई कानून लागू नहीं होता है। परमात्मा करण-कारण है।

सब का एक भगवान है। वह दयालु है और दया करने आता है।

कबीर साहब ने भी कहा है, "जब नाम हृदय धरयो, भयो पाप को नाश, मानो चिंगारी आग की पड़ी पुराने घास"।

भगत परमात्मा की भक्ति करते हैं। जो उनके पास आता है, उन्हें कहते हैं कि हम सब का जो परमात्मा है, वह हम सब के अंदर है। हम अगर उसकी भक्ति करेंगे तो हम भी मुक्त हो जायेंगे। जन्म-मरण के दुःख से बच जायेंगे।

महाराज जी भी कहते थे कि मैंने सारी दुनिया को ठोक बजा कर देखा है। कोई अपना हैं ही नहीं जिसने मदद करनी है। जो अपना है, वह एक परमात्मा है, नाम है, शब्द है, गुरु है।

गुरबाणी के अंदर ऐसा आता है, **"अपना कोई नहीं है जी, कि अपना सतगुरु प्यारा जी"**। अपनी ना माता है, ना पिता है, ना बहन, ना भाई, ना कोई और साथी है। अंत में अगर सहारा है, तो वह एक सतगुरु का है। बाकी सारे पापों के नीचे दबे हुए हैं। जो हमें पापों से आजाद करता है, इनसे निकालने के लिए आता है, वह शब्द है, नाम है, गुरु है।

महाराज जी भी कहते थे कि जो आप ही पापों के नीचे दबा हुआ है, पापी है, तो वह संगत को कैसे तार देगा?

हम जीवों के पाप वही ले सकता है जो कर्मों से आजाद है, जिसके कोई पाप नहीं होते हैं। हम सब जीव आत्मा हैं। परमात्मा के आगे बिनती है, प्रार्थना है, अर्ज है कि तू पापों को माफ करने वाला है।

"दुःख भंजन तेरा नाम जी, आठ पहर अराधिये, पूरण सतगुरु ज्ञान जी।"

महाराज जी भी कहते हैं कि हम तेरे दर पर आ गए हैं, तूं बख्श। जीव जब बख्शा जाता है तो सतगुरु उसे नाम दे देता है। नामदान के समय वह जीव के पाप ले लेता है।

जब नामदान मिलता है तो सतगुरु उसे थोड़ा बहुत अनुभव भी देता है।

किरपाल महाराज जी ने भी कहा है कि पढ़ा हुआ पढ़ा देता है, और उस प्रभु से मिला हुआ उससे मिलवा देता है।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी भी कहते हैं कि ऐब बख्श दे, तू बख्शनहार है।

हमारा मन गलती भी करता है और माफ़ी भी नहीं मांगता है, तो फिर इसे किस तरह माफ़ी मिल सकती है।

"बख्शो बक्शणहार पिया जी, बख्शो दीन दयाल पिया जी।"

तू बादशाहों का बादशाह है।

"पीरां दे पीर, तेरे हत्थ मेरी तकदीर, जी ओहनु मानस ना कहयो।"

सच्चे मन की बिनती वह जरूर सुनता है, पुकार को सुनता है।

महाराज जी ने भी कहा है, "साईंया तू पार लंघावीं, छडके ना जावीं।

सतगुरु अजायब सिंह के आगे बिनती है, अर्ज है। वह दयालु है, और जरूर दया करता है।

जो हमारे मन की बिनती है, अर्ज है, वह ऊंची और सच्ची-सुच्ची होनी चाहिए।

तो गुरु से गुरु ही मांगना है, दुनिया की चीजें नहीं मांगनी हैं। अगर हमें वह परमात्मा मिल जाए तो हमारी कोई आशा नहीं रहती है, हमारी सारी आशाएं पूरी हो जाती हैं।

अपनी जिंदगी कैसे सफल बनानी है?

संगत मिल गयी है, गुरु मिल गया, नाम मिल गया, और नाम की दौलत इकट्ठी कर ली, तो जन्म सवल्ला हो गया है।

परमात्मा संतों का रूप धारण कर, पांच-तंत के चोले में आता है। यह जो देह है, इसको नर-नारायणी करके ब्यान किया गया है।

गुरबाणी में ऐसा आता है, "अखां वाजों देखना, बिन कनी सुनना, पैरां वाजों चलना, बिन हत्थीं करना, जीभां वाजों बोलना, इंज जीवत मरना, नानक हुक्म पछाण के, इंज खसमें मिलना"।

महाराज जी भी कहते थे कि प्यारयो, जब सतगुरु नामदान की बख्शिश करता है तो आत्मा को शब्द के साथ जोड़ देता है।

गुरबाणी में आता है, "गगन मंडल में सेज पिया की, किस विध मिलना होए, सूली ऊपर सेज हमारी, किस विध सोना होए"।

हमारा जब सही सिमरन चलता है तो उसमें ना तो जीभ हिलती है, और ना कोई और शरीर का अंग ही हिलता है।

फरीद साहब ने भी कहा है, "जो जागता है, साईं से दात लेता है, सुत्ते प्यां ना मिले किसे भा"।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "वंडदा हर दम नाम खजाने, रज्ज के झोलिआं भर लईए, आया है किरपाल दा बेटा, आओ दर्शन कर लईये"।

हमारा मन माया की मीठी नींद में सोया हुआ है।

मैंने अपने सतगुरु को परमात्मा समझा था। हमारा मन डांवांडोल होता है, कभी परमात्मा समझता है, और कभी इंसान समझता है।

"तेरी कृपा से तुझे पछाणा।" अच्छे हैं या बुरे हैं, तू अपने में मिला ले। तेरी शरण ली है, तू अपनी शरण में रख। अगर तेरा सेवक नरक में जाएगा तो तुम्हें लाज आएगी। शरण पड़े की लाज रख।

गुरु नाम दे देता है, फिर सेवक की पल-पल संभाल करता है, उसको छोड़ता नहीं।

अगर उसको देखना है तो मेहनत की जरूरत है। मेहनत करनी पड़ेगी।

"सदा नाम जप, जिंद रब्ब लेखे लौनी जे, हुण मौका ऐ, कम्म सोखा ऐ।"

सिमरन का समय जो संतों ने चुना है, वह सुबह तीन बजे का है। उस समय उठें और दो से तीन घंटे एक ही आसन पर बैठ कर लगायें।

प्यारयो, हम बैठते सिमरन पर हैं, लेकिन हमारा मन पता नहीं टिका या नहीं टिका, एकाग्र हुआ या नहीं हुआ।

प्यारयो, कुदरत का असूल बनाया हुआ है कि **मन के टिक जाने पर ही हम अनुभव कर पाएंगे।**

अगर हम उसकी याद में बैठेंगे तो वह दया जरूर करेगा। वह दयालु है। वह सचखंड से चल कर दया करने के वास्ते ही आया है। भाई, सवाल है आपो अपने बर्तन का। **हमने उसको मिलने के वास्ते कितना अपने मन को तैयार किया है?**

महाराज जी भी कहते हैं, "जो हृदय साफ़ बनाये वे, ओथे ही मालिक आये वे"।

संतों का रास्ता एक ही रहा है, और उन्होंने सिमरन पर जोर दिया है। प्यारयो, सिमरन करना ही पड़ेगा।

हमारा मन फोटोग्राफर की तरह है, एक बार जिस चीज को देख लेता है, उसे बार-बार याद करता है।

एक बार जो संत सतगुरु के दर्शन कर ले तो वह जीव इंसानी जामें से नीचे नहीं जाता है। पर मुक्ति नाम में है।

हमने अगर उस परमात्मा को देखना है तो **मेहनत की जरूरत है।**

गुरबाणी में ऐसा आता है कि अगर हम अपने मन की मर्जी से बादशाह बनना चाहें तो नहीं बन सकते हैं। नीच या गरीब बनें, ऐसा भी नहीं हो सकता है। अगर हम यह सोचें की अन्न पानी अपने मन मर्जी के साथ खा लेंगे, तो ऐसा नहीं हो सकता है। ऐसा सोचें की इतना समय जी लेंगे, तो ऐसा भी नहीं हो सकता है।

स्वामी जी महाराज ने कहा है कि हे मना, तू क्यों ठगियों में पड़ा है। ये सारा ठगी का माल है। माया तुझे ठग लेती है।

अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "रंग रूप दा मान ना करिये, सिर उत्ते मौत खड़ी सजना"।

हमेशा के लिए मौत को याद रखो। गुरु को भी याद रखो। **अगर गुरु याद है, तो मौत भी याद है।**

महाराज जी कहते हैं, अगर तू हमारे पाप या गुनाह या ऐब बख्श दे, तो सिर तेरे चरणों में धर लइऐ।

महाराज जी कहते हैं, "नाम जपना कल विच ओखा ऐ, शरणी पै जाना सोखा ऐ"। शरण पड़ना सस्ता काम है, प्यारयो।

कबीर साहब ने भी कहा है, "ना हींग लगे, ना फिटकड़ी"। कोई खर्चा भी नहीं लगता है। शरण पड़े की लाज वह खुद रखता है।

हमारा मन छोटा बनने के लिए तैयार नहीं है।

भगत तो परमात्मा के बेटे होते हैं। वे अपने आपको छोटा और तुच्छ मात्र मानते हैं।

उस दयालु ने दया करी, अपना नाम दिया। अपना नाम-दान देकर अपने में मिलाया।

कबीर साहब ने कहा है, "शब्द में यूं मिल जा, ज्यों आटे में लूण, मना तू यूँ मिल जा ज्यों पानी में पानी"।

गुरबाणी में आता है कि हे मन, **तू निवां होकर चल और मीठा बोल**।

गुरुमत के अनुसार रूहानियत में अगर कोई रूकावट है, तो वह हमारे मन की है, और किसी चीज की रुकावट नहीं है।

प्यारयो, जब हम भजन पर बैठते हैं तो मन कभी सीधा हो कर बैठ भी जाता है और अच्छा भजन कर लेता है। मगर मन अड़ियल है, तो कभी अड़ी कर लेता है और भजन करता ही नहीं है। कई बार बैठने भी नहीं देता है। तो संतों ने इसे समझाया है कि तू अड़ी ना कर।

अजायब सिंह महाराज जी भी कहते थे कि किसी ने दस साल, किसी ने बीस साल, और किसी ने तीस साल मन को समझाया और अभ्यास में जोड़ा।

महाराज जी कहते थे कि प्यारयो, परमात्मा को गरीब-नवाज़ कहा गया है।

सतगुरु अजायब कहा करते थे, "गल्लीं किसे ना पाया"। ज्यादा बातों से वह परमात्मा रीझता नहीं है, खुश नहीं होता है, मिलता नहीं है।

तो करनी और कथनी का मजबून है। करनी शब्द नाम की कमायी के साथ है। कथनी है कि दो अक्षर किताब से पढ़ कर कोई भी सत्संग दे सकता है।

अजायब सिंह महाराज जी भी कहते थे कि परमात्मा तो भोली-भाली आत्मा के साथ चलता फिरता है।

"जिस नीच को कोई ना जाने, नाम जपत तीन लोक पहचाणे।"

नाम की महिमा है। सत्संग की महिमा है। गुरु की महिमा है।

"नाम जपा सुख पाया, जिसने नाम जपा।"

सतगुरु, तेरा नाम जप कर सुख पाया है।

नाम में वह ताकत है जिसे जप कर इंसान सारे सुखों का अधिकारी बनता है। नाम सर्वशक्तिमान है। नाम वह परम-पिता परमेश्वर है।

"वंडदा हर दम नाम खजाने, रज के झोलियाँ भर लईए, ऐसे संत दी संगत करके, जन्म सवल्ला कर लईए।"

संगत मिल गयी है, गुरु मिल गया, नाम मिल गया, और नाम की दौलत इकठ्ठी कर ली, तो जन्म सवल्ला हो गया है।

गुरु से प्यार कैसे करें?

सिमरन गुरु की दया से होता है। **सेवक गुरु से प्यार करे तो सिमरन बढ़ सकता है।**

प्यारयो, जो सिमरन है वह जिंदगी बनाता है।

क्या हमने गरीब नहीं देखे, जिनको झोंपड़ी भी नसीब नहीं है, रोटी भी नसीब नहीं होती है। चारपाई भी नसीब नहीं है। तो क्या है, कि परमात्मा को पहले भी याद नहीं किया और अब भी नहीं करते हैं। पहले भी बुरे कर्मों की सजा है। अब भी भोग रहे हैं।

प्यारयो, **भगत युक्ति बताते हैं।** इन सारे दुखों का जो नाश करने वाला है, वह नाम है। उसको याद कर, तुझे सारे सुख मिलेंगे।

संत सतगुरु आते हैं तो हम प्यार से सत्संग में जाते हैं। सत्संग हमें अच्छी लगती है। वह हमें नाम दे देते हैं। हमें जब नाम अच्छा लगने लगता है तो हम सिमरन करने लगते हैं।

सिमरन से प्यार है तो परमात्मा से प्यार है।

सिमरन के साथ ही सेवक का मन साफ़ हो सकता है।

गुरुमत में अगर गुरु को परमात्मा समझें तो परमात्मा से मिलना कोई मुश्किल नहीं है।

परमात्मा के हुक्म से ही गुरु आता है। उसके हुक्म में रहता है। उसकी शरण और भाणे में रहता है।

कबीर साहब ने कहा है, "ना मैं किया ना किया शरीर, करने वाला और है, कह गए दास कबीर"।

मन को ध्यान होना चाहिए कि अगले जन्म में दुःख आ जाएगा। जो जन्मों-जन्मों के पाप किये हुए हैं, मुझे अब मौका मिला है, तो इन्हें माफ करवा लूँ।

शरण किसे कहते हैं?

शरण अपने आप का अहंकार खत्म करना है। अपने आप को नीचा समझना है।

सत्संग हमें जीवन पर ढालना चाहिए। "तेरी शरण तेरा भरवासा।"

अजायब सिंह महाराज कहते थे कि बातों से परमात्मा नहीं मिलता। बातों से सिमरन नहीं होता।

जब हम सतगुरु का दिया हुआ सिमरन प्यार से करेंगे तो सवाल-जवाब अंदर ही हो जाएंगे।

किसी भी संत महात्मा की हिस्ट्री आप पढ़ कर देख लो, किसी ने गुरु से सवाल नहीं किया।

सवाल जवाब वही करते हैं जो भजन नहीं करते।

अजायब सिंह महाराज कहते थे कि मैंने अपने गुरु के आगे कोई सवाल नहीं किया। किरपाल सिंह महाराज ने भी कहा है कि मैंने गुरु से कभी सवाल नहीं किया।

मैंने भी अपने सतगुरु के आगे कोई सवाल अभी तक नहीं किया। मैंने सोचा कि वह कुल-मालिक, करण-कारण है, तो मैं उसके आगे क्या सवाल करूंगा।

भूखे को रोटी, प्यासे को पानी कुदरत की तरफ से मिलता आया है।

जो सत्संग मिलता है वह सब को मिलता है। तो सत्संग पर हम विचार करें। सत्संग अपने जीवन पर ढालने वाला होता है।

एक कान से सुनी दूसरे से निकाल दी तो फायदा क्या हुआ?

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी की किताब में भी लिखा है कि हम एक कान से सुनते हैं और दूसरे से निकाल देते हैं, तो ना तीतर ना बटेर।

जो भी हमारे फायदे का होता है वही सत्संग में कहा जाता है, कि इस तरह से करो।

सत्संग तो एक सुनी हुई काफी है। क्योंकि एक सत्संग में पता चल जाता है कि मैंने सिमरन कितना करना है।

कबीर साहब ने भी कहा है, "अपना कोई नहीं है जी, के अपना सतगुरु प्यारा जी"।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी भी कहते थे, "साडा ना कोई वे लोको, असीं ना जहान दे, सावन किरपाल बाजों, किसे नूं नहीं जाण दे"।

इसलिए जब गुरु का सेवक बन गया, तो गुरु का बेटा बन गया है। जब गुरु का बेटा बन गया है तो गुरु भी उससे छुपा के कोई चीज नहीं रखता है।

महाराज जी भी कहते थे कि वह दोनों हाथों से देने के लिए आता है, लेकिन हम दुनिया की आशाओं के साथ पूरी तरह से भरे हुए हैं। दुनिया की आशाएं तो प्यारयो निकालनी होंगी।

अगर मकान गंदा है तो हमें किस तरह से अच्छा लगेगा?

महाराज जी भी कहते थे, **"जो हिरदा साफ़ बनाये वे, ओथे ही मालिक आये वे"**।

मन को साफ़ बनाएंगे तो ही गुरु आएगा। मन साफ़ सिमरन के साथ करना है।

सिमरन आठ पहर करना है।

मन जो है, वह जन्मों जन्मों से सोया हुआ है। सिमरन करने से यह जाग जायेगा।

"दुःख सुख तुझे ध्यायें।"

दुःख है तो अपने कर्मों का है। कोई किसी को दुःख नहीं देता है।

बाबाजी के भजन में लिखा भी है, और सत्संग में भी आता है, कि चाहे गरीब रख, चाहे भूखा रख, लेकिन तेरा ही हूँ। "तेरी शरण तेरा भरवासा।"

महाराज जी कहते थे कि प्यारयो, **माफ़ी देनी भी अच्छी है, और मांगनी भी अच्छी है।**

जो भी सुख-दुःख है वह हमें प्यार के साथ सहना चाहिए।

संतमत अपने आप को सुधारने का मत है

यह संतमत है। अपने आप का सुधार करो।

कबीर साहब कहते हैं कि जो संतमत है, वह सतगुरु की शिक्षा है। उस परमात्मा की शिक्षा है।

कबीर साहब कहते हैं कि एक का एक ही जीवनसाथी होता है। बाकी जो हैं, उनके साथ कानून और कायदे के मुताबिक रहना चाहिए, व्यवहार करना चाहिए।

जैसे लड़का है, घरवाली एक है, बाकी बहन, माता, मासी, दादी, मामी, चाची, और ताई परिवार के हिसाब के साथ है, वह वैसे ही अपना समझे।

इसी तरह लड़की है, वह अपने भाई की तरफ देखती है तो ख्याल पवित्र हैं। जब कोई भी लड़का अपनी बहन की ओर देखता है, तो उसके ख्याल पवित्र और साफ़ हैं।

जैसे लड़की है, उसके लिए बाकी पिता, भाई, मामा या चाचा हैं। परिवार के साथ सारा जैसे है, वैसा ही वह समझे।

कबीर साहब कहते हैं कि **संतमत में अपने आप का सुधार है**, प्यारयो।

हम शादीशुदा हैं, एक घर वाली है, बाकी सब कायदे के मुताबिक बहन या बेटी हैं। इस तरह देखना है। यदि बहन की तरह देखेंगे तो अपना ख्याल पवित्र हो जाएगा।

गुरुमत में ख्याल पवित्र करना है। ख्याल पवित्र होगा तो ही सिमरन हमारा बनेगा, गुरु अपना बनेगा।

हमारा जो मन है, यह हमसे गलती करवा भी देता है, और फिर कह भी देता है कि यह गलती करवाली है।

कबीर साहब ने कहा है कि जो फल दिख रहे हैं, अगर यह फल लुभावने हैं, तो देखने से ही जहर चढ़ जाता है। अगर वह खा लेता है, तो मर जाता है।

दस इंद्रियां हैं। आँख की है, तो सोहने-सोहने रूप देखती है, और उनसे आकर्षित हो जाती है। इसी तरह अगर खाना अच्छा बना है, बंदा वह देखता है तो उसका मन उधर चले जाता है।

यह मन जब सोहने-सोहने रूप देखता है तो उस तरफ चला जाता है। इसी तरह जब हम किसी परायी लड़की के हाथ लगाएंगे, या पराये लड़के के लगाएंगे, या लड़का लगाएगा तो उसका पाप लगता है। हाथ लगाएंगे तो ख्याल गंदा हो जायेगा। जब ख्याल गंदा हो जाएगा तो मन के अंदर काम भावना जाग जाएगी।

कबीर साहब ने कहा है कि एक तो बंदा वैसे मर जाता है, और एक देख कर मर जाता है।

कबीर साहब ने कहा है कि यह हमारे अंदर बीमारी है। बीमारी है, तभी इसको रोका जा सकता है।

जिस तरह लड़का अपनी बहन को देखता है, दूसरों को वैसे नहीं देख सकता। ऐसे ही लड़की है, वह अपने भाई की तरफ देखती है, वैसे दूसरों की तरफ नहीं देख सकती है।

मन के ख्याल पवित्र करने के लिए ही इसको यह कहा जा सकता है। अगर हम दूसरी लड़की को हाथ लगाते हैं, तो वह पाप ही है, तो यह काम-धंधा बन जाता है।

प्यारयो, धार्मिक कोई भी पुस्तक पढ़ सकते हो। सारे गुरुओं की बाणी पढ़ सकते हो। उन्होंने ऐब से परहेज कराया है।

तुलसी साहब जी रामायण में लिखते हैं, "जे गुरु झिड़के तो मीठा लागे"। हमें गलतियां छोड़ देनी चाहिए।

जब कोई अध्यापक बच्चे को पढ़ाता है, और अगर बच्चा गलती करता है या गलत लिखता है, तो अध्यापक डांटता भी है। जिस तरह डाक्टर है, अगर किसी के फोड़ा है और डाक्टर चीर कर उसमें से पस निकलता है, तो उसके फायदे वास्ते करता है।

कबीर साहब कहते हैं, "मन मान मेरी कही रे, मन मान मेरी कही। जग में जीवणा दिन चार, फिर दांव तेरा ऐसा नाहीं"।

अगर कोई हमारी गलतियां बताए तो हमें क्या करना चाहिए?

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि प्यारयो, जो हमारा पड़ोसी है वह सख्त से स्वभाव के साथ कह देता है कि तेरे में यह गलती है। गुरु है, वह कहानी में कह देता है, प्यार के साथ।

हमें गलतियां छोड़ देनी चाहिए।

अगर हमारा पड़ोसी या कोई और हमारे जो अंदर गलती है, उसको बताता है तो हमें वह गलती छोड़ देनी चाहिए। और उसका धन्यवाद करना चाहिए कि उसने हमारी गलतियां बताई हैं।

जब तक गलती करके अपने सामने नहीं रखेगा, तब तक तो पता ही नहीं चलेगा कि गलती मैंने की है, या नहीं की है।

हमारे मन की गलती का मन को खुद पता चल जाना चाहिए कि मैंने यह गलती की है। ताकी वह गलती आगे न हो।

हमारा मन है जो गुरु को दूर समझता है। अभी हमारा हाथ तो हमारे पास है, लेकिन हमारा गुरु उससे भी करीब, हमारे पास है।

हमारे दिल के अंदर तड़फ, विराग, और प्यार होना चाहिए।

तन भी पवित्र, मन भी पवित्र, और ख्यालों को भी पवित्र करना है।

गुरु नानक देव जी कहते हैं, **जितने भोग हैं, उतने ही रोग हैं।**

मन जीते-जग जीत

संत सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "ओ मन मूर्ख अब तो जाग"।

गुरबाणी में भी है, गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैं कि मन तू अपने घर में जा बैठ।

किरपाल सिंह महाराज भी कहते हैं, "गुरुमुख मन समझाई"। गुरुमुख अपने मन को समझाता है। अब क्या है कि हम सिमरन करते हैं, भजन पर बैठते हैं। **गुरु ने जो हमें शब्द-रुपी बाण दिया है, पांच पवित्र नाम दिए हैं, इनके साथ मन को काबू करना है।**

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "मन मारना पवे, सिर वारना पवे, तां पहुंचे सतगुरु कोल वे, बाहर ना भुल के टोल वे"।

साधु भी कहता है कि हम बाहर दूसरों से लड़ते हैं। लेकिन, भगत कहते हैं कि अपने मन के साथ लड़ना है, और लड़ना इस जिस्म के अंदर है।

"लड़ना सी तैं मन अपणे नाल, फिरें लोकां नाल लड़दा।"

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि बाहर मन सब के साथ लड़ता फिरता है। नहीं, यह अंदर की लड़ाई है।

"अंदर ज्योत जग रही, बाहर मन भुला फिरे।"

बाहर दुनिया को तो देख रहा है, मगर अंदर उस परमात्मा को, नाम को नहीं देख रहा है। शब्द को नहीं देख रहा है। गुरु को नहीं देख रहा है।

आज भी बात हो रही थी कि नौकर है, उसको चौधर मिल गई है, और बादशाह नौकर बन गया है।

वह व्यक्ति जो प्रशंसा चाहता है, अपने को ख़ास समझता है, दूसरों के सामने ऊँचे स्थान पर बैठना चाहता है, हमेशा दूसरों पर दबाव बनाता है कि उसके कहे अनुसार ही सब कुछ हो।

यदि गुरु पर विश्वास है तो बोल कौन रहा है? यह सतगुरु ही है जो बोल रहा है।

प्यारयो, आत्मा सूक्ष्म है। मन स्थूल है। आत्मा का राज था, लेकिन अब मन ने आत्मा पर राज कर लिया है, और कोई भी इंद्री मन को खींच कर ले जाती है। चाहे आँख की इंद्री है। चाहे काम की इंद्री है, या चाहे जीभ की इंद्री है। तो यह सारी इंद्रियां मन को खींच लेती हैं। मन इन्द्रियों के पीछे है और आत्मा इन सब के पीछे है।

ये जो सारा सांग है, वह उलटा हो गया है। अब इसको ठीक करना है। तो आत्मा का कहना मन माने, और इन्द्रियां मन का कहना माने।

प्यारयो, हमें भी नाम मिला हुआ है संत अजायब सिंह महाराज जी से, और शब्द-बाण मिला हुआ है। शब्द-बाण चलायें और इससे मन को पीस दें और हरा दें।

प्यारयो, अजायब सिंह महाराज जी भी कहते थे कि मन ने मुझे बड़ा दुःख दिया है, इसीलिए इसे मारना पड़ता है।

जो सुख हैं, वह तो परमात्मा ने देने हैं, मन ने तो रास्ते में रोड़ा अड़ाया हुआ है। ऐसे ही दुःख देता है।

प्यारयो, जब हम सिमरन करने के लिए बैठते हैं, भजन पर बैठते हैं, उस समय कभी खुजली एक तरफ होती है, कभी दूसरी तरफ। कभी दर्द एक जगह है, तो कभी दूसरी तरफ। मन ऐसे ही करता रहता है।

प्यारयो, **गुरुमत तो विश्वास पर खड़ी है।**

हमारा जो मन है, इसका लगाव शरीर के साथ है।

जब कोई व्यक्ति मर जाता है तो वह हिलता ही नहीं है। अब जब हम मन को मार देंगे तो फिर इसने क्या हिलना है।

अब प्रेमी तो बहुत विश्वास वाले होते हैं। संतों का, भगतों का, अपना-अपना तजुरबा होता है। अगर मन हिलता है तो हिलने दो, आखिर कब तक हिलेगा। प्यारयो, इस वास्ते मन जो है वह धोखा करता है। अब तो समय घड़ी का ज्यादा हो गया होगा। नहीं प्यारयो, घड़ी नहीं देखनी है। देखना यह है कि मन टिक गया है और हिलने से हट गया है। उसी समय अंदर प्रकाश हो जाना है, और हम दसवें द्वार पहुँच जायेंगे।

अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "मन जीते-जग जीत"।

हमने अगर अपने मन को जीत लिया तो सब को ही जीत लेना है।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, "सतगुरु कहें करो तुम सोई, मन के कहे चलो मत कोई।"

महाराज जी भी कहते हैं कि प्यारया, रात अँधेरी है, और अँधेरी रात में कुछ भी नहीं दिखता है। आप जागोगे तो उस परमात्मा को देख लोगे।

अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "रात अंधेरी पथ अनजाना, सिर पर है पापों का भार, गहरी नदिया नाव पुरानी, और उसमें भी छेद हजार"।

किरपाल सिंह महाराज जी कहते हैं कि प्यारयो, हमारे मन की गलती संत ही कहते हैं। जितने भोग हैं, उतने रोग हैं। अब भोगों ने मन की शक्ति क्षीण करदी है, इसको कमजोर कर दिया है। इसलिए प्यारयो, हमें जितना भजन पर बैठना चाहिए, हम उतना नहीं बैठ पाते हैं।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "खोटी आदत ना गवाई, मत्था फेर घिसाया की"।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि देखो प्यारयो, हमारा जो हृदय है वह उलटा हो गया है। अब गुरु जब नाम देता है, शब्द देता है, तो वह उसको ठीक कर देता है। फिर क्या है? ऊपर से जो अमृत की बरसात हो रही है, उससे एक नहीं तो दो बरसात के साथ हमारा घड़ा भर जायेगा।

अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि मात, पिता, भाई, सुत, और दारा के साथ इसका मोह हो गया है। अब नाम जपने के लिए समय ही नहीं मिलता है।

"दया करी गुरुदेव मेरे ने, मोह का बंधन तोड़ दिया।"

कबीर साहब कहते हैं,

"जाग मुसाफिर जाग, घना दिन सो लिया रे।

पहले सोया मात गर्भ में ऊंधा पाँव पसार, भक्ति करके बाहर आयो,

भूल गया करतार, जन्म तेरा हो लिया रे।

दूजा सोया पिता गोद में, हंस हंस दांत दिखाए, बहन भाई तेरा करे लाड रे,

मंगल चरना गाये, लाड तेरे हो लिया रे।

तीजा सोया त्रिया सेज पर, गले में बहियां डाल।

त्रिया जाल में फंस गया बंदे, यह है मोह का जाल, विवाह तेरे हो लिया रे।"

जब शादी होती है, बड़े चाव के साथ होती है।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी भी शादी बारे कहते होते थे कि माता ने पूछा कि बेटा तेरी शादी करिए। उन्होंने कहा कि मेरे से एक भूत तो सूत नहीं आता, दुसरा भूत लाऊंगा तो कैसे सूत आएगा।

शादी करानी प्यारयो कोई मंदी बात नहीं, मगर हम अच्छे तरीके के साथ रहें।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि जो मनमुख है, वह हर किसी में गलतियां निकालता रहता है।

जो गुरुमुख है, वह अपनी गलतियां निकालता है, और कहता है, हे सतगुरु, मैं पापी हूँ।

एक गुरुमुख अपने सभी अच्छे गुणों को छिपाता है, और सिर्फ अपनी कमियों का इज़हार करता है।

मनमुख का कौन सहारा है? मनमुख का कोई सहारा, संगी-साथी नहीं है।

हमें अब नाम मिल गया है। अब हम सत्संगी बन गए हैं, तो हमें किसी में भी गलती नहीं निकालनी चाहिए।

कबीर साहब कहते हैं, "बुरा जो देखन मैं चला, बुरा ना मिलया कोई, जो मन खोजया आपना, तो मुझसे बुरा ना कोई"।

उस कृपालु ने कृपा की और अपना नाम दिया, और नाम जपवाया। हम भी गुरु के वचनों पर चलें, और नाम जपें।

प्यारयो, कोई भी किताब, पोथी, या धर्मग्रंथ पढ़ें, तो उसमें यही आता है कि अगर हम परमात्मा की भक्ति करें, तो हमें सर्व-सुख प्राप्त हो सकते हैं। हम चौरासी से निकल सकते हैं।

प्यारयो, अब हम गुरु-सेवक बन गए हैं, गुरु-सेवक के लिए कायदा कानून है कि किसी का दिल नहीं दुखाना।

एक दूसरे में दोष निकालते हैं। हमने सोचा नहीं है कि हमने शादी तो कराई है, मगर हम गलती निकालते हैं। **परमात्मा तो सब में है, तो उसकी गलती निकालते हैं।**

हमारा मन एक तरफ तो प्यार करता है और दूसरी तरफ गलती निकाल रहा है।

आपो अपना दांव लगा रहे हैं। पत्नी अपना दांव लगा रही है। पति अपना दांव लगा रहा है। पति पत्नी एक दूसरे की बेइज्जती कर रहे हैं। यह हम क्या कर रहे हैं? अब पति पत्नी एक दूसरे की बेइज्जती कर रहे हैं या प्यार कर रहे हैं?

"सतगुरु आ जावीं, सानूं प्यार सीखा जावीं।"

प्यारयो, जिसने हमें पैदा किया है, यह उसका सत्संग है। वह सत्संग दे रहा है। हम सब बराबर हैं। प्यारयो, मैं आपसे कुछ कम ही हूँ। घटिया हूँ घटिया।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "प्रेम नाम है, प्यार नाम है, कहते बेड़ा पार नाम है"। **हम सत्संग सुनते हैं, लेकिन सुनने तक ही याद है, फिर भूल जाते हैं**। हमारा मन भुला देता है।

एक कहानी में आता है कि तीन मूर्तियां थीं, उनका एक सा वजन था और एक ही मिस्त्री की बनाई हुईं थीं। एक मूर्ति ने एक कान से सुना और दूसरे से निकाल दी तो उसका कुछ नहीं बना है। दूसरी मूर्ति ने एक कान से सुनी और मुंह से निकाल दी तो उसका कुछ तो बना है। तीसरी ने एक कान से सुनी और उसके पेट में चली गयी। अब पेट में चली गयी तो हजम हो गयी है। कहने का मतलब कि गुरु ने यह कुछ कहा है, और यही करना है।

तो सभी संत अपने मन को समझा रहे हैं। "हे प्रभु मैं नीच कर्मा, शरण पड़े की राखो शरमा।"

मैं पापी हूँ, मैं अवगुण हारा हूँ। तू बख्शीं दाता। हालाँकि यह बात संगत पर ढुकती है।

कोई भी गुण नहीं पल्ले, सब अवगुण दा भरया हां। आप बख्श लो। मैं गुनहगार हूं, तू बक्शणहार है।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "ओ मन मूरख, अब तो जाग"।

साधु भी कहता है, कि हे सतगुरु मैं अनजान हूं। बोल नहीं जानता हूँ। तेरी संगत बहुत सयानी है, अच्छी है। अपने आप समझ लेगी।

सत-संगत और मन का सुधार

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "संता दा करलै संग मना, चढ़ जाए नाम दा रंग मना"।

हौमें जो है, यह मन को एक बीमारी लगी हुई है। हौमें की बीमारी यही है कि मन सोचता है मेरी मान-बड़ाई हो, या मेरा ही कहना और हुकूमत चले।

गुरबाणी के अंदर ऐसा आता है कि हे मन, तू फीका ना बोल। फीका बोलने से क्या मिलता है? गुरबाणी यह कहती है कि उसे दरगाह में धक्के पड़ते हैं, और मार भी पड़ती है।

निंदा या चुगली हम करते हैं। उसके साथ क्या है कि हमने अपना तन और मन दोनों ही गंदे कर लिए हैं।

सावन सिंह महाराज जी अपने सेवकों को सच बोलना सिखाते थे। सेवकों को सच बोलना चाहिये। सच बोलने वाले की गुरु इमदाद करता है, मदद करता है।

मन के अंदर परमात्मा को बिठाने के लिए जगह भी बनानी है।

जिस तरह ब्याह शादी या वैसे भी कोई मेहमान आना चाहे, तो पहले हम अपनी जगह की, मकान की, बिस्तरों की पूरी तरह से सफाई करते हैं। अपने कपड़ों की भी सफाई करते हैं। शरीर की भी सफाई करते हैं। मगर ये सोचा कभी नहीं कि मन की भी सफाई करनी चाहिए।

ऐसा कोई इंसान मिल जाए जिसने अपनी पूरी जिंदगी में झूठ ना बोला हो, निंदा-चुगली ना करी हो, और किसे का दिल ना दुखाया हो। तो ऐसे इंसान को परमात्मा भी देखता है, कि बिलकुल ठीक है और अपना मन भी पवित्र रखा हुआ है।

गुरबाणी में ऐसा आता है, "कोटन में कोऊ जो भजन राम को पावे"।

ऐसा भी होना चाहिए, जिसने अपनी कारगुजारी करी हो। अपनी जीविका और बच्चे खुद की कमाई करके पाले हों।

महाराज जी कहते हैं, "तैनू मिलया मानस जामा ओए, तू सांभ लवीं इंसाना ओए। लाहा लैन प्राणी, लाहा लैन प्राणी आया ऐ, माया ने जाल फसाया ऐ"।

ये जो हम देख रहे हैं, यह मन माया का राज है। जो शरीर है, यह भी माया ही है। ज़मीन जायदाद, सोना-चांदी, रुपए सब माया है।

कबीर साहब ने कहा है, "मेरा मन पंछी भया, जब देखी माया तो गिर पड़ा"। प्यारयो, यह माया पंख लगा कर उड़ जाती है, ना किसे को मिली है, ना मिल ही सकती है।

"सत की बांदी लक्ष्मी, फेर मिलेगी आय, सत छोड़या पत्त जाए"।

तो इस लिए क्या है कि उस भगवान की माया है, परमात्मा की है, उस शब्द की है।

वह जहां अगर अपनी मौज बरता देता है तो वहां बरता ही देता है।

हम गुरु को भूल कर ही इसके पीछे लगते हैं। ना माया मिली ना राम। दोनों ही नहीं मिले। महाराज जी कहते हैं, "कर बंदगी सोहना बंदा है, बंदगी दे बाजों गंदा ऐ। खाली ना जाए दम अड़या, ऐह चम्म किसे नहीं कम्म अड़या"।

कबीर साहब भी कहते हैं कि अगर नाम नहीं है, तो यह चमकती चमड़ी किस काम की है? अगर नाम है तो कोढ़ी भी अच्छा है, क्योंकि उसके पास नाम तो है।

सतगुरु अजायब तूने नाम दिया है, अपने नाम की लाज तूने ही रखनी है। चंगे हैं या माड़े हैं, तेरे ही हैं।

तेरी आत्मा तड़फ रही है, दर्शन को प्रभु तरस रही है। सतगुरु दया करो, दर्श दिखाओ। "अर्ज गुजारां कदे ना विसारां।"

महाराज जी भी कहते हैं कि तूं मेहर कर, और अपना नूरी दर्शन दिखा।

हमें तेरे दर्शन की भूख है। सच्ची-सुच्ची तड़फ है तो गुरु जरूर दर्शन देता है।

"पीर दा बिछोड़ा दुःख जिंद मेरी सहंदी ना, सतगुरु नूं देख-देख भूख मेरी लहंदी ना।"

मन सच्ची बिनती करता है तो वह जरूर सुनता है।

जहां नाम का सिमरन होता है, वहां कोई विरोधी ताकत नहीं आ सकती है। कोई डायन, भूत-प्रेत, कुछ भी नहीं आ सकता।

महाराज जी कहते हैं, "असीं जन्म-जन्म दे मैल भरे, उजले सतगुरु किरपाल करे। ओह तारण आया तारेगा, अजायब दे काज संवारेगा"।

गुरु के अंदर वह परमात्मा होता है, उसके दर्शन करके हमारे पाप खत्म हो जाते हैं, और हम भवसागर तर जाते हैं।

महाराज जी कहते हैं कि परमात्मा है तो सारी जगह, लेकिन भक्तों के अंदर वह प्रगट होता है, इसीलिए उनके दर्शन करने चाहिये। उनके दर्शन करके हमारे पाप खत्म हो जाते हैं, और हम तर जाते हैं।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "संता दा कर लै संग मना, चढ़ जाए नाम दा रंग मना। हौमें नूं अन्दरों कडना ऐ, आदत भैड़ी नूं छडना ऐ।"

सतगुरु के सेवक का क्या कर्तव्य है?

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "सुन सीखा सिखी वाले फर्ज़ निभा लवीं, दुनिया दे झगडे ना गल विच पा लवीं"।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी ने जो भजन लिखे हैं, वे हम सेवकों के लिए लिखे हैं। सेवक कह लो, सिख कह लो, एक ही है। सेवक, सत्संगी, नाम लेवा, एक ही है।

"जे अजे बाज ना आवे, तां गुरु चरना विच जोड़ दयो।"

"आया बंदे तरण दा वेला, लगया ऐ तूं करन कवेला।"

हमारे शरीर के अंदर परमात्मा है, जो धुन-शब्द की राह से बोल रहा है। वह जो आवाज है, उसे हमने सुनना है।

भजन कितना करना है? "दिन राती करके बंदगी नूं, दुनिया दे बंधन तोड़ लयो।"

तो प्यारयो, कबीर साहब ने भी कहा है कि सेवक या भगत कैसा होना चाहिए? जैसा की पानी है। मगर पानी भी कभी गर्म होता है, कभी ठंडा होता है, तो यह भी ठीक नहीं

है। कहते हैं राख जैसा हो जा? राख भी उड़कर आंखों में गिरेगी, यह भी ठीक नहीं है। जिस तरह रोड़ा है रास्ते का? रास्ते में रोड़ा पड़ा हुआ है, यह भी किसी के पैर में लगेगा और दुःख देगा। यह भी ठीक नहीं है। फिर कैसा होना चाहिए? जैसा परमात्मा है, रब्ब है, वैसा। रब्ब किसी का दिल नहीं दुखाता, किसी को कुछ नहीं कहता।

अगर सतगुरु का सेवक है, नाम लेवा है, तो वह गुरु के भाणे में रहता है। जब भाणे में रहता है और सेवक कहलवाता है, तो हौमें रोग किस चीज का है?

सतगुरु अजायब सिंह महाराज ने कहा है, "मैं मेरी हटोणी पैंदी ऐ, भेटां सिर दी चढ़ौणी पैंदी ऐ"।

अगर सेवक गुरु का हुक्म मानता है, तो कैसा है? सेवक भाणे में रहता है, फिर जैसा भी गुरु रखे, रहता है। गुरु को परमात्मा समझता है। जैसा गुरु रखे सेवक वैसा रहे। गुरु चाहे भूखा रखे, प्यासा रखे, नंगा रखे, या घास खुदवाए, तो यह सतगुरु की मौज है।

प्यारयो, सबसे पहले भजन करो।

महाराज जी कहते थे कि सबसे पहले अपने मन को इसके घर पहुंचाओ। जितनी भी ज्यादा खराबी है, भरम और वहम हैं, वे मन के अंदर हैं।

जैसा उसकी मौज है, सेवक तो उसमें रहकर ही राजी है, खुश है।

भगत की बाहरी रहनी सहनी से पता लग जाता है कि यह भगत है।

एक दी मैंने रोटी बनाने वालों को कहा की मेरे लिए पानी ले आओ। तो उन्होंने जो गर्म पानी चूल्हे पर था वह पकड़ा दिया। वह पानी मैं पी तो गया, मगर मुंह को डेढ़ महीना लग गया ठीक होने में। मैंने उन्हें कुछ भी नहीं कहा। उन्होंने ही मुझे कहा कि तुम्हें गर्म पानी मैंने दे दिया।

ऐसे ही एक दिन परिवार वालों ने रोटी पकाई। सर्दी का महीना था, और सारे खाना खा कर सो गए। मेरा जो कमरा था वह बाहर था, और मैं अपना भजन कर रहा था। तो घर वाले देर रात को उठे और पूछा कि तुमने रोटी खाई? मैंने कहा, कि किसी ने दी

नहीं। फिर आधी रात को उठ के उन्होंने रोटी बनायी और मुझे पकड़ाई। तो रोटी मैंने कभी मांगी नहीं, कि उस मालिक की पता नहीं क्या मौज है। रोटी देनी है या नहीं देनी है।

अजायब सिंह महाराज जी ने भी कहा था कि दस या पंद्रह साल जिसने लगातार रात-दिन भजन किया है, तुम उसके पास जाना। मैं भी वहां होऊंगा और तुम्हारा भी फायदा होगा।

प्यारयो, जितनी देर मन नहीं मरता है, काम के झोंके उठते हैं, या क्रोध के, या लोभ के, **तो अभी भगत नहीं बना है।**

कबीर साहब ने भी कहा है, "कामी क्रोधी लालची इनसे भगत ना होए, भक्ति करे कोई सूरमा जात, वर्ण, कुल खोए"।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी का प्यार भरा सन्देश था कि प्यारयो चारपाई पर एक समय में एक ही आदमी होना चाहिए। दो नहीं बैठ सकते हैं। मैं भी अपने गुरु की

दया के साथ या तो नीचे बैठ जाना है, अगर चारपाई पर बैठना है तो अकेले बैठना है।

संत किरपाल सिंह महाराज ने भी कहा है कि या तो सेवक हो या गुरु हो, तीसरा कोई ना आए जब भजन पर बैठें।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी ने कहा कि सिखी का निभाना एक तलवार पर चलना है। "दुई ते द्वैत कड्ड, मन समझा लवीं।"

शांत मन से सोचने वाली बात है, जो कोई आपको कुछ कहता है तो समझो की गुरु ही कह रहा है।

कबीर साहब ने भी कहा है, कि "गुरु झिड़के तो मीठा लागे"। हमारे अंदर गलतियां हैं तभी वह झिड़कता है।

महाराज जी ने कहा है, "गुरु गोबिंद सिंह सानूं एकता सीखा गया, जात पात वाले सारे झगड़े मुका गया"।

महाराज जी कहते थे कि अगर भक्ति करनी है तो किसी का भी दिल ना दुखा।

"दुखी दिलां तांई देखीं, किते ना सता दवीं।"

प्यारयो, जितने समय तक हम शब्द के साथ नहीं जुड़ते हैं, मन दुःख ही देता है। इसको शब्द के साथ जोड़ देंगे तो सदा के लिए हमें अमर सुख मिल जायेगा। अटल सुख हो जायेगा।

शुरू-शुरू में यह मन अड़ियल है, और हठ करता है। तो इसे प्यार के साथ बैठाएं, एक घंटा तो सिमरन का नाम दान के वक्त मिलता है। उसके बाद थोड़ा-थोड़ा बढ़ाएं। प्यार से मन सिमरन में लग जायेगा। जब प्यार से यह सिमरन में लग जायेगा तो अंदर से इसे रस आ जायेगा। जो नाम का रस है, इसके आगे दुनिया के सारे रस चाहे इकट्ठे कर लें, फीके लगते हैं।

महाराज जी कहते हैं, "काया दा मंदिर हरी ने रचया जहान है, घट-घट विच बैठा आप भगवान है। भूल ना तूं जावीं सिखा, मंदिर ना ढा लवीं"।

कबीर साहब ने कहा है कि पत्थर की मूर्ति को आप घड़ता है, फिर आप ही पूजता है। "पत्थर ने राम बणावे।"

चाहे हम पत्थर का कोई मंदिर बना लें, या मस्जिद बना लें। और कोई भी धर्म-पुस्तक, या धर्म-ग्रन्थ, या धर्म की जगह भी बना लें, मगर वे बोलती नहीं हैं।

बोलने वाला तो इंसान है, बंदा है, और यहीं भगवान बोलता है।

प्यारयो, वह कुल-मालिक, करण-कारण इंसान में है। बाहर हम चाहे कितना ही वक्त लगा लें, पर वह बाहर से नहीं मिलेगा।

चीज हमारी कहीं मकान के अंदर गुम है, और हम ढूंढ बाहर रहे हैं। चाहे सारी उम्र क्यों ना व्यतीत कर दें, वह चीज मिलनी नहीं है, क्योंकि बाहर है ही नहीं।

किरपाल महाराज जी भी कहते हैं, पढ़ा हुआ पढ़ा सकता है, मिला हुआ मिला सकता है।

जिस तरह से शिक्षक है पढ़ा हुआ है, बच्चा अनपढ़ है। शिक्षक ने विद्या जगाई हुई है और वह बच्चे की विद्या को जगा देता है।

भगत भी एक-एक मंजिल तय करके उस परमात्मा में मिल जाता है। शब्द में मिला हुआ ही मिला सकता है।

गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैं कि अगर तुम्हें मुझे मिलने का शौक है, तो शीश तली पर रख कर आओ।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि प्यारयो, मरने से पहले ही मर रहो। महाराज जी अभ्यास जब सिखाते तो वह जीवित मरना ही सिखाते थे।

जिसने शब्द को पहचान लिया है, और देख लिया है, उसे दोबारा नहीं मरना पड़ता। मर कर जाना है और शब्द में मिल जाना है।

संत जब नामदान देते हैं तो आत्मा की डोरी सचखंड में बांध देते हैं, और आत्मा को फिर ऊपर खींच लेते हैं। आत्मा की रक्षा परमात्मा ही करता है।

महाराज जी कहते हैं, "हीरखा ते वैर वाले, झगड़े मुकाई जा"।

जो उसका भाणा है, वह मीठा करके मान। सेवक तो गुरु के भाणे में रहता है। जब भाणे में रहता है तो फिर हीरखा किस चीज की है?

प्यारयो, संगति करके हमने दुःख बना लिए हैं।

जुएबाज की अगर हम संगत-सोहबत करते हैं तो मन को जुआ खेलने की आदत पड़ जाएगी। शराबियों की संगत-सोहबत करेंगे तो मन को शराब पीने की आदत पड़ जाएगी। कबाब खाने वालों के पास जायेंगे तो वही आदत पड़ जाएगी। प्यारयो, किसी का अगर गला काटते हैं तो कटवाना भी पड़ेगा। जो जुल्म करते हैं, उन्हें जुल्म की सजा भोगनी पड़ेगी। सब संत कहते हैं, प्यारयो, अपनी खुद की मेहनत की कमाई करो। अपनी आजीविका और अपनी पेट गुजारी सभी संत करते हैं। वे किसी के कमाए से कोई आस नहीं रखते हैं।

गुरु नानक देव जी महाराज भी कहते हैं, अगर दूसरे के धन की आशा रखते हैं तो पाप कमा रहे हैं।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि प्यारयो, अपनी मेहनत की कमाई करो और अपने बच्चे पालो, और खुद खाओ।

अपनी सच्ची-सुच्ची कमाई, मेहनत की कमाई करते हैं, तभी भजन बनता है, मालिक दरवाजा खोलता है।

विदेशी प्रेमियों का यह होता है कि पति पत्नी का झगड़ा हो जाता है। उन्होंने सत्संग सुना ही नहीं। अगर सुना है तो एक कान से सुना, और दूसरे कान से निकाल दिया है।

सत्संगी वही है जो सत्संग पर जीवन ढाले। सत्संग पर जीवन ढालेंगे तो अपनी जिंदगी सफल बनाएंगे।

महाराज जी कहते हैं कि प्यारयो, बहुत जन्म हो गए हैं हमें।

स्वामी जी महाराज ने भी कहा है, "हे प्राणी छोड़ पुरानी बान"।

कबीर साहब ने भी कहा है कि मना चार दिन की जिंदगी मिली है, किसी को क्यों दुःख देता है। अगर सतगुरु ने तुम्हें इंसानी जामा दिया है तो इंसानों वाले काम कर।

गुरु नानक देव जी भी कहते हैं कि अपनी बीवी की रोटी छोड़ कर दूसरों के आगे हाथ फैलाता है, तो गुरु-पीर चरणों में जगह नहीं देता है।

बाहरी तोर पर पति पत्नी का एक निजी प्यार होता है। अपना उसने जीवन साथी बनाया है, ताकी दुःख-सुख में साथ दे। प्यारयो, अगर दुनिया में देखें तो इससे ज्यादा कोई और प्यार नहीं है। पति पत्नी का प्यार है। **छोटी मोटी गलती हो जाती है तो हमें माफ़ी देनी भी चाहिए** और मांगनी भी चाहिए, ताकि हमारा प्यार बना रहे।

सतगुरु अजायब सिंह जी महाराज कहते हैं, "दुनिया दे झगड़े ना गल विच पा लवीं, सुन सिखा सिखी वाले फर्ज़ निभा लवीं"।

मन काबू में कब आता है?

हमें सिमरन करना चाहिए और नाम जप कर यह जीवन सफल बनाना चाहिए।

हम सिमरन पहले भी करते थे और आज भी हर इंसान सिमरन कर रहा है।

जो भी अपना कारोबार या दुनियावी काम करते हैं, वे उन चीजों के बारे में सोचते हैं जो उन्हें करनी होती हैं। सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि प्यारयो, कोई बच्चों का सिमरन करता है, पत्नी का या दुनियावी कारोबार का सिमरन करता है। किसी ना किसी तरह का सिमरन हर कोई कर रहा है।

पिछले जन्मों में किए गए सिमरन के कारण हमें अगला जीवन अलग-अलग जूनियों में मिलता है, चाहे वह पशु, पक्षी, या वनस्पति की जून हो।
उस परमात्मा ने दया की और हमें यह मानस जन्म दिया। उन्होंने हमें यह समझाया कि मानस जन्म में ही हम अपने अगले जीवन का झुकाव और दिशा को बदल सकते हैं।

उस परमात्मा को मिलने का काम केवल इस मानस जामें में ही किया जा सकता है। भगवान से मिलने के लिए एक पूरे सतगुरु के पास जाना जरूरी है। वह नाम दान देता है और उस प्रभु के साथ हमारी आत्मा जोड़ता है।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि मैं नाम दान के वक्त अपने गुरु के साथ आत्माओं को जोड़ता हूं।

जब सतगुरु नाम दान देता है, तो वह अपने कमाए हुए सिमरन की एक कणी देता है। वह सेवक को ध्यान करने और अंदर जा कर उस प्रभु परमात्मा से मिलने के लिए कहता है।

जब गुरु प्रेमियों को नाम दान और अनुभव देता है, तो वह कहता है कि आपको भरोसे के साथ कड़ी मेहनत करनी होगी। यदि सेवक वैसा करता है जैसा गुरु करने के लिए कहता है, और विश्वास है, तो अंदर जाकर जरूर अनुभव कर सकता है।

संतों का कहना है कि किसी भी बाहरी करम-काण्ड या रीति-रिवाज से आपको अंदर जाने में मदद नहीं मिलेगी। कोई भी व्यक्ति केवल गुरु की कृपा से अंदरूनी अनुभव को पा सकता है।

जब वह तुम्हें भजन के लिए बैठाता है, तब अपनी तवज्जो देकर आत्मा को इस पिंड से ऊपर उठने और अंदरूनी अनुभव पाने में मदद करता है।

जब सतगुरु नाम दान देता है तो वह ज्यादातर प्रेमियों को आध्यात्मिक अनुभव देता है। लेकिन, जिनके मन शांत नहीं हैं, उन्हें अनुभव नहीं होता है।

शुरुआत में हमारे दिल में गुरु के प्रति काफी प्यार होता है। यदि हम विश्वास से भजन सिमरन करते हैं और जैसा गुरु ने कहा है वैसा करते हैं, तो फिर थोड़े से प्रयास से ही हमें अनुभव हो सकता है। इसीलिए प्रेमियों को नामदान मिलने पर अधिक मेहनत करनी चाहिए ताकि उन्हें अंदर अनुभव हो सके। जैसे-जैसे समय गुजरता है, हमारी रुचि और प्यार कम हो जाता है। भजन सिमरन में तरक्की और अनुभव प्राप्त करने के लिए फिर कहीं अधिक कड़ी मेहनत करने की जरूरत है।

शुरुआत में प्रेमियों में गुरु को अंदर देखने और तरक्की करने की अधिक तड़फ और इच्छा होती है। लेकिन समय बीतने के साथ-साथ यह तड़फ कम हो जाती है, और यहां तक कि सिमरन करना भी कम कर देते हैं।

सतगुरु की कृपा हर समय बनी रहती है।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "गुरु बिना ज्ञान नहीं, ऐवें भुलया फिरे अंजाना"। केवल एक पूरा गुरु ही ज्ञान दे सकता है।

गुरु के बिना हम ध्यान नहीं लगा सकते हैं। गुरु के बिना कोई आसरा नहीं है।

कबीर साहब कहते हैं कि जब हम दुखों से गुजरते हैं, तो उस समय हम उस ईश्वर को याद करते हैं।

पिछले जन्मों में किए गए कर्मों के कारण हमें दुःख आते हैं। केवल सतगुरु उन कर्मों को ले सकता है, कोई और ऐसा नहीं कर सकता है।

सतगुरु का कहना है कि जैसे सूखी घास को एक छोटी सी आग की चिंगारी जला कर राख कर देती है, वैसे ही गुरु का नाम काम करता है। गुरु का दिया नाम पिछले सारे कर्मों को ख़त्म कर देता है।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि एक बार हमें नाम, गुरु और सत्संग की बख्शीश हो जाती है, फिर यह **हमारा कर्तव्य है कि हम भजन सिमरन करें,** और नाम जपें।

गुरुमुख अपने मन को समझाता है।

हम अपने चारों तरफ जीवन के कई रूपों को पौधों, पक्षियों, जानवरों के रूप में देखते हैं। वे भी कभी इंसान थे, लेकिन शब्द नाम नहीं मिला, पूरे गुरु के पास नहीं गए तो निचले जन्मो में आना पड़ा। उन्होंने मानव जन्म में रूहानी चढ़ाई नहीं की और इसलिए निचली खानियों में वापस चले गए।

अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "धियां पुत्तर कुटुंब कबीला, बंदया ओए मीठड़ा जादू ऐ, नाम तो बिना कुछ नाल नहीं जाना, ऐह कानून सबते लागू ऐ"।

गुरबाणी का कहना है कि दुनिया एक सपने की तरह है। जीव को इस दुनिया को सपने की तरह ही समझना चाहिए।

अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "साडा ना कोई वे लोको, असीं ना जहान दे, सावन किरपाल बाजों, किसे नूं नहीं जानदे"।

शब्द परमात्मा है। शब्द ही एक ऐसी शक्ति है जो मन को काबू कर सकती है।

दुनिया के किसी भी कोने में ऐसी कोई भी चीज नहीं मिल सकती जो मन को काबू कर सके। केवल शब्द ही ऐसा कर सकता है।

सतगुरु अजायब कहते हैं, "अंग साक जो भाई बहना, सब मतलब दे प्यारे ने, अंत वेले कोई नेड़े ना आवे, धोखे बाज सहारे ने। आखिर वेले आएगा सतगुरु, ओसे दा शुक्र मना लईऐ।"

परिवार के सदस्य केवल तब तक हमारे साथ हैं जब तक उनका निजी स्वार्थ है। वे तब तक मीठे हैं जब तक उनका स्वार्थ पूरा होता है। जब उनके स्वार्थ पूरे होने बंद हो जायेंगे तो वे आपकी परवाह नहीं करेंगे।

सतगुरु कहते हैं, प्यारयो हम अच्छे-बुरे कर्मों में फंस जाते हैं। यदि खाते में केवल अच्छे कर्म होते तो स्वर्ग मिलता, यदि केवल बुरे कर्म होते तो नरक मिलता।

जब अच्छे कर्म और गुण एक साथ मिल जाते हैं तो इसका फल मिलता है, और हम फिर से इस मात लोक में जन्म लेते हैं।

जन्म-मरण का चक्र गुरु की भक्ति से ही ख़त्म हो सकता है।

शांति किसे मिल सकती है?

सिमरन करने वाले को शांति मिलती है। **गुरु की मदद से ही कोई अपने मन को टिका सकता है।**

आत्मा से तीनों पर्दे हटाने के बाद ही शांति मिल सकती है।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, मुझे महान गुरु संत किरपाल सिंह जी मिले जिन्होंने मुझे सिमरन के पांच शब्द दिए।

हमें गुरु के प्रति प्यार बढ़ाना चाहिए। आओ मिलकर हम उस मालिक के गुण गाएें।

काल का राज निचले तीन मंडलों में है। वह परमात्मा चौथे मंडल में रहता है।

निचले तीन मंडलों में आत्मा एक छोटे से दीये की तरह है। इस पर तीन परदे चढ़े हुए हैं। भले ही यह दीया जल रहा है, लेकिन कोई भी बाहर अपनी रोशनी नहीं देख सकता। कुंजी सतगुरु के पास है।

हमारे अंदर एक मजबूत दरवाजा है जिसे अंदर से ताला लगा हुआ है। केवल सतगुरु अपनी चाबी से उस दरवाजे को खोल सकता है।

तीसरी आंख बाहरी दो आंखों के दरम्यान से थोड़ी ऊपर होती है, और इसका उल्लेख धार्मिक ग्रंथों में मिलता है।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "सतगुरु नूं देख देख, भुख मेरी लेहंदी ना"।

मुझे अपने गुरु से अलग होने का दर्द है। हमें गुरु की भक्ति मिली है। हमें अपने फैले ख्याल को इकट्ठा करना होगा, और आंखों के ठीक ऊपर माथे के केंद्र में ध्यान लगाना होगा। हम मन को बार-बार अंदर की ओर खींचते हैं, लेकिन यह बाहर चले जाता है। मन थोड़ी देर के लिए आता है, लेकिन वहां ठहरता नहीं है। हमें मन को उसके घर में ले जाना होगा। जब मन अपने घर, जो त्रिकुटी में है, पहुँच जाता है, उस समय गुरु इसे नाम का अमृत पिलाता है।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि इस अमृत में इतनी मिठास होती है, और यह इतना अच्छा होता है कि इसे पीने के बाद मन फिर से बाहर नहीं जाता। नाम का अमृत पीने के बाद मन अपने घर में ही रहता है।

इस समय मन सांसारिक विषयों में लिपटा हुआ है। लेकिन जब यह एक बार नाम का अमृत पी लेता है तो अपने ही घर में आकर टिक जाता है।

बच्चे को ना तो हाथ को आग में डालने के खतरों का पता है, और ना ही सांप को उठाने का। लेकिन बड़ा होकर जब यह समझदार हो जाता है, फिर जानता है कि क्या करना है, और क्या नहीं करना है। फिर किसी भी खतरनाक चीज को यह हाथ नहीं लगाता है।

सतगुरु कहते हैं, **सिमरन करो, नाम जपो, और जीवन को सफल बनाओ**।

जब हम सिमरन के लिए बैठते हैं तो सतगुरु दया की बारिश करते हैं, और हमारी मदद करते हैं।

भाग २

क्या हम सत्संगी बन गए हैं?

“हमारा फर्ज है कि हम अपना जीवन गुरुमत पर ढालें और ज्यादा से ज्यादा वक्त भजन सिमरन में गुजारें। सत्संग को बार-बार सुनने से कोई फायदा नहीं अगर हम उस पर विचार नहीं करते और अपना जीवन, जो सुना है, उस पर नहीं ढालते।”

भाग २ - अनुक्रमाणिका

क्या हम में सत्संगी के गुण हैं? १४७

उस परमात्मा को याद करने का समय कब निकालोगे? १५१

क्या हम गुरु की शरण में हैं? १५३

अपने मन को कितना नरम बनाना है?... १५५

हमें परिवार में कैसे रहना चाहिए? १५७

बुरे कर्मों पापों से कैसे बचा जा सकता है?.. १६०

शब्द से मन को कैसे बांधना है?.. १६२

सुख और दुःख में क्या करना चाहिए? १६३

जब किसी की मृत्यु हो तो सत्संगी को क्या करना चाहिए?............... १६४

मन द्वारा बनाई समस्याएं कैसे ठीक होती हैं? १६६

क्या हमने सत्संग को सुना है?.. १६८

क्या हम पूरे सत्संगी बन गए हैं? १७०

सेवक गुरु से क्या मांगता है?... १७१

क्या हमने सत्संग समझ लिया है?.. १७३

आत्मा को सिमरन की खुराक क्यों देनी है?... १७५

क्या हम गुरु पर अपने आपको वारने के लिए तैयार हैं?...................... १७८

हमारे मन को कितना चमकना चाहिए?.. १८०

पहले कौन?.. १८३

हमें आज से क्या करना चाहिए? १८५

क्या हम में सत्संगी के गुण हैं?

अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि प्यारयो, हम सत्संगी बन गए हैं, बहुत अच्छा है। बहुत अच्छा है कि आप सत्संगी बन गए हैं, धन्यवाद है। ठीक है, बहुत अच्छे सत्संगी बन गए हैं जी, खरे सोने बन गए हैं, खरे सोने। हम अब सत्संगी तो बन गए हैं, तो अब सत्संगियों वाले गुण हमें अपनाने चाहियें।

क्या काम-वासना को छोड़ दिया है? अजायब सिंह महाराज जी कह रहे हैं प्यारयो, मैं नहीं, मैं तो उनका कहा ही बोल रहा हूँ।

काम अगर किसी पर हमला कर दे, तो सोये हुए को उठा देता है। फिर जब मार पड़ती है, तब पता चलता है कि यह कितनी बुरी चीज है।

क्या क्रोध से बचे हैं? जब क्रोध आ जाता है तो खून खराब हो जाता है। लाल पीला हो जाता है। कत्ल तक आदमी कर देता है। जो बड़े हैं या बुजुर्ग हैं, उन्हें वह कह देता है जो नहीं कहना चाहिए था।

क्या लालच से बचे हैं? इस बीमारी से बचने के लिए गुरु के आगे अर्ज, प्रार्थना, बिनती करनी चाहिए।

तो प्यारयो क्या है कि गुरु बिना ज्ञान नहीं, और ज्ञान बिना मुक्ति नहीं।

अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि प्यारयो, जो इन चीजों से बचा है, वही आपको इन चीजों से बचाएगा।

अजायब सिंह जी महाराज कहते थे कि एक समय पर चारपाई पर एक ही आदमी होना चहिए।

कबीर साहब ने कहा है कि प्यारयो, हम सत्संग में आए हैं, और सत्संगी परिवार हैं। हम बहुत अच्छे हैं, बहुत अच्छे हैं।

अब हम सत्संगी बन गए हैं? पूरे सत्संगी बन गए हैं? गुरु वाले हैं, गुरु के लाल बन गए हैं?

बुल्लेशाह कहता है कि देख भाई, तू अब गुरु वाला बन गया है, पर गुरु को दिया क्या है? कुछ नहीं दिया है।

अब हम बाहरली चीज तो दे देते हैं, जैसे मिठाई देते हैं, कपड़ा-पैसा दे देते हैं, पर उनके साथ तो खुश होता नहीं है गुरु।

अब बुल्लेशाह कहता है, "दिल देके दिल लैणा, ते सौदा इको जेहा।"

अब गुरु को हमने मन बेच दिया तो फिर क्या हम माड़ी हरकत करेंगे? क्या मन शरारत करेगा, गाली-गलोच करेगा किसी के साथ? क्या गंदे ख्याल के साथ देखेगा मन? अगर ख्याल गंदे के साथ देख रहे हैं, तो अभी तक हमने गुरु को मन दिया ही कोई नहीं। अगर मन दे दिया है, तो चुप ठीक है।

तो प्रेमी पूरे बन गए हैं?

कहते तो हैं कि पूरे बन गए हैं।

कबीर साहब का फैसला है कि जो दरखत होता है, उसको कोई काटे या टुकड़े करे, उसे कोई परवाह नहीं है। तो गुरबाणी के अंदर भी आता है कि गुरु गोबिंद सिंह जी थे, भाई सती दास और मती दास को आरे से चीरा, पर मुंह से आवाज तक नहीं निकली, और यह कहा कि मुंह गुरु की तरफ कर दो और चीर दो।

अजायब सिंह महाराज जी भी कहते हैं, "गुरु दी शरणी पैजा, लाहा खट के लैजा"। तो शरण लेनी बहुत मुश्किल है। अजायब सिंह जी महाराज भी यह कहते हैं कि भजन करना अभी आसान है। शरण ली सावन सिंह महाराज जी ने। उनके दो बेटे थे और एक बेटा जो ओवरसियर लगा हुआ था, महाराज जी ने उसके ब्यास स्टेशन पर सांस पूरे कराये, क्योंकि प्रेमी आश्रम में कहते कि सांस दोबारा दो। तो सावन सिंह महाराज जी कहने लगे कि अगर मैं इसे जिन्दा करूँगा तो मेरी गुरमुखता में फर्क आ जाएगा। वह अपने गुरु के विश्वास पर रहते हैं। जो कुछ होता है, जो कुछ करना है, मेरे गुरु ने करना है और ठीक ही करना है। सावन सिंह जी महाराज जब अपनी पगड़ी बाँध रहे थे, साफा बाँध रहे थे तो शीशे में देखा - ना उनको कोई गमी थी, और ना ही ख़ुशी थी।

गुरु अर्जुन देव जी महाराज के पास एक दिन एक माता आई जिसका बच्चा मर गया था, और उसने गुरु जी को कहा कि इस बच्चे को जिन्दा कर। उन्होंने कहा, माता जहाँ कोई ना मरा हो उस घर से पानी ले आ, मैंने इसे जिन्दा कर देना है। माता उस सारे गाँव में ऐसे घर से पानी लाने के लिए फिरी जिसका कोई ना मरा हो।

उसको बताया कि भाई सब के मरा हुआ है, कोई ना कोई। अब ना मरें तो धरती तो पूरी तरह से भर जाएगी, इतने जीव हो जाएंगे।

नामदेव जी थे। नामदेव जी ने झोंपड़ी बनाई हुई थी, जो गाँव में थी, वह किसी ने जला दी। गाँव वालों ने देखा कि आग लगी हुई है, तो कुछ तो सामान निकाल दिया और कुछ बीच में ही जल गया। थोड़ी देर बाद नामदेव जी आ गए। गांव वाले कहने लगे कि कुछ तेरा सामान जल गया है, कुछ निकाल दिया है, यह देख ले। अब आग तो जल रही थी, नामदेव जी कहने लगे कि मेरा गुरु आया था, उसको तुमने भोग

लगने नहीं दिया। कहा कि ये भी भोग लगा ले, ये भी ले, और सारा समान वापिस आग में डाल दिया।

अब दिन छिप गया, तो गाँव के बाहर वाली तरफ जा कर नामदेव जी भजन में बैठ गए। भगवान आये और कहने लगे, नामदेव मैंने सुना है कि तेरी झोंपड़ी जल गयी है। नामदेव जी कहने लगे कि तूं अपना काम कर, मैं अपना कर रहा हूँ। वह फिर कहने लगे कि मैं तो ऐसे स्वाभाविक तौर पर पूछ रहा हूँ कि तेरी झोंपड़ी जल गई है। नामदेव जी कहने लगे कि तेरे अलावा कोई है जलाने वाला? भगवान कहने लगे कि अच्छा फिर नामदेव मैं बना दूंगा, पर किसी को बताना मत। उस स्थान पर एक अच्छा महल बन गया। प्यारयो, गुरु इम्तिहान ना ले किसी का, पास होना मुश्किल है।

मैं तो यही कहूंगा कि प्रेमी बहुत अच्छे हैं, बहुत अच्छे हैं। प्रेमी खरे सोने हैं, बहुत अच्छे हैं जी।

उस परमात्मा को याद करने का समय कब निकालोगे?

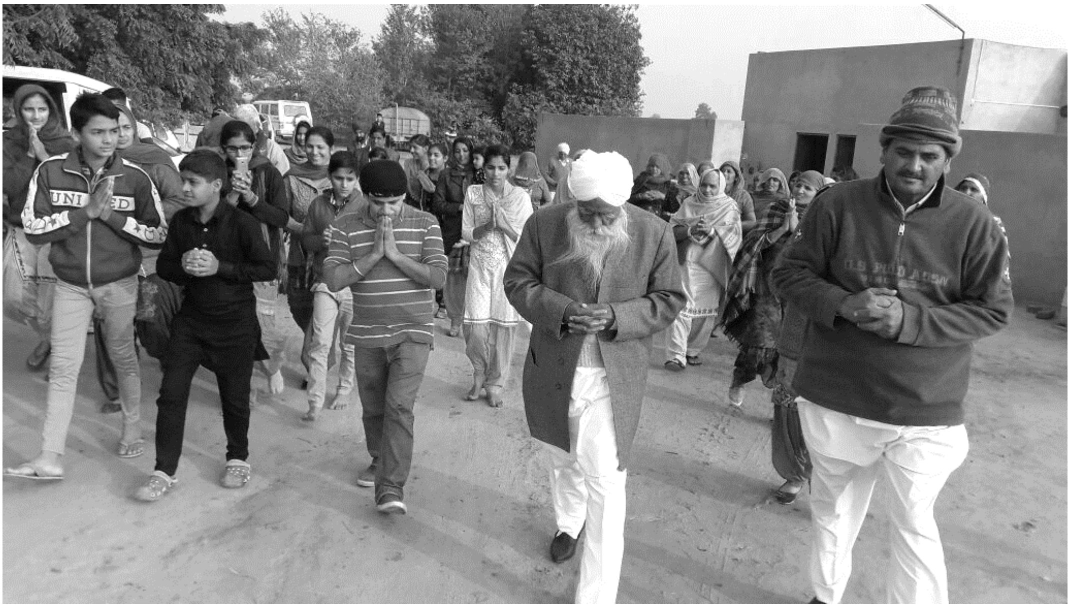

कबीर साहब ने कहा है, "चोरी करके तूं भाग जावें, पकड़न वाला तूं का तूं, इनका भेद बता मेरे अब्बू, साबत करनी कर, यह क्या डाली भूल जगत में, जहां देखें तहाँ तूं का तूं।"

प्यारयो, चोरों में वह भगवान है, डाकुओं में, बदमाशों में, क़त्ल करने वालों में भी वोह भगवान है। पर जब अपना अपना हिसाब मिलता है, फिर भगवान को दोष देते हैं कि यह तुमने कर दिया है। नहीं प्यारयो, ऐसा नहीं हो सकता है।

अजायब सिंह महाराज के पास एक आदमी आया, अब दुख तो दुःख ही है, तो कहने लगे कि यह तुम भुगत लो, आगे मत करना।

गुरबाणी के अंदर भी यह आता है, "आप बीजे, आप खावे। गुरुमुख मन समझाई।"

अजायब सिंह महाराज जी भी कहते हैं कि प्यारयो, हमें सत्संग में जाना चाहिए। अगर सौ काम हैं, फिर भी जाना चाहिए। हजार काम हों, वैसे हजार काम हो भी नहीं सकते, अगर हों भी, तब भी उस भगवान का हमें सिमरन करना चाहिए।

गुरबाणी भी कहती है, "आठ पहर अराधिये, पूर्ण सतगुरु ज्ञान जी।"

अजायब सिंह महाराज जी अपने मन को कहते हैं कि हे मन, तू आलसी भी ना बन, और नींद भी त्याग दे।

गोपीचंद भरतरी हुआ है, वह भी कहता है, "जागर जाओ भोली नींद, जहां नाम राम ना भावे, का रस के रस भोगे, जा जा तू राज द्वारे।"

संत अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, प्यारयो, "जागो जागो मेरे प्यारे, चलया बंजारा"।

कबीर साहब ने भी कहा है, "चार पहर खाये, चार पहर सोये"। फिर राम को कब याद करेगा?

अजायब सिंह महाराज ही ने कहा है कि मुझे गुरु किरपाल मिलया। उन्होंने एक शब्द में कहा भी है, "मार चौकड़ी कदे ना बैठा, जग विच संत कहाँदा है, सिमरन भजन कदे ना किता, रब्ब नूं मिलना चाहन्दा है"।

क्या हम गुरु की शरण में हैं?

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी भी यह कहते हैं कि आखिर गुरु की शरण में हैं, तो गुरु जैसा कहता है, वह सच और सही होता है। क्या हम गुरु के बन गए हैं?

"तेरे हुक्म दी करां उड़ीक, सतगुरु हुक्म करो।" अब गुरु वाले तो बन गए हैं, ठीक है, अच्छा है, शुक्र है। पर अभी भी हम करड़े-करड़े झांक रहे हैं। रस्सी जल गई है पर उसका मरोड़ नहीं जला है।

जमींदार किसान, खेती करने वाले को कहा गया है। वह जब जमीन में हल चलाता है, तो मोटे-मोटे डले खेत में बन जाते हैं। फिर वह सुहागा पूरे खेत में घुमा देता है, और सुहागे से डले तोड़ देता है। उसके बाद पानी लगाकर, फसल बीज कर, अच्छी फसल हो जाती है। अब किसान जमींदार को पता होता है कि डले सारे फोड़ कर एक दम बढ़िया जमीन तैयार हो जाती है। अब गुरु को पता है कि सख्त बहुत है, इसको मैंने नरम करना है।

"सतगुरु प्यारे ने मन मोहया बाणी सुना-सुना, सतगुरु प्यारे ने मन मोहया धुन बाणी सुना-सुना।"

अब मन पूरा नरम नहीं हुआ है, गदेले की तरह पूरा नरम।

अपने मन को कितना नरम बनाना है?

अब हम जो बाहर देवी देवताओं की पूजा करते हैं। संगत में जाते हैं, बहुत नाचते कूदते जाते हैं। बाबू गुरजंट से सुना था, तीर्थ पर जाते हुए कहते थे, कि सड़क किसकी, बाबे की। खम्भा किसका, बाबे का। पेड़ किसका, बाबे का। हम किसके, बाबे के।

अजायब सिंह महाराज जी भी कहते हैं, "नारा शाह किरपाल दा लावांगे"।

"असीं गुनहगार बाबा तैनूं हाँ पुकार दे।"

वैसे प्रेमी तो बहुत अच्छे हैं। पूछा जाता है कि पत्नी किसकी है? मेरी है। बच्चे किसके हैं? मेरे हैं। मकान किसका है? मेरा है। सारा सामान किसका है? मेरा है। नहीं प्यारयो, उस सत्पुरुष ने दिया है। अमानत दी है। पत्नी दी है, बेटे दिए हैं, धन दौलत दिया है। उसने ही दिया है। मेरे को अमानत दी हुई है। अब कोई भी अच्छा काम किया है, मैंने किया है, मेरी पढ़ाई ने किया है, मेरी अक्ल ने किया है। तो प्यारयो, हौमें रोग से हम बचे नहीं हैं। जब तक हमारे हौमें रोग की बीमारी चिपकी हुई है, भजन कैसे बनेगा?

बनेगा नहीं प्यारयो। इसलिए क्या है, जो भजन में रूकावट होती है, हौमें रोग की है। हौमें रोग चिपका हुआ है, इसलिए रूकावट होती है।

कबीर साहब ने कहा है कि गुरु-भक्ति में मन नरम करना चाहिए।

अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं कि **मन को जैसा गदेला होता है, वैसा नरम करना चाहिए। क्या इतना नरम हो गया है**?

क्या चुगली निंदा छोड़ दी है? क्या किसी का दिल दुखाना छोड़ दिया है? क्या तीखी बोली, गन्दी बोली, चरपरी बोली छोड़ दी है?

गुरबाणी में ऐसा आता है, "मना झुक कर चल, और मीठा बोल"।

अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि प्यारयो, हम सत्संगी बन गए हैं। बहुत अच्छा है। बहुत अच्छा है, सत्संगी बन गए हैं। धन्यवाद है कि हम बहुत अच्छे सत्संगी बन गए हैं। मैं भी कहूंगा, बहुत अच्छे सत्संगी बन गए हैं। खरे सोने बन गए हैं।

हमें परिवार में कैसे रहना चाहिए?

अब हमें कैसे रहना चाहिए परिवार में? अब जैसे परिवार में बहन है, भाई जब उसकी तरफ देखता है तो ख्याल पवित्र है। बहन भी भाई की तरफ देखती है, तो दोनों का ख्याल पवित्र है। हमें अब ख्याल पवित्र करना है। जैसे हम परिवार में रहते हैं, बहन है, भाई है, माता है, बुआ है, चाची है। वैसे ही, हम परिवार में रह सकते हैं। कई बार ऐसा हो जाता है, बार-बार हाथ लगा देते हैं। तो हमें कैसे रहना चाहिए? अब परिवार में हैं, तो जाना भी पड़ता है। बहन, भाई, माता, पिता, रिश्तेदार, जो भी हैं, अब जब बहन भाई मिलते हैं, तो भाई हाथ सिर पे रख देता है। जो दूसरा उसके साथ है, वह भी हाथ सर पे रख देता है। मैंने बाहर देखा है, चुम्मा भी ले लेते हैं। इससे प्यारयो, कबीर साहब ने फैसला किया है, कि काम वासना जाग जाती है। तो हम सत्संगी बन गए हैं, पूरे सत्संगी बन गए हैं। प्यारयो, यही बात है कि आत्मा का शरीर नहीं, परमात्मा का शरीर नहीं, तो अब हाथ लगाने से क्या ज्यादा प्रेम होता है?

विवाहित जीवन

जब शादी हो गई। बड़े चाव के साथ होती है। अजायब सिंह महाराज जी भी शादी बारे में कहते थे कि माता ने पूछा, बेटा तेरी शादी करिये, तो उन्होंने कहा कि एक भूत तो सूत नहीं आता, दूसरा भूत लाऊंगा तो कैसे सूत आएगा। तो शादी करानी कोई प्यारयो

बुरी बात नहीं है। अच्छे तरीके के साथ रहें हम। एक दूसरे की गलती निकालते हैं। यह कल रात भी बात हुई थी। हमने सोचा नहीं, कि हमने शादी तो कराई है, मगर हम गलती निकालते हैं। परमात्मा तो सब के अंदर है, तो उस परमात्मा की गलती निकालते हैं। हमारा मन एक तरफ तो प्यार कर रहा है, दूसरी तरफ गलती निकाल रहा है। अपना-अपना दांव लगा रहे हैं। पत्नी अपना दांव लगा रही है। पति अपना दांव लगा रहा है। अब पति पत्नी एक दूसरे की बेइ़ज़्जती कर रहे हैं, या क्या कर रहे हैं?

बाहरी तोर पर पति पत्नी का एक निजी प्यार होता है। अपना उसने जीवन साथी बनाया है, ताकी दुःख-सुख में साथ दे। प्यारयो, अगर दुनिया में देखें तो इससे ज्यादा कोई और प्यार नहीं है। पति पत्नी का प्यार है। छोटी मोटी गलती हो जाती है तो हमें माफ़ी देनी भी चाहिए और मांगनी भी चाहिए, ताकि हमारा प्यार बना रहे।

सतगुरु अजायब सिंह जी महाराज कहते हैं, "दुनिया दे झगड़े ना गल विच पा लवीं, सुन सिखा सिखी वाले फर्ज़ निभा लवीं"।

ग्रहस्थ जीवन में हमें हमेशा माफ़ी देनी चाहिए और माफ़ी मांगनी चाहिए, क्योंकि इस तरह से पति और पत्नी के बीच जो प्यार पहले दिन होता है, सारी उम्र कायम करके रखा जा सकता है।

हमें सबसे मीठे और विनम्र शब्दों के साथ बोलना चाहिए और घर-परिवार में प्यार और सद्भाव बनाए रखना चाहिए। हम एक-दूसरे की जरूरतों और आराम का ख्याल रखें और देखभाल करें। पति या पत्नी जो कुछ भी करते हैं उसमें एक दूसरे की सहायता करें। और कभी भी एक-दूसरे में कोई गलती नहीं निकालें।

"एक ने कही दूजे ने मानी, कहे नानक दोनों ब्रह्म ज्ञानी।"

जिस घर में प्यार और सद भावना है, वहां शांति भी है, और उनके सारे काम पूरे भी हो जाते हैं। इस तरह सिमरन में तरक्की भी होती है।

इस से हमारा मन उस परमात्मा की तरफ झुकना शुरू हो जाएगा और हम उस परमात्मा का सिमरन ज्यादा कर सकेंगे। इस तरीके से उस परमात्मा के साथ प्यार ज्यादा बढ़ना शुरू होगा और बदले में हमें उसकी दया और कृपा मिलेगी।

हम गृहस्थी हैं, हम किसी का दिल ना दुखाएं। दूसरों को अपने से सवाया समझना है। फीका नहीं बोलना। द्वैत भावना नहीं रखनी। मन को नम्र बनाना है। पानी निवाण की तरफ चला जाता है।

हमें माफ़ी देनी चाहिए और माफ़ी मांगनी भी चाहिए, ताकि परमात्मा हमें माफ कर दे। माफ़ी मांगनी भी है, और देनी भी है, ताकि हमारा प्यार बना रहे।

"सतगुरु आ जावीं सानूं प्यार सिखा जावीं।"

बुरे कर्मों पापों से कैसे बचा जा सकता है?

बुरे कर्मों से कैसे बचा जा सकता है? पापों से कैसे बचा जा सकता है? कबीर साहब का फैसला है कि तन से भी पाप ना करो। मन जो सूक्ष्म है, उससे भी पाप ना करो। धन से भी पाप ना करो। तीन चीजें हैं, तन, मन, और धन, इन से पाप ना करो।

अब प्यारयो, बैठा-बैठा ही सोची जाता है। किसी का बुरा सोची जाता है। किसी का पाप लिए जाता है। कुछ ना कुछ तो करता जाता है मन। अब इसका उपाय तो हो सकता है। कोई बीमारी है, तो डाक्टर भी है, इलाज भी है। सभी पाप, ये सारे हमारे मन के हैं। मन खाली रहता है, पाप करता जाता है।

अब कोई आदमी था और एक सेठ था। उस आदमी के पास एक भूत था। सेठ कहता है कि मेरे को आदमी की जरूरत ज्यादा पड़ती है। वह आदमी कहता है, मेरे पास भूत है, तू लेना चाहता है तो ले ले। सेठ कहने लगा, भाई, तू मुझे भूत दे दे। उसने सेठ को कहा कि भाई, तू ले ले। उस भूत ने वायदा ले लिया कि मैं तेरे सारे काम कर दूंगा,

मगर अगर खाली रहा तो तुझे मार दूंगा। तो यह हमारा मन भूत है। इस वास्ते उस सेठ ने कहा कि मुझे यह मारेगा अब। उस आदमी को बुलाया, और वह आदमी सेठ को कहने लगा कि तूं बांस ले ले, अब भूत को कह, ऊपर चल और नीचे आ, ये काम लगा रहेगा और खाली नहीं रहेगा। इसलिए प्यारयो, गुरु तो हमारा बन गया है, पर हम गुरु के बने नहीं हैं। हमारा सिमरन नहीं बना है।

भक्तों ने अपना-अपना तजुरबा बताया है। भक्तों ने अपना-अपना अनुभव बताया है। जहाँ जो रूकावट आयी है, वह बताई है। अजायब सिंह जी महाराज भी कहते हैं, प्यारयो, "आई है ज्योत निराली, आपे तारे ते, आपे तारण वाली"।

अजायब सिंह महाराज जी से पहले भी थी, किरपाल महाराज आये। उससे पहले भी थी, सावन सिंह जी महाराज थे। उससे पहले भी थी। कबीर साहब पहले संत आये।

"सदियों पुरानी प्यार दी कहानी, जेड़ा प्यार करे, ओनु नवीं लग दी।"

अगर हम उस रब को प्यार करते हैं तो बन्दे को भी करना पड़ेगा। ठीक है, हम सत्संगी बन गए हैं। धन्यवाद है सतगुरु का, हम सत्संगी बन गए हैं। गरज के वास्ते प्यार करते हैं, कि वैसे ही प्यार करते हैं? मतलब के वास्ते है, कि बिना मतलब करते हैं? सबसे मीठी क्या चीज है? गरज। हम निस्वार्थ प्यार करें। बंदा बन्दे से प्यार करता है, अब क्या समझ के करता है? प्रेमी, प्रेमी के साथ प्यार करता है, अब क्या समझ के करता है? अपना मैं गुरु तेरे बीच समझता हूं। गुरु से प्यार करता हूँ, तो तुझसे प्यार करता हूँ। तो छोटी-छोटी बातें हैं। शायद सत्संगी हम बन तो गए हैं। गुरु के लाल बन गए हैं। सतगुरु के बेटे बन गए हैं। हम सब खरे सोने बन गए हैं। गुरुमुख बन गए हैं जी। धन्यवाद है, जी गुरुमुखों का धन्यवाद है। अब छोटी-छोटी बातों में हम पूरी समझदारी, पूरी ईमानदारी के साथ काम ले सकते हैं।

संत अजायब सिंह महाराज जी भी कहते हैं, "इक ज्योत निराली आयी, दुखियाँ दा बने सहाई, दर्द मिटावन नूं, जी नाम जपावन नूं।"

सतगुरु परमात्मा, हम तो कमले पगले हैं, पर तेरे ही हैं। तूं ही दया करनी है कमले, पागलों पे।

शब्द से मन को कैसे बांधना है?

संत अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं कि मेरे जो दिल के अंदर बात थी, वह दिल की दिल में ही रह गई, लेकिन मैंने भजन किया। गुरु ने दया की और दुनिया से मेरे मन को मोड़ दिया। वैसे तो पशु जानवर जो हैं, हम रस्सी डाल कर बांध लेते हैं। अगर मन को मोड़ना है, तो शब्द की मुहार से या रस्सी डाल कर अंदर शब्द के साथ जोड़ना है। इसे कहा है, मन को मोड़ना।

कबीर साहब ने कहा है कि बाहर के पहनावे से कोई फर्क नहीं पड़ता है। कबीर साहब ने कहा है कि चाहे कोई दाढ़ी रखे या न रखे, बाल रखे या ना रखे। अपने शरीर पर पहनावा नीला पहने या सफेद पहने, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है। सिर्फ बात है मन की।

सुख और दुःख में क्या करना चाहिए?

अब हमें नाम मिल गया है। कोई ना कोई इच्छा तो फिर भी रखता ही है, जितने दिन हमारे साथ यह मन लगा हुआ है। कबीर साहब ने भी कहा है कि मन साथ है, "ना इच्छा मरी ना मन मरा, मर कर होया भूत, मेरे पीछे यूँ चल दिया, जैसे बाप के पीछे पूत।"

नाम मिल गया है, फिर भी चिंता घेरे रखती है। फिक्र है। चिंता सब को खा जाती है। कबीर साहब ने भी कहा है, "मुझको क्या चिंता है, चिंता है तुझको, तू सब की लेता खबर है।"

प्रेमी तो बहुत अच्छे हैं, खरे सोने हैं। मैं तो यह कहूंगा कि खरे सोने हैं, बहुत अच्छे खरे सोने हैं। तो यह है कि, "सतगुरु का भाणा भाये, चाहे दुख हो या सुख हो।"

कबीर साहब का फैसला है, "सुख में अरदास, दुःख में बेनती।"

जब किसी की मृत्यु हो तो सत्संगी को क्या करना चाहिए?

क्या हम सत्संगी बन गए हैं? जब कोई मरता है तो आँख से पानी बहने लग जाता है। क्या तब हम उस गुरु को उलाहना देते हैं कि क्यों लेकर गया? कुछ तो कहते ही हैं।

देखो प्यारयो, शुक है, शुक्र है, अगर उस जाने वाले को गुरु अपने चरणों में जगह दे। यह तेरी आत्मा है, इसे अपने में मिला, अपने ज्योत रूप में मिला या अपने सचखंड निज-धाम ले जा।

ऐसा नहीं कहते, रोते हैं। संत महात्मा सभी कहते हैं कि प्यारयो, जब हम रोते हैं, जहां वह जा रहा है, वहां उसको कहते हैं कि तू जहाँ से आया है उनका कुछ उठा कर ले आया, जा, जाकर वापिस करके आ। अब हम जब रोते हैं, चिल्लाते हैं, तो जो नाक और आँख में से मैल निकलती है, वही उसको और हमें मिलती है। सबसे अच्छा तो ये है कि उस परमात्मा का शुक्र मनाएं, कि हम भी उस सचखंड जाएंगे, तो इस आत्मा की तू संभाल कर। भजन करें, ताकि उसको भी कुछ मिले और हमें भी कुछ मिलेगा।

गुरु नानक देव जी महाराज भी कहते हैं, "हर की नार, कदे ना दुहागण होवे।" गुरु नानक देव जी कहते हैं कि आत्मा और परमात्मा का मेल होता है। जब आत्मा अपने पति के साथ मिल जाती है तो वह फिर कभी दुहागण नहीं होती है।

अजायब सिंह महाराज जी भी कहते हैं कि प्यारयो, अब हम मृत्युलोक में हैं। किसे का पति मर जाता है, किसी की पत्नी मर जाती है। शादी हुई है तो कभी आदमी विधुर हो जाता है, कभी पत्नी विधवा हो जाती है। अब हम गुरु वाले हो गए हैं। अब गुरु के हाथ में हुकूमत दे दी गयी है, गुरु को सौंप दिया गया है।

रवि दास जी भी कहते हैं, "एह जन्म तुम्हारे लेखे, लेखे विच लायो गुरु जी।"

मन द्वारा बनाई समस्याएं कैसे ठीक हों?

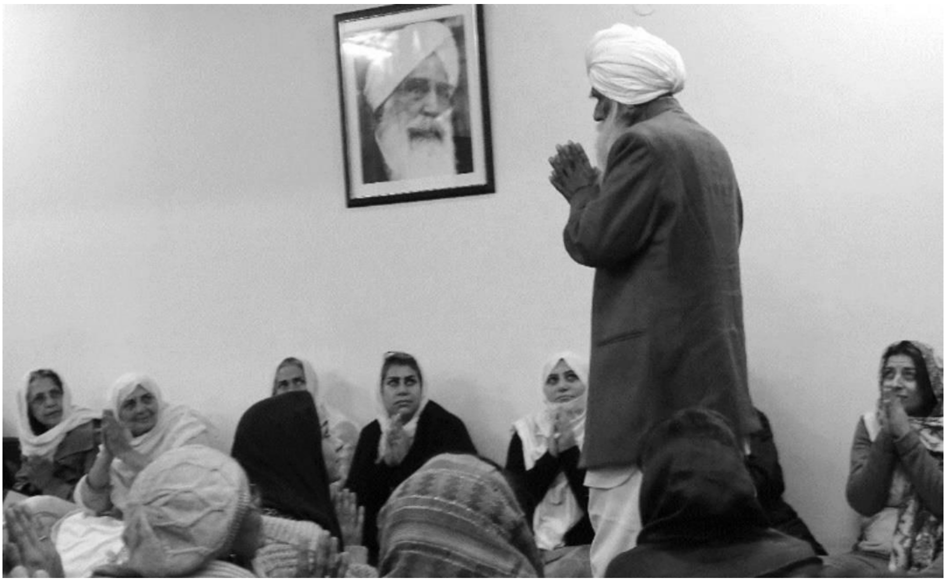

अजायब सिंह महाराज जी भी कहते हैं, प्यारयो, "दर-दर दे फिरने नालों, सतगुरु दे दर ते ढह जा। ओ धंधे सब झूठे छड के, लाहा खट जग तों लैजा।"

"जित्थे रखे दाता, ओत्थे रहना चाहिदा, नाम गुरु दा हर वेले लैणा चाहिदा।"

क्या उलाहना देंगे उसको? जिसको जहाँ रखे वहां रहना चाहिए। अब मन है, मन की रड़क सीधी कर देगा। गुरबाणी के अंदर आ रहा है, "मेरा मन लोचे गुर दर्शन ताहीं, मन लोचे गुरु दर्शन के ताहीं।" क्या मन लोच रहा है गुरु के दर्शन के ताहीं?

क्या अगर मुश्किल आ जाए तो सहन कर सकता है? क्या दुःख आ जाए तो सहन कर सकता है? क्या भूख आ जाये तो सहन कर सकता है? क्या गरीबी आ जाए तो सहन कर सकता है ?

"भूखे पेट गोपाला भक्ति ना होए, आ फड़ माला ते आ फड़ दोशाला।"

भूखे तो भक्ति नहीं होती। अब तायाजी कहते हैं कि भूखे से भक्ति नहीं होती। ऐसा अजायब सिंह महाराज जी ने कहा था, मैं तो उस बात को ताजा कर रहा हूँ। कहा उन्होंने था कि तायाजी कहते हैं, भूखे से भक्ति नहीं होती।

अब प्रसाद तो गुरु का है, रज कर खाएंगे। तो किरपाल सिंह जी महाराज भी कहते हैं कि **हमारे पेट में नाल** बारह इंच की है, खाना ले जाने वाली। तो आधा पेट खाने के

साथ भरो। एक हिस्सा पानी के साथ, और एक हिस्सा खाली रहने दो।

नहीं जी देखो ना, यह पेट तो भोजन के साथ पूरा भरेंगे। पानी कहां जाएगा? पानी दरारों में चला जायेगा। और सांस? सांस की परवाह नहीं, आये ना आये।

संत अजायब सिंह महाराज जी कहते थे, जो तुम्हारा परशाद है, अच्छा स्वाद बना है। तुम थोड़ा खाओ, और भजन करो।

क्या हमने सत्संग सुना है?

प्यारयो, जिसने हमें पैदा किया है, यह उसका सत्संग है। हम सब बराबर हैं। प्यारयो, मैं तो आपसे कम ही हूँ। थोड़ा सा घटिया हूँ घटिया।

तो सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "प्रेम नाम है, प्यार नाम है, कहते बेड़ा पार नाम है।"

तो क्या है कि हम सत्संग सुनते हैं, तो उतने ही समय तक याद है, फिर हम भूल जाते हैं। हमारा मन हमें भुला देता है।

अब महाराज जी कहते हैं कि तीन मूर्तियाँ हैं। जिनका एक सा वजन है। एक ही मिस्त्री की बनायी हुई हैं। अब इधर से सुनी तो दूसरी तरफ कान से निकाल दी, तो उसे कुछ नहीं मिला। एक जो है, उसने कान से सुनी और मुंह से निकाल दी, उसका कुछ बन गया है। अब एक मूर्ति ने एक कान से सुनी और पेट में चली गयी, अब पेट में चले गयी तो हजम हो गयी। कहने का मतलब, कि गुरु ने यह कहा है, और यही करना है।

तो सभी संत अपने मन को समझा रहे हैं। तो यही है, "प्रभु मैं नीच करमा, शरण पड़े की राखो शरमा।"

"मैं पापी हूँ, अवगुण हारा हूँ, तुम बख्श देना दाता।"

हालाँकि यह बात संगत पर ढुकति है।

"कोई भी गुण नहीं पल्ले, सब औगुणा दा भरया हैं।" तू बख़्श ले।

"मैं गुनहगार हूँ, तू बख़शणहार है।"

संत अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, प्यारयो, "मन मुर्ख तूं अब तो जाग।"

साधु भी कहता है, "सतगुरु मैं अनजान हूँ, बोलना नहीं जनता हूँ, यह तेरी संगत काफी सयानी है, अच्छी है, अपने आप समझ लेगी।"

क्या हम पूरे सत्संगी बन गए हैं?

तो सत्संगी तो हम पूरे बन गए हैं, अच्छे बन गए हैं।

प्यारयो, अगर हम जीभ के साथ नाम जपेंगे तो अपने घर नहीं पहुँच सकेंगे, क्योंकि जीभ एक इंद्री है। अगर हम अपने मन का ख्याल उस नाम के साथ जोड़ लेंगे तो हम अपने घर पहुंच जाएंगे, लेकिन इसके लिए हमें मेहनत और कमाई करनी पड़ेगी।

संत किरपाल सिंह जी महाराज कहते थे कि प्यारयो सामने देखते तो हैं, पर किसे की आँखों में नहीं देखना चाहिए। अब कबीर साहब ने तो फैसला ही कर दिया, अगर दूसरे की आंख में देखेंगे, बगैर नाम वाले की, तो आधी शराब की बोतल जितना नशा चढ़ जाएगा उसको।

हमारे रामस्वरुप मास्टर है। बाबाजी (संत अजायब सिंह महाराज जी) को देख रहा था तो बाबाजी ने कहा कि तू मेरे साथ आँख लड़ाता तो है, अगर मेरी आँख मिल गयी तो घरवालों को इस्तीफा देकर संतों के पीछे घूमता फिरेगा।

संत अजायब सिंह महाराज जी भी कहते हैं, "ऐवें भूलया फिरे अनजाना, गुरु बिना ज्ञान नहीं।"

सेवक गुरु से क्या मांगता है?

अब सेवक क्या मांगता है? इस सवाल का जवाब - दया और नाम। गुरु की दया ही काम करेगी।

सतगुरु से हमेशा दया और नाम ही मांगो। केवल उसकी दया से ही हमें सफलता मिल सकती है।

हमें खुशियां किसने दी हैं? गुरु है, जिसने हमें सुख दिया है। गुरु सभी सुखों का सागर है। केवल गुरु ही सभी प्रेमियों को सुख देता है।

केवल कुल-मालिक, करण-कारण परमात्मा अपनी रचना को जानता है। जिसे वह शब्द-रुपी परमात्मा अपनी पहचान दे, सिर्फ वही उसे जान सकता है। उसकी दया से ही कोई उसे पहचान सकता है।

जैसे माता को पुत्र प्यारे होते हैं, वैसे ही गुरु को अपने सिख प्यारे होते हैं। भगत अपने गुरु के प्यार में मस्त होते हैं। गुरु अपने सेवक के लिए सब कुछ करता है।

वह सत्पुरुष परमात्मा खुद भक्तों के काम पूरे करते हैं।

यदि कोई सेवक मुसीबत में है, और गुरु को याद करता है, तो वह वहां उसे दर्शन देता

है और उसकी रक्षा करता है।

जो नाम ध्याता है उसकी आत्मा ताकतवर हो जाती है।

सतगुरु सेवक के हाथ से भी ज्यादा उसके करीब है, और उसकी रक्षा उसके साथ रह कर करता है।

"तेरी कुदरत तूं ही जाने, होर ना दूजा जानेगा, जिसते मेहर हो जाये तेरी, तैनूं ओही पछानेगा।"

"तेरी किरपा से तुझे पछाणा।"

क्या हमने सत्संग समझ लिया है?

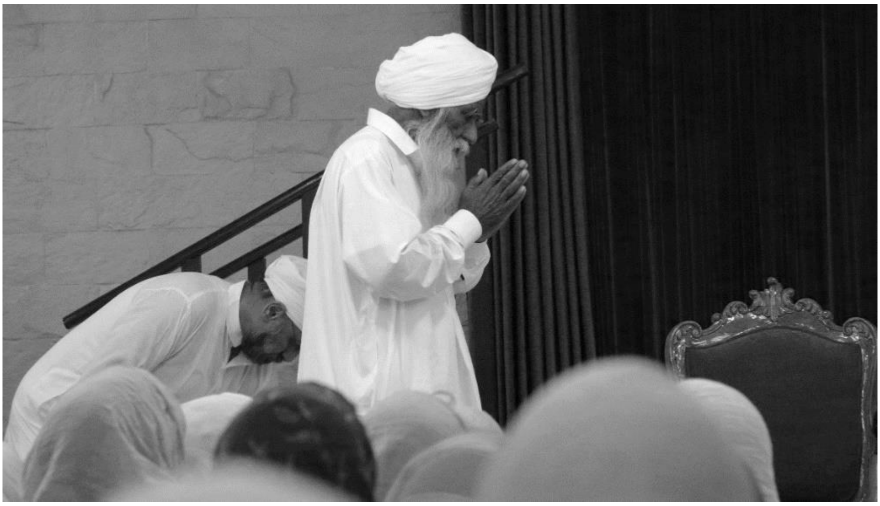

हम सत्संगी तो बन गए हैं। पूरे सत्संगी बन गए हैं? सत्संग को पूरा समझ लिया है?

प्यारयो, काल के पास हथियार हैं। कभी काम को चला देता है। कभी क्रोध को चला देता है। कभी लोभ में फंसा देता है, तो कभी मोह में फंसा देता है। यह सब काल के हथियार हैं।

यदि किसी के दिल को चोट पहुंचाई है तो वह परमात्मा माफ नहीं करता है।

प्यारयो, चाहे राइफल या बन्दूक अपनी है, अगर चल जाए तो हमें माफ नहीं करेगी।

तलवार जो अपनी है, किसी पर भी वार करे, यह नहीं कहती कि यह मेरा है या पराया है। प्यारयो, बन्दूक या तलवार शस्त्र हैं, हथियार हैं।

इस तरह हम भजन करते हैं तो खुजली कभी एक तरफ होती है, कभी दूसरी तरफ से होती है, कभी भूली हुई चीज याद आ जाती है। अपनी दुकान खोल लेता है मन।

क्या गुरुमुख बन गए हैं?

चाहे खुजली इधर से हो या उधर से, मैं हिलूंगा नहीं, एक ही समाधि में बैठा रहूंगा।

खुजली कभी तो हटेगी।

इस लिए गुरु की मदद लेनी पड़ती है, वह हमारे पास ही होता है। "अब काल पीछे पड़ा हुआ है, तूं मेरी मदद कर।" वह जरूर मदद करेगा। जो प्रेमी अंदर जाते हैं, उस ज्योति प्रकाश के दर्शन करते हैं, उन्हें पता है कि जितना बैठना है तो उतना बैठना ही है।

आत्मा को सिमरन की खुराक क्यों देनी है?

संत अजायब सिंह महाराज जी भी कहते हैं कि काल का बड़ा जाल है, और सारे जीवों को खा रहा है, भून-भून कर खा रहा है। अब पानी में, समुन्द्र में, छोटी मछली भी है, और बड़ी मछली है। बड़ी मछली छोटी को खा जाती है। जंगल में शेर जीवों को खा जाता है। लेकिन इंसान है, यह भी जीवों को काट के खा जाता है, तरस तो नहीं करता। तो प्यारयो जब जीव को कोई काटता है, दर्द पीड़ उसे भी होती है। तो प्यारयो इंसान भी ऐसे ही है।

क्या हम प्रेमी बन गए हैं?

अगर हमारी पसंद की अगर चाय नहीं बनी तो पीते ही नहीं हैं। सब्जी या रोटी अगर हमारे पसंद का ना हो तो कहते हैं नहीं खानी है। तो भगतों का खाना भी देखना चाहिए। बाबा सावन सिंह जी महाराज ने सुखी रोटी खाई और अंधेर कोठरी में भजन किया। अजायब सिंह महाराज जी ने कुछ दिन सब्जी का पानी पिया, फिर सब्जी, और फिर

दाल-फुलका खाया। जब मन काबू आ गया, फिर उसे कुछ खुराक दी दाल-फुलका दिया। आज भी है, तो वह गर्म पानी पीता है, कि मुझे यही ठीक है। पानी और फुलका बस इससे ज्यादा नहीं कुछ खाता।

प्यारयो संत, महात्मा, भगतों ने अभ्यास १० साल, किसी ने १५ साल, और किसी ने २० साल किया है।

अब हमारा मन सोचता रहता है कि शरीर कमजोर तो नहीं हो जाएगा। कहीं हम बीमार तो नहीं हो जाएंगे। इस लिए हम शरीर के लिए, कि शरीर कमजोर न हो जाये, दो तीन मेल की सब्जी, दो मेल की रोटी, अच्छी तरह का खाना चाहते हैं।

शरीर को तगड़ा करते हैं तो मन को भी तगड़ा करते हैं। मन तो प्यारयो पहले बहुत ही तगड़ा है, फिर उसको खुराक दिए जा रहे हैं, खाने की, घी की, सब्जी की, फलों की, तो कैसे काबू आएगा ये?

एक पहले विदेशी प्रेमी आया, उसने तीन दिन खाना नहीं खाया, कि भजन करूँगा। बीमार हो गया। डाक्टर को बुलाया तो उसने कहा कि तीन दिन खाना नहीं गया इसके पेट में, तो बीमार हो गया। उसका नाम ब्रोक था। अब भजन ही छोड़ गया है। एक तरफ गुरुमुख कहलवाना चाहते हैं, तो उस तरफ फिर भजन है। एक तरफ सत्संगी, प्रेमी कहवाना चाहते हैं, दूसरी तरफ खाना है।

मन को कहो कि नहीं भई, तुझे खाना भी देंगे, चाय भी देंगे, तू भजन कर। खाने की तरफ ही चलता है। इसे कहो कि सिमरन की तरफ भी चले। प्यारयो, मन को समझाना होगा।

अब प्यारयो, हमारे मन को भूख लगती है खाने की, तो घड़ी देखता है खाने के लिए। प्यारयो, हमारी आत्मा भी खाना मांगती है, वह कमजोर हो गई है, सूख गयी है। आत्मा हरी-भरी सिमरन के साथ होगी। प्यारयो, फल का कोई भी पौधा लगाएं, हम अगर पानी नहीं देंगे तो सूख जायेगा।

प्यारयो यह शरीर है, इसे अगर अन्न पानी नहीं देंगे तो यह भी सूख जायेगा। प्यारयो, आत्मा को अगर सिमरन नहीं देंगे तो वह भी सूख जायेगी।

ठीक है, यह मेरी समझ में आ गया है, और मैं आज से ही करूंगा।

क्या हम गुरु पर अपने आपको वारने के लिए तैयार हैं?

अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, प्यारयो, "कई जन्मा विच लखां गुनाह असीं कित्ते, भर भर जहर प्याले असीं पित्ते, तेरी खातिर मर के जी के देख लया।"

अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, वैसे अगर हमारी पत्नी को कोई ले जाए तो हम मरने मारने पर आ जाते हैं, कि मेरी पत्नी थी, तूं ले गया। मर जाते हैं, और मार भी देते हैं। जमीन जायदाद के पीछे भी मरते ही हैं। माया के लिए भी मरते हैं। क्या गुरु के वास्ते भी कोई मरा है?

ठीक है, हम प्रेमी हैं। प्रेमी बन गए हैं हम। बहुत अच्छी बात है। मैं तो कहूंगा कि खरे सोने हैं प्रेमी, खरे सोने।

प्यारयो, कबीर साहब कहते हैं कि लोग मरने से डरते हैं। कबीर साहब कहते हैं कि मेरे मन में इतना आनंद है, "मैं पाया पूर्ण परमानंद"।

हम बहुत जोर लगाते हैं, कभी थोड़ी झलक दिखती है प्रकाश की, वह भी मामूली सी दिखती है। अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "पीर दा विछोड़ा दुःख जिंद मेरी सहन्दी ना, सतगुरु नूं देख देख भूख मेरी लेहँदी नां।"

"खाना पीना विसर गया।"

तो प्यारयो, खाना पीना भी भूल जाता है जब उस जोत के दर्शन करते हैं। हमारे मन का ख्याल उस जोत के साथ जुड़ जाता है।

नाम दो प्रकार का है। वर्णनात्मक नाम है, जो बोलने, पढ़ने, और दिखने में आता है। धुनात्मक नाम का अंदर दर्शन किया जा सकता है। सिमरन दे के गुरु सेवक को अंदर समझा देता है कि प्यारयो, सिमरन करके सूरज, चन्द्रमा, सितारे पार कर ऊपर जाना है। जो प्रेमी सिमरन करते हैं, वे पानी ऊपर से गिरता देखते हैं। वह भवसागर है, आत्मा भवसागर के ऊपर से उडारी मारती है।

इस लिए जीवित मरना सिखाता है गुरु।

हमारे मन को कितना चमकना चाहिए?

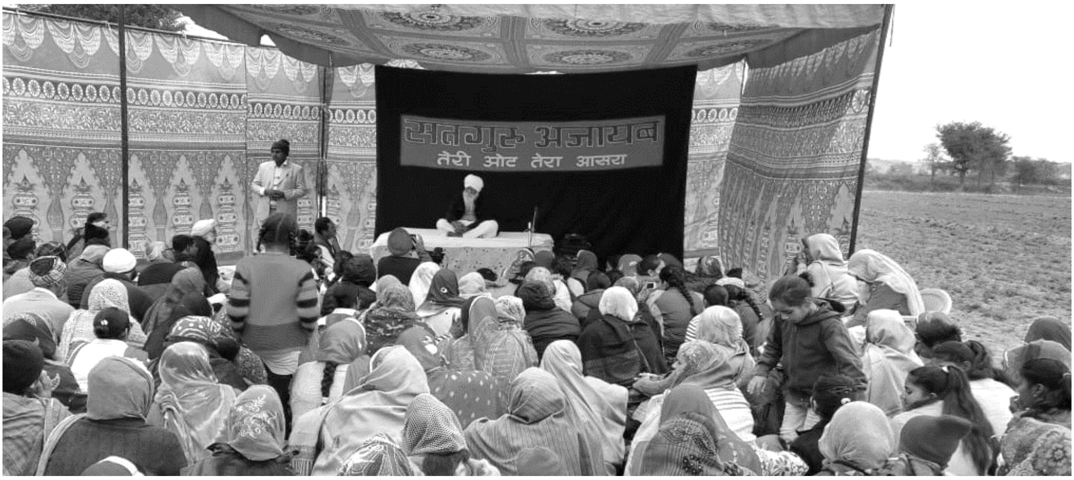

संत अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, प्यारया, तूने कभी सोचा नहीं है कि यह देश अपना नहीं है, यह तो देश पराया है।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, "मन इंद्री ने पट मारा।"

तो प्यारयो, आप देखते हैं कि आँख है, यह भी इंद्री है। चाहे जीभ की इंद्री है, चाहे काम की इंद्री है, यह मन रस-कस और विषय यहीं से ले रहा है। गुरु अर्जुन देव जी महाराज, पाँचवीं पातशाही, कहते हैं, "भाग पया गुरु संत मिलाया, घर में अविनाशी पाया"।

संत अजायब सिंह जी महाराज कहते हैं, "रंग रूप दा मान ना करिये, सिर उत्ते मौत खड़ी सजना"। यह तो संत अजायब सिंह महाराज जी ने कहा है। मैं नहीं कह रहा, मैं तो ताजा कर रहा हूँ।

यह मकान खूबसूरत है। इस मकान की बड़ी सफाई करते हैं। पानी लगा-लगा कर बड़ा साफ़ करते हैं। फिर तेल लगा कर बड़ा चमकाते हैं, इस मकान को जो शरीर मकान है। यह मकान है शरीर। ठीक है, खैर बात तो अच्छी है। शरीर को चमकाना ठीक भी है। शरीर के लिए ठीक है। मन को भी चमकाना है। पर कितना चमकाना चाहिए? हम भोजन करते हैं, रोटी खाते हैं थाली में, उसको एकदम चमका देते हैं हाथ मार-मार कर।

अब भजन करके मन को एकदम पूरी तरह से चमका दूंगा, ताकि मुझे पता चल जाए कि यह पूरी तरह चमक गया है। इसकी पक्की निशानी है कि मन जब चमक गया, तो गुरु सामने दिख जाएगा।

मैं इतना भजन करूंगा कि जब तक यह मन चमक ना जाये, मैंने सिमरन छोड़ना ही नहीं है, सिमरन करी जाऊंगा। चलो यह भी मैं मान लूँगा, चलो ठीक है।

अब प्यारयो, एक तरफ लोहा है और एक तरफ पारस है। अगर पारस लोहे को लगा दें तो सोना बना देगा। तो प्यारयो, हमारा मन डर रहा है। अब बाहर खड़ा है, अंदर नहीं आ रहा है। अब जितना समय मन अंदर नहीं आता है, वह जो मैगनेट (नाम-शब्द) है उसके साथ लोहा (मन) जब तक लगता नहीं है, साफ़ नहीं होता है।

जैसे पहले पानी निकालने के लिए रहट होता था। उसमें लोहे के टिंड लगे होते थे, और ऊपर से पानी आता था। घोड़े को पानी पिलाने के लिए, घोड़े को लेकर उसका मालिक आया, तो उसने कहा कि खटके को बंद कर, मेरा घोड़ा डर रहा है। पानी देने वाले ने कहा कि अगर खड़का बंद किया तो पानी आगे निकल जाना है। तेरे घोड़े को इस खड़के में ही पानी पीना पड़ेगा, नहीं तो घोड़ा तेरा प्यासा ही रह जाएगा।

हमारे मन की भी यही हालत है, वह डर रहा है। प्यारयो, अपना जो गुरु है, अजायब सिंह, किरपाल सिंह, सावन सिंह महाराज जी, कुल मालिक हैं, फिर डरने की क्या जरूरत है?

किरपाल महाराज जी कहते थे कि दुनिया से क्या गरज़ है जो डरते हैं। जो देना है, उस भगवान ने देना है, गुरु ने देना है, गुरु से ही लेना है।

कबीर साहब कहते हैं, "गुरु मेरा बाणिया, उनसे लेना देना, दुनिया से क्या डरना।"

प्यारयो सभी संत कहते हैं, मैं नहीं कहता, सभी संत कहते हैं। अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं कि प्यारयो, संत सच्चाई ब्यान करते हैं। वह कहते हैं कि तुम्हारा भगवान इंतज़ार कर रहे हैं, तुम भी अंदर आओ और मिलो उसको।

प्यारयो पहले भी प्रकाश स्वरूप था, अब भी प्रकाश स्वरूप है, और आगे भी प्रकाश स्वरूप रहेगा। उसके दो रूप हैं- एक स्थूल है, दूसरा प्रकाश स्वरूप होता है।

जो शरीर होता है, वह ५०-१०० साल किराये का मकान होता है। सेवक ने इसे छोड़ देना है और गुरु ने भी छोड़ देना है। जो धुन-शब्द है, प्रकाश रूप है। वह कभी मरता नहीं, कभी आता नहीं, कभी जाता नहीं, कभी बढ़ता नहीं, कभी कम नहीं होता, वह जो है सो है। गुरु और सेवक का अलग-अलग काम बाँट कर दिया हुआ है। दसवां द्वार हमारा स्कूल है, सेवक को यहाँ आना पड़ेगा। यहाँ आके सेवक की ड्यूटी पूरी हो जाती है, गुरु-भक्ति पूरी हो जाती है। नाम-भक्ति आगे शुरू है।

पहले कौन?

गुरु अर्जन देव महाराज जी, पांचवी पातशाही कहते हैं कि अगर हम सिमरन भूल जाते हैं, या नहीं करते हैं। एक मिनट का हवाला दिया है उन्होंने। और कहा है कि एक मिनट सिमरन हम नहीं करते हैं, तो ५० साल जितना विछोड़ा गुरु सेवक का पड़ जाता है।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "जागो प्यारे जागो, मेरे प्यारे चलया बंजारा।" मन को भी वह कहते हैं कि हे मन, तू आलसी बना हुआ है, तू निद्रा त्याग। सत्संगी तो हम बन गए हैं, बहुत अच्छी बात है। धन्यवाद है कि हम सत्संगी बन गए हैं। वोह अपना गुरु कहता है, अजायब सिंह, कि नींद को जीत। आप खुद भजन पढ़ के देख सकते हैं, प्यारयो।

एक तरफ गुरु का प्यार है और एक तरफ नींद है, किस तरफ जाऊं मैं?

एक तरफ चाय हो और एक तरफ अब गुरु होवे, हम चाय पहले पी लेते हैं। कहते हैं कि गुरु की तरफ फिर देखेंगे।

अब हम बराबर में तोल लेते हैं। एक तरफ भोजन हो, और एक तरफ गुरु का सिमरन हो, तो किस तरफ मन जाएगा अपना? भोजन की तरफ जायेंगे या गुरु की तरफ जायेंगे? अब गुरु के हम सेवक कहलवाते हैं। हम सेवक हैं। हम सत्संगी हैं।

हम कहते हैं कि पहले भोजन कर लें, भजन फिर करेंगे। अपना फैसला खुद ही कर लेते हैं। पहले भोजन खाएंगे या सिमरन करेंगे?

अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं कि आलसी बहुत दिन हो गए हैं, तू आलस करता है।

जो प्यारयो असली खुराक है, वह देनी है हमें। शब्द नाम की खुराक है।

अब विषय-विष खाई। भोजन अब खाते हैं, ज्ञान थोड़े ही होता है इससे। पशु, पक्षी सभी खाते हैं सकल पदार्थ। उनको फिर हो जाना चाहिए था ज्ञान इस चीज का।

वह अमृत रस पी के ही ज्ञान हो सकता है, प्यारयो। गुरु ही ज्ञान है। शब्द ही खुराक है।

बाहरी खुराक हम खाते हैं, इसके साथ शरीर चलता है। आत्मा शब्द नाम की खुराक के साथ तगड़ी हो जाती है।

अब हम यह जो खाते हैं, भोजन करते हैं, इसके साथ तो पता ही नहीं चलता कि कब मरना है। जो गुरु का भोजन दिया हुआ खाते हैं तो उसके साथ पता चल जाता है कि कब मरना है।

ठीक है, मुझे भी नहीं पता था। आज से मैं सिमरन करना शुरू करूँगा, और पूरा करके ही छोड़ूंगा, गुरु को अंदर देख कर रहूँगा।

हमें आज से क्या करना चाहिए?

संत अजायब सिंह महाराज जी भी कहते हैं कि हमें नाम मिल गया है, हम सत्संगी बन गए हैं। बहुत अच्छा है, धन्यवाद है। क्या उसका (गुरु का) कहना मानते हैं?

क्या उसने जितना कहा है, उतना भजन करते हैं? ठीक है जी, गुरु का आज से कहना मानना शुरू कर देंगे, मैं भी कर दूंगा।

हम दुनिया का कोई भी काम करें, उसके लिए मेहनत जरूरी है। अगर गुरु को मिलना है, भगवान को मिलना है, तो इसमें भी कमाई की जरूरत है, मेहनत की जरूरत है।

प्यारयो, दुनिया का कोई भी कारोबार हम करें, और वह पूरा नहीं हो तो बड़ी चिंता होती है, दुःख होता है, और हम रोते भी हैं। प्यारयो, एक-एक चीज़ के लिए हम तरसते हैं, लेकिन हम अगर सतगुरु को अपने अंदर प्रगट कर लें, अपने ऊपर मेहरबान कर लें, अपने ऊपर खुश कर लें, तो वह अपनी सारी बरकतें लेकर हमारे अंदर बैठ जाता है।

महाराज जी भी अपने सतगुरु को, शब्द को, नाम को संदेशा देते हैं, कि तूं सचखंड से यहाँ मिलने के लिए आ गया, तो सेवक का भी फर्ज बनता है कि मेहनत करे।

अजायब सिंह महाराज जी भी कहते थे, कि अगर सेवक मिलना चाहता है तो गुरु भी दया करता है। आत्मा और परमात्मा का मेल है, आत्मा मिलना चाहती है, तो परमात्मा भी आत्मा को अपने में मिला लेता है।

हम पारिवारिक हैं, शादी शुदा हैं। **परिवार में सब को भजन सिमरन करना चाहिए।**

भाग ३

एक गुरुमुख अपने मन को समझाता है

"जो गुरुमुख बन जाता है और वैसे करता है जैसा कि गुरु कहता है,

तो उसे नाम के अमृत का प्याला मिलता है"

भाग ३ अनुक्रमणिका

भाग ३ - अनुभाग १

संतमत

सत्संग.. १९४
सतगुरु - सत्पुरुष... १९९
नाम और नामदान.. २०२
परमात्मा से मिलना और मुक्ति.. २०६
नाम का अमृत २०९
जप तप, रीति रिवाज, और कर्मकांड.. २१०
सुरत-शब्द योग: सिमरन, भजन और ध्यान.............................. २१३
जप तप, रीति रिवाज और कर्मकांड.. २१६

भाग ३ - अनुभाग २

विधाता और सृष्टि

विधाता और सृष्टि की रचना.. २२०
काल और माया... २२२
जन्म और मृत्यु का चक्र - चौरासी लाख जून........................... २२५
जीव-आत्मा.. २२७
मानस जामा.. २३०
पाप २३३
कर्म २३६
मन, इंद्रियां, और पांच ठग.. २३९

भाग ३ - अनुभाग ३

वक्त का महात्मा - सतगुरु

संत सतगुरु.. २४९

संतों की संगत और शरण.. २५४

परमात्मा की मौज – हुक्म... २५६

दया मेहर – दया और मेहनत.. २५९

दर्शन २६१

माफी.. २६४

प्रसाद २६७

भाग ३ - अनुभाग ४

सिक्खी

सिक्ख और सिक्खी.. २७१

तड़फ... २७६

भक्ति.. २७८

प्रार्थना.. २८२

आज्ञा पालन और आत्म समर्पण.. २८५

आत्म सुधार.. २८८

भरोसा और विश्वास... २९०

बलिदान - कुर्बानी... २९१

संभाल.. २९५

सेवा २४८

गुरुमुख-भक्त.. २९९

भाग ३ - अनुभाग ५

भजन सिमरन और अभ्यास

ध्यान ३०८

सिमरन ३१४

भजन ३२१

जीवित मरना.. ३२३

रास्ते की मुश्किलें.. ३२६

दुनियावी क्लेश.. ३२८

मेहनत और दृढ़ता.. ३३१

ताने मेहने और निंदा.. ३३३

भाग ३ - अनुभाग ६

एक सत्संगी का जीवन

एक सत्संगी का जीवन.. ३३८

पवित्रता.. ३४३

माफ़ी ३४५

दूजे को सवाया जान.. ३४७

ईमानदारी की कमाई और जीवन.. ३४९

संगत कैसी हो और उसका असर.. ३५१

शाकाहारी आहार और नशीले पदार्थों से परहेज.. ३५३

भाग ३ - अनुभाग १

संतमत

सत्संग १९४

सतगुरु - सत्पुरुष १९९

नाम और नामदान २०२

परमात्मा से मिलना और मुक्ति.................................... २०६

सुरत शब्द योग: सिमरन, भजन और ध्यान २०९

जप तप, रीति रिवाज, और कर्मकांड................................ २१०

सुरत-शब्द योग: सिमरन, भजन और ध्या....................... २१३

जप तप, रीति रिवाज और कर्मकांड................................. २१६

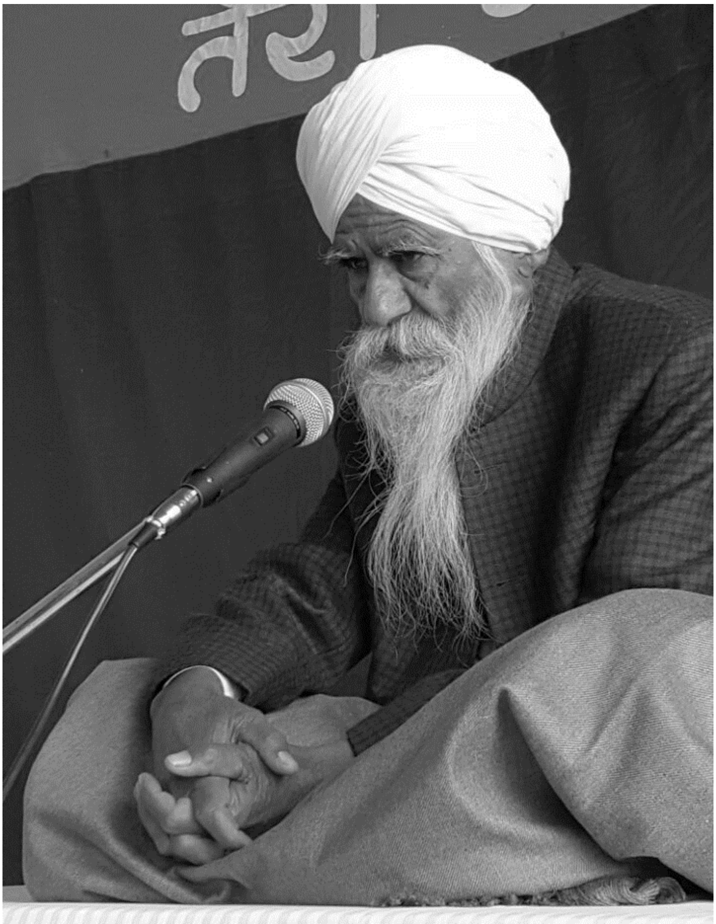

सत्संग

सत्संग का मकसद है कि हम सच के साथ जुड़ जाएं।

सतगुरु अजायब सिंह जी महाराज कहते हैं कि सत्संग वहां है, जहां सिर्फ वह परमात्मा है। वहां पर ना किसी की निंदा है, ना ही किसी की चुगली है।

गुरु नानक देव जी कहते हैं, "सत्संग ओत्थे जाणिए, जित्थे एको नाम विखाणिये।"

सत्संग में नाम की महिमा है, गुरु की महिमा है, सत्संग की महिमा है।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि संतमत कोई परियों की कहानी नहीं है। इसमें जिंदगी अच्छी बनानी है, जो शब्द नाम से ही बन सकती है। गुरु दया मेहर करता है, जिससे हमारी जिंदगी बदल जाती है। वह कागों से हंस बना देता है।

अच्छी जिंदगी कैसे बनी? उस गुरु ने दया मेहर की और नाम दिया, अपने सत्संग में बुलाया, उसका आज भी हम यश गा रहे हैं, बड़ाई कर रहे हैं।

वह कौन था? वह सतगुरु अजायब सिंह था।

◆❖◆

पल्टु साहब ने कहा है कि सत्संग में ही हमारा सुधार हो सकता है।

ब्रह्मानंद जी ने भी कहा है, "सत-संगत जग सार साधो, सत-संगत जग सार रे, काशी नहाये, मथुरा नहाये, नहाये हरिद्वार रे, चार-धाम तीर्थ फिर आये, मन का नहीं सुधार रे"।

◆❖◆

सत्संग में आकर जीव कौए से हंस बन जाता है। सत्संग में आकर जन्म-मरण के चक्र से जीव निकल जाता है। चौरासी लाख के चक्र से उसे छुटकारा मिल जाता है। गुरु की शरण मिलने पर जीव को जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति मिलती है।

सत्संग सुना कर संत मन को पवित्र कर देते हैं। मन को साफ़ करने के लिए ही सत्संग होता है।

◆❖◆

सत्संग में आने वाले जीव को इस जीवन के सभी सुख मिल जाते हैं। सत्संग उस सर्वशक्तिमान परमात्मा का है। सत्पुरुष अपने भक्त से जैसा बुलवाना चाहे बुलवा लेता है।

कोई भी पवित्र स्थानों पर स्नान कर सकता है, लेकिन उससे मन का सुधार नहीं हो पाता है। संतों के सत्संग में आकर मन सुधर जाता है, और यह सच को समझ पाता है।

◆❖◆

हमने कई सत्संग सुने हैं, लेकिन हमने अभी तक अपने मन को नहीं समझाया है, और ऐसा नहीं बनाया है जैसा संतों ने बताया है।
हमने अभी तक ध्यान लगाना नहीं सीखा है।
पूरी तरह से ध्यान लगाने का क्या मतलब है? अगर हमारा ध्यान पूरी तरह से पक गया है तो सतगुरु के माथे से निकलने वाली किरणें और उसमें समायी बाणी को हम देख सकते हैं।

◆❖◆

यदि हम सत्संग में आते हैं तो हमें उससे पूरा फायदा उठाना चाहिए।
जब गुरु-प्यारे सत्संग में एक दूसरे से मिलते हैं तो वे दुनियावी बात करने लगते हैं और एक-दूसरे से मेलजोल करने लगते हैं।

नहीं प्यारयो, हमें समझना जरूरी है कि समय कम है, और इस बहुमूल्य अवसर का पूरा लाभ उठाना चाहिए। दूसरे कामों में खराब नहीं करना चाहिए।

किरपाल सिंह महाराज जी ने कहा है कि अपने घरबार और परिवार छोड़ कर इतनी दूर सफर करके आप लोग आये हैं।
अपना इतना समय और पैसा भी खर्च किया है।
अब अगर आप इस समय का पूरा फायदा नहीं उठाते हैं, और इसे बर्बाद करते हैं, तो आपके यहां आने का क्या फायदा है?

◆❖◆

जो भी सत्संग में आकर उसे सुनता है, उसे कुछ तो हासिल होता है। चाहे नाम दान मिला है या नहीं, लेकिन जो भी सत्संग सुनता है, उसका फायदा होता है।

सत्संग में शामिल होने वाले गैर-सत्संगी की भी संभाल होती है।
अगले जन्म में उसे एक अच्छे सत्संगी परिवार में जन्म देकर, गुरु उन्हें नामदान देकर, मुक्ति का वसीला बना देता है।

◆❖◆

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं कि यदि नाम, गुरु और सत्संग मिलने के बाद भी कोई बुरे कर्म करता है तो ऐसे लोगों को कुछ नहीं मिलता। वे चाहे गुरु को सिर झुका कर कितनी ही बार माथा टेकते रहें।

सत्संग में संत यह बतलाते हैं कि जिंदगी अच्छी बनानी चाहिए।

सत्संग में जब प्रेमी बैठता है तो मन कई बातें सामने ले आता है।

ऐसे में हमें क्या करना चाहिए?

जब हमारे पास खाली समय हो तो मन ही मन सिमरन करें।

अपना कारोबार करते समय भी मन को सिमरन में लगायें। जब घर में हों तब भी सिमरन करें।

◆❖◆

कम से कम दस मिनट पहले सत्संग में पहुंचें और मन को शांत करें, ताकि यह सत्संग को प्रेम से सुन सके, और जो कहा जा रहा है उसे समझ सके।

◆❖◆

यदि कोई जीव एक बार भी सत्संग में आता है तो या तो गुरु उसे दूसरा मानस जन्म देगा या फिर उसे मुक्ति दिलाकर सीधे सचखंड ले जाएगा।

◆❖◆

हम कहते हैं कि मैं सत्संग में जा रहा हूं या सत्संग में गया हूं।
नहीं प्यारयो, यह तब तक ही कोई कहता है जब तक अंदर नहीं गया है। एक बार जब कोई अंदर जाकर अपने गुरु को देखता है, उसे साफ़ नजर आता है कि कोई भी अपने दम पर सत्संग में नहीं आता है।
यह गुरु ही है जो हमें सत्संग में लाता है। उसके अलावा कोई सत्संग में नहीं लाता।

◆❖◆

सिमरन जितना भी कोई कर ले, पर इससे अपनी पूरी कमियों का पता नहीं चलता। और तब तक नहीं पता चलता, जब तक हम एक पूरे गुरु की संगत नहीं करते।

जब हम एक पूरे सतगुरु के सत्संग में जाते हैं तो वहां हमें अपनी गलतियों का पता चलता है।

यह केवल सत्संग ही है जिसमें अपनी गलतियों का और मन की कमजोरियों का पता चलता है।

सतगुरु - सत्पुरुष

शब्द ही परमात्मा है वही कुल-मालिक, करण-कारण, कर्ता-पुरख है।

जब कोई भी पीड़ित आत्मा रोकर उस परमात्मा को पुकारती है, तो उसकी पुकार सचखंड तक पहुंचती है। उस परमात्मा को उस पुकार का जवाब देना पड़ता है, और दुखी आत्माओं के लिए वह इस नाशवान दुनिया में आता है।

◆❖◆

गुरु के बिना नाम नहीं मिलता। नाम के बिना मुक्ति नहीं है।

◆❖◆

संतमत, गुरुमत, रूहानियत के गुरु ने कोई जात नहीं पूछनी है। प्यारयो, परमात्मा ने हम पर दया करी और वे सब पर दया करते हैं। वे परमात्मा की भक्ति सिखाते हैं, अपनी नहीं सिखाते हैं, उस परमात्मा की जो सब का सांझा है।

इस भवसागर के दूसरे किनारे का किसी को नहीं पता है। ना यह पता है कि यह कितना चौड़ा है, लम्बा है, और गहरा है। यह किसी को नहीं पता है। हम आते हैं, जन्मते हैं, मरते हैं, और दुःख उठाते हैं। इस भवसागर से उस दयालु सतगुरु की दया से ही पार जाया जा सकता है। उस दयालु ने कृपा की, अपने पास बुलाया, नाम दिया, नाम जपवाया, और आज हम उसका यश गा रहे हैं।

◆❖◆

शब्द ही परमात्मा है, वही कुल-मालिक, करण-कारण, कर्ता-पुरख है। वह नाम, करण-कारण शब्द धुन है, जिसे संत महात्मा हमारे हृदय में रख देते हैं।

◆❖◆

गुरु से प्यार कैसे और कब करना है? अमृत वेले थोड़ी रात होती है, और उस समय कोई खड़का भी नहीं होता है। आत्मा और मन दोनों शरीर में वापिस प्रवेश करते हैं, जिससे शरीर भी ताजा होता है, और थकावट भी नहीं होती है। उस समय उस मालिक को याद करो जिसने यह जन्म बख्शीश किया है, वह सारे संसार का मालिक है। सारी दुनिया को चलाने वाला है। वह सर्व सुख देने वाला है।

◆❖◆

संतों की पुकार भगवान तक जाती है। भगवान संतों को याद करता है। संत भगवान को याद करते हैं। इसलिए हम भी उन्हें याद करें। याद करने से हमारा जन्म मरन खत्म हो जाता है। नहीं तो जीव बार-बार चारों खाणियों में जन्म लेता है, और मरता है, और दुःख उठाता है।

◆❖◆

संत, महात्मा, भगत, मालिक के प्यारे पाप लेने के लिए आते हैं। जब जीव को गुरुमुख नाम की बख्शीश करते हैं, तो उस जीव के पाप अपने सिर पर ले लेते हैं।

कबीर साहब कहते हैं कि आग की एक चिंगारी सूखे घास पर गिरा दें तो वह उसे खत्म कर देती है। संतों के पास राम नाम की जोत होती है, उसके साथ वह हमारे पाप खत्म कर देते हैं।

❖

महाराज किरपाल भी कहते थे कि संत सिर्फ पाप लेने के लिए आते हैं। प्यारयो, जिसको वह सतगुरु नाम देता है उसके पाप ले लेता है। नाम दे कर साफ़ कर देता है। पवित्र करके, मालिक के दरबार में पेश कर देता है। अर्ज करता है, यह तेरी जीव आत्मा है, इसे संभाल।

❖

प्यारयो, यह घोर कलियुग है। भवसागर में हमें गुरु ही नाम और सुरत-शब्द का अभ्यास करवा सकता है। बाकी दुनिया की चीजें यहीं रह जानी हैं, हमारे मन का मोह दुनिया के साथ है।

❖

आत्मा और परमात्मा का मेल है। आत्मा इस दुनिया में आयी है और जन्म मरण के चक्कर में पड़ी हुई है। सिर्फ आत्मा ही परमात्मा में मिल सकती है। आत्मा भी शब्द है और परमात्मा भी शब्द है। दोनों अलग, अलग हैं, मगर एक ही घर में रहते हैं। इस शरीर में रहते हैं। अगर कोई ऐसा शब्द-रुपी महात्मा मिल जाए जो हमारा मेल करा दे, तो उसका शुक्र है, शुक्र है।

❖

किरपाल महाराज भी कहा करते थे कि संत हमारी तरह ही इंसानी जिस्म रखता है। हमारी तरह ही खाता पीता नजर आता है। लेकिन एक बहुत बड़ा फर्क है, वह यह है कि परमात्मा जो घट-घट वासी है, उसके अंदर प्रकट है।

एक पूरा गुरु वह है जो आपको अंदर शब्द से जोड़ सके और कुछ रूहानियत की पूंजी दे सके।

❖

"ओ साहां विच साह लैंदा ऐ, हर शह दे विच ओ रहंदा ऐ, अंदरे धुनकारां दिंदा ऐ, संगतो भरोसा करो, महसूस करो, महसूस करो।"

नाम और नामदान

दुःख भंजन तेरा नाम जी, आठ पहर अराधिये।

"रल मिल याद मनौन्दियाँ सईयां, नाम तेरे दियां धुम्मां पईयाँ, तूं अपरम्पार अगम अपारा।"

सब आत्माएं उस परमात्मा की हैं। सब आत्माएं उस परमात्मा के आगे प्रार्थना करती हैं। सब आत्माएं खुश हैं कि आप उनको ले जाने के लिए इस दुनिया में आये हो। कृपया हमें भी अपने साथ ले चलो।

❖

सतगुरु के पास नाम का जहाज है, जिसमें आत्माओं को बिठाकर वह उनके निजी घर सचखंड ले जाता है। हम इस संसार-रुपी भवसागर को सिर्फ नाम के जहाज में बैठकर ही पार कर सकते हैं। शब्द-नाम की कमाई करके ही हम उस परमात्मा को पहचान सकते हैं। नाम की कमाई करके हम अपने दुखों का नाश कर सकते हैं। हम अपने आप को नाम की कमाई करके बचा सकते हैं। नाम की कमाई करने वाले को कर्मानुसार दुःख आते तो हैं, मगर तंग नहीं करते हैं।

❖

तन, मन, धन, तीनों नाम की कमाई से साफ़ हो जाते हैं।
हर समय नाम जप कर हम तुम्हें याद करते हैं, कृपया अपने दर्शन दे दो।
"नाम जपणा कल विच औखा ऐ, शरणी पै जाना सोखा ऐ।"

❖

गुरबाणी कहती है, "दुःख भंजन तेरा नाम जी"। तुम्हारा नाम सभी दुखों को नष्ट कर देता है।

सिमरन को चौबीस घंटे अगर आप करें तो गुरु का पूरा ज्ञान पा लेंगे।

❖

नाम सभी बीमारियों की दवा है। नाम से सभी सुख मिलते हैं। सभी बीमारियों के लिए अगर कोई दवा है तो वह है नाम, सतगुरु, और सिमरन।

❖

तुलसी साहब कहते हैं, नाम का थोड़ी देर किया हुआ सिमरन जीवन में सफलता देता है।

❖

"सतगुरु सतगुरु बोल प्यारया, सतगुरु नाम अनमोल प्यारया।
दुखां विच जिंदगी ना रोल प्यारया।
नाम दी महिमा सारी गुरुबाणी दसदी, फेर वी क्यों नहीं तैनूं गल ऐहे जचदी।
सब संतां बजाए, कह के ढोल प्यारया।
नाम विच सुख कदे औंदा नइयों दुःख जी, जन्मा-जन्मा दी ऐ मिट जांदी भुख जी।
गुरु-गुरु रट, ना तूं डोल प्यारया।"

❖

"सच्चे सुच्चे नाम दा जो दे रहा पैगाम जी, इसनूं ध्याइये हर रोज सुबह शाम जी।
रब्ब धरती ते आया, इतबार करलो जी।"

❖

"मन भटक भटक कर हार गया, अब आ ही गया टिकाने पे।
सतगुरु ने ऐसा नाम का तीर दिया, जो जाके लगा निशाने पे।
नाम शब्द का तीर लगा, जब हो गया ये मन घायल।
रहा ठिकाना नहीं ख़ुशी का, खनकी आत्मा की पायल।
लाख बार समझाया इसको, मान गया समझाने पे।
पहले तो इस चंचल मन ने, एक बात नहीं मानी।
धीरे धीरे आ गया काबू, जब माया सतगुरु की जानी।
अब नाम के नशे में चूर रहे, पहले जाता था मैखाने में।"

◆❖◆

एक बार जब नामदान मिल जाता है तो हम अपने असली घर सचखंड जा सकते हैं। यह संसार हमारा घर नहीं है। जो अपना घर ना हो वहां कौन रहता है? यह शरीर ५०-१०० साल किराए का मकान है, और सभी को इसे छोड़ना होगा।

◆❖◆

गुरु के पास आत्मा को सचखंड ले जाने के लिए नाम का जहाज है। हम नाम के जहाज पर चढ़ कर इस भवसागर को पार कर सकते हैं।

◆❖◆

महाराज जी भी कहते हैं, "सिमरन करीए, नाम सिमरिए, जिंदगी सफल बना लईए, प्यार गुरु नाल पा लईए"।

◆❖◆

शांति नाम में है। जो नाम का अमृत पीता है, वह उसी का हो जाता है।

◆❖◆

जिस तरह पानी शरीर को साफ़ करता है, वैसे ही नाम हमारे अनगिनत पापों का नाश करता है। पापों को खत्म करने का तरीका सिर्फ सिमरन और उस परमात्मा की याद है।

"धन धन राजा जनक है, जिन सिमरन कियो विवेक, एक घड़ी के सिमरन ने पापी तारे अनेक"।

हम अपने पापों के बोझ के नीचे दबे हैं। उस परमात्मा की याद और सिमरन से हम इन पापों को खत्म कर सकते हैं। जब पाप खत्म हो जाते हैं, तब मन साफ़ हो जाता है और हम उस परमात्मा के दर्शन कर लेते हैं।

नामदान

जब वह परमात्मा हमें नामदान की बख़्शिश करता है तो वह हमारी आत्मा को शब्द के साथ जोड़ता है।

◆❖◆

जब एक पूरा गुरु हमें नाम दान देता है तो वह आत्मा को परमात्मा के साथ जोड़ता है।

नामदान के समय अनुभव प्रेमी के दृढ़ विश्वास और गुरु को परमात्मा मानकर प्रयास करने के साथ-साथ, गुरु की कृपा, और दया से होता है।

गुरु अपना कमाया हुआ सिमरन देता है, और अपनी दया से अंदरूनी अनुभव देता है। गुरु ही है जो उस समय आत्मा को परमेश्वर के साथ मिलाता है, और अनुभव देता है।

◆❖◆

महाराज किरपाल सिंह जी कहते थे कि, गुरु तवज्जो देकर आत्मा को संसार से निकालने, रूहानी तरक्की और आंतरिक अनुभव देने की क्षमता रखता है।

यह अनुभव नामदान के समय आत्मा के विश्वास पर निर्भर करता है। जो प्रेमी नामदान के वक्त गुरु के लिए विश्वास और प्यार रखते हैं और कुछ अनुभव करने के लिए दृढ़ संकल्प करते हैं, उन्हें गुरु की दया से कुछ ना कुछ अनुभव होता है।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि यदि सेवक अंदर गुरु को देखने की इच्छा और तड़फ रखता है, तो गुरु इसमें सेवक की मदद करता है। लेकिन यदि सेवक को गुरु की क्षमता में संदेह है या अंदर तरक्की करने का दृढ़ संकल्प नहीं है, तो उन्हें अनुभव नहीं होता है।

◆❖◆

हमारे अंदर एक बहुत मजबूत ताला लगा है, जिसको इसका कोई भेदी ही खोल सकता है। नामदान के समय गुरु हमारे सारे पाप ले लेता है। सिर्फ परमात्मा ही हमारे सारे पाप ले सकता है। कोई और किसी के पाप नहीं ले सकता है। कोई रिश्तेदार हमारे पाप लेने के लिए तैयार नहीं है। हमें उसका आभारी होना चाहिए जिसने हमारे पाप ले लिए हैं। वह परमात्मा सचखंड से हमारे पाप लेने के लिए इस धरती पर आया।

कौन था वह? अजायब सिंह।

हे सतगुरु, तुम्हारी आत्मा दुखी है, तुम्हारे दर्शन के लिए तरस रही है।

"शब्द नाल जोड़ दातया, साडे अंदर जो शब्द प्यारा।"

यदि कोई नाम की कमाई करता है, तो अंदर जाकर उस परमात्मा के साथ मिलाप करना आसान हो जाता है।

◆❖◆

उस परमात्मा ने यह कानून बनाया है कि गुरु के बिना कोई भी नामदान नहीं पा सकता है, और नाम के बिना मुक्ति नहीं है।

गुरु नानक देव जी कहते हैं कि गुरु, नाम और सिमरन के बिना कोई मुक्ति नहीं है।

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कितनी किताबें पढ़ी हैं। अगर कोई चार युगों तक भी जिन्दा रहे, तो भी मुक्ति नहीं है। कोई अन्य साधना या मार्ग मुक्ति नहीं दे सकता, केवल पूरा गुरु ही जन्म-मरण के चक्र से आत्माओं को रिहा करा सकता है।

जब वह परमात्मा हमें नामदान की बख़्शिश करता है तो वह हमारी आत्मा को शब्द के साथ जोड़ता है।

जो नाम का दान गुरु देता है, वह अमृत है।

◆❖◆

नामदान के वक्त सतगुरु हमारे पिछले सारे पाप खत्म कर देते हैं, और कहते हैं कि कोई नया पाप मत करो।

नाम का अमृत

गुरु दसवें द्वार पर आकर आत्माओं को नाम का अमृत पिलाते हैं। इस अमृत को पीने से आत्मा अमर हो जाती है।

जो गुरुमुख बन जाता है, और वैसा करता है जैसा गुरु कहता है, तो उसे नाम के अमृत का प्याला मिलता है।

शांति नाम में है। नाम ध्याने से हमें अनंत शांति मिलती है।

सभी संत कहते हैं कि पांचों अग्नियां नाम के अमृत से ख़त्म हो जाती हैं।

परमात्मा से मिलना और मुक्ति

यदि मन सतगुरु के दिए सिमरन में लग जाए तो आत्मा मुक्त हो जाती है।

जब आत्मा गुरु पावर के संपर्क में आकर नाम प्राप्त करती है तो उसे मुक्ति का साधन मिल जाता है।

गुरु के पास नाम का जहाज है, जिस पर रूहों को बिठा कर वह सचखंड ले जाता है।

◆❖◆

हे दाता, मुझ पर दया कर, और भजन सिमरन में जोड़।

"आपे तारे ते तारण वाली, आई ऐ इक रब्ब दी जोत निराली।"

"ओह तां करदा संभाल सारे जग दी।"

सतगुरु के अलावा कोई भी जीव आत्माओं को मुक्ति नहीं दिला सकता। सारे ब्रह्मण्ड की रचना करने वाला नाम ही आत्माओं को मुक्ति दिला सकता है।

◆❖◆

जीव पिछले जन्म में किये कर्मों के प्रभाव में हैं। जो हमें मुक्त करने के लिए आता है, उसका कोई कर्म नहीं है।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कुल-मालिक खुद कर्मों से रहित थे, और मुक्ति देने के लिए आए थे। उनके पास वह ताकत है जो किसी भी समय, जब चाहे मुक्त कर सकती है।

◆❖◆

जब हम नाम के साथ जुड़ जाते हैं तो आत्मा और शक्तिशाली हो जाती है।

◆❖◆

जब हम भजन सिमरन के लिए बैठते हैं तो क्या हमें सिमरन याद रहता है?

जब हम अपना कोई दुनियावी कारोबार करते हैं तो क्या हमें सिमरन याद आता है?

जब हम कहीं भी सफर करते हैं तो क्या सिमरन याद है?

हमें खुद के अंदर झांकना होगा। क्या हमारी किसी के साथ लड़ाई या झगड़ा है? क्या हमारा किसी के साथ मन-मुटाव है? यह सब तब होता है जब सिमरन रुक जाता है ।

◆❖◆

अगर गुरु के लिए हमारे दिल में प्यार है, तो हमें उसके सिमरन के साथ भी प्यार है।

सिमरन को हमने पक्का करना है। चाहे हम कोई दुनियावी काम कर रहे हों, बात कर रहे हों, या कुछ और कर रहे हों, मगर हमारा ध्यान सिमरन की तरफ ही होना चाहिए। हम कुछ भी कर रहे हों, मगर सिमरन चलते रहना चाहिए।

◆❖◆

हर कोई शांति चाहता है। जिनके पास नाम की सौगात नहीं है, वह शांति को कैसे पा सकते हैं? वह कैसे जान सकते हैं कि शांति क्या है? नाम ही शांति है।

जिसे नाम मिला है वही शांति को पा सकता है। जिसके पास नाम है वही अंदर जाकर अमृत पी सकता है। सच्ची शांति इस अमृत में ही है, और उसे वही पा सकता है जिसने यह अमृत पीया है।

❖

हम आये भी एक जगह से हैं और जाना भी उसी जगह ही है। सिर्फ बिछोड़ा ही है। कलयुग में इस काल के देश में आत्मा आ गई है, और यह अपना सब कुछ भूल गयी है। मोह के बंधे हुए हम बार-बार जन्म लेते हैं, चारों खाणियों में जन्म लेते हैं।

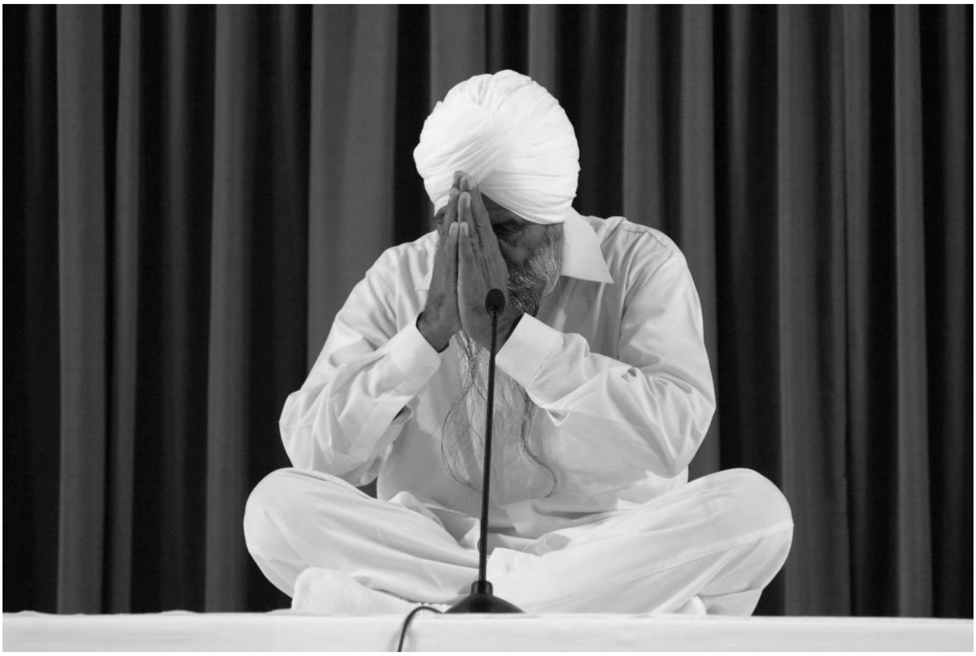

सुरत-शब्द योग: सिमरन, भजन और ध्यान

सुरत-शब्द योग के अभ्यास से मन अपने घर पहुंचता है।

भजन सिमरन करना उस सतगुरु के दरवाजे को खट खटाना है। उसके दरवाजे पर अरदास करना है, और उसके दर्शन पाने की प्रार्थना है। ध्यान एक प्रार्थना है, "हे सतगुरु, दया कर, अपना दरवाजा खोल और अपना दर्शन दे।"

अंदर सतगुरु को मिलने के लिए सिमरन-भजन (सुरत-शब्द योग अभ्यास) में कड़ी मेहनत बहुत जरूरी है।

सुरत-शब्द योग के अभ्यास से मन अपने घर पहुंचता है।

❖

वह हमारे अंदर दसवें दरवाजे पर बैठा है। शरीर के नौ दरवाजे बाहर की तरफ खुलते हैं। हमें उस सर्वशक्तिमान परमेश्वर से मिलना है, जो हमारे अंदर है। अंदर के रास्ते पर सूरज, चंद्रमा, और तारे हैं। यदि हम दोनों आंखों के बीच, थोड़ा ऊपर पहुंच जाएं तो फिर हम इस जन्म-मरण के चक्र से बच जाते हैं।

एक बार जब हमारी आत्मा अंदर जाना शुरू कर देती है तो हमारे अंदर प्रकाश आ जाता है, और हम सूरज, चाँद, और सितारे पार करते हुए पार-ब्रह्म पहुँच जाते हैं। जहां शब्द-रूप सतगुरु हमारे सामने खड़ा होता है। हमें आत्मविश्वास आ जाता है कि हम सही रास्ते पर चल रहे हैं।

जब हम यह स्थूल शरीर को छोड़ कर सूक्ष्म में जाते हैं, तो उस जगह भी सतगुरु सूक्ष्म रूप में होते हैं। जैसे-जैसे हम रूहानी तरक्की करते हैं वैसे-वैसे सतगुरु भी हमारे साथ चलते हैं। नाम के सिमरन में तरक्की और गुरु भक्ति हमारे विश्वास पर निर्भर है।

◆❖◆

गुरबाणी कहती है कि नाम सभी दुखों का नाश करता है। जिस दिल में नाम होता है, उसके सारे पाप खत्म हो जाते हैं।

हम सत्संग में आते हैं, नामदान लेते हैं, और फिर सिमरन का जाप करके हमारे सभी पाप नष्ट हो जाते हैं।

◆❖◆

जब हम अंदर जाते हैं, तो हम तारे, चंद्रमा, सूर्य देखते हैं; और वहां उसकी कृपा से गुरु के नूरी रूप को भी देखते हैं। फिर जो अंदर धुनबाणी हो रही है, उसको हम सुन सकते हैं। यह धुनबाणी हर समय हमारे अंदर हो रही है।

◆❖◆

आत्मा शब्द को सुनती है, और शब्द का अनुभव करती है। यह आत्मा और परमात्मा का मिलाप है।

जब आत्मा शब्द को सुनती है तो वह सब कुछ हासिल कर लेती है। आत्मा एक चेतन शक्ति है। जब आत्मा शब्द को सुनती है तो उसे सृष्टि के सभी मंडलों का ज्ञान हो जाता है।

◆❖◆

जब कोई नाम को जपता है, तो विरोधी ताकतें निकल जाती हैं।

"जे वेला वक्त विचारीऐ, तां कितु वेले भगति होई।"

जिसके पास गुरु है, वह आठों पहर खुश है। उसकी ख़ुशी अलग तरह की है, और वह यह कहता है कि मेरे पास गुरु है। नाम का नशा आठों पहर रहता है। जिसे पूरा गुरु और नाम मिल गया है, उसे बहुत खुश होना चाहिए।

◆❖◆

जिसने भी नाम को ध्याया है, उसे सुख मिला है। हे सत्गुरु, जिसने भी आपके नाम को ध्याया है, उसे सब सुख मिल गए हैं। नाम के सिमरन के बिना मन को शांति नहीं मिलती है। शांति नाम ध्याने में है।

अंत में केवल नाम ही शांति देता है। नाम ही मुक्ति देता है। एक बार तन और मन ठहर जाते हैं तो अंदर गुरु के दर्शन हो जाते हैं।

◆❖◆

यह दुनिया कभी किसी की नहीं बनी है, और ना ही कभी किसी की बनेगी। कई युगों से मन दुनिया को अपना बनाने की कोशिश कर रहा है, लेकिन कभी सफल नहीं हुआ। यदि मन गुरु को अपना बनाता है, तो उसे पूरा सुख मिलता है। इसके लिए हमें सिमरन करना होगा। चलो अभी से शुरू करते हैं। अंदर गुरु तक पहुंचना शिष्य का फर्ज है। रोज उसके अंदर दर्शन करें।

जप तप, रीति रिवाज और कर्मकांड

अंत में केवल नाम ही शांति देता है, सिर्फ नाम में मुक्ति है।

कोई भी बाहरी रीति-रिवाज कर सकता है, तीर्थों की यात्रा कर सकता है, तीर्थों पर नहा सकता है, तप और तपस्या कर सकता है। लेकिन इन सभी चीजों से किसी को शांति या मुक्ति नहीं मिली है, और ना ही मिल सकती है। मन को, हमारे अंदर जो बाणी धुनकारें मार रही है, सुनकर ही समझ आ सकती है।

◆❖◆

संत बाहर के रीति-रिवाज, तप, और तपस्या दुनिया को यह समझाने के लिए करते हैं, कि इन सब बाहरी साधनाओं से वह परमात्मा नहीं मिलता है। अंत में केवल नाम ही शांति देता है, और सिर्फ नाम में ही मुक्ति है।

◆❖◆

यह उस परमात्मा की मर्जी है कि उसने माफ़ी देकर किसे भेजना है, और सिर्फ वही माफ़ी देने में सक्षम है।

सत्संग में आए बिना मन कभी भी नरम नहीं बनता।

शब्द-नाम के ध्यान के बिना मन साफ़ और पवित्र नहीं बन पाता। मन नरम नहीं होता और वह दूसरों को परेशान करता रहता है।

उस रूहानी जोत के दर्शन करने से पाप नष्ट हो जाते हैं। सतगुरु के दर्शनों से पापों का नाश हो जाता है।

◆❖◆

एक बार तन और मन शांत हो कर ध्यान में जुड़ जाते हैं, तो अंदर उस परमात्मा के दर्शन हो जाते हैं। सतगुरु के अलावा कोई और नहीं जानता कि कैसे इस मन और आत्मा की गांठ को खोलना है। आत्मा और मन दोनों अलग होकर अपने-अपने घर चले जाते हैं, और यह काम केवल एक पूरा सतगुरु ही कर सकता है।

भाग ३ - अनुभाग २

विधाता और सृष्टि

विधाता और सृष्टि की रचना.. २२०

काल और माया... २२२

जन्म और मृत्यु का चक्र - चौरासी लाख जून.............................. २२५

जीव-आत्मा २२७

मानस जामा २३०

पाप.. २३३

कर्म.. २३६

मन, इंद्रियां, और पांच ठग २३९

विधाता और सृष्टि की रचना

इस रास्ते पर हमारी मदद कौन कर सकता है? वह जिसने संसार की रचना की है।

भगवान हमारे अंदर है। हर किसी के अंदर है। उन्होंने सृष्टि की रचना की है और इसका इंतजाम किया है।

वह एक था, और उसकी इच्छा एक से अनेक होने की हुई तो इस सृष्टि की रचना कर दी।

उसने अपने से मिलने के लिए एक ही तरीका रखा है। उस सर्वशक्तिमान परमात्मा से मिलने का रास्ता हमारे अंदर है, परमात्मा को मिल कर आत्मा उस में विलीन हो जाती है।

इस रास्ते पर हमारी मदद कौन कर सकता है? जिसने इस संसार की रचना की है। वह आत्माओं की मदद के लिए मानस जामा धार कर इस दुनिया में आता है।

◆❖◆

कोई नहीं जानता कि वह परमात्मा हमें अपनी इच्छा में कैसे रखना चाहता है। ईश्वर ने इस सृष्टि की रचना की और मानव को सबसे ऊँचा दर्जा, सम्मान दिया है।

काल और माया

मन भ्रम की मीठी नींद में सो रहा है।

हम यहां कुछ दिनों के लिए एक मेहमान बन कर आए थे, लेकिन हर चीज के मालिक बन गए। यह दुनिया कभी किसी की नहीं बनी है, और ना ही कभी किसी की होगी। कई युगों से मन दुनिया को अपना बनाने की कोशिश कर रहा है, लेकिन कभी सफल नहीं हुआ।

हम माया खाते हैं, माया पीते हैं, फिर माया के ही सपने देखते हैं।

हम जो खाना खाते हैं, वह केवल शरीर को बनाए रखने के लिए जरूरी होता है।

हमें क्या आहार चाहिए? आत्मा का खाना नाम है। हम नाम जपते हैं तो हमें ज्ञान प्राप्त होता है, तब हम पापों और बुरे कर्मों से दूर हो जाते हैं।

◆❖◆

मन भ्रम की मीठी नींद में सो रहा है। हम इस सोते मन को गुरु और शब्द की कृपा से ही जगा सकते हैं।

यदि कोई काल के कहे पर चलता है तो उसे काल परेशान करता है।

संत महात्मा यही कहते हैं कि जिसने भी उस परमात्मा की भक्ति की, वह उस काल के डर से की।

कबीर साहब कहते हैं कि जब लोग एक मुर्दे को श्मशान ले जाते हैं और उसका दाह संस्कार करते हैं, तो वे घर लोट जाने पर हाथ धोते हैं, भले ही उन्होंने उस शरीर को छूआ ना हो।

कबीर साहब कहते हैं, "गरीब बकरी को ही देखो, वह केवल घास-फूस ही खाती है, और उसकी खाल छील दी जाती है, फिर बकरी खाने वालों का क्या होगा?"

◆❖◆

चित्रगुप्त हमारे सारे कर्मों का हिसाब रखते हैं, वे सब कुछ देखते हैं। जब मनुष्य शरीर छोड़ता है, तो उन्हें बहुत स्पष्ट रूप से दिखाया जाता है कि उन्होंने क्या अच्छा या बुरा किया है। और वहाँ से उन्हें उनके अगले जन्म में ले जाया जाता है। किसी को यह भी नहीं पता कि अगले जन्म में जीव का कौन सा रूप होगा।

◆❖◆

काल हमें कान से पकड़ लेगा और कौन जानता है कि वह हमें कहां ले जाएगा?

माँ, पिता, भाई, बहन सब बस खड़े देखते रह जायेंगे, उनमें से कोई भी कुछ नहीं कर सकता, कोई भी हमारी मदद नहीं कर सकता। उस जगह पर हमारी रक्षा सतगुरु के सिवा कोई भी नहीं कर सकता और हमें नहीं बचा सकता है।

◆❖◆

काल किसी को भी अपने राज से या जाल से बचने नहीं देता है। बचने के लिए बहुत मेहनत जरूरी है, और यह गुरु की कृपा से होता है। यह करनी का मजमून है और कथनी से इस रास्ते पर सफलता नहीं मिलती है।

जन्म और मृत्यु का चक्र - चौरासी लाख जून

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, बड़े सौभाग्य के साथ यह मानस जन्म मिलता है।

हमें गुरु के दिए नाम को क्यों सिमरना चाहिए? ताकि हम इस जन्म-मरण के चक्र से निकल सकें, चौरासी से छूट सकें, और हम अपने सच्चे घर वापिस जा सकें।

हे सतगुरु, यदि आप मुझ पर दया करना चाहते हैं तो मुझे सिमरन-भजन का दान दें।

◆❖◆

संत सतगुरु कहते हैं कि हम कई युगों से इस दुनिया में आ और जा रहे हैं। संत दयालु होते हैं, और हम पर दया करते हैं। वे संसार में आते हैं और दया करके आत्माओं को इस भवसागर से पार ले जाते हैं।

◆❖◆

यदि किसी को पूरा गुरु नहीं मिलता तो वह चौरासी लाख के चक्र में वापस चला जाता है।

मस्ताना जी कहते हैं कि यह मानव जन्म का बड़ा फायदा है, इसमें आप प्रभु की भक्ति कर सकते हैं और उनसे मिल सकते हैं। चौरासी लाख जीवों की जूनें जन्म-मरण के चक्र में हैं, जिसमें मानस जन्म को सबसे ऊँचा दर्जा दिया गया है।

◆❖◆

गुरु की ओट मिलने से जीव को जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति मिलती है।

◆❖◆

जो पूरे संतों का प्रेमी बन कर उनके दरवाजे पर आता है, उसका जन्म-मरण का चक्र संत पल में ख़त्म कर देते हैं।

◆❖◆

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "जिन्हां जपया किरपाल प्यारा, नरकां नूं नइयों जाणगे"।

"दुःख भंजन तेरा नाम जी"। आपका नाम दुखों का निवारण करने वाला है।

अगर मैं नाम को अपने दिल में रखूंगा तो सारे पाप खत्म हो जाएंगे। अगर मैं नाम को अपने दिल में रख लूंगा तो मैं नए पाप नहीं करूंगा।

जो नाम सिमरता है, उसे सदा के लिए सुख मिलता है।

◆❖◆

जन्म और मौत का दर्द बहुत भारी होता है। जब कोई सच्चे गुरु से मिलता है, वह इस दर्द को हमेशा के लिए मिटा देता है।

उस सर्वशक्तिमान परमात्मा ने चौरासी लाख जूनियों को बनाया और उसमें मानस जन्म को सबसे ज्यादा सम्मान दिया। इस मानस जामें में आये जीव अच्छा जीवन जी सकते हैं। इस जूनी में जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्त हुआ जा सकता है।

मानस के अलावा किसी भी और जून में जीव केवल परमात्मा की बनायी प्राहलब्ध को भुगतता है। अपने कर्मों का भुगतान करता है, जो पिछली जूनियों में किये हैं।

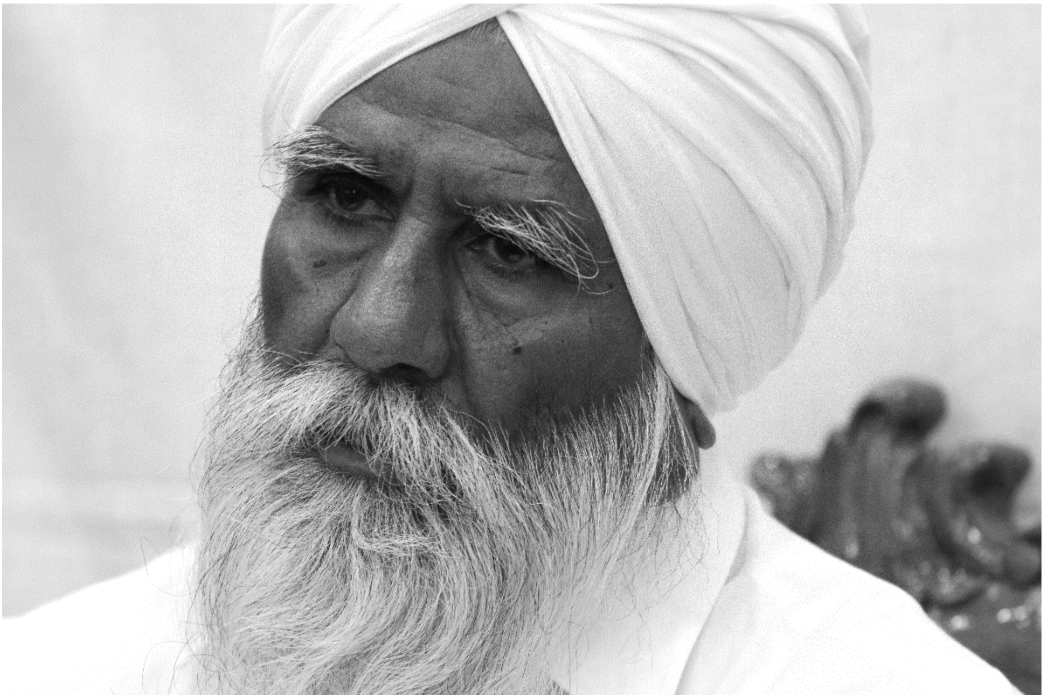

जीव-आत्मा

आत्मा परमात्मा की अंश है।

शब्द सर्वशक्तिमान परमात्मा, कुल-मालिक, करण-कारण है। जब आत्मा दुखी होकर परमात्मा को पाने के लिए तड़फ रही होती है तो वह परमात्मा कुछ इंतजाम करता है, किसी तरह से आकर दिलासा देता है।

◆❖◆

जीव के पास अपने दम पर कुछ भी करने की ताकत नहीं होती। जीव का कोई सहारा नहीं है। जीव को कोई ज्ञान नहीं है। जीव अपने दम पर कुछ नहीं कर सकता। जीव अपने दम पर बोल भी नहीं सकता। अपने दम पर जीव ना तो राजा बन सकता है, और ना ही भिखारी। जीव अपनी मर्जी से ना जी सकता है, और ना ही मर सकता है।

उस परमात्मा की कृपा से कुछ भी हो सकता है। जीव ना तो कुछ दे सकता है, और ना ही कुछ पूछ सकता है।

◆❖◆

हर एक को पिछले जन्म के कर्मों का इनाम मिलता है। यदि कोई जीव अपने दम पर उस परमात्मा से मिलना चाहता है तो किसी भी तरीके से वह उससे नहीं मिल सकता है। जीव शक्तिहीन है। जीव हौमें के रोग से प्रभावित होते हैं।

◆❖◆

आत्मा शब्द सुनती है। आत्मा शब्द को अनुभव करती है। यह मुलाकात आत्मा और परमात्मा की है। बाकी सब नाशवान है। परमात्मा आत्मा से मिलता है। जब आत्मा शब्द सुनती है तो उसे सब कुछ मिल जाता है। आत्मा एक चेतन शक्ति है। जब आत्मा शब्द सुनती है तो उसे सृष्टि के सभी मंडलों का ज्ञान हो जाता है।

◆❖◆

आत्मा का कोई शरीर नहीं है, परमात्मा का कोई शरीर नहीं है। आत्मा माया में उलझी हुई है। जीव सोचता है कि सब कुछ मेरा है। मोह जन्म-मरण और सभी कष्टों का कारण है। सतगुरु ने दया की और सभी बंधनों को तोड़ दिया। जीव जब पूरे सतगुरु से मिलता है तो वह माया के जाल को काट देता है। जब मन सिमरन करने लगता है, तब उस सर्वशक्तिमान परमात्मा से मिलना आसान हो जाता है। परमात्मा से मिलने की राह में यदि कोई अड़चन है तो वह मन की ही है।

◆❖◆

आत्मा उस परमात्मा की अंश है। कोई भी आग इसे जला नहीं सकती। कोई पानी इसे डुबो नहीं सकता। कोई गोली इसे मार नहीं सकती। कोई भी शक्ति इसे नुकसान नहीं पहुंचा सकती।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं:

"रल मिल याद मनोंदिआं सईयाँ, नाम तेरे दियां धुम्मां पईयाँ।"

सभी आत्माएं उसे याद करती हैं, और वह परमात्मा दया करता है। आत्मा परमात्मा का हिस्सा है।

◆❖◆

अगर मन को प्यार से समझाया जाए कि तू भी अपने घर से बिछड़ा हुआ है, तेरा घर ब्रह्म है, वहां जा कर तुझे शांति मिल जायेगी, तो मन आत्मा का कहना मान लेता है। एक बार मन कहना मान ले और वही करे जो आत्मा कहती है, तो ध्यान लगाना आसान हो जाता है। आत्मा सिमरन से अंदर तरक्की कर सकती है। आत्मा तब तक सफल नहीं हो सकती, जब तक मन इसका साथ नहीं देता। यदि आत्मा मन के कहे पर चलती है तो कई मुश्किलें आती हैं। मन इन्द्रियों का कहना मानता है। इन्द्रियां संसार के विषय-विकारों में लिपटी हुई हैं। मन भी विकारों में लिपट जाता है। मन आत्मा को दबा लेता है।

हमारी आत्मा कमजोर हो गई है, क्योंकि कई युगों से उसे अपनी खुराक नहीं मिली।

◆❖◆

यदि अच्छे भाग्य से पूरा गुरु मिल जाए, और वह नामदान दे दे, **तो ऐसे सौभाग्यशाली जीव को सिमरन जरूर करना चाहिए।**

सिमरन आत्मा की खुराक है, और यदि तुम सिमरन करते हो तो भूखी-प्यासी आत्मा को खुराक दे रहे हो। तुम्हारी आत्मा अपनी ताकत को फिर से पा लेती है। सिमरन करके आत्मा बहुत शक्तिशाली बन सकती है।

प्यारयो, जितना सिमरन कर सकते हो करो।

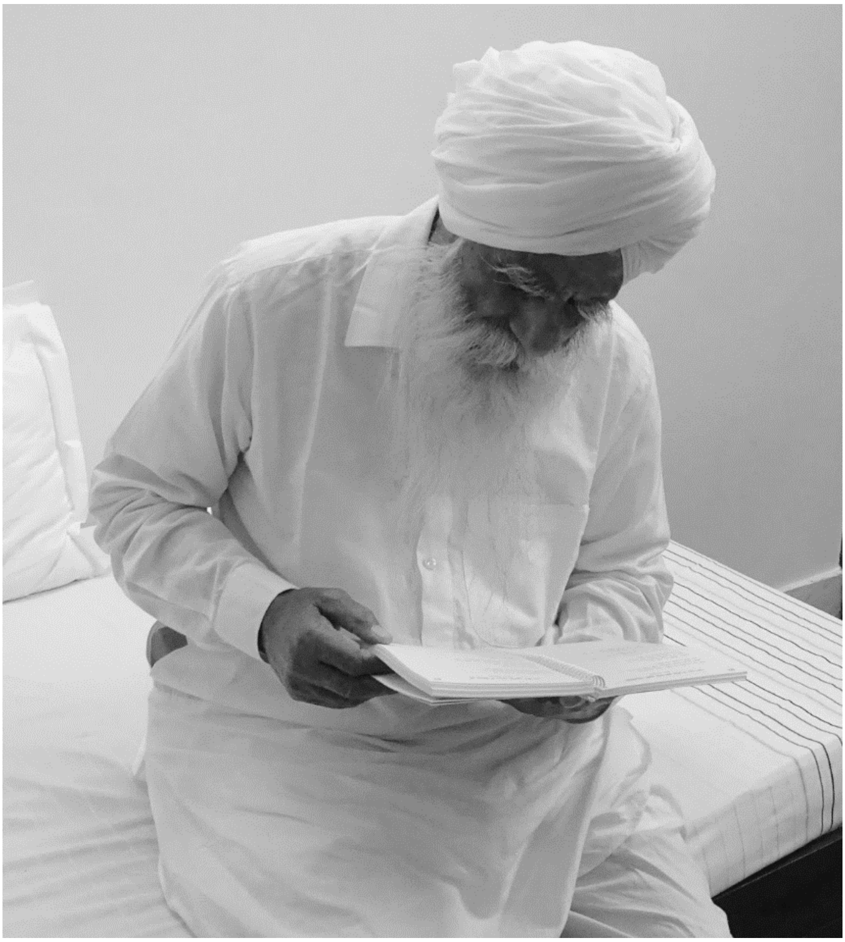

मानस जामा

हर का नाम जपो सुख पावो जनम अमोलक मिलया हीरा ना मिट्टी विच रुलावो।

कबीर साहब ने कहा है कि यह अनमोल मानस जीवन मिला है, इसमें शब्द-नाम की कमाई करें। जो ऐसा नहीं करता, वह अपना खुद जिम्मेवार होता है। संत अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि जो जीव गुरु का दिया सिमरन करते हैं, वह अपने ऊपर दया करते हैं। और जो सिमरन नहीं करते हैं, वह अपना गला खुद काट रहे होते हैं।

◆❖◆

हमें यह अनमोल मानव जन्म बड़े सौभाग्य के साथ, उस परमात्मा की खास कृपा से मिला है। इस मानस जामें में ही हमें उस परमात्मा को मिलने का मौका मिलता है।

देवी-देवता भी इस शरीर को लोच रहे हैं, हे परमात्मा तू बख्शिश कर, अगर मानस देह मिल जाए तो हम भी मुक्त हो जाएं, और दुखों से हमेशा के लिए पीछा छुड़वा लें।

◆❖◆

जब से यह संसार बना है, उस समय से हम जीव चले आ रहे हैं। यह नहीं है कि हमारा जन्म इसी बार हुआ है। कई बार इंसान बने, लेकिन परमात्मा नहीं मिला। उस सत्पुरुष ने दया नहीं की, और हम इस चौरासी में फिर भटक गए।

◆❖◆

"चौरासी लख जिया जून, प्रभ मानस दी वडयाई।" चौरासी लाख भोग कर इंसानी जामा मिलता है। अगर यह हाथ से निकल जाए, फिर मिले ना मिले, इसके बारे में कुछ भी कहा नहीं जा सकता है। अब समय मिला हुआ है।

इसका पूरा फायदा हमें कब मिलता है? संत अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "सिमरन करिए, नाम सिमरिए, जिंदगी सफल बना लई ए, प्यार गुरु नाल पा लई ए।"

सिमरन करने से ही इस मानस जामें का पूरा फायदा मिलता है। सतगुरु का प्यार सत्पुरुष के साथ लगा हुआ है, अपने गुरु के साथ लगा हुआ है। अगर हमारा प्यार गुरु के साथ है, तो वह जहां जाएगा उसी जगह हमें ले जायेगा।

◆❖◆

इन्द्रियों की सत्ता पर यह शरीर है। जैसे आँख की इंद्री है, कान की इंद्री है, जीभ की इंद्री है, और त्वचा की इंद्री है। अब जो मकान बना हुआ है, वह हवा, पानी, अग्नि, आकाश, और पृथ्वी के साथ बना हुआ है। इस मकान के अंदर वह परमात्मा खुद बैठा हुआ है।

◆❖◆

कौन से मकान का संत महात्मा जिक्र करते हैं? यह शरीर मकान है।

"राम बोले काया दे ओहले, राम बिना कोई ना बोले।" जो

इस शरीर में बोल रहा है वह अल्लाह, राम बोल रहा है। इस मानस जामें में उस परमात्मा को मिलना है।

"मिलया मानस जामा, कंत नूं पौणा नी।"

पाप

एक पूरे भक्त के दर्शन करने से पापों का नाश हो जाता है।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज ने पूरी दुनिया देखी, लेकिन उन्हें ऐसा कोई नहीं मिला जो पापों को मिटा सके। यह सब देख कर इस नतीजे पर पहुँचे कि केवल परमात्मा, और एक पूरा गुरु ही दूसरों के पापों को ले सकता है।

वह परमात्मा संतों को संसार में भेजता है, क्योंकि वह जानता है कि संसार में बहुत सारे पाप किए जा रहे हैं। वह किसी ऐसे प्यारे को भेजता है जो आत्माओं और संसार दोनों को पापों से दूर कर सके।

◆❖◆

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं कि केवल गुरु ही हमारे पापों को ले सकता है। हमें उनसे प्रार्थना करनी चाहिए।

"मेरा कागज़ गुनाहां वाला फाड़ दे, होर कुछ मंगदा नहीं।"

मन पापों से घबराया हुआ अगर सतगुरु के पास आता है और सच्चे दिल से माफ़ी मांगता है, तो यह पवित्र और साफ़-सुथरा हो जाता है। जब सतगुरु दया की बारिश करता है, तो पाप ख़त्म हो जाते हैं। केवल कुल-मालिक, करण-कारण परमात्मा ही हमारे मन के किये पापों के खाते को फाड़ सकता है। ऐसा करने की ताकत किसी और के पास नहीं है।

◆❖◆

जो दूसरों को धोखा देता है, वास्तव में वह उस सर्वशक्तिमान भगवान को धोखा दे रहा है, और पापों का भार इकट्ठा कर रहा है। गुरु का शब्द-रूप हमारे पापों को माफ नहीं करता और दंड देता है। सतगुरु इस स्थूल मंडल पर सेवकों के सभी पापों की जिम्मेदारी लेता है और वह माफ़ी भी देता है।

◆❖◆

बुल्लेशाह का कहना है कि हमारे कर्मों पर फैसला लिया जाएगा।

क्या हमने सत्संग सुना और उस पर अमल किया है?

◆❖◆

"तुसीं अरज सुनो किरपाल गुरु, साडा मन बदियाँ तो मोड़ दयो।"

नाम, गुरु, और सत्संग के बिना मन को पापों और बुरे कर्मों से दूर नहीं किया जा सकता। एक बार जब पूरा गुरु मिल जाता है तो मन को बुरे कर्मों से मोड़ना आसान हो जाता है।

◆❖◆

यदि कोई किसी की आलोचना, निंदा, या बुराई करता है, तो वह पापों को इकट्ठा कर रहा है।

कबीर साहब कहते हैं कि अगर कोई तारीफ करना चाहता है तो अपने गुरु की तारीफ करो। अगर कोई निंदा करना चाहता है तो अपने मन की निंदा करें।

◆❖◆

नूरी प्रकाश के दर्शन करने से पाप नष्ट हो जाते हैं। एक पूरे भक्त के दर्शन करके पापों का नाश हो जाता है।

हमने कई जन्म लिए और हर जन्म में कितने ही पाप किए। हमने पापों का भारी भार इकट्ठा किया है। सतगुरु पापों को ख़त्म करने में हमारी मदद करते हैं।

◆❖◆

सेवक अरदास करता है कि मैंने कोई अच्छा करम नहीं किया है, लेकिन आप कृपया मेरी इज्जत बनाए रखें। कृपया अपना वादा पूरा करें।

मैं एक नीच हूं, मेरे गुरु बहुत ऊँचा है, मेरा गुरु महान है। वह नीच लोगों के साथ संबंध बनाए रखता है, और मेरा ख्याल रखता है। कृपया सेवक की फ़रियाद को सुनें, क्योंकि सेवक केवल प्रार्थना ही कर सकता है।

कर्म

जो कर्म किये हैं उनका भुगतान करना पड़ेगा।

काल के देश का यह क़ानून है कि हर कर्म की सजा भुगतनी पड़ती है। लेकिन दयाल के देश में माफ़ी है, और वह यहां से हमें माफ़ी दे कर ही अपने घर सचखंड ले जाता है।

यदि कोई पूरे गुरु के पास जाता है और उनके बताये तरीके पर जीवन को ढालता है, तो उसके दुख दूर हो जाते हैं, और जीवन अच्छा बन जाता है।

गुरु की शिक्षा के अनुसार जीवन जीकर ही हम जीवन अच्छा बना सकते हैं।

"अड़ी छड्ड अड़या, रस्ते लग अड़या, किते मिल जाए दंड करारा ना।"

◆❖◆

जब हम पर मुसीबत आती है तो हम परेशान हो जाते हैं, और चिंता करते हैं। जब हमें कष्ट होता है तो हमें नहीं पता कि क्या करना है। यह सच्च है कि उस परमात्मा के अलावा कोई और आकर हमारी मदद नहीं करता। यदि मन पाप और बुरे काम करता

है, तो निश्चित रूप से हमें उनका फल तो भुगतान पड़ेगा। हमें अपनी आत्मा को समझाना होगा कि अब हमें यह तो सहन करना ही पड़ेगा।

◆❖◆

अगर हम उसके आगे बिनती करते हैं, तो शायद वह हमारी बिनती को सुन ले।

कबीर साहब कहते हैं कि जब कोई दुख भोगता है, तो फिर उस समय वह भगवान को याद करता है।

प्यारयो, जब हमें कठिनाई या पीड़ा आती है तो हम दूसरों को दोषी ठहराते हैं, और उनकी गलती निकालते हैं। हम यह भूल जाते हैं कि जो भी हो रहा है वह हमारे कर्मों के अनुसार, और उस परमात्मा की मर्जी से हो रहा है।

◆❖◆

चाहे कितने भी हमारे बुरे कर्म हैं, यदि हम सत्संग में आने लगें, तो अच्छे कर्म बनने लग जाते हैं।

यह सतगुरु ही है जो हमें साफ करता है।

हम 'मैं और मेरी' की वजह से कर्मों में फंस जाते हैं।

जब कोई यह सोचता है, "मैं कर्ता हूं, मैं यह कर सकता हूं या यह काम मैंने किया है", तो वह फंस जाता है, और उसे इसका भुगतना करना पड़ता है।

यदि हम सोचते हैं, "जित्थे भेजे दाता जावां, तेरा दित्ता सदा ही खावां, मैं हां पुतली तेरे हत्थ डोर दातया"। तो कर्मों से प्रभावित नहीं होते हैं।

जो भी संतों के सत्संग में आता है, वह सभी सुखों का भागी हो जाता है।

◆❖◆

हम तीन प्रकार से कर्म करते हैं- मन, कथनी और करनी से।

कबीर साहब यह भी कहते हैं कि अगर आप अपने मन पर नियंत्रण नहीं रख सकते और बुरे कर्मों की ओर चले जाते हैं, तो कम से कम अपने शरीर से बुरे कर्म ना करें। शरीर द्वारा किया हुआ कर्म माफ़ नहीं होता।

◆❖◆

यह काल का देश है। काल के देश में मन जैसे कर्म करेगा उसका वैसा फल हमें मिलेगा। इसलिए हमें नेह-कर्म होना है, कर्मों से रहित होना है।

अगर हमारी सोच है कि जहां भेज देता है मैं चला जाता हूं। जो दे देता है, मैं खा लेता हूं, तो हमारा कोई कर्म नहीं है।

हमारा मन खुद कर्म करता है, फिर भुगतान करता है। हौमें रोग में दुःख पाता है।

यदि कोई अपने आप को बुरे कर्म करने से नहीं रोकता है तो वह परमात्मा उसे क्या इनाम देगा?

◆❖◆

कबीर साहब कहते हैं कि मुस्लिम का जब रोज़ा रखने का दौर चलता है, तो वह पूरे दिन खाना नहीं खाते। लेकिन शाम को वे गाय को काटकर खाते हैं। वह परमेश्वर किसी ऐसे व्यक्ति को क्या इनाम देगा जो जानवरों को काटता है और उन्हें खाता है? इस नाटक को देखकर कबीर साहब ने कहा है, हे प्यारे, आपने अपनी थाली को श्मशान भूमि बना दिया है। मृत शरीर आपकी थाली में होता है, इसलिए जब कोई उस मांसाहारी खाने को खाता है तो वह थाली एक तरह से श्मशान ही है।

मन, इंद्रियां, और पांच ठग

कबीर साहब कहते हैं कि संत अपने मन को समझाते हैं।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, "गुरु कहे सो ही करिए, मन के मते कभी ना चलिए"। जो मन का कहना मानता है, वह चौरासी के जन्म-मरण के चक्र में चले जाता है।

◆❖◆

मन अंदर जाकर उस सर्वशक्तिमान परमात्मा से मिलना नहीं चाहता है। मन उसे बाहर खोज रहा है। गुरु, नाम, और सत्संग के बिना परमात्मा नहीं मिलता।

◆❖◆

मन एक हिरण की तरह बाहर घूम रहा है। एक हिरण कभी भी एक जगह पर नहीं

रह सकता, वैसे ही यह मन कभी भी स्थिर नहीं रहता। एक बार जब हमें गुरु मिल गया है, नाम मिल गया है, सत्संग मिल गया है, तो यह हमारा फर्ज है कि हम मन को शांत करें, और अपने असली घर वापस जाएं।

यह उतना मुश्किल नहीं है जितना हम सोचते हैं।

◆❖◆

सिमरन-ध्यान प्रेम और विश्वास के साथ करना होता है। हम सिमरन करते हैं तो हमें अपनी आत्मा के लिए अमृत मिलता है। लेकिन पांच दुश्मन या चोर (काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार) उस अमृत को पीते जाते हैं, और हम सूखे रह जाते हैं। जब हम सोते हैं तो ये चोर आते हैं और हमें लूटते हैं। मन की इन पांच चोरों से दोस्ती है। मन सोचता है कि यह उन्हें भोग रहा है, लेकिन सच यह है कि ये इन्द्रियां मन को भोग लेती हैं।

◆❖◆

मन ब्रह्म का अंश है, इसलिए उसे हमने उसके घर पहुंचाना है। ब्रह्म मन का घर है, और एक बार अपने घर में पहुंच जाए तो हमें इससे कोई डर नहीं। हमारे दिलों में हम सर्वशक्तिमान परमेश्वर से मिलने की इच्छा तो है, लेकिन हम उसे तभी पूरा कर सकते हैं जब हम उसके द्वारा बनाई गई विधि का इस्तेमाल करते हैं, और कड़ी मेहनत करते हैं।

◆❖◆

हमारे जीवन में बहुत कम सांसें हैं, हमें नहीं पता कि ये कब खत्म हो जाएंगे। अगर हम अपने काम को टालते रहें तो यह कभी पूरा नहीं होगा। मन हमें कभी सिमरन करने के लिए नहीं कहता। वह हमेशा हमारे साथ है, हमें परेशान या विचलित करने के लिए। स्वामी जी महाराज कहते हैं कि जो कल करना है उसे आज ही कर लो। यह आपका अपना निजी काम है, इसे पूरा करना चाहिए।

◆❖◆

कबीर साहब कहते हैं कि हे मन, वैसे कर जैसा मैं कहता हूं। इस संसार में जीवन छोटा है, और बाद में आपको इस मन पर काबू करने का मौका फिर नहीं मिलेगा।

केवल नाम ही मन पर काबू पा सकता है। ना बाहरी साधन और ना ही चतुराई ऐसा कर सकते हैं।

अगर किसी सांप को पकड़कर पिटारी में डाल दिया जाए तो जहर वहीं रहता है। वह ख़त्म नहीं हो जाता। केवल जहर वाली थैली को हटाकर ही सांप पर काबू पाया जा सकता है, और कोई भी इसे किसी भी तरह से हाथ लगा सकता है।

◆❖◆

मन संसार के प्यार और मोह में फंसा हुआ है। मन को कैसे काबू करें? नाम, शब्द, गुरु और सत्संग के साथ। अभी मन संसार के सुखों से प्यार करता है। अगर इसको अच्छे स्वाद वाली कोई चीज दे दी जाए तो यह दुनिया के स्वादों को छोड़ देगा।

◆❖◆

पहला काम मन को इसके घर ब्रह्म या त्रिकुटी तक पहुंचाना है। एक बार अपने घर पहुंचने के बाद यह संसार के स्वादों को छोड़ देगा। इसे पीने के लिए नाम का अमृत मिलेगा जो इसकी प्यास को हमेशा के लिए बुझा देगा। इससे हमेशा के लिए शांति मिल जाएगी। हमें अमर सुख मिलेगा।

◆❖◆

यदि कोई मन को उसके घर पहुंचाने के लिए कड़ी मेहनत या उपाय नहीं करता है, बल्कि चतुराई और बुद्धि पर निर्भर करता है, तो कभी सफल नहीं हो सकता है।

हमारा मन दुनिया से जुड़ा हुआ है।

जो सयाने प्रेमी होते हैं वे मन को कभी भी भ्रम पैदा नहीं करने देते, और ना ही उन्हें डर लगता है। मन को उन्हें धोखा देने का कोई अवसर नहीं मिलता। वे अपने मन को बुरे कर्म नहीं करने देते। संत मन को काबू करने का तरीका जानते हैं। वे ही हैं जिनके पास यह भेद होता है। संत मन से काम करवाते हैं। उनके हाथ काम पर और मन सिमरन में जुड़ा होता है।

◆❖◆

मन आत्मा से ताकत लेता है। यदि कोई सच्चे गुरु से मिलता है, और सूरत शब्द योग का अभ्यास करता है, फिर उस परमात्मा को मिलना आसान हो जाता है। रोज नित-नेम से भजन सिमरन करना है, तभी सारे कष्ट समाप्त होते हैं।

मन को पता है कि यह व्यक्ति शब्द नाम का ध्यान कर रहा है, सिमरन कर रहा है। अगर मैं ऐसे व्यक्ति को परेशान करता हूं, तो मुझे ही परेशानी उठानी पड़ेगी।

◆❖◆

गुरु के अलावा कोई और नहीं जानता कि कैसे इस आत्मा और मन के बीच की स्थूल गाँठ को खोलना है। यह केवल सतगुरु की कृपा से ही खुलती है।

◆❖◆

मन एक शीशे की तरह है। किसी को अगर अपना शरीर देखना है तो वह आईने के सामने खड़े हो जाते हैं। एक बार जब मन साफ़ हो जाता है तो हम उस परमेश्वर को अपने भीतर देख सकते हैं।

"तूं सुख वेले शुक्राना कर, ते दुःख वेले अरदास"।

अच्छे समय में उसका आभार समझें। जिसकी वजह से सुख मिले हैं, उसका धन्यवाद करें।

यदि समय कठिन है और हम उससे प्रार्थना करते हैं, तो वह निश्चित रूप से हमारी बात सुनता है। दुख या कठिनाई के समय जीव सोचता है कि मेरे साथ ही ऐसा क्यों हो रहा है। हम यह नहीं समझते कि यह हमारा अपना मन है जो हमारे सभी कष्टों का कारण बनता है।

◆❖◆

कबीर साहब कहते हैं कि संत अपने मन को समझाते हैं।

कबीर साहब कहते हैं कि मन की दो समस्याएं हैं और दोनों ही तरीकों से यह जीव को

परेशान करता है। यदि आप मन के साथ हठ करते हैं, तो यह वापस आप पर हमला करेगा। यदि आप मन से नरमी करते हैं, तो यह आपके लिए अन्य कठिनाइयां पैदा करेगा।

◆❖◆

हमारी समस्या यह है कि मन बाहर चला जाता है। मन की वजह से ही शरीर में दर्द महसूस होता है। ऐसा तब होता है जब मन बाहर चला जाता है।

कबीर साहब कहते हैं, "मुसाफिर जागते रहना, नगर में चोर आते हैं "।

◆❖◆

संत हमें बताते हैं कि एक सांस जितना भी मन पर विश्वास नहीं करें। हर सांस के साथ, हर समय, सिमरन जारी रखें । संत जानते हैं मन हमें धोखा दे सकता है, इसीलिए हर सांस के साथ सिमरन करते हैं। मन की वजह से ही भाई-भाई लड़ते हैं, बहन से बहन लड़ती है, बेटा पिता से लड़ता है, और बेटी मां से लड़ती है। मन की वजह से रिश्तेदार लड़ते हैं, पड़ोसी लड़ते हैं, राज्य और देश तक लड़ पड़ते हैं। यह सब मन का बनाया हुआ खेल है। सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, प्रेमी इस बात को समझें - एक-दूसरे को माफी दो और माफी मांगो ताकि प्यार बना रहे। अगर हम दूसरों को माफ नहीं करेंगे तो वह परमात्मा हमें कैसे माफ कर देगा?

◆❖◆

मन को गुरु की शरण में लगाना है। अगर कोई रूकावट है तो वह हमारे मन की है। जितना समय आज हम उसकी याद में बिता रहे हैं, क्या उससे हमारा मन टिक गया है? क्या हमारा मन एकाग्र हो गया है? क्या मन अपने घर बैठ गया है? ठंडे दिमाग से सोचना है। मन को उसके घर पहुँचाने के लिए कुछ समय भी चाहिए। एक दिन में भगत नहीं बनता है।

◆❖◆

संत अजायब सिंह महाराज जी ने कहा है कि एक इंसान जो कुछ भी कर रहा है, वह अपने मन के कहे करता है। फिर हम बहाना बनाते हैं कि किसी और ने ऐसा किया है, और हम दूसरों को दोष देते हैं।

◆❖◆

मन की बाधा केवल ब्रह्म तक है। इससे आगे नहीं। अगर हम प्यार से सिमरन करते हैं तो अपने अंदर उस प्रकाश को देख लेते हैं और जो अंदर अनहद बाणी है उसको भी सुन लेते हैं।

◆❖◆

अहंकार एक घोर बीमारी है। इस बीमारी की दवा सिर्फ नाम है। नाम के अलावा इस बीमारी का कोई और इलाज नहीं है। यदि परमात्मा जीव पर दया करें, तभी अहंकार की बीमारी से वह ठीक हो सकता है।

◆❖◆

काम-वासना की यह हालत है, नींद आती नहीं है। काम सताई रखता है। रात को उठ जाता है। क्या हालत है कामी की? प्यारयो काम वासना जब जाग जाती है तो पास में खड़ा बंदा नहीं दिखाई देता है। ऐसी बीमारी है, चाहे मार पड़े, पर हटता नहीं है।

अब प्यारयो जो क्रोध है, यह किसी को ना आ जाये। पशु को पशु मार देता है। बन्दे को बंदा मार देता है।

◆❖◆

जो लालची होता है, वह झूठ का तूफ़ान बहुत करता है, माया बड़ी इकट्ठी करता है। पर यह साथ नहीं जाती है। गुरु नानक देव महाराज जी कहते हैं कि यह ठगी मारते हैं। "पापां वांजों कट्ठी ना हुंदी, मोयां साथ ना जाई।" पाप करते हैं, तभी इकट्ठी होती है, जब मरते हैं तो साथ जाती नहीं है।

◆❖◆

अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि प्यारयो, संत महात्मा किसी को डराते नहीं हैं, वह कहते हैं आओ, करो, देखो। खुद देखो।

◆❖◆

प्यारयो, यह स्थूल शरीर जो मिट्टी का है, इससे सूक्ष्म बहुत सोहना है। अब जो प्रेमी अंदर जाते हैं, उनको पता है अंदर कितनी खूबसूरती है। एक भगत जो हवा खा कर अपना गुजरा कर रहा था। जब अंदर गया तो उर्विशा परी ने उसे लूट लिया।

संत अजायब सिंह जी महाराज कहते थे कि जो मर्द यहाँ मिट्टी की औरतों पर कायम नहीं, वे किस तरह से अंदर कायम रहेंगे, और सही रहेंगे?

◆❖◆

हमारा मन दुनिया से जुड़ा हुआ है। गुरु जो नाम का दान देता है, वह नाम अमृत है। यह ऐसा ही है जैसे कोई जंगल में सफर करता है, जहां कोई नहीं हैं, और पांच डकैत, लुटेरे या धोखेबाज वहां आकर घेर लेते हैं। यह गुरु ही है जो हमें इनसे बचाता है। गुरु हमें पांच बुराइयों से बचाता है।

हमें अपने मन को साफ़ और पवित्र बनाना है।

मन का शीशा साफ़ करना है। एक साफ शीशे में कोई भी अपनी परछाई देख सकता है। हे मन, अपने आप को देख और जब तू साफ़ और पवित्र हो जायेगा, तो अपने को देख पायेगा। तेरा रूप प्रकाश है, और यह प्रकाश शब्द से मिलता है।

◆❖◆

उस परमात्मा से सब मिलना चाहते हैं, लेकिन काम-वासना, क्रोध, लोभ, निंदा, चुगली, ईर्ष्या की गंदगी से मन मैला हो गया है। मन काली स्याही जैसा गंदा हो गया है।

तुलसी साहब कहते हैं कि मन अंधा और बहरा है। अंधा देख नहीं सकता, और बहरा सुन नहीं सकता।

◆❖◆

हमेशा बाहर घूमने वाले मन को कैसे शांत करें?

यह केवल गुरु की कृपा से होता है। तभी होता है जब वह दया करता है।

गुरु के बिना कोई संसार-रुपी भवसागर को पार नहीं कर सकता। ना ही जल के सागर को, और ना ही अग्नि के सागर को पार कर सकता है, गुरु के बिना।

◆❖◆

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "हरदम तेरी मैं याद मनावां, तेरे बिना मुल कोडी ना पावां।"

◆❖◆

प्यारयो, सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि हर व्यक्ति की कुछ मनोकामनाएं ही पूरी होती हैं, और बाकी अधूरी रह जाती हैं। हर किसी की इच्छाएं अधूरी होती हैं। लेकिन जब अंदर जाकर गुरु के दर्शन करते हैं, तब सभी काम पूरे हो जाते हैं। सभी मनोकामनाएं पूरी हो जाती हैं।

◆❖◆

आत्मा और मन की स्थूल गांठ लगी हुई है। धीरे-धीरे इसको खोलना है, फिर आत्मा का अंदर जाकर परमात्मा से मिलना आसान हो जाता है।

भक्ति के मार्ग में आने वाली सभी बाधाएं मन की बनाई होती हैं।

भाग ३ - अनुभाग ३

वक्त का महात्मा - सतगुरु

संत-सतगुरु.. २४९
संतों की संगत और शरण २५४
परमात्मा की मौज - हुक्म.. २५६
दया मेहर – दया और मेहनत २५९
दर्शन.. २६१
माफी.. २६४
प्रसाद २६७

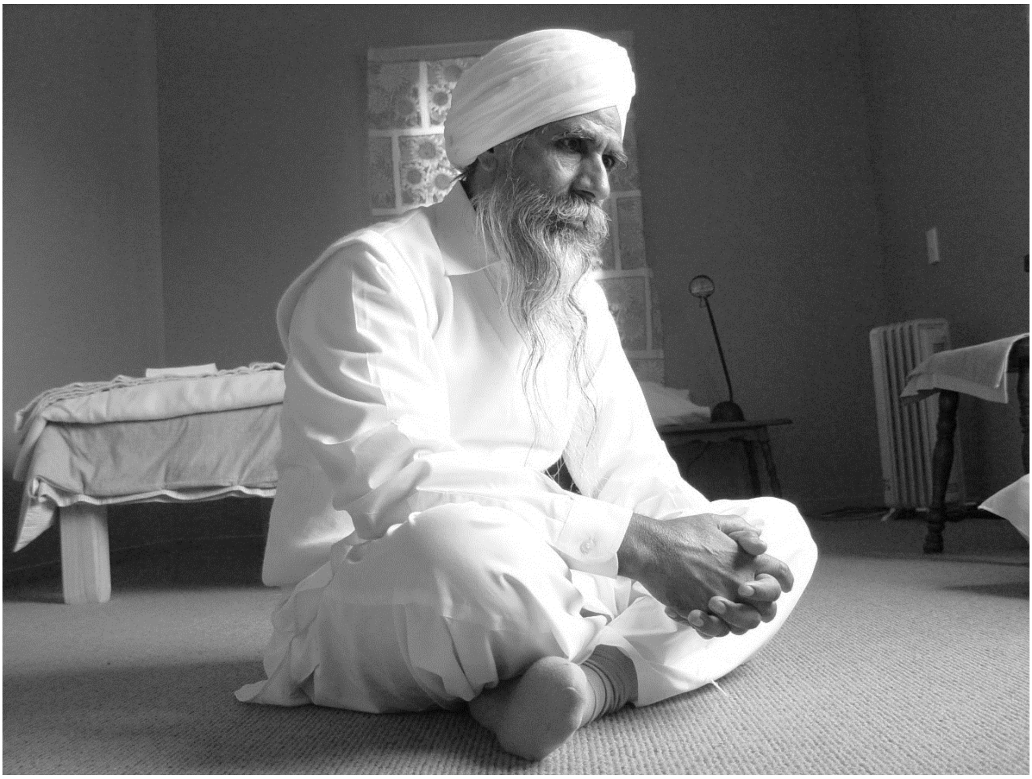

संत-सतगुरु

वही सतगुरु है जो जीव को उसके जिस्म के अंदर ही असली घर दिखा दे।

"तू समर्थ तू अंतर्यामी, मैं गुनहगार हैं नमक हरामी, बन के पारस लोहे नूं तार दे।"

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी इस दुनिया में जीवों को मुक्ति देने के लिए आए थे। आज भी जो आत्माएं दुखी हो कर प्रार्थना करती हैं, वह उनका इस दुनिया में से जाने का इंतजाम कर रहा है।

⬩❖⬩

अगर किसी को गुरु नहीं मिला या वह सत्संग में नहीं जाता, या गुरु है, लेकिन उसका कहना नहीं माना, तो फिर कोई सत्संगी कैसे बनेगा, और सफल कैसे होगा?

सत्संग में जाना चाहिए और नाम जपना चाहिए। बुरे कर्मों में से मन को हटा लेना चाहिए। गुरु से प्रेम बढ़ाना चाहिए।

यदि कोई अपने गुरु को अपने से बड़ा मानता है, तो उन्हें कोई समस्या नहीं घेरती है।

यदि कोई भजन-सिमरन में सफल होने की इच्छा रखता है तो वह गुरु के आदेशों का पालन करे।

संत-महात्मा सत्पुरुष के आदेश के तहत आते हैं।

◆❖◆

यह पहले से ही तय होता है। सभी संतों की बैठक होती है, और यह तय होता है। उन्होंने तय किया कि संत किरपाल सिंह, बाबा सावन सिंह के बाद आएंगे, और संत किरपाल सिंह जी के बाद संत अजायब सिंह जी आएंगे। संत अजायब सिंह जी ने सावन सिंह के पास जाकर नामदान की प्रार्थना की थी, पर सावन महाराज जी ने कहा कि तुम्हें नाम दान देने वाली बहुत बड़ी शक्ति है, और वह तुम्हारे ही घर आएगा। ऐसा ही हुआ जैसा सावन सिंह जी ने बताया था। संत जो भी कहते हैं उसे बदला नहीं जा सकता, वह निश्चित रूप से होता है।

किसी बात की चिंता न करें। वही होता है जो सतगुरु चाहता है।

गुरु से प्रेम करने वाला शिष्य संसार को भूल जाता है।

केवल संत ही हमें भवसागर के पार ले जाते हैं। केवल संतों के पास ही नाम का जहाज है। यदि वे नाम की मोहर लगा दें तो जीव इस संसार-रुपी भवसागर के पार चला जाता है।

◆❖◆

सतगुरु मैं तुम्हारा बेटा हूं, तुम मेरे पिता हो। एक पिता बेटे के सम्मान की रक्षा करता है, भले ही बेटा बुरा हो, सतगुरु उसका सम्मान बचाता है।

तुझ से ही मेरे सब रिश्ते हैं, मेरा लेना देना तेरे संग ही है।

गुरबाणी कहती है, "तू मेरा पिता, तू है मेरा माता, तू मेरा बंधप, तू मेरा भ्राता"।

यदि कोई अपने सतगुरु को अपने से ऊँचा समझता है तो उसे सतगुरु पर भरोसा बनेगा। भक्ति का मार्ग भरोसे पर टिका है।

◆❖◆

कबीर साहब कहते हैं, "गुरु सामान नहीं दाता जग में, गुरु समान नहीं दाता। काम क्रोध कैद कर राखे, लोभ को लीनो नाथा।"

◆❖◆

जो कोई भी उस सर्वव्यापी परमात्मा को याद करता है, उसके सभी कष्ट समाप्त हो जाते हैं। हम देखते हैं कि इस जग में जीव काफी दुखी हैं। उन्होंने ना तो पिछले जन्मों में परमात्मा को याद किया, ना अब कर रहे हैं। उन्होंने उस दयालु को याद नहीं किया।

◆❖◆

वह दया करने वाला कौन था? परमात्मा अजायब सिंह।

जन्म-मरण की इस दुनिया में आकर उन्होंने एक मानस चोला धारा। उन्होंने नाम दान दिया और अपने प्यारयों की संभाल की। हम उसकी बड़याई करते हैं। यह काम वही करवा सकता था।

गुरु मिलने के बाद सत्संग में आकर, नामदान लेने और भजन सिमरन करने से गुरु के साथ प्यार बढ़ता है। इसके बाद ही उस परमात्मा के दर्शन होते हैं।

"जे गुर झिड़के, तां मीठा लागे।" क्योंकि गुरु ने ही मेरा जीवन अच्छा बनाना है। गुरु से जो कुछ भी मांगो वह जरूर देता है।

◆❖◆

मैंने तेरी दया से ही तुम्हें पहचाना। कोई भी जीव आपको पहचानने की ताकत नहीं रखता है। यह सिर्फ उस परमात्मा चाहने और कृपा से होता है।

◆❖◆

सतगुरु प्रेम है।

अगर हमारे अंदर केवल प्यार है, तभी हम अंदर सतगुरु से मिल सकते हैं।

◆❖◆

सिमरन करने से हमारा जीवन अच्छा हो जाता है।

गुरु के बिना किसी को मुक्ति नहीं मिलती।

गुरु के बिना सेवक का इस दुनिया में कोई मूल्य नहीं है।

गुरु के बिना हमारा कोई नहीं है। गुरु के बिना कोई आसरा नहीं है।

सत्संग, नाम और गुरु का सबसे अधिक महत्व है।

◆❖◆

कबीर साहब कहते हैं कि तीनों लोकों में गुरु से बड़ा कोई नहीं है। भगवान वही करता है जो सतगुरु चाहता है।

कबीर साहब कहते हैं कि जिस तरह एक आग की छोटी चिंगारी सूखे घास के ढेर को

पलों में ही भस्म कर देती है, वैसे ही उस परमात्मा की रौशनी जब अंदर जग जाती है, तो अनगिनत पापों का नाश कर देती है।

◆❖◆

यह ऐसा ही है जैसे कोई जंगल में सफर करता है, जहां कोई नहीं हैं, और पांच डकैत, लुटेरे या धोखेबाज वहां आकर घेर लेते हैं। यह गुरु ही है जो हमें इनसे बचाता है। गुरु हमें पांच बुराइयों से बचाता है।

◆❖◆

जब वह परमात्मा अपनी आत्माओं को दुखी देखता है, तो उनको ले जाने के लिए इस मंडल पर आता है। वह या उस आत्मा को अपने पास बुला लेता है। नहीं तो वहां जाता है जहां वे हैं। वह उन्हें एक साथ बैठा कर भजन सिमरन करवाता है।

◆❖◆

मेरे मालिक ने मुझ पर दया की और मेरे सारे बंधन तोड़ दिए। मेरे सतगुरु ने मुझ पर दया की और काल की बेड़ियों को तोड़ दिया। काल ने मुझे बेड़ियों में जकड़ा हुआ था।

◆❖◆

कोई मन को शांत कैसे करता है?

यह सिर्फ गुरु की कृपा से होता है। उसकी कृपा से ही मन शांत हो सकता है। गुरु के बिना कोई भी इस भवसागर को पार नहीं कर सकता है, ना पानी का और ना ही आग का।

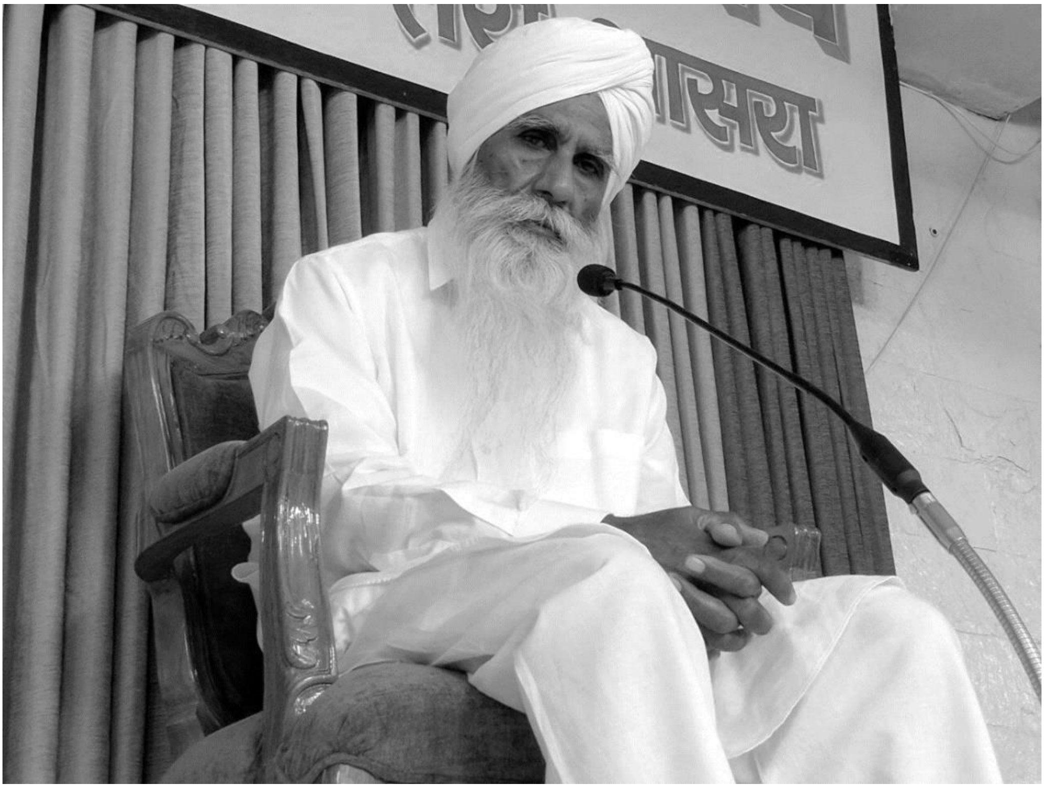

संतों की संगत और शरण

"एक घड़ी, आधी घड़ी, आधी तो भी आध, संगत साध की काटे कोट अपराध"।

हे मन, संतों की संगत कर ले ताकि तू भी नाम के रंग में रंगा जाए। मुक्ति नाम, शब्द और गुरु की मेहर से मिलती है।

❖

"जो जन गुरु की शरणी लागे, भाग उन्हीं के जागे।"

❖

पूरे गुरु की शरण में जाओ। अपनी आशाएं और उम्मीदें केवल उस पर रखो।

मैं पापी हूँ। मेरे में सिर्फ अवगुण हैं। मैं तुम्हारी शरण में आया हूँ, कृपया मेरी रक्षा करो, कृपया मेरे सम्मान की रक्षा करो।

◆❖◆

संतों का कुछ पलों का साथ ढेर सारे पापों को जला देता है।

◆❖◆

एक अमीर आदमी जो पूरे गुरु के सत्संग में नहीं आता, और नाम का सिमरन नहीं करता, तो उसे अगले जीवन में नीचे की जून में जन्म मिलता है, और गंदगी खाने के लिए मिलती है।

◆❖◆

जो कोई भी पूरे सतगुरु के सत्संग में आता है, वह कुछ ना कुछ वहां से पाकर जाता है।

वह परमात्मा एक सच्ची-सुच्ची आत्मा की पुकार सुनता है, और उस आत्मा को दर्शन देता है।

परमात्मा की मौज - हुक्म

उस परमात्मा के साथ हमारा मिलाप केवल उनके ही हुक्म से हो सकता है।

मन से सिमरन करवाना आसान नहीं है। यह उस गुरु की मौज है, जिससे उसने रूहानियत का काम लेना है।

❖

उसके आदेश से ही अच्छा या बुरा होता है। उसके हुक्म में ही कोई छोटा या बड़ा है। जो कुछ भी होता है, वह उसके हुक्म में होता है। सब कुछ जब उसके ही आदेश से होता है, तो अहंकार की गुंजाइश कहां है?

"जे सुख दें तां तुझे अराधी, दुःख भी तुझे ध्याईं, जे भुख दें तां इत ही राजा, दुःख में सुख मनाई।"

अच्छे समय में एहसास रहे कि सब कुछ उसका दिया हुआ है, और उसका शुक्राना करें। यदि समय कठिन है, और हम उससे प्रार्थना करते हैं, तो वह निश्चित रूप से हमारी

बात सुनता है। दुख या कठिनाई के दौरान हम सोचते हैं कि ऐसा हमारे साथ क्यों हो रहा है। हम यह नहीं समझते कि यह हमारा अपना मन है जो हमारे सभी दुखों का कारण है।

हे सतगुरु, सिर्फ आपकी दया से ही मेरे सारे काम हो सकते हैं। गुरबाणी कहती है, कोई नाम तभी धया सकता है जब उसकी दया हो, और उसको मंजूर हो। उसकी कृपा के बिना, कोई भी नाम धया नहीं सकता, चाहे कितना ही जोर या मेहनत लगा लें।

◆❖◆

यह सब उस परमात्मा के हुक्म में है कि किससे क्या काम लेना है। उस परमात्मा के हुक्म से ही कोई इस संसार में आ सकता है। अगर परमात्मा की मौज है, तो वह किसी पर भी दया मेहर कर सकते हैं। यह सब होता केवल उस परमात्मा की मर्जी से है।

दुनियावी यश और सम्मान किसी जीव को यदि मिलते हैं, तो सिर्फ उस परमात्मा के हुक्म से।

◆❖◆

एक बार जब हमें नामदान मिल जाता है, तो जो भी कुछ हमारे साथ होता है, वह हमारे गुरु की मर्जी से होता है, और उसी में हमारी भलाई है।

"तेरी मर्जी अग्गे साडा जोर नहीं कोई, तैथों वद के साडा साईयाँ होर नहीं कोई।

पर तैनूं नहीं भुलना, हर दुःख हंस के सह लैणा।

तेरी मर्जी तों बिना कुझ वी हो नहीं सकदा, हसना ते गल दूर दी कोई रो नहीं सकदा। तेरा भाणा मीठा करके, मनदे ही रहना।

तूं चाहवें तां पल विच राजयों रंक बना देवें, तूं चाहवें तां कोड्डी दा मुल लखां पा देवें।

नाम तेरा तां मेरे लई, उमरां भरदा गहणा।"

जो कुछ भी होता है, वह उस मालिक के कहे अनुसार होता है। और उसको मान लेने में ही हमारी भलाई है।

हम गुरु को कहते हैं कि क्या होना चाहिए है। हम चाहते हैं कि वह हमारे कहने पर चले। नहीं प्यारयो, हमें वह करना चाहिए जो गुरु कहता है, और वह नहीं जो हमारा मन कहता है।

◆❖◆

"दाता तेरियां तूं जाने, तेरा पार किसे ना पाया।

आप बन्दे दा तूं रूप बना के, आप विच समाया।

दाता तेरियां तूं जाने, तेरा पार किसे ना पाया।

मौज तेरी जद हो जावे, तां कल्लर बीज ऊगा देवें।

भट्टी दे विच भुज्जे दाणे, हरे बुटयां विच बदला देवें।

हर शह दे विच आप वसे तूं, कण-कण विच समाया।

दाता तेरियां तूं जाने, तेरा पार किसे ना पाया।"

दया मेहर - दया और मेहनत

सतगुरु दया मेहर तभी करता है जब वह परमात्मा परमेश्वर कृपा करता है।

जब वह परमात्मा यह देखता है कि कोई उसे मिलने के लिए मेहनत और त्याग कर रहा है, तब वह उस आत्मा पर दया करता है। जब वह परमात्मा किसी जीव से रूहानी काम लेना चाहता है तो वह उसके हृदय को पहले पवित्र बनाता है।

◆❖◆

उस परमात्मा की दया से ही जीव उसे पहचान सकते हैं। सेवक इसके बारे में कुछ नहीं कर सकता। सेवक तो केवल प्रार्थना ही कर सकता है, लेकिन गुरु को कुछ भी करने के लिए मजबूर नहीं कर सकता। सेवक के हाथ में कुछ भी नहीं है। यह सतगुरु ही है जो फैसला करता है कि किसको क्या देना है।

◆❖◆

यदि वह परमेश्वर दया करे, तभी सतगुरु कृपा करता है। यदि सर्वशक्तिमान परमेश्वर कृपा नहीं करे तो हम उस गुरु की दया मेहर को किसी भी तरीके से नहीं पा सकते हैं।

जो गुरु को सबसे ऊंचा मानता है, वह उसके वचनों का पालन जरूर करेगा। गुरु के आदेशों का पालन जरूर करेगा। जब एक शिष्य गुरु के आदेशों का पालन करता है, तो वह गुरु मर्यादा में रहता है। गुरबाणी कहती है कि हम अच्छे और बुरे दोनों समय में गुरु को याद रखें, और उसकी महिमा गायें। लेकिन हम अच्छे समय में अपनी प्रशंसा करते हैं और बुरे समय में हम उसमें दोष निकालते हैं।

◆❖◆

"तेरी महिमा जाण ना सकिये, नूर इलाही पछाण ना सकिये, तीर दया दा कलेजे विच मार दे।"

ओ सतगुरु, हम सिमरन सिर्फ आपकी दया से ही कर सकते हैं। यह भवसागर सिर्फ आपकी दया से ही पार कर सकते हैं। आपके दर्शन सिर्फ आप की दया से ही कर सकते हैं।

"तेरी दया से तुझे पछाणा।"

◆❖◆

"अमृत वेले जो सेवक याद गुरु नूं करदा, दया मेहर नाल खाली झोली, ओहदी सतगुरु संगतो भरदा।"

◆❖◆

"खैर दया दी झोली पादो, नूरी मुखड़ा आन विखादो, अपने बचयां ते मेहरां कर दे मेहरां दे साईयाँ।"

◆❖◆

"किस को दिल का हाल सुनाऊं, छोड़ तेरा दर कहां मैं जाऊं, दया मेहर से खाली झोली सतगुरु आप भरो।"

दर्शन

जो उस पूरे सतगुरु के दर्शन करते हैं, उसके सारे पाप धुल जाते हैं।

जो उस पूरे सतगुरु के दर्शन करते हैं उसके सारे पाप धुल जाते हैं। जो प्रकाश की किरणें उसके माथे से निकलती हैं वह हमारे सभी पापों को धो देती हैं।

◆❖◆

"गुरु दर्शन को लोचे नैना, गुरु दर्शन को लोचे नैना।

दर्श बिना ना आवे चैना, दर्श बिना ना आए चैना।

गुरु दर्शन को लोचे नैना, गुरु दर्शन को लोचे नैना।

गुरु दर्शन वडभागी पावे, मैला मन निर्मल हो जावे।"

◆❖◆

"उसनूं वेख वेख ना रज्जां, दीद ओहदी मैनूं लखां हज्जां।

मैं नीवां होके करना ए, सत्कार मुरशद दा।"

◆❖◆

"की की सिफत करां सोहणे दी, ओदे वरगा होर ना कोई।

दर्शन करके संगतों नी, रूह गद-गद, गद-गद होई।

बड़ा सोहणा बड़ा मनमोहणा, सईओं नी सोहणा रूप रब्ब दा।

गुरु अजायब जेहा नहीं कोई होंणा, सईओं नी सोहणा रूप रब्ब दा।

नूरी मुखड़ा चमकां मारे, डुल-डुल पैंदी लाली।

धरती उत्ते चलके आया, कुल दुनिया दा वाली।

मसां मिलया ऐ, मुड़ नी थिओणा, सईओं नी सोहणा रूप रब्ब दा।

बड़ा सोहणा बड़ा मनमोहणा, सईओं नी सोहणा रूप रब्ब दा।

मत्थे दे विच जोत इलाही, जग-मग जग-मग जगदी।

ओदियाँ तां बस, ओही जाने, सिफत करां की रब्ब दी।

नी सईओं सिफत करां की रब्ब दी।

जग भुल जावे, पर गुरु नहीं भुलोणा, सईओं नी सोहणा रूप रब्ब दा।"

◆❖◆

"तेरा ऐ बिछोड़ा मैथों जांदा नइयों झलाया, हंजुआं दा हड़ मैथों जांदा नहीयों ठलया।

मर जावांगी जे अजे वी ना आया, एहो गल कहन रात नूं।

तेरे पिछे सोहण्या मैं हो गई फकीर वे, हूँण ते जगा दे आके सुत्ती तकदीर वे।

नित जाग जाग तकदी हाँ रावां, ते उठ उठ बैण रात नूं ।

मसां-मसां तेरे नाल होया साईयाँ मेल वे, ख़त्म ना होजे किते प्यार वाला खेल वे।

हाथ जोड़ तैनूं वास्ते मैं पावां, ना आवे नित चैन रात नूं।

चंगियाँ तू मेरे नाल लाके निभाईयां वे, तेरे बिना होई साईयां वांग शुदाइयाँ वे।

तेरे औण दी उडीकां च साईयां, खुले रखां नैन रात नूं।"

माफी

वह ईश्वर हमें माफी देने और हमारे अपने असली घर ले जाने के लिए यहां आता है।

गुरु दयाल होकर जब किसी भी आत्मा को नाम दान देता है, तो वह उसके पापों के खाते के कागज को फाड़ देता है। वह सभी पापों को माफ करने के बाद ही आत्माओं को यहां से ले जा सकता है।

◆❖◆

एक प्रेमी यही समझता है कि मेरा सतगुरु दयालु है, और वह मुझे माफ कर देगा। वह मेरे पापों और गलतियों को माफ कर मुझे इस भवसागर से पार ले जाएगा।

मैं पापी हूं, मुझे कृपया करके माफ कर दो। मेरे पास कोई अच्छा गुण नहीं हैं, आप मुझे बख्श लो।

हमने पाप इकट्ठे किये हैं, और अहंकार जैसी बीमारी हमारे मन की गहराइयों तक भरी हुई है। जो कोई उस परमात्मा परमेश्वर को भूलता है, तो फिर वह पापों को इकट्ठा करता है। मन सोचता है कि मैं होशियार हूं, बुद्धिमान हूं, मैं सक्षम हूं, शिक्षित हूं, कड़ी मेहनत कर रहा हूं, मैं काम कर सकता हूं, और यह सब दुनिया की चीजें मेरे करके हैं। इस तरह से हर कोई उस परमात्मा को भूल जाता है।

◆❖◆

संत माफ़ी देने के लिए आते हैं, और माफ़ी ही देते हैं। संत आत्माओं को मुक्ति दिलाने के लिए आते हैं। जब गुरु नामदान देता है, तो वह सेवक के पापों का लेखा-जोखा अपने हाथ में ले लेता है।

◆❖◆

महाराज किरपाल सिंह जी ने माफ़ी देने पर जोर दिया। संत कहते हैं कि माफी मांगें और दूसरों को भी माफ करें।

गुरबाणी कहती है कि अगर कोई हम से माफी मांगता है और हम उन्हें माफ नहीं करते हैं, तो फिर वह परमात्मा हमें कैसे माफ करेगा?

◆❖◆

मन ने अनगिनत पाप किए हैं। मन अनगिनत गलतियां करता है।

हम माफी नहीं मांगते तो वह हमें कैसे माफ कर सकता है?

यदि कोई पश्चाताप करता है तो उसे कुछ लाभ मिलता है।

◆❖◆

सर्वशक्तिमान परमेश्वर माफी का भण्डार है। हम उससे कितनी माफ़ी मांगते हैं?

काल के देश में कानून है, जो अपराध किया है, उसकी सजा है। भगवान के देश में माफ़ी है।

माफ़ी देकर ही सतगुरु यहां से जीव को ले जा सकता है। जब तक माफ़ी नहीं मिलती है, तब तक नहीं ले जा सकता है। माफ वह नाम करने वाला है, भगवान करने वाला है, जो इंसान के अंदर है।

◆❖◆

"सतगुरु माफ़ करीं, मैं भूल्या जीव तुम्हारा"

जब परमात्मा हमें माफ कर देता है तो हमारे पापों की गठड़ी खत्म हो जाती है। फिर हमें वह परमात्मा हर चीज में नजर आता है। चाहे इंसान है, पशु-पंक्षी हैं, या पेड़ पौधे हैं। जब तक पाप खत्म नहीं होते हैं, तब तक हमें पता नहीं लगता है कि कौन अच्छा है और कौन खराब।

◆❖◆

"बेनती कबूल साडी कर लयो गुरूजी, बच्चे अनजाण माफ़ कर दो गुरु जी"

◆❖◆

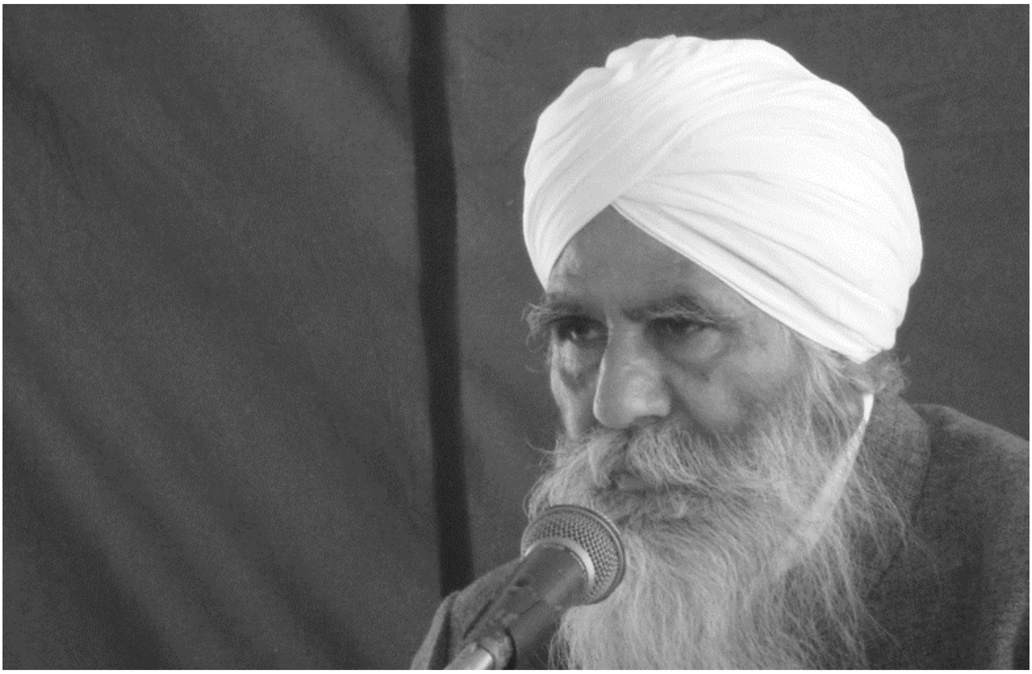

प्रसाद

अपनी दया भरी नजर से गुरु विष को अमृत में बदल देता है।

एक बार बाबा सावन सिंह जी सत्संग दे रहे थे और सत्संग के अंत में प्रसाद बांटा गया। एक व्यक्ति उठा और उनसे पूछा कि क्या यह प्रसाद जूठा है या सुच्चा? बाबा सावन सिंह जी ने जवाब दिया कि यह दोनों ही हो सकते हैं - जूठा भी और सुच्चा भी। तब उस आदमी ने कहा कि दोनों कैसे संभव हो सकते हैं? महाराज जी ने जवाब दिया कि हां, दोनों एक ही समय में हो सकते हैं। जब हम उस सर्वशक्तिमान परमात्मा से प्रार्थना करते हैं, "हे सतगुरु आपका प्रसाद तैयार है, और आपका शीतल प्रसाद आपके भोग के लिए, और संगत में बांटने लायक हो। यदि उस परमात्मा ने उसका भोग लगाया, तो वह हमारे लिए अमृत बन जाता है। और इस तरह से वह प्रसाद बन जाता है। अगर उस परमात्मा ने इसे नहीं खाया है, तो इस प्रसाद का हमारे लिए कोई मूल्य नहीं है।

प्रसाद कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे मनुष्य ने खा कर जूठा किया हो। यह कुछ ऐसा है, जिसे शब्द-रूप सतगुरु को भेंट किया गया हो। इसे किसी भी इंसान ने जूठा नहीं किया होता है।

अपनी दया भरी नजर से गुरु विष को अमृत में बदल देता है।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि जो दिया जाता है वह परशाद के रूप में दिया जाता है, और किसी का भी वह जूठा नहीं किया होता। संत अपने खाये खाने में से किसी को नहीं खाने देते। यदि वे किसी को ऐसा करने देते हैं तो उनकी कमायी हुई नाम की दौलत चली जाती है। जो संत दिन-रात बड़ी मेहनत से नाम की कमाई करता है, वह उस कमाई हुई नाम की दौलत को बर्बाद नहीं करना चाहेगा।

भाग ३ - अनुभाग ४

सिक्खी

सिक्ख और सिक्खी.. २७१

तड़फ.. २७६

भक्ति.. २७८

प्रार्थना.. २८२

आज्ञा पालन और आत्म समर्पण.. २८५

आत्म सुधार.. २८८

भरोसा और विश्वास.. २९०

बलिदान - कुर्बानी... २९१

संभाल.. २९५

सेवा २९७

गुरुमुख-भक्त... २९९

सिख और सिखी

भजन सिमरन करना सिख का कर्तव्य है। भजन सिमरन ही भक्ति है।

जब कोई गुरु का प्यारा बेटा बन जाता है तो वह गुरु के शब्दों से प्यार करने लगता है। भक्ति आस्था पर निर्भर करती है।

◆❖◆

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "सिखी दा निभाना औखा है।"

एक सिख सीख रहा है। एक सेवक गुरु का सेवादार है। सिख एक सत्संगी है। सेवक अपने गुरु का बेटा होता है।

वह परमात्मा कुल-मालिक और करण-कारण है। वह परमात्मा शब्द का रूप है।

उन्होंने सारी सृष्टि की रचना की है।

"मैं मेरी हटोणी पैंदी ऐ, भेटां सर दी चढ़ौणी पैंदी ऐ।"

गुरबाणी कहती हैं कि हे सिख, अपने अंदर जो अनहद बाणी हो रही है, उसको सुन।

❖

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं:

"ओ अकल के अंधे देख जरा, तैनू सतगुरु दितियां अखियां ने।

ऐ पै गईयां होर हिसाबां नूं, पई वेखण रोज किताबां नूं।"

गुरु नानक देव जी भी कहते हैं, "पढ़हि जेते बरस-बरस, पढ़हि जेते मास, पढ़िए जेती आरजा, पढ़हि जेते सास, नानक लेखै इक गल, होरु हौमे झखणा झाख"।

इतना करने के बाद भी अगर अंदर का रास्ता नहीं खुला तो यह जीवन बेकार है। इतनी सारी किताबें पढ़ने से सिर्फ अहंकार बढ़ता है।

गुरबाणी कहती है कि इंसान के भीतर एक निरंतर बाणी चल रही है, और इसको सुनने का भेद सिर्फ एक पूरा सतगुरु ही दे सकता है।

जो गुरु की सेवा करता है, वह शब्द-नाम की दौलत कमाता है।

हम गुरु के प्यारे बेटे बन गए हैं। हम सतगुरु के लाल बन गए हैं। हम शब्द-नाम की दौलत कमाएंगे। आज से ही हम शब्द-नाम की कमाई करना शुरू कर देंगे।

❖

हम सुरत-शब्द योग का अभ्यास करेंगे। हम अंदर जाएंगे और उस परिपूर्ण परमेश्वर से मिलेंगे।

यदि आप प्रभु से मिलना चाहते हैं तो दुनियावी सभी चीजों को छोड़ दें। सुरत-शब्द योग का अभ्यास करें। शब्द-नाम का अभ्यास करें और अंदर जाएं, इस तरह आप उससे मिल सकते हैं।

❖

सिमरन में अपना मन लगाएं। हार स्वीकार ना करें। बार-बार कोशिश करते रहें।

संत अजायब सिंह जी महाराज कहते थे, "मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।"

सतगुरु हमेशा सिमरन करने वालों के साथ होता है। और वह हमारी मदद करेगा।

सिमरन करते रहें, और खुद को हारा हुआ महसूस न होने दें।

◆❖◆

जब प्रेमियों को जीवन में कोई कठिनाई होती है तो वे गुरु को चिट्ठी पर चिट्टी लिखना शुरू कर देते हैं। क्या यह भक्ति है?

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी ने कहा है कि जीवन में किसी प्रकार की समस्याएं या परेशानियां आने पर कभी किसी भक्त या संत ने गुरु को पत्र नहीं भेजा है।

जिसने नामदान दिया है, वह इस बात से अनजान नहीं है कि तुम किन हालातों से

गुजर रहे हो।

कबीर साहब जी कहते हैं कि वह ईश्वर ऊंची जगह पर बैठकर सब के कर्मों को देख रहा है। वह देखता है कि कोई क्या कर रहा है। वह कर्मों के अनुसार इनाम दे देता है।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं कि एक बार हम जब सत्संगी और गुरु के शिष्य बन जाते हैं, तब जो गुरु कहता है, सिख वही करता है। वह गुरु के वचनों पर अपना जीवन ढालता है और गुरुमुख बन जाता है।

जीवन के हर काम में सिख, गुरु की शिक्षा को पहला नंबर देता है। शिष्य का जीवन बनाने वाला सिर्फ गुरु है।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, जिस तरह एक गुरु को उस परमात्मा पर पूरा विश्वास है, और खुशी से उसकी इच्छा में जो कुछ भी आता है, उसे स्वीकार करता है, इसी तरह एक शिष्य को भी गुरु पर पूरा विश्वास होना चाहिए। गुरु की इच्छा में

शिष्य को रहना चाहिए और समझना चाहिए, कि जो मेरा मालिक करेगा वही मेरे लिए अच्छा है। वह शब्द-रूप परमात्मा गुरु रूप में सब कुछ कर रहा है ।

◆❖◆

एक बार जब कोई गुरु का सिख बन जाता है तो वह ईमानदारी से कड़ी मेहनत के साथ अपनी रोजी-रोटी कमाता है। वह अपने कमाए हुए धन से अपना गुजारा करता है। गुरु नानक देव जी कहते हैं कि जो दूसरों के धन की आशा करता है, वह पाप कर रहा है।

◆❖◆

संतों का मार्ग अपने आप को सुधारने का मार्ग है।

◆❖◆

हम सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी की भक्ति करते हैं, इसीलिए हमें किसी का दिल नहीं दुखाना चाहिए। हमें किसी को भी परेशान नहीं करना चाहिए। सतगुरु कहते हैं कि एक सेवक के दिल में गुरु रहता है और उसे अपने गुरु पर पूरा विश्वास है। वे इस जीवन को अपने गुरु के प्यार में गुजार देते हैं।

◆❖◆

एक बार जो अपने सतगुरु के प्यार में अपना जीवन गुजार देता है, तो उसका जन्म-मरण का चक्र खत्म हो जाता है। जन्म-मरण के इस चक्र के कारण हमें सख्त कष्ट

उठाने पड़ते हैं।

जब किसी पूरे गुरु से मिलाप होता है तो यह मुश्किल खत्म हो जाती है।

गुरु से प्यार ही शब्द से प्यार है। जब किसी के अंदर प्यार होता है तो वह कोई पाप या बुरे कर्म नहीं कर सकता। वह किसी के साथ गलत नहीं कर सकता।

हे सतगुरु अजायब जी तुम दाता हो, और हम भिखारी हैं।

◆❖◆

एक गुरुमुख गुरु मर्यादा में रहता है। जो अपने गुरु के हुक्म के अनुसार गुरु-मर्यादा में रहता है, उसको कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकता है। जो गुरु-मर्यादा का पालन नहीं करता है, तो फिर वह गुरु से मदद की उम्मीद कैसे कर सकते हैं?

नाम लेवा और मन-मुख दोनों को ही किए कर्मों का भुगतान करना पड़ता है।

यदि कोई नाम लेवा है और गुरु मर्यादा में रहता है, तो गुरु उसके लिए जिम्मेवार है।

हमें अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करना चाहिए जो सतगुरु ने हमें दी हैं।

◆❖◆

हम सत्संगी, गुरु के प्यारे बच्चे, गुरु के लाल, खरे सोने बन गए हैं।

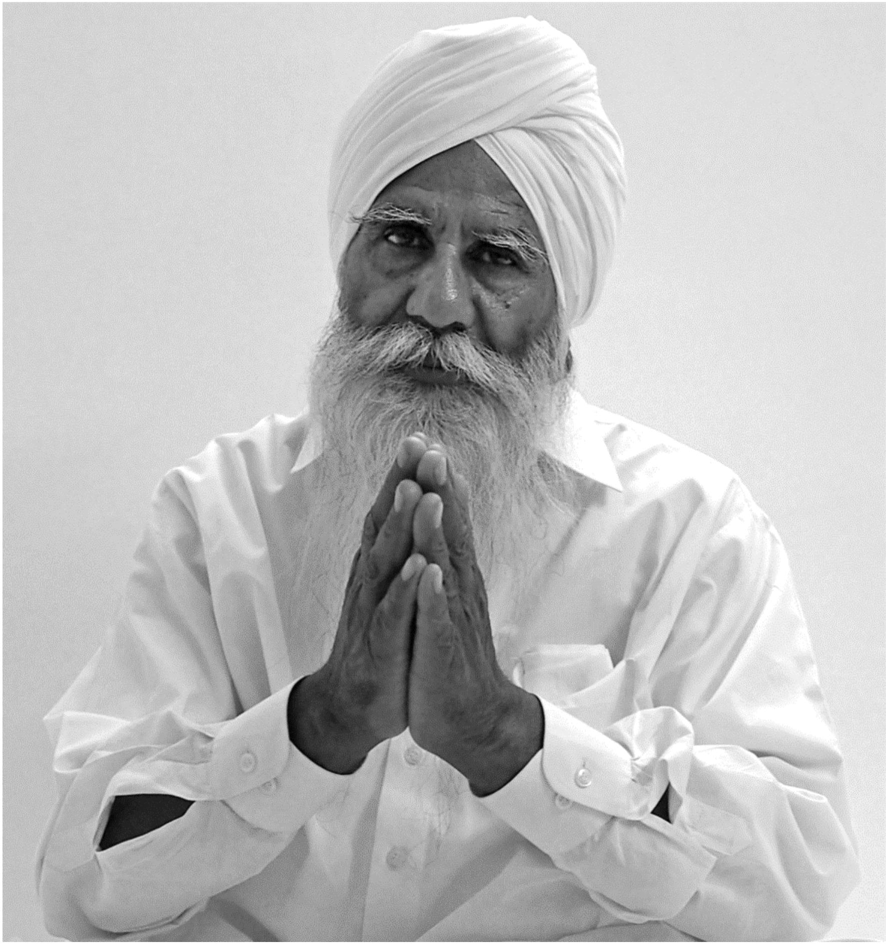

तड़फ

"दिल च तड़फ सदा रखी तेरे प्यार दी, हर वेले रूह रवे अवाजां तैनूं मार दी। जदों याद करां आण कोल तूं खड़ीं।"

हम दुनिया और दुनियावी कामों में व्यस्त हैं। हमेशा यहां सामान उस तरह से बनाने की कोशिश करते हैं जिस तरीके से हम चाहते हैं। क्या हम कभी इस तरह उस परमात्मा को पाने के लिए रोए हैं?

तड़फ सच्ची है तो सतगुरु जरूर आता है।

यदि कोई सतगुरु के बताये तरीके के अनुसार और उसकी दया से कड़ा भजन अभ्यास करता है, तो सतगुरु जरूर आएगा।

अगर किसी के दिल में सच्चा प्यार है तो सतगुरु उसे अंदर जरूर मिलते हैं।

◆❖◆

सारी दुनिया एक तरफ और सतगुरु दूसरी तरफ, अगर हम ऐसे प्यार करते हैं और दुनिया से ज़्यादा सतगुरु याद है, तो फिर अंदर सतगुरु से मिलने में कोई मुश्किल नहीं आती, और यह आसान हो जाता है।

◆❖◆

"चेते करके गुरु जी तैनूं रोवां, हंजुआं दा हड़ वगदा।

बैठा हंजुआं दे हार परोवां, कुज्ज वी नहीं चंगा लगदा।

तिल-तिल करके मैं रोज जावां मुकदा, सुकयां रुखां वांगु जावां नित सुकदा।

भला तैथों की मैं दातया लुकावां, तूं भेदी मेरी रग-रग दा।

तेरियां जुदाईआं मैथों झलियां नहीं जांदियां, कालियां ए रातां, सपां वांगूं मैनूं दातया खांदियां।

गीले गोहयां दी, अग्ग वांगु दातया, हर दम रहन्दा धुकदा।

सतगुरु अजायब जी, मैं तेरा ही मुरीद हां।

साधु राम लैंदा, रब्ब तो वी पहलां तेरा नाम।

तेरी याद दा, चिराग साईयां मेरया, हर वेले रहन्दा जगदा।"

◆❖◆

"तेरे बिना कुछ मैनूं चंगा नइयों लगदा, धुन अंदर ही दे सुना ऐ अरजां ने मेरियां।"

भक्ति

हे सतगुरु मुझे भक्तिदान दें ताकि मैं संतों की भक्ति कर सकूँ।

भक्ति क्या है? उस परमात्मा को याद करना है, सिमरन करना है।

जब हम उसको याद करते हैं तो क्या होता है? जो चीज हम याद करते हैं वह हमारे मन में बस जाती है। इस समय दुनिया और इस दुनिया की चीजें हमारे मन में भरी हुई हैं। हमें संसार के सिमरन से मन हटाना है, ताकि हमारे गुरु की याद मन में बैठ सके। उसकी यादें हमारे साथ हमेशा बनी रहें।

उसकी दया से अब हमारे पास गुरु, नाम, और सत्संग हैं। अब यह हमारा फर्ज़ है कि हम मन को उस सतगुरु से जोड़ें और उनके बनें।

दुनियावी काम करते वक्त भी हमें उन्हें याद करना चाहिए, और सिमरन करना चाहिए। अभी हमने अपने सिमरन को पकाया नहीं है। सिमरन हमारे भीतर हर समय नहीं चल रहा है, जैसा कि होना चाहिए।

कमी इस वजह से है कि हमारा मन, जैसी संगत है, उस संगत के रंग में रंगा रहता है। हमारा मन ऐसी संगत में रह रहा है जो वासना, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार में लिपटे हुए हैं। इनमें से एक ना एक हम पर हमला करता रहता है। हमें उस संगत को छोड़ना होगा।

अगर हम अपने सतगुरु को याद करेंगे और अगर हम सिमरन करेंगे, तो हम इन पांच बुराइयों से दूर हो जाएंगे। हमारा मन फिर सिमरन कर सकेगा, और हम अपने घर पहुँच कर सभी सुख प्राप्त कर सकेंगे।

अच्छी संगत करने पर सतगुरु हमें नाम देता है।

"कर्ता करे न कर सके, गुरु करे सो होई।"

तीनों मंडलों में सतगुरु से बड़ा कोई नहीं है। यदि हम अपने सतगुरु का दिया हुआ नाम ध्याते हैं तो हम तीनों मंडलों को पार करने में कामयाब हो जाते हैं।

इस समय हम स्थूल शरीर में हैं। यह छोड़ कर हमें सूक्ष्म व कारण में जाना होगा। उन्हें भी हमें छोड़ना होगा।

मन अभी भी एक जगह पर टिक कर नहीं रहता है। यह अलग-अलग जगहों में घूमता है। मन की दशा बदलती रहती है। कभी अहंकारी, कभी कठोर, कभी नरम, और कभी अच्छा बन जाता है। यह अलग-अलग समय पर अलग-अलग है। कभी मन भक्त होता है, तो कभी राजा।

कबीर साहब कहते हैं, "भक्ति दान मुझे दीजिये, करूँ संतन की सेव, सब सुखन का सुख नाम है, हम पर दया कीजे"।

◆❖◆

यदि हमें गुरु की भक्ति करनी है, यदि हमें गुरु का सिमरन करना है, तो हमें नाम की कमाई सच्चे मन से करनी चाहिए।

किरपाल सिंह जी महाराज कहते थे कि प्रेम से किए गए भजन सिमरन का मतलब है कि हम शरीर के किसी भी अंग को ना हिलाएं। हमें अपना पूरा ध्यान आंखों से थोड़ा ऊपर, माथे के बीच, में लगाना करना चाहिए।

◆❖◆

अगर हम चाहते हैं गुरु की कृपा से हमें कोई अनुभव हो, तो सिमरन करते रहना होगा। सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं कि एक गुरुमुख अपने मन को समझाता है। वह कहते हैं, "तैनूं वारो वारी आखे, मना ओए वेला बंदगी दा, ओए वेला बंदगी दा।"

भले ही कोई पांचों इन्द्रियों को भीतर से काफी हद तक दबा ले, लेकिन फिर भी कुछ चिंगारियां रह जाती हैं। और यहां तक कि अगर कोई बहुत हद तक मन और इंद्रियों से अलग करने में कामयाब रहा है, लेकिन फिर भी कुछ कड़ी जुड़ी रह जाती है, और इस जगह पहुंच कर भी वापस गिर सकता है।

प्यारयो, स्वामी जी महाराज कहते हैं, "कर भक्ति"।

◆❖◆

अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "इक ज्योत निराली आयी, दुखियां दा बने सहाई, दर्द मिटावण नूं, जी नाम जपावण नूं"।

जो प्रेमी प्यार से भजन सिमरन करते हैं, और विश्वास के साथ भजन सिमरन करते हैं, उन्हें अंदर गुरु के दर्शन होते हैं।

यह अनंत काल से चला आ रहा है।

अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "सानूं नूरी दर्श दिखा दाता, साडी अख दा परदा लाह दाता"। जिसका अंदर का पर्दा खुल जाता है, वह उसी तरह अंदर गुरु से बातचीत करता है, जैसे हम दुनिया में बाहर किसी से बात करते हैं। फर्क यह है कि हमने अभी तक गुरु को बिठाने के लिए अपने मन को पवित्र और साफ़ नहीं बनाया है। हमारे विचार

अभी तक पवित्र नहीं बने हैं, इसीलिए हमारे पास अभी वह आंख, दृष्टि नहीं है। जब प्रेमी मिलते हैं तो बताते हैं, कि उन्हें अनुभव हुए हैं। विचार शुद्‌ध हैं, इसीलिए अनुभव हुए हैं।

हमारे विचार जीवन जीने के तरीके पर निर्भर करते हैं।

हमारी आदतें संगति पर निर्भर करती हैं। अगर हम जुआरियों की संगत में हैं तो हमें जुए की आदत पड़ जाएगी। अगर शराबी की संगत होगी तो हमें शराब पीने की आदत पड़ेगी। मन की आदत है कि यह शांत नहीं रहता। अगर हम आलोचना करने वालों की संगत करते हैं तो फिर हमें दूसरों की आलोचना करने की आदत भी पड़ जाएगी।

संतों और महात्माओं का जीवन ऐसा है कि वे जो भी काम करते हैं, चाहे खेती हो या आफिस में, वे अपने काम के बाद, गुरु की भक्ति करते हैं।

प्रार्थना

"गुरु गुरु, गुरु गुरु, गुरु बोल प्रेम से गुरु गुरु।"

"तूं सुख वेले शुक्राना कर, ते दुःख वेले अरदास।"

❖

यदि कोई भगत परमात्मा को सच्चे-सुच्चे दिल से याद करता है तो वह फौरन, बिना किसी देरी के, जूती पहनने में भी समय लगाए बिना, उसके पास पहुँचता है।

परमेश्वर सर्वशक्तिमान सच्चे दिल की पुकार सुनता है।

हमें सच्चे मन से प्रार्थना करनी चाहिए: "हे प्रभु, हम आपकी भक्ति करना चाहते हैं, केवल आप ही हमारी मदद कर सकते हैं।

"इक ज्योत निराली आई, आपे तारे ते आपे तारण वाली।"

❖

सर्वशक्तिमान परमेश्वर प्रकाश और धुन के रूप में है। तुम उसे बाहर खोज रहे हो, लेकिन वह तुम्हारे अंदर है। उसकी खोज बाहर ना करो। प्रकाश अंदर है, लेकिन इंसान उसकी बाहर खोज करता है। हमारे भीतर प्रकाश और धुन हर समय चल रहे हैं। नाम तुम्हारे अंदर है, और यह संतों की संगत में जाकर मिलता है।

❖

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "साडा न कोई वे लोको, असीं ना जहान दे, सावन किरपाल बाजों, किसे नूं नहीं जान दे"।

❖

कबीर साहब कहते हैं, "अपना कोई नहीं है जी, कि अपना सतगुरु प्यारा जी।"

❖

"सावन केहड़ियां रंगा विच राज़ी, मैं की जाणा सार सावन दी।"

❖

कोई नहीं जानता कि वह परमेश्वर हमें अपनी इच्छा में कैसे रखना चाहता है। ईश्वर ने सभी जीव और जंतुओं की रचना की, और इंसान को सबसे ज्यादा वडियाई दी है।

❖

हे सतगुरु, तुम इस संसार की हर चीज़ में बसे हो। मैं तुम्हारी शरण में आया हूं, मेरे पास केवल तुम्हारा आसरा है।

आप खुद सेवक का मान रखते हैं। आप उनका हमेशा ध्यान रखते हैं।

"गुरु गुरु, गुरु गुरु, गुरु बोल प्रेम से गुरु गुरु।"

"जे पारस होना ऐ, जिंदड़िये सुण सतगुरु दी बाणी।"

❖

हमें उस गुरु के आगे प्रार्थना करनी चाहिए, जिसने हमें नाम दिया है।

शिष्य को जो भी अपने जीवन में चाहिए, उसके लिए गुरु से भीख मांगनी चाहिए। प्रार्थना करनी चाहिए। सबसे अच्छा यह है कि हम गुरु से गुरु ही मांगें।

◆❖◆

सिमरन पर बैठने से पहले उस परमात्मा की याद में गुरु का कोई भजन पढ़ना चाहिए। इससे शिष्य के अंदर तड़फ पैदा होती है।

गुरु ही सब कुछ है, शिष्य कुछ भी नहीं है।

◆❖◆

शिष्य प्रार्थना करता है, हे गुरु, "असीं मैले सतगुरु जी, उज्जल करदे, उज्जल करदे। हम मैले तुम उज्जल करते, हम निर्गुण तुम दाता, उज्जल करदे, उज्जल करदे।"

किसी का काम तब तक पूरा नहीं होता, जब तक वह अंदर से नरम ना हो। मन सोचता है, मैं बुद्धिमान हूं, चतुर हूं, और सयाना हूं। जबकि गुरबाणी कहती है कि अहंकार एक बहुत बुरी बीमारी है।

◆❖◆

बिना सतगुरु के दूसरे किनारे तक पहुंचना मुश्किल है।

भोली-भाली आत्मा जब सतगुरु के पास आती है तो वह ज्यादा फायदा उठाती है।

आज्ञा पालन और आत्म समर्पण

अगर हम गुरु का कहना मानें तो हमें तीनों लोकों में डरने वाली कोई बात नहीं है।

हमने अभी तक उस परमात्मा को अपने अंदर रहने के लिए कोई जगह नहीं बनाई है। सिमरन के साथ पांचों डाकुओं को बाहर निकाल कर, हमें उसके लिए साफ़ जगह बनानी होगी।

◆❖◆

हमें अपने आप को देखना है, और देखना है कि हम कहां खड़े हैं?

कभी-कभी पांच डाकुओं में से एक ना एक (काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार) हमें परेशान करते रहते हैं। हमारे पास शरीर के साथ-साथ मन भी है।

अगर हम किसी को चोट पहुंचाते हैं तो फिर हमें भी चोट लगेगी, और नुकसान उठाना पड़ेगा।

❖

सभी संतों और महात्माओं ने नाम की दवा ली है। उनका कहना है कि हम सभी मरीज हैं, और हम सभी को नाम की दवा लेनी होगी। अगर हम नितनेम से गुरु के कहे अनुसार यह दवा लेते हैं, तो हमारी बीमारी ठीक हो जाएगी। सतगुरु अंदर और बाहर दोनों जगह मदद करता है। हमें सयाने बनना चाहिए, और इस मौके का पूरा फायदा उठाना चाहिए।

❖

क्या हमारी कमाई ईमानदारी की है? साफ़, पवित्र है? इसके लिए हमने किसी से धोखा या दुर्व्यवहार तो नहीं किया है? क्या किसी का हक़ मार कर अपना फायदा किया है? किसी का खून निचोड़ कर तो नहीं हमने अपने लिए पैसे कमाए? क्या हम अपनी मेहनत की कमाई दूसरों के साथ सांझा करते हैं?

❖

क्या हम अपने आस पास वालों के साथ प्यार से रहते हैं, और सद्भाव बना कर रखते हैं? क्या हम दूसरों की गलतियां निकालते हैं? क्या हम उन्हें बिना मांगे माफ़ी दे देते हैं, जिस तरह हम परमात्मा से अपनी गलतियों की माफ़ी चाहते हैं?

❖

क्या हमें दूसरों के साथ दया और हमदर्दी है? क्या बिना बताये या किसी तरह की आशा रखते हुए हम दूसरों की मदद करते हैं?

❖

क्या हम अपनी गलतियों के लिए माफ़ी मांगते हैं? क्या हम अपने जीवन को सतगुरु के सत्संग या उसकी हिदायतों पर ढालने या सुधारने की कोशिश कर रहे हैं?

❖

क्या हम सुख और दुःख में गुरु को याद रखते हैं? क्या हम हर वक्त गुरु को याद रखते हैं? क्या हम हर मुसीबत में उसकी दया और मेहर की पुकार करते हुए, और अकेले उस पर भरोसा करते हुए, शांति बनाये रखने की कोशिश करते हैं? क्या हम उसे अपने दुखी मन को समझाने की फ़रियाद करते हैं?

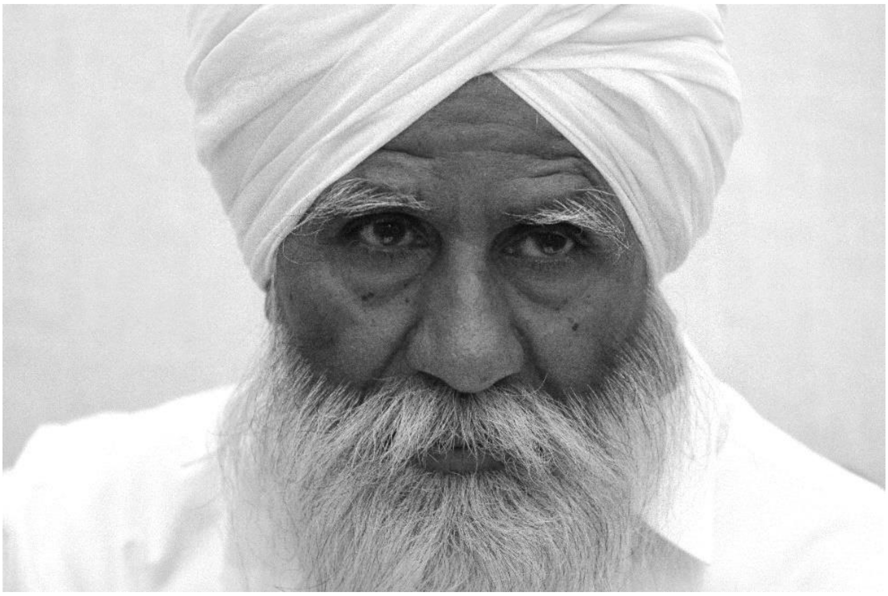

आत्म सुधार

अगर हम सिमरन में ठीक से नहीं बैठ सकते हैं तो हमें यह सवाल करना चाहिए कि हमने क्या गलती की है?

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं कि जो उसे मिलना चाहता है, वह सच्चे मन से प्यार कमाता है।

◆❖◆

उनका कहना है कि एक भक्त ४० दिन के बच्चे की तरह होता है। हम पूरे सत्संगी बन गए हैं, अब हम किसी के दिल को ठेस नहीं पहुंचाएंगे। भक्तों की शादी भी होती है, और बच्चे भी होते हैं, लेकिन वह किसी का दिल नहीं दुखाते।

◆❖◆

हमें सत्संग में आते दस-बीस साल हो गए हैं, अब तो हम पर उस भगवान के नाम का रंग चढ़ जाना चाहिए। लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

हम प्रेमी बन गए हैं। यदि हम ध्यान में ठीक से नहीं बैठ सकते हैं, तो हमें अपने आप से यह पूछने की जरूरत है कि हमने क्या गलती की है? केवल किसी गलती या और ऐसे ही किसी कारण से हम ध्यान में ठीक से नहीं बैठ सकते हैं।

◆❖◆

किरपाल सिंह जी महाराज ने जिंदगी को सुधारने के लिए डायरी दी, और कहा कि इसे रोज भरो। इस तरह हमारा मन दिन भर में किए गए हमारे कर्मों को समझ सकता है, कि हमने कितना अच्छा किया है। कितना गलत किया है? मैंने किसी को कितनी चोट पहुंचाई है या नुकसान पहुँचाया है?

◆❖◆

सबसे पहले हमें अपने अंदर की गंदगी धोनी पड़ती है, जिस तरह एक गंदे कपड़े को धोने की जरूरत है। कोई भी संदूक में गंदा कपड़ा नहीं रखता है। हमारा मन गंदा हो गया है, उसे साफ करना पड़ेगा। शब्द नाम की कमाई करें, सुरत शब्द योग का अभ्यास करें। इस साधना से मन पूरी तरह से साफ़ हो जाता है।

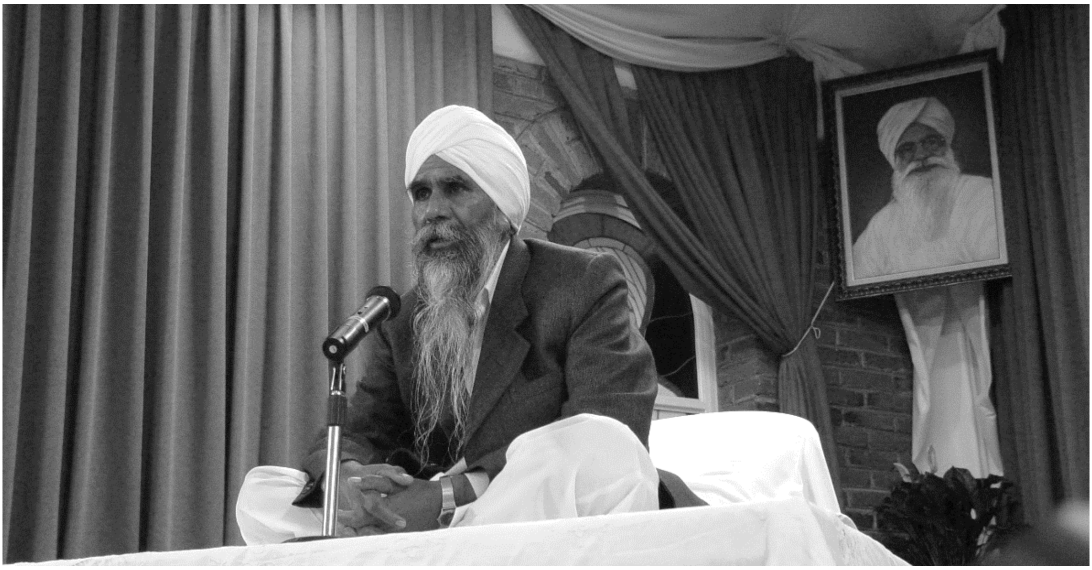

भरोसा और विश्वास

एक सेवक की आस सिर्फ उसका सतगुरु है, उसने दुनिया की आस छोड़ दी होती है।

यदि हम उस परमात्मा से मिलने की सच्ची इच्छा रखते हैं, तो हम निश्चित रूप से उसे मिलेंगे।

◆❖◆

जो गुरु में दृढ़ विश्वास रखता है, और मजबूत मन से सिमरन करता है, वह जरूर सफल होता है।

◆❖◆

भजन-सिमरन और गुरु-भक्ति, भरोसे और विश्वास पर निर्भर करती है।

◆❖◆

"आवेगा जरूर गुरु आस रखिए, मन विच पक्का विश्वास रखिये।"

बलिदान - कुर्बानी

सावन शाह कहते हैं: "सोते हुए किसी ने उस परमात्मा को नहीं पाया है।"

"जप लै तूं नाम गुरु दा कर ले तूं कुर्बानी ओए,

नाम बिना ज्योना झूठी जिंदगानी ओए।"

जब तक गुरु को मन अर्पण नहीं करते, रौला ही रहता है। मन अशांत ही रहता है।

◆❖◆

एक बार जब हम सत्संगी बन जाते हैं और हमें नाम मिल जाता है, तो गुरु पर अपना जीवन बलिदान कर देना चाहिए। जीवन की बागडोर उसके हाथ में दे देनी चाहिए। और हमें जिस तरह से वह रखना चाहता है, वैसे रहना चाहिए।

"जित्थे भेजें दाता जावां, तेरा दित्ता सदा ही खावां,

मैं हां पुतली, तेरे हत्थ डोर दातया,

मैनूं तेरे बिना किसे दी ना लोड दातया।"

❖

एक सिख को केवल गुरु पर ही आस होनी चाहिए। और सभी आशाएं छोड़ देनी चाहिये।

मीरा बाई कहती हैं, "सूली ऊपर सेज हमारी कैसे सोना होए, गगन मंडल पर सेज पिया की किस विध मिलना होए"।

"जिस थां रखे दाता ओत्थे रहना चाहिदा, हर वेले ही नाम गुरु दा लैणा चाहिदा"।

"जिस हाल च रखें दाता तूं, उस हाल च रह लैणा, दुःख होवे या सुख होवे, तेरा नाम लैंदे रहणा"।

❖

हम काल देश में रह रहे हैं।

हम अपने आप को गुरु के सेवक कहते हैं, लेकिन हमने उसके लिए क्या बलिदान दिया है?

"सिर धर तली गली मेरी आओ।"

"ज्योंदे ही जग ते मरना पवे, सुख छड के सूली ते चढ़ना पवे।

बाहरों सेवक सदोणा सोखा ऐ,

ओ सिखा, सिखी दा निभौणा ओखा ऐ।"

क्या हमने काम, क्रोध, लोभ, मोह, और अहंकार को छोड़ा है?

काम-वासना और नाम एक साथ नहीं रह सकते। काम-वासना आत्मा को नीचे गिराती है और क्रोध आत्मा को फैला देता है। फिर ध्यान नहीं लग सकता। लालची आदमी इस रास्ते पर आ ही नहीं सकता।

◆❖◆

"गुरु अजायब नूं पौंण लई, साधु वी की की कित्ता,

सुक्खी रोटी खायी, ते सी तत्ता पाणी पित्ता।

तन मन साध के, अपना आप मिटौणा पैंदा ऐ,

ज्योंदे मरना पैंदा ऐ, सूली चढ़ना पैंदा ऐ।

इक सोहणे यार दी खातिर, की की करना पैंदा ऐ।"

◆❖◆

जिन्होंने अपने मन और शरीर का बलिदान किया है, उन्हें सतगुरु ने सब कुछ दिया है। जो लोग गुरु की शरण में जाते हैं, वे काम, क्रोध, मोह, लोभ और अहंकार को त्याग देते हैं।

◆❖◆

मैं अपने को सतगुरु पर वारता हूं। उसकी महिमा अजब न्यारी है। वह जीवों का भला करता है।

◆❖◆

"सिमरदे नाम तेरा, खोले दाता अंदर परदे।

साडा जीवन गुरूजी सवारया, तैथों वारे वारे जाईये।"

◆❖◆

उसको पाने के लिए बहुत कड़ी मेहनत और त्याग करना पड़ता है।

वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर हमें देख रहा है। और इस बात को भी देखता है कि हम उसके लिए कितना बलिदान कर रहे हैं।

क्या हमारा मन सांसारिक बातों में बाहर जा रहा है या यह उससे मिलने को तड़फ रहा है?

यदि मन सांसारिक बातों में बाहर जा रहा है, तो हमें वही चीजें मिलती हैं। यदि

मन का पक्का झुकाव परमात्मा की तरफ है, उससे मिलने के लिए तड़फ रहा है, तो हम बेखटके उसे प्राप्त करते हैं।

सांसारिक चीजों को पाने की याद में सारी दुनिया मर रही है। उस परमात्मा से मिलने के दर्द में मरने की ज़रूरत है।

◆❖◆

कबीर साहब कहते हैं जो प्रभु को भूल जाता है, वह नरक में चला जाता है।

रविदास जी कहते हैं, "एह जन्म तुम्हारे लेखे, लेखे विच लायो गुरु जी"।

"स्वास स्वास सिमरो गोबिंद, मन अन्तर की उतरे चिंत।"

जो दिन और रात उस परमात्मा परमेश्वर को याद करता है, उसे पूरा ज्ञान प्राप्त होता है।

संभाल

जब गुरु हमें नाम दान देता है तो उसी समय से हमारी रक्षा भी करता है।

हे मन, प्रेम से गुरु गुरु बोल।

❖

सतगुरु ने मां के गर्भ में हमारी संभाल की। जब हम उस स्थान से बाहर आए तो भी उसने हमारी संभाल की।

सतगुरु ने नामदान दिया, तो भी हमारी संभाल की। जब उन्होंने हमें नामदान दिया तो हमें पता चला कि जीवन के हर एक कदम पर गुरु की जरूरत है।

❖

ऐसे गुरु को कभी भी ना भूलें।

तन, मन और धन, ये सब हमें गुरु ने दिया है। गुरु आत्मा का दान देता है, और हमें अपना साथ देता है। वह उस परमात्मा के साथ अंदर हमारी आत्मा को जोड़ता है।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, गुरु के बिना कोई भी काल से मुक्ति नहीं पा सकता।

आप देख सकते हैं कि पूरी दुनिया दुखी है।

गुरु अर्जन देव जी कहते हैं, "प्यारे हमने जो भी बोया है, उसे काटना होगा। अगर हम आम बोएंगे तो हमें आम ही मिलेंगे, और अगर कीकर बोएंगे तो कीकर ही उगेगा।"

◆❖◆

जब हमारा लेखा जोखा उस मालिक के दरबार में मांगा जाएगा तो उस समय केवल गुरु ही हमारी मदद करता है।

केवल गुरु ही हमारे कर्मों को वहां खतम कर सकता है, और हमें हमारे असली घर ले जा सकता है।

"आद सच्च, जुगाद सच्च, है भी सच्च, नानक होसी भी सच्च।"

जब गुरु नामदान देता है, तो उस समय कर्मों का लेखा-जोखा होता है, और सतगुरु वहां मौजूद होता है।

तुलसी साहब कहते हैं कि जब हम कोई गलती करते हैं, तो गुरु हमें सजा देता है। इस तरह वह हमें विषयों और अपनी कमियों को छोड़ने में कामयाब बना देता है।

गुरु कभी भी शिष्य को नरक में नहीं जाने देता।

एक बार जब हम गलती कर लेते हैं तो हमें मान लेना चाहिए कि हमने गलती की है, और उस गलती को फिर ना दोहरायें।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, "जो जो चोर भजन के प्राणी, सो सो दुख सहें। आलस नींद सतावे उनको, नित नित भर्म बहें। काम क्रोध के धक्के खावें, लोभ नदी में डूब मरें"।

हमें गुरु की भक्ति करनी है। अब आपको, प्यार के साथ, अपने मन से सिमरन कराना चाहिए।

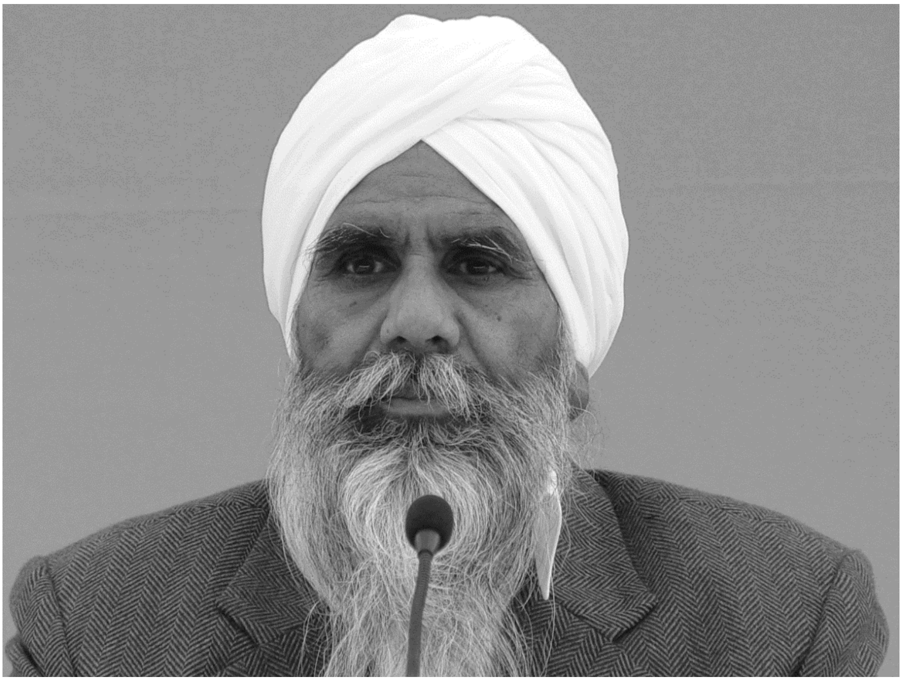

सेवा

सबसे अच्छी सेवा शब्द नाम की कमाई है

संगत की सेवा गुरु की सेवा है।

❖

महाराज किरपाल सिंह जी कहते थे कि अपनी जरूरतों को पूरा करने के बाद जो बचे, वह सेवा में डालें। यदि किसी का धन किसी की अपनी आवश्यकताओं के लिए पूरा नहीं है, तो दूसरों की मदद के लिए नहीं देना चाहिए। सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं कि अगर किसी के अपने बच्चे भूखे हैं तो फिर दूसरों के लिए सेवा करने का क्या मतलब है?

स्वामी जी कहते हैं कि गरीब लोग लंगर में आकर खाना खाते हैं, और अमीर लंगर में सेवा डाल कर चले जाते हैं।

यदि हम बर्तन साफ करते हैं, सब्जियां काटते हैं, या कोई अन्य सेवा करते हैं, तो

यह सब संगत की सेवा है। सत्संग वाली जगह की सफाई भी सेवा है।

सेवा मन को पवित्र, निर्मल, और नरम बनाती है।

सबसे अच्छी सेवा शब्द-नाम की कमाई करना है ।

संत अजायब सिंह महाराज जी ने कहा है, "नाम जपना कल विच ओखा ऐ, शरणी पै जाना सोखा ऐ"।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, "गुरु नहीं भूखा तेरे धन का, उन पे धन है भक्ति नाम का। पर तेरा उपकार करावें, भूखे प्यासे को दिलवावें, उनकी मेहर मुफ्त तू पावे।"

◆❖◆

"हर वेले मैं नाम तेरे दी सतगुरु, महिमा गावांगी।

सेवा सिमरन कर दाता, मैं जीवन सफल बनावांगी।

भागां वालियां रूहां, जो गुण तेरे गांदिया।"

◆❖◆

"सेवा नूं ही मेवा लगदा, कहन्दी ऐ गुरबाणी।

करो सेवा गुरूआं दी, हो जाए जग विच अमर कहानी।

ऐसे गुरु पूरे नूं, मैं नित-नित सीस झुकावां।"

◆❖◆

"तन मन दे नाल कर सेवा भक्ति, जो परगट कर लैंदा।

सारियां बरकतां लै के सतगुरु, सेवक दे अंदर बैंदा,

ज्यों पानी दे विच पतासा, ऐंज अंदर घुल जावे।"

◆❖◆

"सतगुरु की सेवा सफल है, जे को करे चित लाये"।

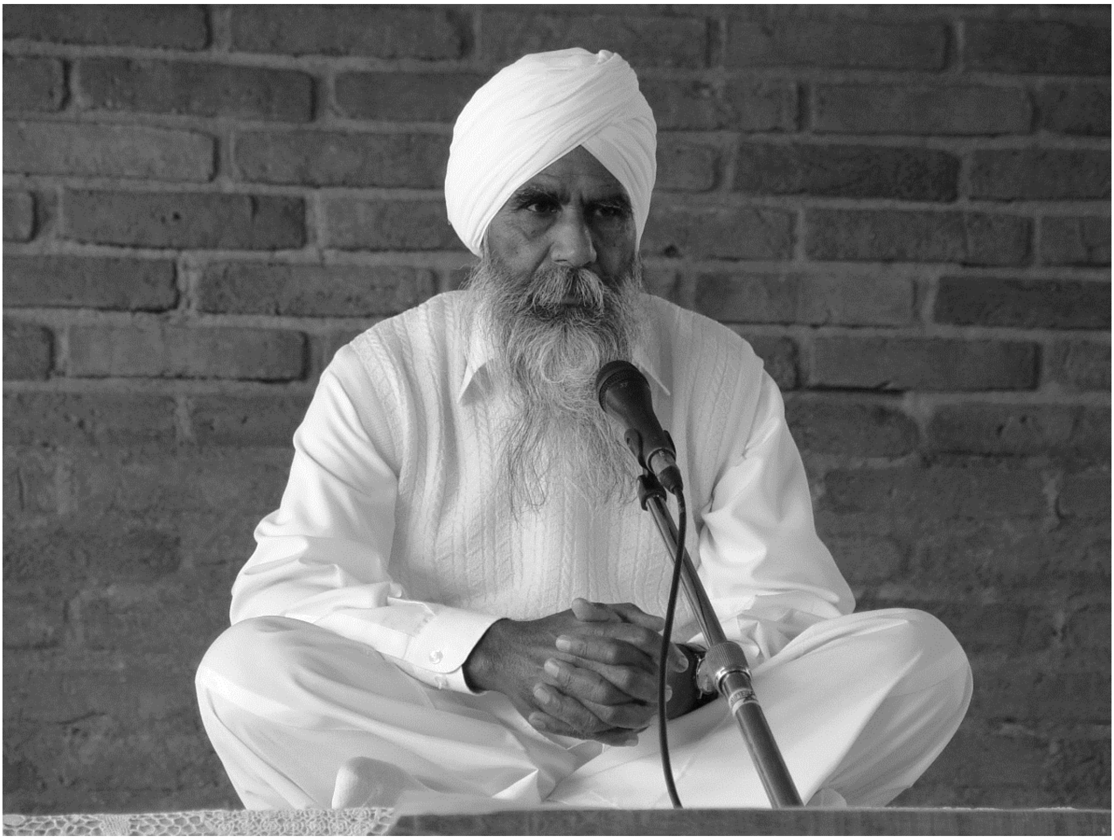

गुरुमुख भक्त

गुरुमुख वह है जो पूरी रात जागता है और सिमरन करता है।

एक गुरुमुख कहता है, हे सतगुरु, तुम ही सब कुछ करते हो। जो भी है, वह सब कुछ तुम्हारा है। सब कुछ तुम्हारे द्वारा किया गया है। तुम दाता हो। मेरे पास जो कुछ भी है, वह सब तुम्हारी कृपा से है। गुरुमुख हर चीज के लिए अपने मालिक और उस परमात्मा का धन्यवाद करते हैं।

❖

नाम सिमर के ही गुरुमुख बनता है। नाम ध्याने से ही गुरुमुख बनता है। एक गुरुमुख अपने गुरु की दी सिख्या के अनुसार अपना जीवन ढालता है। वह केवल वही करता है जो सतगुरु कहता है।

◆❖◆

संसार के सभी सुखों को त्याग कर ही कोई गुरुमुख बन सकता है।

एक गुरुमुख को सिर्फ नाम का सहारा होता है।

नाम का अमृत पीने के बाद ही कोई गुरुमुख बन सकता है।

◆❖◆

नामदान मिलने के बाद, वह रूहानी मंडलों का सफर पूरा करके, अंत में गुरुमुख बनता है। तब वह शब्द-स्वरूप परमात्मा अंदर से ही उसे नामदान देने का आदेश देता है। वह परमेश्वर सर्वशक्तिमान खुद ही आदेश देता है, और फिर खुद ही उसे पूरा करता है।

"इक ज्योत निराली आयी, आपे तारे ते आपे तारण वाली।"

वह कौन था? वह जोत? संत अजायब सिंह जी।

यह सर्वशक्तिमान परमेश्वर के हाथ में है, और वह स्वयं इसे पूरा करता है।

मैं तुम्हारा छोटा बच्चा हूं, तुम मेरे पिता हो, मेरी लाज रखना।

◆❖◆

गुरुमुख के साथ गुरु हर समय रहता है। यह तभी हो सकता है जब वह सतगुरु दया करें।

यदि वह दया करें तो हम अपने अंदर उसके साथ बात कर सकते हैं। ठीक वैसे ही जैसे कोई बाहर करता है। यदि वह दया करें तो मन को मोड़ा जा सकता है।

भजन-सिमरन करने वाले के साथ सतगुरु हमेशा होता है। एक बार अंदर का पर्दा खोल लिया तो वह देखता है कि सतगुरु मेरे साथ है ।

जीव को अहंकार की बीमारी चिपटी हुई है। केवल एक सतगुरु ही जीवों की मदद कर सकता है। जीवों की रक्षा केवल सतगुरु ही कर सकता है।

यदि कोई जीव गुरु के कहने पर भजन सिमरन करता है, तो वह गुरुमुख बन जाता है।

कोई गुरुमुख कब बन जाता है? जब वह बिल्कुल वैसा ही करता है जैसा सतगुरु उसे करने के लिए कहता है।

◆❖◆

गुरुमुख अपने ही मन को समझाता है।

गुरुमुख वही करता है जो गुरु उसे करने के लिए कहता है।

गुरुमुख पूरी तरह से अपने आप को भजन सिमरन में लीन कर लेता है।

गुरुमुख वह है जिसे गुरु का आसरा और ओट होती है।

गुरुमुख गुरु की शरण में रहता है।

गुरुमुख वह है जो एक भी पल खराब नहीं करता और भजन सिमरन करता है।

गुरुमुख निरंतर ध्यान करता है। गुरुमुख दिन-रात नाम का जाप करता है।

गुरबाणी कहती है, "सूली ऊपर सेज हमारी, कैसे सोना होए, गगन मंडल पर सेज पिया की, किस विध मिलना होए"।

◆❖◆

महाराज किरपाल सिंह जी कहते हैं कि यह गुरुमुख की कहानी है। एक गुरुमुख हर समय गुरु और नाम को प्यार करता है, और याद करता है। एक बार गुरुमुख बन जाने के बाद वह आठों पहर उस गुरु को याद करता है।

◆❖◆

गुरुमुख वह है जो रात में शब्द-स्वरूप परमात्मा से बात करता है। यदि कोई गुरु के नाम का अमृत पीता है तो सभी सांसारिक स्वाद उसके लिए फीके पड़ जाते हैं।

किरपाल महाराज जी कहते हैं कि गुरुमुख वह है जो अंदर जाकर उस ज्योति को देखता है, और गुरु से मुलाक़ात करता है।

◆❖◆

संत अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं कि गुरुमुख अमीरी या गरीबी से प्रभावित नहीं होता। वह दोनों से ऊपर होता है।

◆❖◆

संत अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "तेरी सोच करे किरपाल, सोचां क्यों करदां"। संत अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं कि गुरु सिक्ख के लिए चिंतित हैं, इसलिए सिक्ख को बिल्कुल चिंता करने की जरूरत नहीं है।

मेरी चिंता क्या है? मुझे कोई चिंता नहीं है। यह सतगुरु आप ही हैं जो मेरे लिए चिंतित हैं, और सभी का ख्याल रखते हैं।

कबीर साहब का कहना है कि चिंता पूरी दुनिया को खा रही है, लेकिन भक्त चिंता को खा जाते हैं।

हम इतने महान गुरु के शिष्य हैं, वह इतनी बड़ी शक्ति है, लेकिन फिर भी हम दिन-रात चिंता करते रहते हैं। हम अपने रोजगार के बारे में चिंता करते हैं, हमें चिंता है कि पैसा कैसे आएगा। हम एक महान गुरु के शिष्य हैं जो हमारे लिए चिंता करते हैं, फिर हमें ऐसी चीजों की चिंता नहीं करनी चाहिए।

◆❖◆

एक बार जब हम नाम दान लेते हैं तो फिर गुरु हमारी सभी जरूरतों का ख्याल रखता है। उसे भक्ति के मार्ग पर हमारी तरक्की के बारे में सोचना पड़ता है। एक बार जब गुरु किसी भी आत्मा को नामदान दे देता है तो वह उस आत्मा को कभी नहीं भूलता है। वह उस आत्मा के लिए हमेशा चिंतित है।

◆❖◆

वह अपने तरीके से उस आत्मा की सफाई करता है। वह आत्मा को सुधारता है और आत्मा की रूहानी तरक्की पर ध्यान देता है।

अगर कोई बच्चा पढ़ाई में रुचि रखता है तो मास्टर उस बच्चे को ज्यादा पढ़ाता है। हर मास्टर चाहता है कि उसके शिष्य परीक्षा पास करें।

◆❖◆

गुरु को अपने शिष्यों से हजारों माताओं से भी ज्यादा प्यार होता है। इसीलिए गुरु शिष्यों के सारे पाप उठा लेता है। दुनिया में कोई और नहीं है जो दूसरों के लिए इतना कुछ अच्छा करता है जितना एक गुरु अपने सेवकों के लिए करता है। वह सेवकों के सारे पाप ले लेता है। दूसरों के पापों को लेने वाला कोई और नहीं है।

गुरुमुख ही जानता है कि मन हमें गुमराह कर रहा है। मनमुख यह नहीं जान सकते कि मन हमें गलत दिशा में ले जा रहा है।

◆❖◆

भक्तों के जीवन काल में दुनिया ने उन्हें समझा नहीं और अच्छा नहीं कहा। कई संतों और भक्तों को बहुत कष्ट दिए गए और जेलों में फेंक दिया गया।

भक्त और संसार का मार्ग कभी एक नहीं हो सकता। भक्त जो करता है वह दुनिया नहीं करती। दुनिया जो करती है वह भक्त नहीं करता। दुनिया कहती है खाओ, पीओ मौज करो और फिर नरक में जाओ। भक्त कहता है कि कोई पाप या बुरे कर्म मत करो, ताकि आपको नरक में ना जाना पड़े। भक्त कहता है कि किसी के दिल को चोट मत पहुंचाना।

◆❖◆

"कड्ड दे मन चों भरम भुलेखे, जिंदगी लादे गुरु दे लेखे।

जगत भगत दा रस्ता वखरा, छड झूठा संसार,

जे रब्ब नूं मिलना ऐ, प्यारया कर लै सतगुरु नाल प्यार।"

◆❖◆

एक गुरुमुख कहता है, हे गुरु, तुम सब कुछ करते हो। सब कुछ तुम्हारा है। तुम दाता हो। मेरे पास जो कुछ भी है, वह सब तुम्हारी कृपा से है, और उस हर चीज के लिए तुम्हारा धन्यवाद है।

◆❖◆

गुरु नानक देव जी कहते हैं कि कोई विरला भक्त ही प्रभु की भक्ति कर सकता है।

◆❖◆

अजायब सिंह जी राजस्थान के रहने वाले थे। वह कहते थे, मैंने अपना सारा खाली समय भजन सिमरन में बिताया है।

मैंने अपना समय ध्यान में और अपनी रोजी-रोटी कमाने में लगाया है। मेरे गुरु की कृपा से, मैं गांव चार एल.एम में रह रहा था, लेकिन चार एल.एम के निवासियों ने केवल मेरा नाम सुना था, उन्होंने मेरा चेहरा नहीं देखा था।

संतों को गुरु पर दृढ़ विश्वास होता है। वे अपना जीवन-यापन करने में अपना समय बिताते हैं, इसके अलावा, वे कहीं नहीं जाते हैं, लोगों से मिलते नहीं हैं।

मेरी दो आदतें थीं: मैंने कभी किसी की ओर नहीं देखा और मैंने कभी किसी से बात नहीं की।

शुरुआत में जब दिल्ली की संगत मुझसे मिलने आई तो उन सभी ने कहा, आपको हमारी ओर देखना होगा, हम आपके दर्शन करना चाहते हैं। मैंने अपने गुरु, सच्चे से प्रार्थना की, हे सतगुरु, मैंने पहले कभी ऐसा काम नहीं किया है, लेकिन अगर यह आपकी इच्छा में है, तो ऐसा हो सकता है।

अपने काम में भी मैं तय करता था कि मैं काम के लिए कितने पैसा लूंगा, और मैं उस काम की पूरी रकम कभी नहीं लेता था। मैंने अपना जीवन गुरु पर विश्वास में बिताया है। मैंने कभी किसी से नहीं कहा कि मुझे खाना दें। चाहे मेरे अपने घर पर हो या बाहर।

जो कुछ भी मुझे दिया गया वह मैंने खाया। मैंने खाना देने के लिए कभी नहीं कहा और ना ही कि मुझे इस समय पर खाना चाहिए।

हमारे सतगुरु जो शहंशाहों के शहंशाह है, हमें खाना के लिए जब ठीक होगा देंगे, यह उसे चिंता है।

भाग ३ - अनुभाग ५

भजन सिमरन अभ्यास

ध्यान.. ३०८

सिमरन... ३१४

भजन.. ३२१

जीवित मरना.. ३२३

रास्ते की मुश्किलें.. ३२६

दुनियावी क्लेश... ३२८

मेहनत और दृढ़ता.. ३३१

ताने मेहणे और निंदा... ३३३

ध्यान

हे मन, यह ध्यान लगाने का समय है। हमें ध्यान लगाना है। यह हमें अभी करना है।

हमारा रूहानियत का स्कूल दसवां द्वार (तीसरी आंख) है। आंखों से ऊपर वह परमात्मा बैठा है। हमें वहां तक जाना होगा। हमें दोनों आंखों के बीच ध्यान को टिकाना होगा। यह सेवक का फ़र्ज़ है। स्कूल तक जाना सेवक का धर्म बनता है। जो प्यार के साथ बंदगी करते हैं, सिमरन करते हैं, उनको अनुभव हो जाता है।

◆❖◆

ध्यान का अर्थ है, अंदर ख्याल को टिकाना।

ध्यान एक प्रार्थना है। "हे सतगुरु, दया कर अपना दरवाजा खोल, और अपना दर्शन दें।"

◆❖◆

केवल कोई बहादुर योद्धा ही ध्यान लगा सकता है, गुरु की भक्ति कर सकता है। एक कायर यह काम कभी नहीं कर सकता। वीर योद्धा मन के हमलों का सामना कर सकता है, कायर नहीं।

दुनियावी ओहदे और मान-सम्मान छोड़ के ही कोई अंदर जा सकता है, और उस सतगुरु के दर्शन कर सकता है।

◆❖◆

गुरु गोबिंद सिंह जी ने कहा, "सवा लाख से एक लड़ाऊं, तब गुरु गोबिंद सिंह कहलाऊँ"। मतलब, कि पूरा सतगुरु अपने सेवकों को मन और इन्द्रियों से, जिनकी सवा लाख हाथियों जितनी ताकत है, लड़ने के काबिल बनाता है।

यह लड़ाई दुनिया के साथ नहीं है। यह लड़ाई मन से है। हमें अपने मन को सही रास्ते पर चलाना होगा। यह सीधा रास्ता है।

◆❖◆

सही ढंग से ध्यान कैसे करें?

सबसे पहले चोंकड़ी मारें और उस जगह पर बैठें जो थोड़ी सख्त हो। इसके बाद एक गुरु याद में भजन पढ़ें। फिर सिमरन करना शुरू करें और गुरु से प्रार्थना करें कि भीतर जाने में मेरी मदद करें।

हमारे पास सतगुरु के दिए हुए पांच शब्द हैं।

हमें गलत आदतों को छोड़ना होगा। हमें नाम को अपने मन में रखना है।

हमें हर समय नाम याद रखना है। हमें मन में गुरु का सिमरन करना है। हमें इस जिस्म को खाली करना होगा। हमें शरीर छोड़ना है।

◆❖◆

गुरु को अंदर मिलने के लिए उसे आठों पहर याद रखना है।

एक बार जब आप मन को नाम का स्वाद दे देंगे तो जल्दी से यह सभी सांसारिक स्वाद, विकारों और सुखों को छोड़ देगा।

❖

केवल बहुत अच्छी किस्मत का धनी व्यक्ति ही उस अनहद बाणी को अपने अंदर सुन सकता है। यह बाणी प्रभु के दरबार से आ रही है, और मुक्ति दिलाती है।

मन इस धुन को नहीं सुनता क्योंकि यह कई युगों से सोया हुआ है। केवल वह प्रेमी ही इसे सुन सकता है, जिसे सतगुरु ने माफ कर दिया है। केवल एक पूरा गुरु इस अनहद बाणी को सुनने का भेद देता है।

❖

मन कभी भी स्थिर नहीं रहता है। आराम से नहीं बैठता है। सांसारिक चीजों की तलाश में बार-बार बाहर जाता है।

कबीर साहब कहते हैं, "अपने हाथों से दुनियावी काम करो और मन से उस परमात्मा का सिमरन।"

यही उस परमात्मा के प्रेमियों का मार्ग है। वे अपना दुनियावी काम भी करते हैं, लेकिन अंदर से वे उस परमात्मा जुड़े रहते हैं।

❖

सिमरन में बैठने से पहले एक भजन जरूर पढ़ें। इससे परमात्मा से मिलने के लिए तुम्हारे अंदर तड़फ पैदा होगी, और अंदर जाने की प्रेरणा भी मिलेगी।

❖

जब हम ध्यान लगाते हैं और सिमरन करते हैं, तो अपने गुरु के दरवाजे पर हम दस्तक दे रहे होते हैं। हम गुरु से कहते हैं कि हे सतगुरु कृपया मुझे अंदर आने दें और मुझे दर्शन दें। कृपया मुझसे मिलें।

❖

शरीर के दो भाग हैं, एक आंखों तक, दूसरा आंखों से ऊपर होता है। शरीर को खाली करने का मतलब है कि ऊपरी हिस्से में जाना। जो आंखों से थोड़ा ऊपर है। जिसने हमें नाम दान दिया है, वह वहीं बैठा है, हमें उस स्थान पर जाकर उससे मिलना है।

◆❖◆

सतगुरु कहते हैं, "प्यारया, तेरे पंज शब्दां ने मैनूं तारया"।

सतगुरु ने हमें नामदान दिया है। हमने उस गुरु की भक्ति करनी है जिसने हमें नामदान दिया है।

हमने अभी तक गुरु की भक्ति शुरू ही नहीं की है। बाहरी तौर पर हम सोचते हैं कि हमारा मन शांत है। लेकिन वास्तव में हमारा मन अभी शांत नहीं है। **एक बार मन ठहर जाए तो फिर शरीर का कोई भी हिस्सा नहीं हिलेगा। तब हमें पता चलता है कि सतगुरु की सच्ची याद आ रही है।**

◆❖◆

संसार की सभी आशाएं और इच्छाएं मन से निकल जाएं और केवल गुरु की आशा ही रह जाए। मन अपनी कल्पना करता रहता है। मन सांसारिक चीजों के बारे में हर वक्त सोचता रहता है।

संत अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "छडके जहान सारा तैनू ही पुकारया, साडे ला देयो ध्यान सीधे सचखंड जान दे।"

◆❖◆

वह हमारे अंदर है। हम उसे बाहर दुनिया में खोज रहे हैं। यदि हम उससे मिलना चाहते हैं तो यह मिलाप केवल हमारे अपने शरीर के अंदर ही हो सकता है। इसके लिए हमें मन को एकाग्र करके ध्यान लगाना होगा। यदि मन ठीक से ध्यान एकाग्र करे तो हम अपने अंदर ही सतगुरु को देख सकते हैं।

◆❖◆

ध्यान का अर्थ यही है, कि मन को एकाग्र करना।

मन अभी ठहरता नहीं है। वह आता है और चला जाता है। मन सांसारिक चीजों में मगन है।

कबीर साहब ने कहा है कि अपने शरीर से दुनिया के काम करो, और मन सिमरन में लगाओ। शरीर और मन अलग-अलग चीजें हैं। संत-महात्मा, भक्त, भगवान के प्रेमी जब अपना दुनियावी काम करते हैं, उस समय भी अंदर उस परमात्मा से जुड़े रहते हैं।

◆❖◆

सतगुरु सुबह तीन बजे अपनी दया मेहर बरताते हैं। इस कृपा को पाने के लिए इस समय उठें और ध्यान में बैठें। यदि कोई सुबह तीन बजे सोया होता है तो सतगुरु वापस चला जाता है। जो सेवक अमृत-वेले सोये हैं, उन्हें दया मेहर नहीं मिलती। जो लोग भजन के चोर हैं उनका मन मोह और भ्रम की मीठी नींद में सो रहा है।

◆❖◆

संत महात्माओं का कहना है कि अगर आप नेक काम करना चाहते हैं तो आप कर सकते हैं। लेकिन मन सिमरन करने से डरता है। मन ना तो नेक कर्म करता है और ना ही सिमरन करता है।

◆❖◆

"तुसीं अरज सुनो किरपाल गुरु, साडा मन बदियाँ तो मोड़ दयो।

गुनेहगार अजायब दी अरज सुनों, मन सिमरन दे विच जोड़ दयो।"

◆❖◆

वह अवश्य ही अरदास को सुनता है। इसके बाद मन का भटकना कम होता है। इसके बाद ध्यान लगाना आसान हो जाता है। सिमरन के बिना किसी ने कभी इस मन को वश में नहीं किया, और ना ही कभी कोई कर पायेगा। सभी संत ध्यान की महानता पर जोर देते हैं।

◆❖◆

अंदर गुरु तक पहुंचना शिष्य का कर्तव्य है। रोज उस तक पहुंचें।

जब हम ध्यान के लिए बैठते हैं, तो हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि गुरु हमारे साथ है, गुरु मेरी मदद कर रहा है।

जब हम ध्यान के लिए बैठते हैं तो याद रखें कि गुरु हमें देख रहा है। और वह खुश है कि अब मेरा बच्चा कुछ पाने के लिये कोशिश कर रहा है, और आत्मा अपना काम कर रही है। गुरु कहता है कि ठीक है, अब कम से कम ये प्रयास तो कर रहे हैं।

◆❖◆

अब हम प्रेम और विश्वास से सिमरन करेंगे। वह दयालु है। वह हम पर दया, अभी या बाद में, जरूर करेगा। वह कभी तो दया करेगा।

जब हम सिमरन के लिए बैठते हैं तो वह सतगुरु हमें जरूर देखते हैं। एक बार जब वह हमें देख लेगा तो हमारा काम आसान हो जाएगा, और हम सफल हो जायेंगे।

◆❖◆

हे सतगुरु अजायब, कृपया हमसे भजन-सिमरन करवाओ। सेवक की केवल तुम पर आस है। हे सतगुरु, कृपया अपनी दया मेहर की बारिश कर।

हमें दिन-रात भजन सिमरन करके अपना काम पूरा कर लेना चाहिए। हमें बेकार के कामों में और फालतू की बातों में समय बर्बाद नहीं करना चाहिए।

◆❖◆

स्वामी जी महाराज कहते हैं, "जो जो चोर भजन के प्राणी, से से दुःख सहें, आलस नींद सतावे उनको, लोभ नदी में डूब मरें"।

सिमरन

अगर हमें गुरु से प्यार है तो हमें उसके दिए सिमरन से भी प्यार है।

"सिमरन करिए, नाम सिमरिए, जिंदगी सफल बना लईए, प्यार गुरु नाल पा लइए।"

सतगुरु हमसे खुश तब होते हैं जब हम नाम की कमाई करते हैं।

जब हम सिमरन करते हैं और गुरु को याद करते हैं, तो हम अपना सीधे सचखंड, जो की हमारा असली घर है, जाने का रास्ता खोल लेते हैं।

जब हम सिमरन करते हैं तो उस परमात्मा को पता होता है कि कोई उसे सच्चे मन से याद कर रहा है।

सिमरन निस्वार्थ करना है। गुरु से गुरु को ही मांगना है।

◆❖◆

मन व्यस्त है कि मुझे काम करना है या काम करवाना है। अगर हमारे मन में सिमरन के अलावा कोई आस है, तो हमें याद रखना चाहिए कि सिमरन से ऊपर कोई आस नहीं है।

सारी उम्मीदें कभी भी पूरी नहीं हुई हैं, और ना ही कभी पूरी होंगी।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी, कृपया हम पर दया मेहर करें, हम से नाम का

सिमरन करायें, हमारी आत्मा को अपने साथ जोड़ें।

कोई विरला सेवक ही गुरु की दया से सिमरन करता है।

◆❖◆

"तेरी किरपा से तुझे पछाणा।"

मैंने आपकी दया मेहर से ही आपको पहचाना है। किसी भी जीव में आपको पहचानने की ताकत नहीं है। जब आप चाहें, आपको तभी कोई पहचान सकता है। यह केवल आपकी कृपा से होता है।

अगर हम सिमरन नहीं करेंगे तो हमें निचली जूनों में जन्म लेना होगा। सत्पुरुष की इच्छा और कृपा से ही आत्मा को मानस जन्म मिलता है। आत्मा को यह मौका सिर्फ एक बार मिलता है।

◆❖◆

यह सब गुरु की कृपा है, या तो वह हमें यहां सिमरन करवा कर मुक्ति दे, या वह हमें मुक्ति दिलाने के लिए पहले ऊपर के मंडलों में ले जा कर और अधिक सिमरन करवाये।

गुरबाणी का कहना है कि हम या तो उनकी कृपा से सचखंड जा सकते हैं, या फिर वह पहले हमसे सिमरन करवा कर हमें वहां ले जाए।

◆❖◆

यदि कोई जीव एक बार दर्शन कर लेता है, या सत्संग में सिर्फ एक बार आया है, तो गुरु उसे दूसरा जन्म मानस जामें में देगा, या फिर उसे माफी दे कर सीधा सचखंड ले

जाएगा। यदि सतगुरु किसी पेड़ का फल खाता है, या किसी पेड़ की छाया में बैठता है, या किसी जीव की सवारी करता है, तो उसे अगला जन्म मानस जामें का मिलता है।

दुनिया के सभी झंझटों को छोड़ दें, और गुरु से प्यार करें।

◆❖◆

भगवान के प्यारे सिमरन से जुड़े होते हैं। यदि हमें उस परमात्मा से प्यार है, तो हमें उसके सिमरन से भी प्यार है।

सर्वशक्तिमान परमेश्वर के प्यार में जुड़ने का तरीका उसका सिमरन करना है।

चाहे कोई जवान हो या बूढ़ा, उसे इस कीमती मानस जन्म में बहुमूल्य समय बर्बाद नहीं करना चाहिए।

हमें सिमरन करना चाहिए। हमें अंदर जाना चाहिए। रूहानी रास्ते पर सफर करना चाहिए और उस परमात्मा से मिलने के सफर में तरक्की करनी चाहिए। केवल मानस जन्म में हम उस परमात्मा से मिल सकते हैं और अपनी आत्मा को उससे जोड़ सकते हैं। एक पूरे गुरु से ही उस प्रभु को मिलने का तरीका मिलता है।

◆❖◆

सिमरन करना एक बहादुर व्यक्ति का काम है। एक आलसी ऐसा नहीं कर सकता। जो सिमरन नहीं करता, उसे काम और क्रोध परेशान करते हैं, और ये जिंदगी को खराब कर देते हैं।

◆❖◆

सात्विक खाना लें और कम खाएं, तो आप ज्यादा सिमरन कर पाएंगे।

"अल्प आहार सुलभ सी निंद्रा, दया क्षमा संग प्रीत।"

तीन बजे उठो। संत इसे अमृत-वेला कहते हैं।

गुरबाणी में आता है, "सतगुरु का जो सिख कहाये, भलके उठ हर नाम ध्याये, ईशनान करे अमृतसर नहाये।"

संतों की संगत और सत्संग के साथ भगवान से मिलना आसान हो जाता है।

कबीर साहब कहते हैं, "एक घड़ी, आधी घड़ी, आधी ते भी आध, संगत साध की काटे कोट अपराध"।

◆❖◆

यदि हम गुरु का दिया नाम सिमरते हैं तो काल की विरोधी ताकतें हमारे पास नहीं आ सकती हैं, और ना ही नुकसान पहुंचा सकती हैं। वे हमें परेशान नहीं कर सकतीं।

संत हमें युक्ति से मुक्ति दिलवाते हैं।

◆❖◆

अनहद धुन हमारे अंदर चल रही है लेकिन यह गुरु के बिना नहीं सुनी जा सकती।

"अखीं बाजों देखणा, बिन कन्नी सुणना जी, पैरां बाजों चलणा, बिन हत्थीं करना जी।"

एक अच्छा जीवन जीते हुए अंदर जाकर उस परमात्मा से मिलें।

शरीर में रहते हुए कोई भी परमात्मा से नहीं मिल सकता है। जीते जी मरना पड़ता है, फिर जाकर ही उससे मिला जा सकता है।

◆❖◆

बाबाजी कहते हैं, "जप लै तूं नाम गुरु दा, कर लै कुर्बानी ओए"।

यदि कोई नाम का जाप करता है तो वह परमात्मा खुश हो जाता है। गुरु भी खुश हो जाता है। जब हम सिमरन करते चलते हैं, तो गुरु हमें सचखंड ले जाते हैं, और सभी सुख देते हैं।

सिमरन करके ही इस भवसागर को पार किया जा सकता है।

◆❖◆

हे सतगुरु, दया मेहर करो, और मुझे अपने साथ रखो। तुम्हारी कृपा के बिना कुछ भी नहीं हो सकता।

यदि हम प्रेम से गुरु का सिमरन करते हैं तो सभी श्राप, पाप, चिंताओं और वासनाओं की आग खत्म हो जाती है। यह सभी चीजें हमारे जीवन से खत्म हो जाती हैं।

◆❖◆

"नाम देके तुसीं दाता, लखां रुहां तारीयां,

जन्म-जन्म दियां, कटियां बीमारियां।"

◆❖◆

हमें नाम धन कमाना है। घर में हमेशा एक ना एक परेशानी, झगड़े या समस्याएं बनी रहती हैं। जब भी दो बर्तन रगड़ते हैं तो कुछ ना कुछ रौला तो होता ही है। चलो इस बात का ख्याल रखें कि वे टूटें ना। इन सब गड़बड़ियों के बीच हमें अपना सिमरन करते रहना होगा।

◆❖◆

अंदर तरक्की तभी हो सकती है जब मन सिमरन करता है।

"आठ पहर अराधीऐ, पूर्ण सतगुरु ज्ञान जी।"

◆❖◆

शिष्य के लिए गुरु ही सब कुछ है।

◆❖◆

हमें ध्यान लगाना है। वह सब कुछ देता है - सुख, मुक्ति, सब कुछ।

जब हम ध्यान के लिए बैठते हैं, तो क्या हमें सिमरन याद है?

जब हम अपना कोई भी कारोबार करते हैं तो क्या हमें सिमरन याद है?

जब हम कहीं भी सफर करते हैं तो क्या सिमरन करते हैं?

हमें यह खुद अपने अंदर देखना होगा। क्या हमारा किसी के साथ लड़ाई झगड़ा है? क्या हमारा किसी के साथ रिश्ता टूट गया है?

यह सब तब होता है जब सिमरन रुक जाता है।

◆❖◆

जब मन सिमरन करने लगता है, तब परमात्मा से मिलना आसान हो जाता है। उस प्रभु से मिलने की राह में केवल मन ही रुकावट है।

◆❖◆

"ऐ बाणी पूरे सतगुरु दी, दरगाह चों मुक्त करोंदी है।"

जो उस बाणी को सुनता है, वह दरगाह में मुक्त हो जाता है। वह बाणी हमारे अंदर है। दसवें द्वार में अमृत बरस रहा है। उस अमृत को पीकर मन शांत हो सकता है। इसलिए हम गुरु का कहना मानें।

अगर हमारा गुरु से प्यार है तो वह जरूर हमें उस बाणी को सुनने का मौका देगा। हम उस बाणी को सुनकर अपने मन को शांत कर सकते हैं।

◆❖◆

हम मुक्ति-द्वार पर खड़े हैं, और अब मुक्ति हो सकती है। मन शांत हो सकता है। अभी हमारा मन हिरण की तरह दौड़े जा रहा है। नहीं प्यारयो, मन को शांत करने के लिए, मन की जहर उतारने के वास्ते, नाम होता है, शब्द होता है, और गुरु होता है। निज घर जाने के वास्ते गुरु से प्यार करो, भजन करो। उसका कहना मानो तो जिंदे जी आप मुक्त हो जाते हो। मरने को मुक्ति किसी ने नहीं कहा है।

◆❖◆

इसलिए जो मौके का भगत होता है, वह तुम्हें माफ़ी दे देगा। क्योंकि भगवान ने उसे माफ़ी दे कर भेजा होता है।

◆❖◆

किरपाल महाराज जी कहते थे कि भगवान दे या ना दे, मगर गुरु जरूर देगा। वह भगवान का भेजा हुआ है। उसके पास जाओ।

"नाम तुम्हारा हृदय वासे, संतन का संग पावो।"

गुरु गोबिंद सिंह महाराज कहते हैं, "सांस सांस सिमरो गोबिंद, मन अंतर की उतरे चिंत"।

◆❖◆

सांस, सांस सिमरन करना है। हम जीभ के साथ जाप करने लगे हुए हैं। यह तो मन की प्रार्थना है। मन की अर्ज है। मन सूक्ष्म है। मन की फ़रियाद वह जरूर सुनता है। हमारी जीभ इंद्री है, शरीर इंद्री है। सांस के साथ सिमरन करें।

◆❖◆

हमारे पास गुरु का दिया हुआ नाम है। जब कोई उसके दिए हुए नाम को सिमरता है तो मन घबरा जाता है। जब कोई सिमरन करने के लिए बैठता है तो मन शरीर से बाहर निकल जाता है। हम उसे वापस लाते हैं, मगर वह फिर से निकल जाता है।

◆❖◆

हमने उस परमात्मा को खुश करना है। यदि आप उस परमात्मा को खुश करना चाहते हैं, तो नाम का सिमरन करो, और अपने आप को गुरु पर वार दो।

◆❖◆

सिमरन आत्मा की खुराक है। शरीर को भोजन देने से पहले सिमरन का भोजन अपनी आत्मा को दें।

सतसंगियों को गुरु पर विश्वास होता है। वे गुरु के लाल होते हैं। जो प्रेमी दिन में पांच से सात घंटे सिमरन करते हैं, उन्हें मन परेशान नहीं करता। मन हानिकारक नहीं रहता।

◆❖◆

जो दिन में सिर्फ एक या दो घंटे सिमरन करते हैं, मन उन्हें डरा देता है। उनके सामने जिस किसी भी रूप या तरीके से वह आना चाहे आ जाता है।

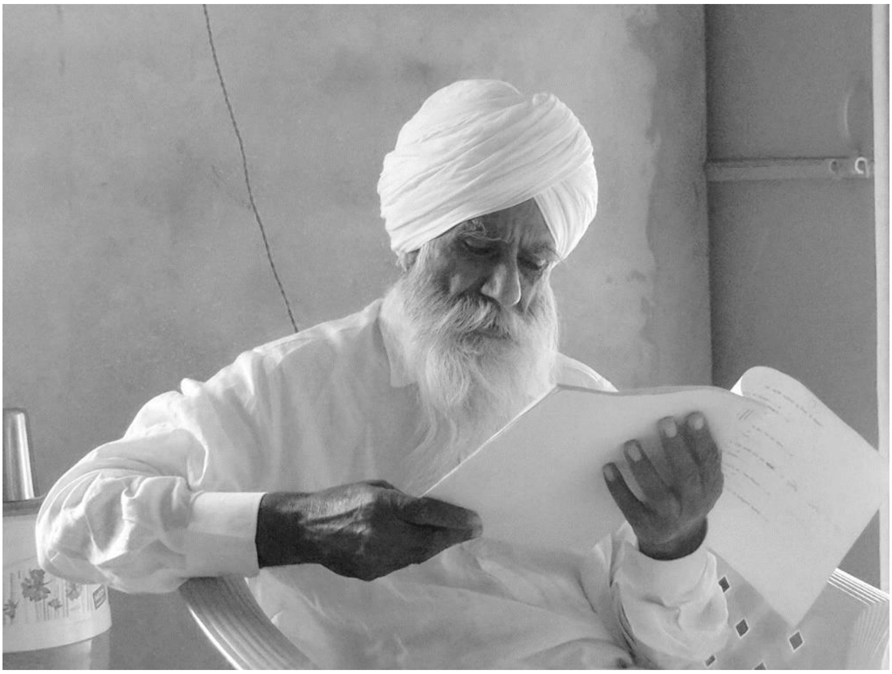

भजन

सत्संग के भजन उस अकाल पुरख परमात्मा ने लिखे हैं। भजन भी उसी परमात्मा के लिखे हैं।

पूरे सतगुरु के लिखे भजन बोलने से आत्मा, मन और शरीर पवित्र हो जाते हैं। भजन गाकर गुरु के प्रति प्यार बढ़ने लगता है।

भजन पढ़ने से गुरु के दर्शनों की इच्छा और तड़प बनने लगती है।

भजन गाने से उस ईश्वर से मिलने की जिज्ञासा और प्यार जाग जाता है।

मन माया की मीठी नींद में सो रहा है। भजन गाने से यह मन जाग जाता है।

❖

सिमरन में बैठने से पहले गुरु प्यार का एक भजन पढ़ें। इससे प्रेम और उस परमात्मा को मिलने की तड़फ बनेगी।

जब हम ध्यान के लिए बैठते हैं तो सिमरन को बार-बार जपें। इस तरह, कभी न कभी यह मन सिमरन को प्यार से करना शुरू कर देगा।

जब हम गुरु के गीत गाते हैं तो हमारी आत्मा गुरु के रंग में रंगी जाती है। आत्मा सुखी हो जाती है। मन प्रसन्न हो जाता है। वह परमात्मा भी खुश हो जाता है।

जीवित मरना

हम उस सतगुरु के सिख बन गए हैं। हमें जीवित मरना पड़ेगा।

जो असली शिष्य है, वह नींद, भूख, प्यास से प्रभावित नहीं होता।

एक बार सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी से पूछा गया कि क्या वे साधु बन गए हैं? उन्होंने जवाब दिया, मैं आजाद हूं और रास्ते पर हूं। स्वादु भी नहीं हूँ, पर अभी साधु नहीं बना हूँ। जो साधु बन जाता है उसे चीजों के स्वाद का नहीं पता होता कि खाने में नमक है या नहीं, चीनी है या नहीं। मन चीजों का स्वाद लेता है।

◆❖◆

सबसे पहले हमें मन को उसके घर पहुंचाना चाहिए। जो अपने मन पर संयम रखता है और उसे घर तक पहुंचाता है, वह साधु है। ऐसा नाम का अमृत पीने के बाद होता है।

दसवें द्वार पर गुरु प्रकट होता है, और अपनी आत्मा को नाम का अमृत पिलाता है। यह केवल उसकी कृपा और दया के साथ होता है। यह तभी होता है, जब वह चाहता

है। एक बार ऐसा होने पर संसार की इच्छाएं और आशाएं खत्म हो जाएंगी, और सेवक उस गुरु के दर्शन करने का भागी बन जाएगा।

❖

किरपाल सिंह महाराज जी से पूछा गया कि किसी को इस अवस्था में पहुंचने में कितना समय लगना चाहिए? वह कहते हैं, "यदि पूरे जीवन काल में हम केवल एक बार गुरु के अंतरमन में दर्शन कर सकें तो हमें उनका बहुत आभारी होना चाहिए। हमें उनका शुक्र अदा करना चाहिए।

❖

हम दुनिया के बंधनों में फंस गए हैं। यह गुरु ही है जो दया कर इन बंधनों को तोड़ता है।

सूखा बारूद आग की छोटी सी चिंगारी के साथ फट जाता है।

यदि शिष्य को गुरु से प्रेम है, और उससे मिलने की प्रार्थना करता है, तो वह जरूर मिलेगा।

❖

हम संसार में भटकते रहे हैं, और अलग-अलग रूपों में जन्म ले चुके हैं। जन्म-मरण के चक्र में निचली जूनों से गुजरने के बाद हमें यह मानव-जन्म एक बार के लिए मिलता है। मानस-जन्म उस परमात्मा को मिलने और उसके साथ एक होने का अवसर है।

हमें अपने गुरु से नाम मिला है, हमें इससे फायदा उठाना चाहिए। हमें नाम का धन कमाना चाहिए।

❖

हमें वही करना चाहिए जो सतगुरु कहते हैं, और लोक-लाज से नहीं डरना चाहिए। एक दिन तो हमें मरना है ही, तो फिर जीते जी ही क्यों नहीं?

❖

"ज्योंदे जी ही मरना पैंदा ऐ, सीस तली ते धरना पैंदा ऐ, फिर तां जाके थोड़ी जही झलक विखौन्दा ऐ।"

❖

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "जिओन्दे ही जग ते मरना पवे, सुख छड्के सूली ते चढ़ना पवे"। कबीर साहब कहते हैं, मुझे जीवित मरने पर परमानंद मिला। गुरु अर्जन देव जी कहते हैं, मेरे अच्छे भाग्य थे कि मैं अपने अंदर उस परमात्मा से मिला, यह मेरे गुरु की कृपा से ही हुआ।

रास्ते की मुश्किलें

यदि हम सिमरन करते हैं और वैसा करते हैं जैसा सतगुरु हमें करने के लिए कहता है, तो हमारे सिमरन में तरक्की होती है।

भगवान के किसी भक्त या प्यारे ने कभी यह शिकायत नहीं की है कि मुझे आज यह समस्या और कठिनाई है, और इसलिए मैं भजन नहीं कर पाया।

❖

यदि हम सिमरन करते हैं और वैसा करते हैं जैसा सतगुरु हमें करने के लिए कहता है तो हमारे सिमरन में तरक्की होती है।

हम गलती यह करते हैं कि सिमरन वैसे नहीं करते जैसे सतगुरु हमें समझाते हैं, या जैसी हिदायत करते हैं। हम अपने अंदर उस सतगुरु के स्वरूप को देखने के लिए सतगुरु से प्रार्थना नहीं करते हैं। हमारी प्रगति में अड़चन यही है कि हम मालिक से सांसारिक चीजों को मांग रहे हैं, उस गुरु को नहीं। जब हम गुरु के बजाय सांसारिक चीजें चाहते हैं, तब हम दुनिया में फंस जाते हैं, और अंदर तरक्की नहीं करते हैं।

◆❖◆

भक्ति-मार्ग में मूल बाधा यह है कि हम गुरु से गुरु को मांगने के बजाय हम सांसारिक चीजें मांगते हैं। जब हमें ये चीजें मिलती हैं, तो हम दुनिया में फंस जाते हैं, और अंदर तरक्की नहीं करते।

◆❖◆

किसी को पूरे जीवन काल में भी मोह से मुक्ति नहीं मिलती। संत कई जन्म सिमरन में बिताते हैं।

काम-वासना से मुक्ति मिलती है तो क्रोध आ जाता है। क्रोध से मुक्ति मिलती है तो लोभ आ जाता है, फिर मोह आ जाता है।

इन पर काबू पाने के लिए, इन पर जीत पाने के लिए सिमरन करना है। तुम्हारा मालिक तुम्हारे साथ है, वह हमेशा तुम्हारे पास है।

◆❖◆

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं कि अपने मन को बार-बार सिमरन में लगायें।

हार जाना इतना बुरा नहीं है जितना हार मान लेना। मन बहुत जिद्दी है। यह कई रुकावटें पैदा करता है। इसके लिए एक ही उपाय है कि सिमरन में इसे बार-बार लगाएं। ऐसा करने से एक दिन हम जरूर सफल हो जाएंगे।

◆❖◆

मन की आदत है कि अगर किसी चीज से इसे हटाना चाहते हैं, या उसमें उलझने से रोकना चाहते हैं, तो यह उस बात को अधिक से अधिक और मजबूत इरादे से करता है।

मन को काबू करने और इसकी तबाह करने वाली आदतों को रोकने का तरीका सिर्फ गुरु की दया और सिमरन हैं।

अगर हमारे पास गुरु का दिया सिमरन है, और हम इसे लगातार करते हैं, तो मन हमारे काबू में आ जाएगा।

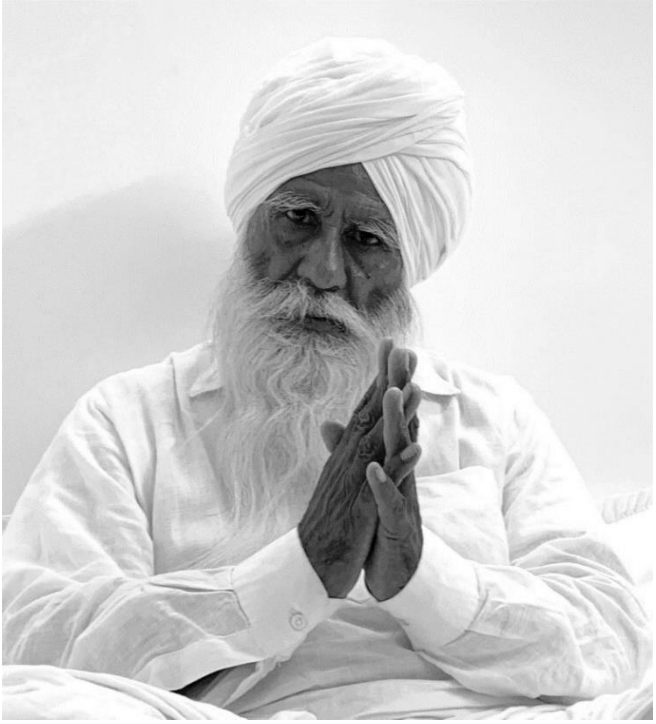

दुनियावी क्लेश

अगर हम चुप रहते हैं तो हमें एक हजार सुख मिलते हैं।

राजस्थान में एक कहावत है- "थोथा चना बाजे घना"। एक जो खाली है, वह दूसरों को दिखाना चाहता है कि देखो मैं कितना महान हूं।

"तेरी किरपा नाल, काम ते क्रोध उत्ते, पा लयी ऐ मैं जित्त जी।

लोभ मोह अहंकार विच हुण, जांदा नहियों चित जी।

हार गया मेत्थों, पंजा चोरां वाला टोला।

तेरे नाम दियां रहण, चड़ियाँ खुमारियां।

बाकी गल्लां सब मैं तां, दिल तों विसारियां।

दुखां ते कलेशां वाला, मुक गया रोला।"

◆❖◆

जब हम सतगुरु की शरण में आ गए हैं, तो हम क्यों दूसरी आत्माओं को तंग करें?

जो दूसरी आत्माओं को तंग करते हैं, उन्हें सतगुरु कभी अपने दरबार में जगह नहीं देता।

पिछले जन्मों में हमने काफी रूहों को तंग किया, और परमात्मा उसका गवाह है। कम से कम अब तो हमें दूसरों को तंग करना छोड़ देना चाहिए।

◆❖◆

"लड़ना सी तैं मन अपने नाल, फिरें लोकां नाल लड़दा।

दुजयां दे सुख वेख वेख के, अन्दरों अंदरी सड़दा।

कदे बह के सोच विचार, किसे तों की लैणा।

कर रब्ब नाल बंदया प्यार, किसे तों की लैणा।

ऐ ते मतलब दा संसार, किसे तों की लैणा।

कर रब्ब नाल बन्दे प्यार, किसे तों की लैणा।

बन्दे नूं बंदा न समझें, कित्थों रब्ब नूं पावेंगा।

नीतां नूं सब मिलन मुरादां, नीवां होके पावेंगा।

कड्ड मन विचों अहंकार, किसे तों की लैणा।

कर रब्ब नाल बंदया प्यार, किसे तों की लैणा।

इस जिन्दड़ी दे दिन चार, किसे तों की लैणा।

कर रब्ब नाल बंदया प्यार किसे तों की लैणा।"

◆❖◆

पति-पत्नी होते हुए हम एक-दूसरे को दोषी ठहराते हैं। हमारे परिवारों के भीतर, पति पत्नी के बीच, रौला होता है। 'मैं और मेरी' रास्ते में आते हैं। अहंकार हमें परेशान करता है, और हम तलाक की हद तक आ जाते हैं। पति-पत्नी एक-दूसरे से अलग हो जाते हैं।

◆❖◆

गुरबाणी में आता है कि अहंकार बहुत बुरी बीमारी है। यह सभी झगड़ों और समस्याओं की जड़ भी है।

◆❖◆

हमें इंसानी जामा मिला है, लेकिन हम वैसा व्यवहार नहीं कर रहे हैं जैसा इंसानों का होना चाहिए। हमारा यह मन फूला रहता है, और हमें दूसरों के साथ जिस तरह के संबंध और व्यवहार करना चाहिए, वह करने नहीं देता है। यदि एक इंसान दूसरे इंसान से प्यार नहीं कर सकता तो फिर वह प्रभु परमात्मा से प्यार कैसे कर सकता है।

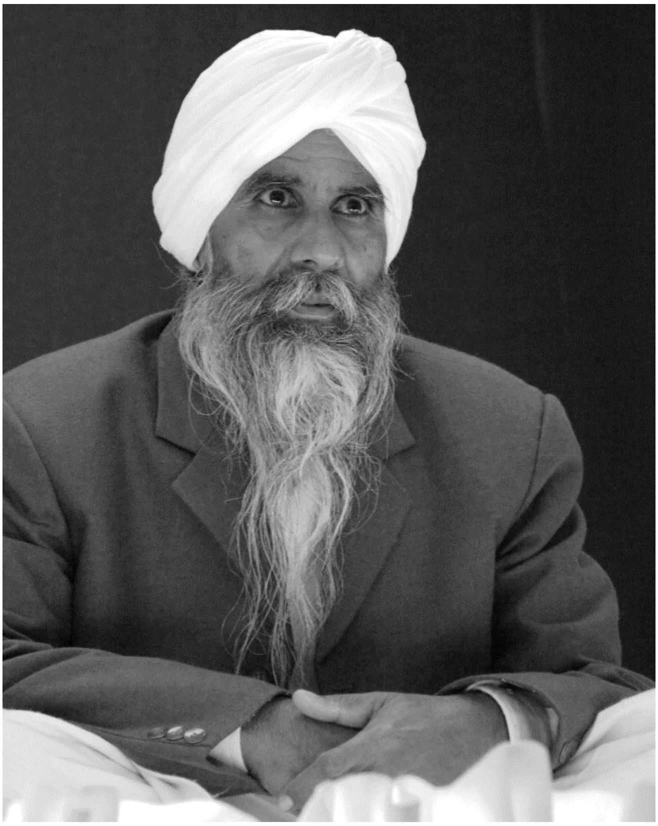

मेहनत और दृढ़ता

"की कम्म आया सी तूं, की कम्म लगया, पंज चोरां सारा तेरा धन माल लुट्ट्या, नाम वाली पूंजी दी संभाल कर लै।"

अगर हम सिमरन करते रहेंगे और इसे लगातार करने की कोशिशों में दृढ़ रहेंगे, तो आखिरकार हमारा मन अंदर शब्द से जुड़ जाएगा। यह सब हमारे प्यार और विश्वास पर निर्भर करता है। एक बार मन भीतर जुड़ जाता है, तो सिमरन चौबीस घंटे अपने आप चलता रहता है।

ऐसे भक्त का सिमरन बिना किसी रुकावट से चलता है। हर समय, यहां तक कि जब वे किसी काम में भी लगे हुए हैं। चाहे वह कारोबार है, खाना है, बात करना है। वे कुछ भी कर रहे हों, मगर उनका सिमरन हर समय चलता रहता है।

जो दिन और रात सिमरन करता है, वह हमेशा कहता है कि हमें लगातार और हर समय सिमरन करने में कोई समस्या या कठिनाई नहीं होती है।

इसमें समय लगता है, नाम मिलने के बाद हमें सिमरन करते रहना है, भले ही इसमें पूरी जिंदगी लग जाए, लेकिन सिमरन करते रहो। एक भिखारी की तरह उसके दरवाजे पर बैठे रहो। एक दिन वह तुमको नाम की खैर जरूर डालेगा।

◆❖◆

किरपाल सिंह महाराज जी कहते हैं, भले ही कोई अपनी पूरी जिंदगी नाम ध्याता रहे, लेकिन यह उस प्रभु का फैसला है कि अंदर अनुभव कब देना है। हमें अपना काम करते रहना चाहिए, क्योंकि वह सबसे अच्छी तरह जानता है कि आंतरिक अनुभव कब होना चाहिए। अनुभव देना उसके हाथ में है।

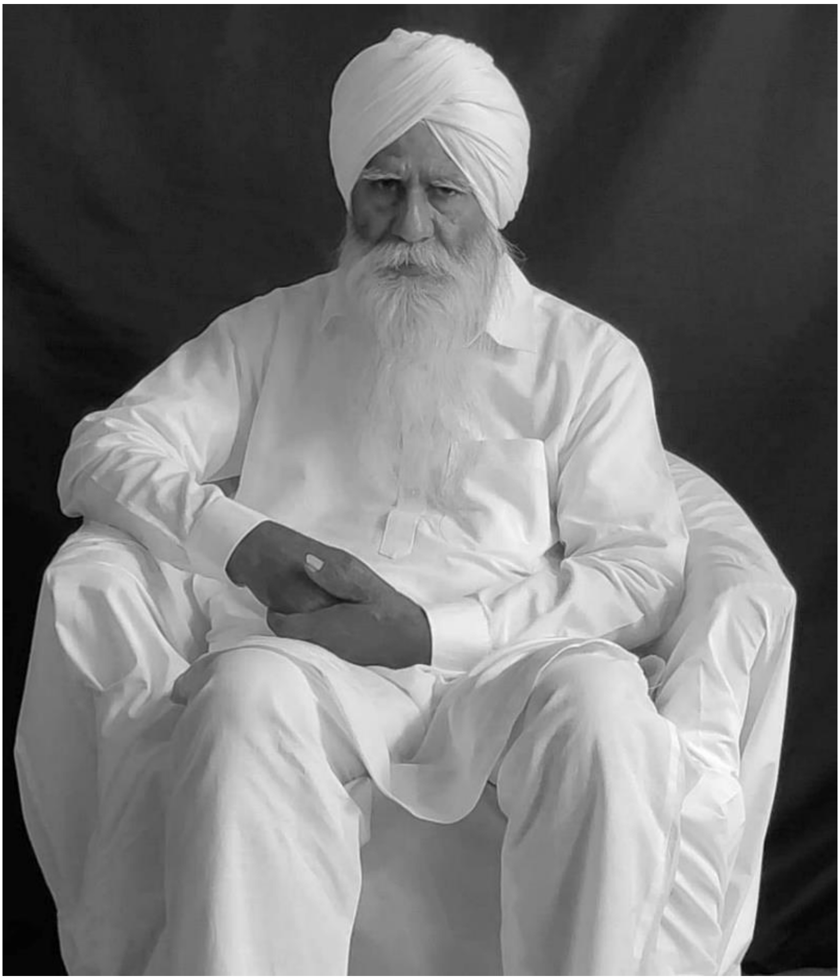

ताने मेहणे और निंदा

"दुनिया दिवानयां नूं ताने मेहणे मार दी, सच्चा तेरा प्यार साईयां झूठी रीत संसार दी।"

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "ताने मेहणे झल्ले सारे, तेरे बिना दुःख कौन निवारे, मेहर करीं मेरे सच्चया ओ यारा।"

भक्तों को हमेशा ताने और आलोचनाओं का सामना करना पड़ा, लेकिन उन्होंने कभी मुड़कर जवाब नहीं दिया।

जो उस परमात्मा से मिलना चाहते हैं, उन की बहुत आलोचना की जाती है, और उन्हें ताने मारे जाते हैं।

संत जी कहते हैं, "ताने मेहणे झल्ले सारे, तेरे बिना दुःख कौण निवारे, मेहर करीं मेरे सच्या ओ यारा"।

भक्त उनके साथ किए गए सलूक का कभी बुरा नहीं मनाते।

◆❖◆

एक बार जब हमारा मिलाप पूरे गुरु से हो जाता है और जब हमें सत्संग मिल जाता है, तो हमें अपने जीवन को बदलना चाहिए। दूसरों में गलतियां नहीं ढूंढनी चाहिए। दूसरों में गलतियां निकालने का मतलब है कि हमने अभी अपने गुरु को भगवान का रूप नहीं समझा है।

एक बार जब हमें नामदान मिल जाता है, तब जो कुछ भी हमारे साथ होता है वह हमारे गुरु की तरफ से होता है, और हमारे अच्छे के लिए होता है। हमारे साथ जो कुछ भी हो रहा है, उसे हमें स्वीकार करना चाहिए, यह समझते हुए कि हमारा गुरु भगवान है।

हम गुरु को बताते हैं कि क्या होना चाहिए, हम उसे अपने हिसाब से चलने के लिए कहते हैं। नहीं प्यारयो, ऐसा नहीं है, हमें वह करना चाहिए जो गुरु कहता है। उसे

वह करने के लिए ना कहें जो हमारा मन चाहता है।

◆❖◆

संत जी कहते हैं कि मैंने शुरू से ही आदत डाल ली थी, कि मैं वही करूंगा जो मेरा गुरु कहेगा।

भक्त नामदेव कहता है, हे मालिक तुम भगवान हो, और यह आप पर निर्भर करता है कि आप मुझे राजा बनाओ या भिखारी। मैं केवल आपसे यह मांगता हूं कि मुझे एक ऐसा व्यक्ति बनाओ जो आपकी इच्छा खुशी से स्वीकार करके उसी में रहे।

◆❖◆

मैंने दुनिया के तानें सहे हैं, तुम्हारे अलावा कोई भी मुझे दिलासा नहीं दे सकता है।

गुरु की भक्ति करना बहुत कठिन है।

हर कोई आपको आपकी कमियां ही बताएगा।

ताने और आलोचना को सहना पड़ता है।

हम इतने महान गुरु के पास जाते हैं, फिर भी दुनिया गाली देती है, और आलोचना करती है। मेरे गुरु के अलावा मुझे दिलासा कौन दे सकता है?

भक्तों के इतिहास में आता है कि उन्होंने कभी किसी की गलती नहीं निकाली और ना ही पूछा कि ऐसा क्यों हुआ है।

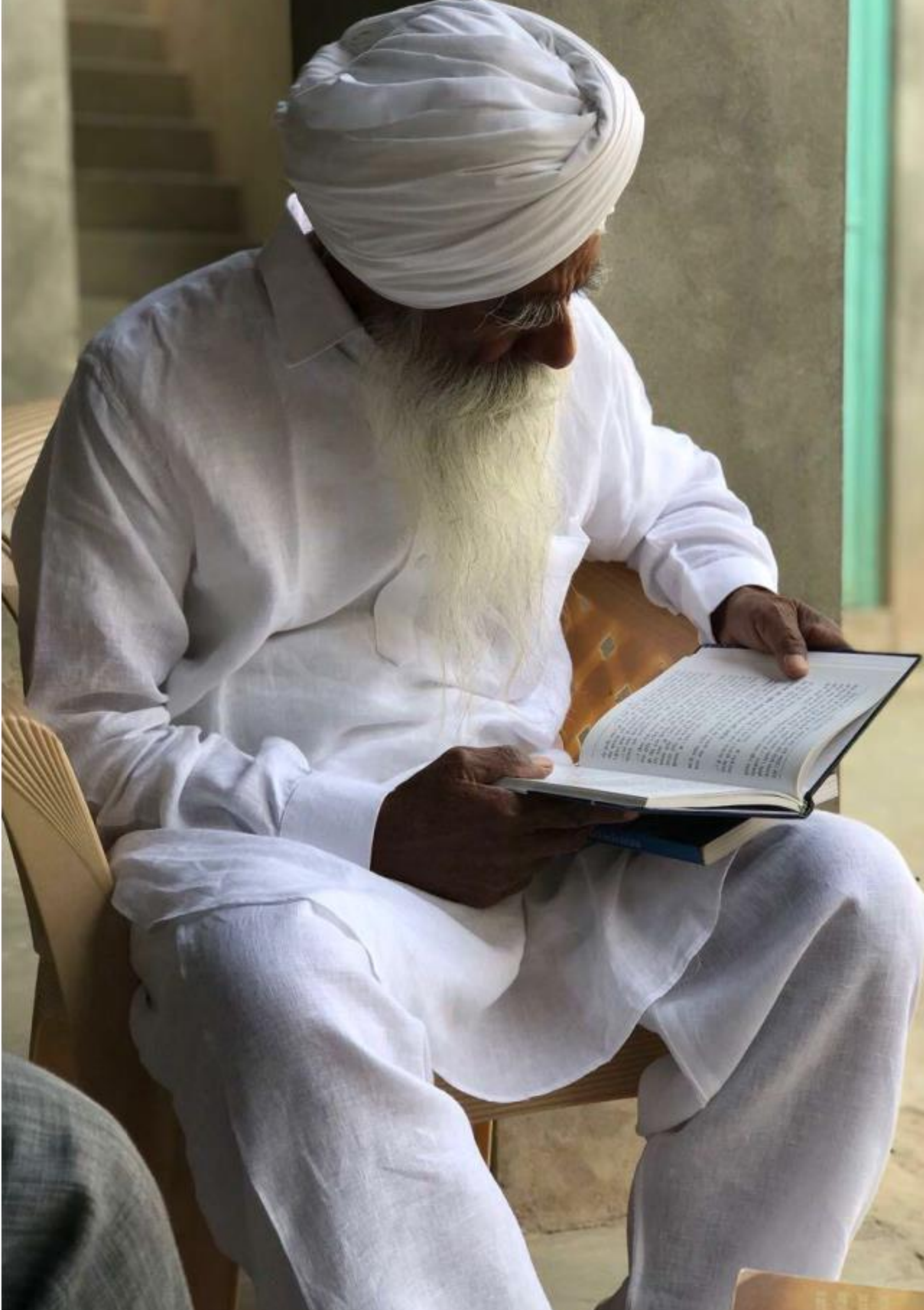

भाग ३ - अनुभाग ६

एक सत्संगी का जीवन

एक सत्संगी का जीवन.. ३३८

पवित्रता... ३४३

माफ़ी ३४५

दूजे को सवाया जान.. ३४७

ईमानदारी की कमाई और जीवन.. ३४९

संगत कैसी हो और उसका असर... ३५१

शाकाहारी आहार और नशीले पदार्थों से परहेज.......................... ३५३

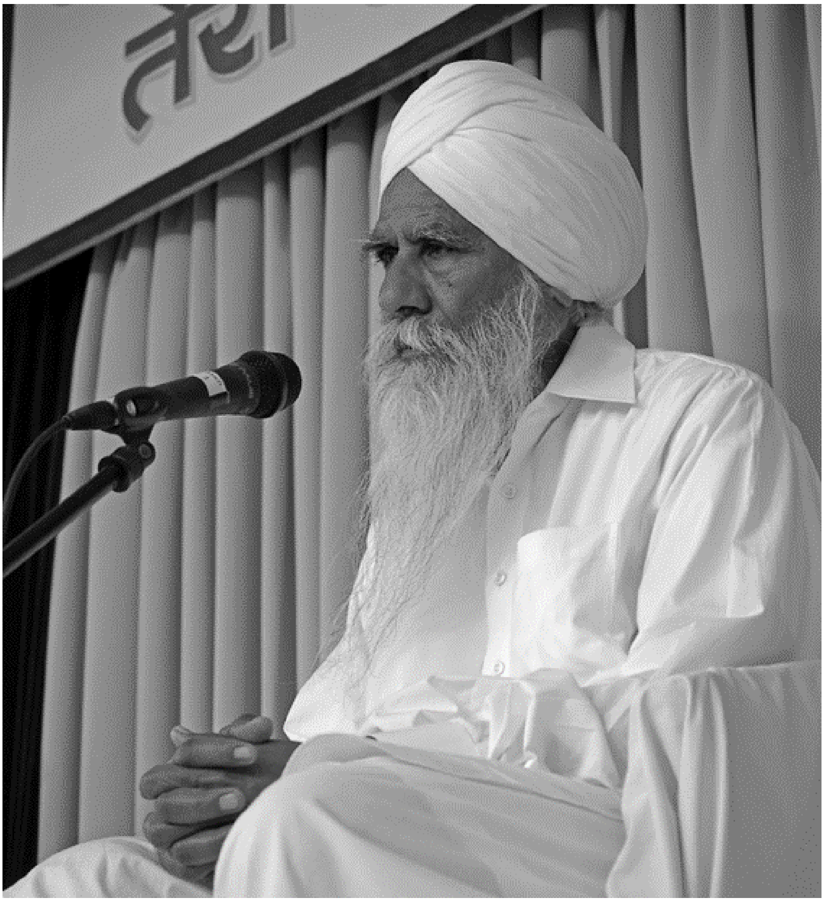

एक सत्संगी का जीवन

हम सत्संगी हैं। हम सेवक हैं। हम सतगुरु के बच्चे हैं। हम गुरु के लाल हैं।

एक बार जब हमारा मिलाप पूरे गुरु से हो जाता है और जब हमें सत्संग मिल जाता है, तो हमें अपने जीवन को बदलना चाहिए। दूसरों में गलतियां नहीं ढूंढनी चाहिए। दूसरों में गलतियां निकालने का मतलब है कि हमने अभी अपने गुरु को भगवान का रूप नहीं समझा है।

प्यारयो, काम-वासना और क्रोध को छोड़ दें, इनसे छुटकारा पाएं। सच का साथ और सब्र करें।

"जेती मन की कल्पना, काम कहावें सोए।"

प्यारयो, हमें दुनियावी इच्छाओं और कल्पनाओं से ऊपर उठना है। हमारा मन कल्पित है। यह हर समय कोई ना कोई इच्छा करता ही रहता है।

जब हमारी इच्छा या काम वासना पूरी नहीं होती है, वहां क्रोध आता है। जहां क्रोध होता है, वहां काल आ जाता है।

जहाँ धर्म है वहां दया है, और यदि दया है तो क्षमा भी है।

◆❖◆

ग्रहस्थ जीवन में हमें हमेशा माफ़ी देनी चाहिए और माफ़ी मांगनी चाहिए, क्योंकि इस तरह से पति और पत्नी के बीच जो प्यार पहले दिन होता है, सारी उम्र कायम रखा जा सकता है।

हमें सबसे मीठे और नरम शब्दों के साथ बोलना चाहिए। घर-परिवार में प्यार और सद्भाव बनाए रखना चाहिए। हम एक-दूसरे की जरूरतों और आराम का ख्याल रखें और देखभाल करें। पति या पत्नी जो कुछ भी करते हैं, उसमें एक दूसरे की सहायता करें। कभी भी एक-दूसरे में कोई गलती नहीं निकालें।

"एक ने कही दूजे ने मानी, कहे नानक दोनों ब्रहम ज्ञानी।"

जिस घर में प्यार और सद भावना है, वहां शांति भी है, और उनके सारे काम पूरे भी हो जाते हैं। इस तरह सिमरन में तरक्की भी होती है।

इस से हमारा मन उस परमात्मा की तरफ झुकना शुरू हो जाएगा और हम उस परमात्मा का सिमरन ज्यादा कर सकेंगे। इस तरीके से उस परमात्मा के साथ प्यार ज्यादा बढ़ना शुरू होगा और बदले में हमें उसकी दया और कृपा मिलेगी।

◆❖◆

हम नाम लेवा हैं, हम सत्संगी हैं, हम गुरु वाले हैं। यदि हम दूसरे सतसंगियों में, या जिन्हें हम मिलते हैं, उनमें गुरु को देखते हैं तो हम नरम हो जाएंगे। हम सभी के साथ अच्छा व्यवहार करेंगे।

◆❖◆

मुझे साध-संगत मिल गई और अच्छा-बुरा भूल कर मैंने दूसरों की आलोचना और निंदा चुगली करना छोड़ दिया। जब हम मानते हैं कि वही परमात्मा हर किसी में है, तो हम किसी को भी बुरा कैसे कह सकते हैं; और अगर हम किसी को बुरा कहते हैं तो वह परमात्मा को ही कह रहे होते हैं।

◆❖◆

किरपाल सिंह जी महाराज कहते थे कि पेट आधा भोजन के साथ, एक चौथाई पानी से भरें और एक चौथाई खाली छोड़ दें ताकि सांस ठीक से चलती रहे और सांस लेने में दिक्कत न हो। लेकिन हम लोग क्या करते हैं? हम भोजन के साथ पूरी तरह से पेट भरते हैं, फिर हम कहते हैं कि पानी दरारों में चला जाएगा, और ठीक से सांस आये या ना आये, इसकी परवाह नहीं।

◆❖◆

विचारों में अगर काम-वासना है तो व्यक्ति का जीवन खराब हो जाता है।

लालची व्यक्ति कभी भी अच्छा भक्त नहीं बन सकता। अगर सतगुरु आपको धन देता है तो इसका सही इस्तेमाल करें, और जीवन अच्छी तरह से जीएं।

अगर हमारे अंदर क्रोध है तो काम वासना की लहरें भी मन में आ जाती हैं। क्रोध से मन फैल जाता है और ध्यान एकाग्र नहीं होता है।

अगर हमें दुनियावी स्वाद पसंद हैं तो हम भीतर के स्वाद नहीं ले सकते। एक बार जब हम अंदर का स्वाद ले लेते हैं तो फिर हमें दुनियावी स्वाद पसंद नहीं आएंगे। या तो हम दुनिया के स्वाद ले सकते हैं, और या हम अंदर सतगुरु से मिलने का स्वाद ले सकते हैं। यह दोनों इकट्ठे नहीं लिए जा सकते।

कई बार क्रोध हम पर हमला करता है, क्रोध एक पागलपन का तत्व है।

◆❖◆

कबीर साहब कहते हैं कि जब अहंकार आता है तो सब खत्म हो जाता है। अहंकार आता है, तो पहले सब जो भी हासिल किया है, वह सब खत्म हो जाता है।

जो गुरु को सबसे बड़ा मानता है, वह उसका कहना भी मानेगा, और उसके आदेशों का पालन भी करेगा। जब एक सेवक गुरु के आदेशों का पालन करता है तो वह गुरु की इच्छा में रहता है।

◆❖◆

अगर मेरा सतगुरु मुझे झिड़कता है तो मुझे मीठा लगता है, क्योंकि यह सतगुरु मेरे जीवन को अच्छा बनाने के लिए कर रहे हैं।

हम सत्संगी हैं। हम सेवक हैं। हम सतगुरु के बच्चे हैं। हम गुरु के लाल हैं।

◆❖◆

यदि पति पत्नी एक-दूसरे से नाराज हो जाते हैं, और इस हद तक चले जाते हैं कि वे एक-दूसरे से अलग होने के बारे में सोचते हैं, तो इसका मतलब है कि हमने सत्संग नहीं सुना है। इसका मतलब है कि गुरु का रंग अभी हम पर चढ़ा नहीं है। हम सत्संगी हैं, हमें दूसरों की गलती नहीं ढूंढनी चाहिए, हमें उन्हें माफ करना चाहिए।

◆❖◆

हम गुरु के बेटे बन गए हैं। हमें यह समझने की जरूरत है कि हम इस समय कहां खड़े हैं?

◆❖◆

कई बार पति पत्नी एक-दूसरे से लड़ते हैं। क्या हम एक-दूसरे से प्यार कर रहे हैं या हम एक दूसरे की बेइज्जती कर रहे हैं? शादी के समय हमने एक दूसरे की मदद करने और दूसरे के बारे में गलत बातें नहीं करने का वादा किया था।

◆❖◆

प्यारयो, ठंडे मन से विचारें कि जब किसी के बारे में कुछ बुरा बोल रहे हो, खासकर पति या पत्नी, तो क्या गुरु हमें माफ कर देगा?

◆❖◆

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं कि पति पत्नी को एक जोत दो जिस्म की तरह रहना चाहिए। हम दूसरों के सामने एक-दूसरे का अपमान करते हैं । हमें एक-दूसरे के प्यार में रहना चाहिए और एक-दूसरे को सम्मान देना चाहिए। दूसरे व्यक्ति को अपने से सवाया समझें। इस तरह हम गुरु के साथ अपना प्यार बढ़ा सकते हैं।

◆❖◆

संत किरपाल सिंह जी महाराज कहते थे कि नामदान मिलने के बाद हमारा चाल चलन बदल जाना चाहिए। हमें ईर्षा और झूठ छोड़ देने चाहिए। हमें किसी का दिल नहीं दुखाना चाहिए। हमें दूसरों को अपने से कम नहीं समझना चाहिए। हमें यह अहसास होना चाहिए कि परमात्मा हर जगह और हर जीव में मौजूद है।

◆❖◆

संत अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि नामदान मिल गया है तो अब हम सत्संगी बन गए हैं।

अब एक सत्संगी की जिंदगी कैसी होनी चाहिए? हमें एक चालीस दिन के बच्चे के जैसा बन जाना चाहिए। उसका ना कोई दोस्त है ना दुश्मन, उसके लिए सब बराबर हैं। चालीस दिन का बच्चा कोई चतुराई नहीं दिखाता है, और ना ही बेईमानी करता है। किसी सत्संगी को झूठ नहीं बोलना चाहिए, और ना ही किसी तरह का कपट करना चाहिए। अगर कोई हमें अपशब्द या तीखे बोल बोलता है तो हमें खफा नहीं होना चाहिए, बल्कि यह समझना चाहिए कि गुरु ने हमें अपने आपको सुधारने का एक मौका दिया है।

◆❖◆

हमें गुरु का आभारी होना चाहिए और गुरु-मर्यादा में रहना चाहिए। हमें अपने जीवन को गुरु के द्वारा बताये अनुशासन में रखना चाहिए। यह केवल मन ही है जो सब करना चाहता है, और उसको करने के लिए बहाने बनाता है।

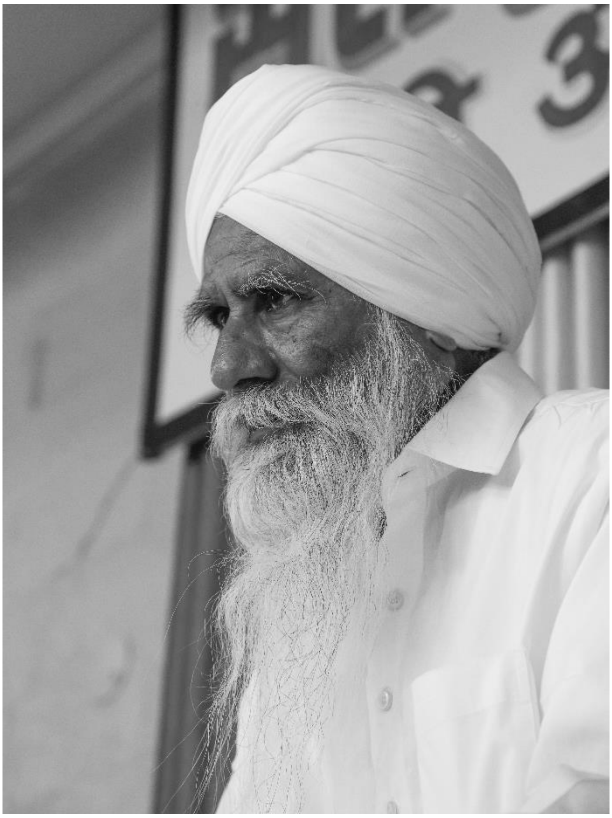

पवित्रता

गुरु की कृपा और दया से सिमरन मन को साफ करेगा

नामदान मिलने के बाद हम अपना मन कैसे पवित्र और साफ़ बना सकते हैं?

मन को पवित्र और साफ़ सिर्फ भजन और सिमरन से बना सकते हैं।

गुरु की कृपा और दया से सिमरन मन की सफाई करेगा। केवल नाम के सहारे से ही किसी को मुक्ति मिल सकती है।

यदि हम चाहते हैं कि परमात्मा हमारे हृदय में बैठें, तो सिमरन करके इसे निर्मल और पवित्र बनाना होगा।

शब्द नाम की कमायी के बिना मन साफ़ और पवित्र नहीं होता। मन जब तक नरम नहीं होता है, तब तक यह दूसरों को परेशान करता है।

◆❖◆

"मन लोभी लालची ने मैनूं भरमाया ऐ, विषयां विकारां वाले जाल च फसाया ऐ।

मन लालची तों मैनूं लईं बचा, सुनों जी फरियादां मेरियां।"

"जेड़े हत्थां दे बनाए, झाड़ू पोछे मारदा,

काया हरी दा मंदर, ऐनुं क्यों नहीं सवांर दा,

नित विषयां विकारां वाले, रास चखदा।

साईं सबदे सिरां दे उत्ते हत्थ रखदा, ओ दाता सबदे सिरां दे उत्ते हत्थ रखदा।"

◆❖◆

"विषयां विकारां साडी ऐसी मत मारी सी,

गुरु जी निमानयां ते, तुसां कित्ती दया भारी सी।

ऐसी मेहर कित्ती मेहरां वाले दातया, पलां च दुःख दूर करते।"

◆❖◆

"सबतों ही चंगा सब गुरूआं ने दसया।

ऐवें काहतों विषयां विकारां दे विच फसया।

कड्ड अंदर जो तेरे अहंकार बंदया।"

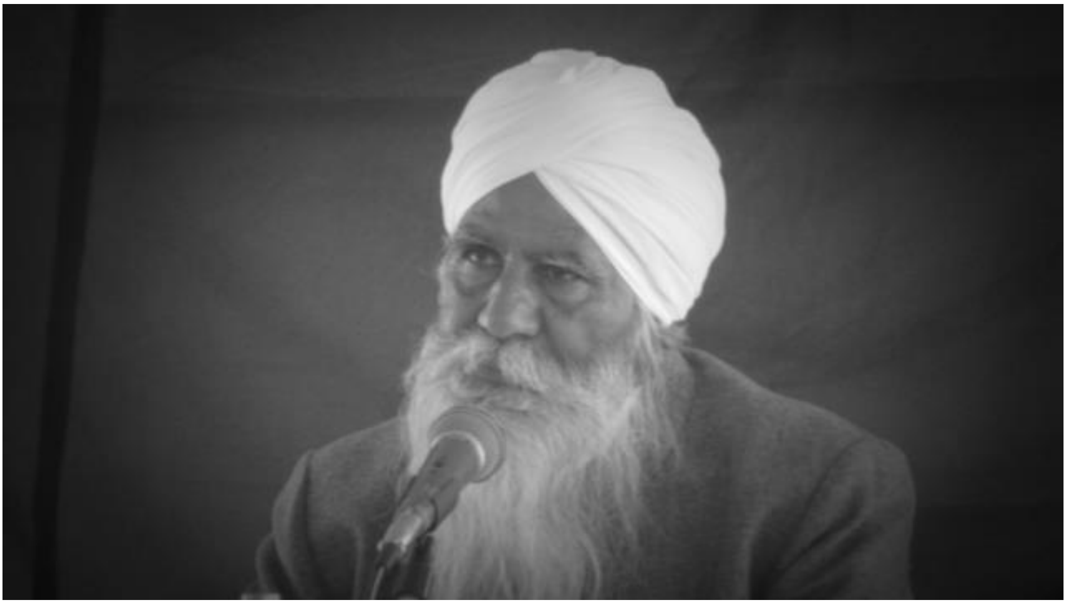

माफ़ी

परमात्मा सच बोलने वाले की मदद करता है।

सतगुरु माफ़ी दे कर ही सेवक को इस भवसागर से निकाल कर सचखंड लेकर जाता है।

सेवक पल-पल गुरु से माफ़ी मांगता है।

छोटी-मोटी गलतियां हर किसी से होती हैं। हमें माफी मांगनी चाहिए और माफी देनी भी चाहिए।

सच बोलने के बाद भी माफी मांगनी चाहिए। सच बहुत कड़वा होता है और उसे पचाना और भी मुश्किल होता है।

◆❖◆

हे सतगुरु तुम शब्द हो। आप सभी के भीतर बैठ कर बोलते हैं। सिर्फ तूं ही जानता है की सच्च क्या है।

एक सेवक प्रार्थना करता है, "हे सतगुरु, मेरे मन को दुनिया से मोड़ कर अपने चरण-कमलों में जोड़ लो"।

पिछले कर्मों की वजह से ही सब कुछ होता है। यदि कोई गलती करता है, लेकिन अपनी की हुई गलती स्वीकार नहीं करता है, तो उसे माफ़ी कैसे मिलेगी?

सच हमेशा कामयाब होता है।

सच हमारे जीवन को सफल बनाता है।

◆❖◆

सावन शाह का कहना है कि अगर कोई मेरी गलती निकालता है, और मुझे इसके बारे में बताता है तो मैं उस व्यक्ति का शुक्रिया अदा करूंगा। मैं उस गलती को खुद सुधारूंगा। किसी भी तरीके से हम खुद को सुधारने की कोशिश करें। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि अगर कोई हमारी गलती हमें बताता है तो हमारा मन उससे नाराज हो जाता है। उसे हम स्वीकार नहीं करते हैं।

दूजे को सवाया जान

सत्संग में आए बिना मन नरम नहीं बनता

एक नामलेवा सत्संगी हर किसी को अपने से बेहतर मानता है। वह सभी को अपने से सवाया समझता है।

◆❖◆

अगर हम सच्चे दिल से अपने गुरु से प्यार करते हैं तो हम किसी के दिल को चोट नहीं पहुंचाएंगे।

◆❖◆

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "हर दम तेरी मैं याद मनावां, तेरे बिना मुल कोड्डी ना पावां।"

◆❖◆

अहंकार एक बहुत बड़ी बीमारी है। नाम ही इस बीमारी की एकमात्र दवा है। नाम के

अलावा इस बीमारी का कोई और इलाज नहीं है। यदि परमात्मा कृपा करे तभी अहंकार की बीमारी से कोई जीव बच सकता है।

◆❖◆

"सतगुरु आ जावीं, सानूं प्यार सिखा जावीं।"

हमें एक-दूसरे से प्यार करना चाहिए। हमें अपने भीतर से द्वैत भावना हटा देनी चाहिए।

◆❖◆

सत्संग में आए बिना मन नरम नहीं बनता।

◆❖◆

"चल नीवां होके चल प्यारे, कड्ड मन विचों वल छल सारे।

मन दे बहकावे विच आके, जेड़ा डर गया।

गुरु भुलाया जिसने, ते समझो रुल गया।"

◆❖◆

"मन चों गरूर कड्ड, नीवां होके चल ओए।

लोभ मोह हंकार दे ना, जाई कदे वल वे।

सच्चे मनों जिस ने वी, अर्जी है लाई।

नाम दी कमाई कर, बन्दे नाम दी कमाई।"

◆❖◆

जहां झूठ है, वहां अहंकार है। जहां अहंकार है, वहां काल भी है। अहंकार आ गया तो काल ने आ जाना है। परमात्मा के यहां ना झूठ चलता है और ना ही अहंकार चलता है। वहां तो सच है। भगवान के घर सच पर फैसला है।

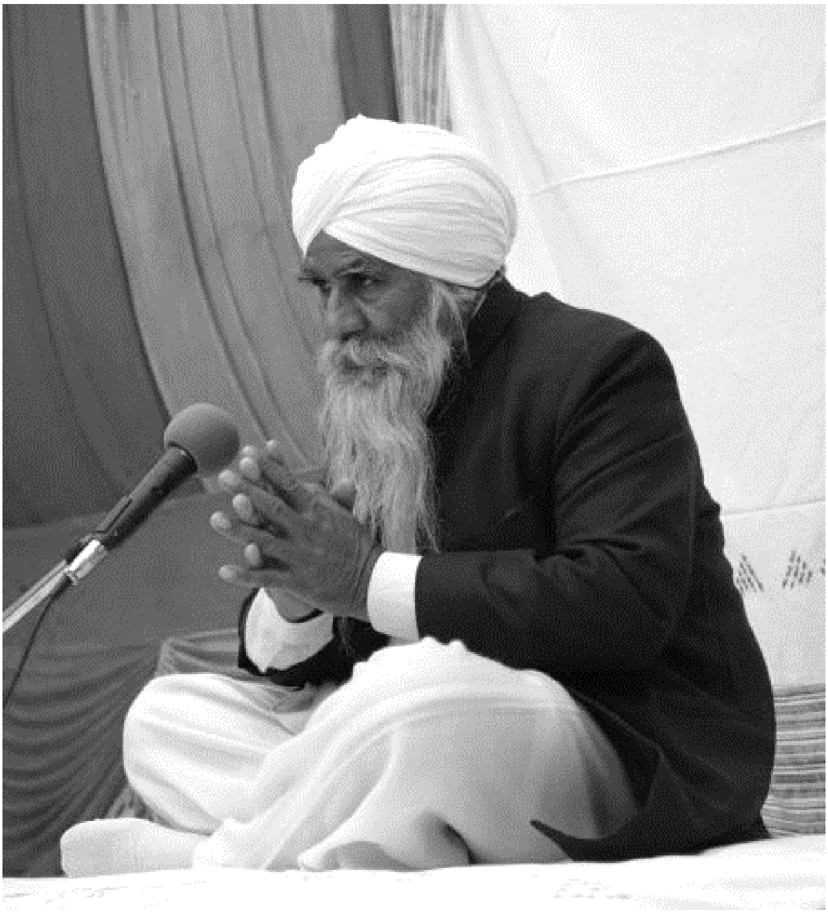

ईमानदारी की कमाई और जीवन

"दसां नोहां दी करां कमाई, ऐसी सोच बणादे।

ऐस कमाई विचों थोड़ा परमार्थ विच लवा दे।

ऐ धन होवे दूण सवाया, आवे ना कदे थोड़।"

क्या हमारी कमाई ईमानदारी की है? साफ़ पवित्र है? इसके लिए हमने किसी से धोखा या दुर्व्यवहार तो नहीं किया है? क्या किसी का हक़ मार कर अपना फायदा किया है? किसी का खून निचोड़ कर तो नहीं हमने अपने लिए पैसे कमाए? क्या हम अपनी मेहनत की कमाई दूसरों के साथ साझा करते हैं?

◆❖◆

अगर हम दूसरों को धोखा देकर पैसे कमाते हैं तो हम अपने सिर पर पापों का भार चढ़ा लेते हैं। जिनसे हम बेईमानी से धन कमाते हैं वे इससे प्रभावित नहीं होते, लेकिन जो बेईमानी से पैसा कमाता है, उसे दुःख उठाने पड़ते हैं।

एक सच्चा सतगुरु ईमानदारी से कड़ी मेहनत करके अपना जीवन-यापन करता है।

◆❖◆

गुरु नानक ने कहा है, "पापां बाजों होये नाहीं, मोया नाल ना जाए"।

◆❖◆

कबीर साहब कहते हैं, "कबीर जुआ यारी मुखबरी, ब्याज घूस परनार, जो चाहे दीदार को ऐति वस्तु निवार"।

संगत कैसी हो और उसका असर

जीवन को अच्छा बनाने के लिए सतगुरु की संगत में रहें।

मन गुरु की संगत में अच्छा बन जाता है। अगर मन खराब या गलत संगत में चला जाता है तो वही बुरी चीजें करेगा जिनके साथ इसने संगत करी है।

जीवन को अच्छा बनाने के लिए गुरु की संगत में रहें।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं कि जब मैं महाराज किरपाल से मिला तो फिर मेरी जिंदगी अच्छी हो गई।

साधु भी यही कहता है कि जब मैं सतगुरु अजायब से मिला, तो उस कुल मालिक, करता-पुरख ने मेरी जिंदगी को अच्छा बनाया। साधु के पास कुछ नहीं है, केवल उसका मालिक है।

◆❖◆

अगर गुरु की संगत की है तो हमारे कर्म और भाग्य दोनों ही सुधर जाते हैं। अच्छी संगत हमारे लिए अच्छा कर्म बनाती है।

◆❖◆

कबीर साहब कहते हैं, "कामी क्रोधी लालची, इनसे भक्ति ना होये, भक्ति करे कोई सूरमा, जाति वरण कुल खोये।"

◆❖◆

फरीद साहब कहते हैं, एक खरबूजे को देखकर दूसरा खरबूजा रंग बदल लेता है। जब एक प्रेमी को दूसरे प्रेमी सिमरन करते देखते हैं, तो वह भी देखा देखी भजन पर बैठना शुरू कर देते हैं।

शाकाहारी आहार और नशीले पदार्थों से परहेज

प्यारयो, सभी पाप नशे के कारण किए जाते हैं।

जब तक कोई जीभ का स्वाद नहीं छोड़ता, तब तक गुरु का भक्त नहीं बन सकता। जीभ स्वादिष्ट खानों की प्रेमी है।

◆❖◆

मांसाहारी भोजन और नशीले पदार्थ के सेवन करने वाला या उनका व्यापार करने वाला कभी परमात्मा को नहीं मिल सकता है।

◆❖◆

सांसारिक आनंद लेते हुए कोई भी उस परमात्मा को अंदर नहीं मिल सकता है।

एक समय में केवल एक ही स्वाद चख सकते हो - या तो दुनिया के स्वाद या रूहानी। लेकिन एक साथ दोनों नहीं हो सकता है, एक को चुनना होगा।

◆❖◆

अगर हम एक महीने में एक दिन होटल जाते हैं और बाकी समय घर पर ही खाना खाते हैं, तब भी उस महीने में हमने जो कुछ रूहानी चढ़ाई की है, वह होटल में सिर्फ एक बार खाने से खराब हो जाएगी। प्यारयो, हमें होटल में जाने की जरूरत नहीं है।

◆❖◆

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि रात के खाने के बाद, बिना हिले दो घंटे सिमरन में बिताने चाहिए। उन्होंने कहा है कि सुबह अमृत वेला है, गुरु पर पूरा विश्वास रखते हुए, बिना हिले-जुले, तीन-चार घंटे भजन सिमरन में बिताएं।

◆❖◆

जब शिष्य संसार के विकारों से मुक्त हो जाता है तो उस परमात्मा के दरबार में जाना आसान हो जाता है।

◆❖◆

हमें अपने शरीर के लिए क्या चाहिए?

शरीर के लिए भोजन की जरूरत है, लेकिन शरीर को बनाए रखने के लिए स्वादिष्ट भोजन जरूरी नहीं है। हमें शरीर को बनाए रखने के लिए केवल थोड़ा खाना चाहिए, फिर ही हम भजन सिमरन कर सकेंगे। जब किसी का पेट पूरी तरह से भरा हुआ हो तो वह सिमरन कैसे कर सकता है?

एक भगत पानी के साथ केवल एक रोटी लेता है। उन्होंने भगवान की याद में समय बिताया है। उस प्रभु परमात्मा की उन पर दया हुई है। उस परमात्मा ने उन पर कृपा की है।

◆❖◆

जो व्यक्ति पूरे सतगुरु से नामदान चाहता है, वह ना तो मांसाहारी खाना बनाए, खिलाये या परोसे और ना खुद मांसाहारी भोजन खाए। गुरबाणी में यह आता है कि यदि कोई मांस या किसी भी जानवर से बनी चीजों को इस्तेमाल करता है, या किसी भी प्रकार के नशे करता है, तो उस व्यक्ति को ऐसे कर्मों का भुगतान तो करना ही पड़ेगा।

गुरबाणी का कहना है कि शराब का नशा करने वाले व्यक्ति की सात पीढ़ियां नरक में चली जातीं हैं, और तंबाकू का नशा करने वाले की १०१ पीढ़ियां नरक में चली जाती हैं। गुरु नानक देव जी कहते हैं कि जो हम बीजते हैं, वही हमें खुद काटना पड़ता है। गुरु अर्जन देव जी कहते हैं कि यदि कोई कीकर लगाए तो उसी का फल उसे मिलेगा, और अगर कोई आम बोता है तो वह आम खाता है।

◆❖◆

हमें खाना कम करना होगा और नींद भी घटानी होगी, और भजन सिमरन ज्यादा करना होगा। इससे मन थक जाता है और अंत में हार स्वीकार कर लेता है। इसके बाद यह नुकसान नहीं देता है। जब हम ज्यादा खाना खाएंगे तो भजन सिमरन के वक्त शरीर में ज्यादा दर्द होगा। इसलिए ज्यादा भजन करें और कम खाएं और कम सोएं। यह सब मन पर काबू पाने के लिए जरूरी है।

भाग ४

सिमरन संदेश

"सच्चे भक्त हर दिन अपने सिमरन को थोड़ा थोड़ा तब तक बढ़ाते हैं जब तक यह चौबीस घंटे पर नहीं जाता और कभी नहीं रुकता।"

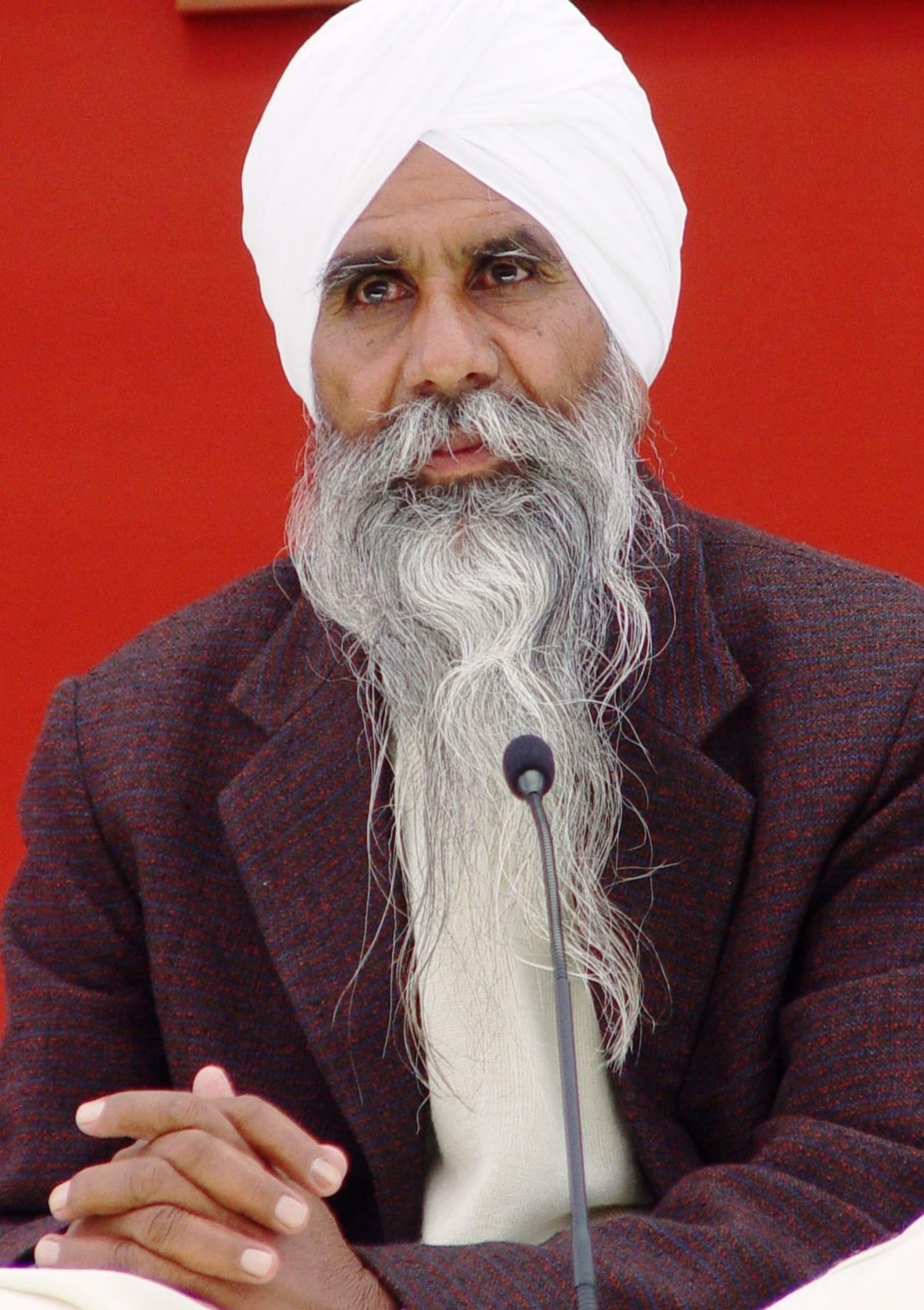

भजन सिमरन का सन्देश

गुरु प्यारी साध संगत जी,

सावन सिंह महाराज, किरपाल सिंह महाराज और सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी के चरण कमलों में कोटि-कोटि बारी नमस्कार है। उनसे हमें माफ़ी और दया की भीख मांगते हैं।

पूरे संतों को इस दुनिया में दुखी आत्माओं के पापों को खत्म करने के लिए भेजा जाता है। उस सर्वशक्तिमान परमेश्वर के साथ मिलाप के लिए संत हमें सिमरन देते हैं, जो उन्होंने कड़ी मेहनत और त्याग से कमाया होता है। उनका सिमरन जब हम प्यार और दृढ़ता के साथ करते हैं तो सतगुरु हमारी आत्मा का उस परमात्मा के साथ अंदर मिलाप करवा देता है।

अंदर सतगुरु हमें अमृत के प्याले को पिलाता है, और हमारी आत्मा को जगाता है, जो सदियों से उस परमात्मा से अलग हो गयी है। सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी ने कहा है कि सिमरन में बिताए पल अनमोल हैं।

सिमरन खुद गुरु है। पवित्र नामों को सिमरने से आप अपने असली घर सचखंड की तरफ चढ़ाई करना शुरू कर देते हैं।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी ने लिखा है - "अजायब किरपाल दा हुकम लैके, फेर ध्यान सचखंड वल लाया है"। गुरु अर्जन देव जी महाराज कहते हैं- सिमरन की महानता और महिमा को तभी हम जान सकते हैं जब इसको जपते हैं। जो इस संसार में सिमरन करता है, उसे परमात्मा के दरबार में पहुंचने पर बहुत सम्मान मिलता है।

सच्चे भक्त अपने सिमरन को हर दिन थोड़ा बढ़ाते हैं, और तब तक नहीं रुकते जब तक चौबीस घंटे सिमरन नहीं करने लग जाते।

गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैं - चौबीस घंटे उस परमात्मा की मीठी याद में रहकर मेरी आत्मा परमानंद की अवस्था में पहुंची है।

सिमरन हर दिन पक्का और एक भगत की जिंदगी को रोशन करने वाला होना चाहिए। सिमरन को कभी कम नहीं होने देना चाहिए। किरपाल महाराज जी ने डायरी रखने की हिदायत दी थी, जिसका मकसद अपने जीवन की पड़ताल कर के उसे और बेहतर बनाना है। अगर हमारा सिमरन कम हो जाता है तो हम सावधानी से विचारें और पता लगाएं कि यह कम क्यों हुआ है।

सिमरन कम क्यों होता है?

१. क्या हमने किसी के दिल को चोट तो नहीं पहुंचायी?

२. क्या हमने किसी के लिए कठोर या बेइज्जती वाले शब्दों का इस्तेमाल तो नहीं किया? हमें मीठी बोली, दया वाले शब्द या नरम होकर बात करनी चाहिए, नहीं तो चुप ही रहें। संत अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि भक्त तो एक चालीस दिन के बच्चे जैसा होता है। इस उम्र का बच्चा बात तक नहीं कर सकता।

३. क्या हम दूसरों को अपने से अलग देखते हैं या दूसरों को अपने से कम समझते हैं? संत अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "जब यह सृष्टि एक ही नूर से बनी है, तो हम कैसे किसी को अच्छा या बुरा कह सकते हैं?" एक बार जब किरपाल सिंह जी महाराज अस्पताल में अपने बीमार चाचा जी से मिलने गये, वे उनके लिए कुछ फल ले कर गए। वहां पहुँचने पर उन्होंने एक और मरीज को उनके (चाचा जी) कमरे में भरती देखा तो फलों को दो भागों में बाँट कर दोनों को समान रूप से दे दिया। महाराज जी के चाचा जी ने उनसे पूछा कि किरपाल मैं समझता हूँ आप मेरे लिए फल क्यों लाये हो, लेकिन आपने इस अजनबी को फल क्यों दिए, जिसे हम जानते भी नहीं? युवा किरपाल ने उत्तर दिया, "प्यारे चाचा जी, आपके लिए मेरे दिल में जितना प्यार है उतना ही प्यार मुझे इस व्यक्ति के लिए भी है।" किरपाल सिंह महाराज जी ने अपने भजनों में लिखा है, "प्यार ही जीवन का वृक्ष है, वही इसका फल है, और वही इसकी जड़ है।"

संत अपनी पूरी जिंदगी इस तरह से जीते हैं। सिर्फ एक दिन के लिए इसे अपनाएँ, और अगर आपको यह पसंद आये तो इसे दूसरे दिन फिर आजमायें, और फिर तीसरे दिन। इससे आपको इतनी शांति और नाम का आसरा मिलेगा, फिर किसी और तरीके से जीना नहीं चाहेंगे।

४. क्या हम दूसरों की गलती निकालते हैं, निंदा करते हैं, बदनामी, नफरत और दुर्व्यवहार

करते हैं? अगर हम इन तरीकों से किसी को भी दुःख पहुंचाते हैं या किसी से दुर्व्यवहार करते हैं - विचारों में, बोलकर, या व्यवहार में, तो वह व्यवहार हम अपने गुरु के साथ कर रहे होते हैं। अगर आप ये सब बातें कर रहे हैं तो परमात्मा आपको क्यों और कैसे मिलेंगे?

५. नाम और काम की दुश्मनी है। यह दोनों एक साथ नहीं रह सकते। अगर हम वासना में लिपटे हुए हैं तो हमारे अंदर का अनुभव और प्रगति बंद हो जायेंगे। हमारी आत्मा नीचे गिर जायेगी।

६. क्या हम सुबह ३ बजे उठकर सही ढंग से, प्यार से भजन-सिमरन करते हैं?

बाबाजी ने कहा है, "हमें सिमरन को बोझ नहीं समझना चाहिए। इसे प्यार से करो।" जब हम सिमरन प्यार से करते हैं तो गुरु की खुशी पाते हैं। जब गुरु खुश हो जाता है तो वह सर्वशक्तिमान परमात्मा भी उस आत्मा से खुश हो जाते हैं।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, "जल्दबाजी और आलस से हम सिमरन में तरक्की नहीं कर पाते हैं।" जब तक हम सही नियमित रूप से और विश्वासपूर्वक सिमरन नहीं करते हैं, तब तक हम अंदर परमात्मा से नहीं मिल सकते। बिना हिले हमें अपना ध्यान आंखों के बीच में लगाना चाहिए। सतगुरु आपका वहां इंतज़ार कर रहा है। हमें सिमरन को लगातार करना है। अगर थोड़े दिनों तक हमारी अंदर चढ़ाई नहीं होती तो हम जल्दबाजी करते हैं। हमारा मन नाम जपने पर शक करने लगता है, और हमारी तड़फ और कोशिश

दोनों कम हो जाते हैं। हमें उसका इंतज़ार करते वक्त हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। सतगुरु के इंतज़ार में बीता हुआ समय भक्ति का एक हिस्सा है।

७. क्या हमारी संगत गलत है? यदि हमारा मन संसार और सांसारिक चीजों के रंग में रंगा है तो हम और पाप करते हैं, इस तरह हम कैसे प्रगति कर सकते हैं? रूहानी सफलता के लिए साफ़ मन जरूरी है। सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि अगर हम अपने विचारों को और जीवन को साफ़ रखते हैं, तो हम ज्यादा भजन सिमरन कर सकते हैं।

८. क्या हमें किसी चीज का अहंकार भी है? सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि अगर आप अपना धन चोरों को दिखाएंगे तो वह चोरी कर सकते हैं। कहने का भाव यह है कि अगर वह सर्वशक्तिमान परमात्मा आपके ऊपर दया कर रहा है, अगर आपको रूहानी अनुभव या किसी और चीज का आशीर्वाद दे रहा है, तो इसे दूसरों से छुपाएं। इसे संभाल कर रखें, दूसरों को ना दिखाएँ। दूसरों के अभाव ले आने पर इसे आप खो देंगे। सतगुरु अजायब सिंह जी महाराज कहा करते थे कि धुंए का एक कतरा भी बाहर नहीं आना चाहिए। कबीर साहब कहते हैं, "इस दुनिया में कोई भी हमारा नहीं है, केवल सतगुरु हमारा है"।

९. क्या आप वैष्णव खाना खाते हैं? किसी मांस, मछली, अंडे, या इनसे बनी चीजों का इस्तेमाल करते हैं, या किसी और के लिए इन चीजों को खरीदते हैं? इसके अलावा क्या हम नशे, जैसे शराब, तम्बाकू, भांग आदि से बचे हैं?

किरपाल महाराज जी कहते थे, "यह मानस जामा उस परमात्मा का सच्चा मंदिर है, जिसमें वह आप रहता है। और जहाँ से उसके मिलने का हमारा सफर शुरू होता है। जिसे यह शरीर अच्छे कर्मों के कारण मिला है, उसे बाहर और अंदर दोनों को साफ़ रखना चाहिए। कोई भी ऐसी चीज इसमें नहीं डालनी चाहिए जो इसे दाग लगा दे"।

संत किरपाल सिंह जी महाराज जब छोटे थे तो महाराज के परिवार वालों ने उन्हें मांस वगैरह खाने के लिए जब जोर डाला, तो उन्होंने बड़ी दृढ़ता, मगर प्यार के साथ कहा कि मैं इस कीमती जिस्म को कब्रिस्तान नहीं बनाना चाहता।

१०. क्या हमारी कमाई ईमानदारी की है? साफ़ पवित्र है? इसके लिए हमने किसी से धोखा या दुर्व्यवहार तो नहीं किया है? क्या किसी का हक़ मार कर अपना फायदा किया है? किसी का खून निचोड़ कर तो नहीं हमने अपने लिए पैसे कमाए? क्या हम अपनी मेहनत की कमाई दूसरों के साथ साझा करते हैं?

११. क्या हम अपने आस पास वालों के साथ प्यार से रहते हैं और सद्भाव बना कर रखते हैं? क्या हम दूसरों की गलतियां निकालते हैं? क्या हम उन्हें बिना मांगे माफ़ी दे देते हैं, जिस तरह हम परमात्मा से अपनी गलतियों की माफ़ी चाहते हैं?

१२. क्या हमें दूसरों के साथ दया और हमदर्दी है? क्या बिना बताये या किसी तरह की आशा रखते हुए हम दूसरों की मदद करते हैं?

१३. क्या हम अपनी गलतियों के लिए माफ़ी मांगते हैं? क्या हम अपने जीवन को सतगुरु के सत्संग या उसकी हिदायतों पर ढालने या सुधारने की पूरी कोशिश कर रहे हैं?

१४. क्या हम सुख और दुःख में गुरु को याद रखते हैं? क्या हम अपने जीवन के हर पल में गुरु को याद रखते हैं? क्या हम हर मुसीबत में उसकी दया और मेहर की पुकार करते हुए, और अकेले उस पर भरोसा करते हुए, शांति बनाये रखने का प्रयास करते हैं? क्या हम अपने दुखी मन को समझने की फ़रियाद करते हैं?

१५. हमें जीवन में आने वाली हर चीज के लिए उस परमात्मा का धन्यवाद करना चाहिए। हमें परेशानियों और कठिनाइयों में भी खुश रहने की कोशिश करनी चाहिए।

क्या हमें विश्वास है कि जो कुछ हमारे जीवन में होता है, वह उस परमात्मा के हुक्म से होता है, और हमारे अच्छे के लिए होता है? जैसा कि, जब भी कोई कठिनाई या दुख, कोई नुकसान, बीमारी या समस्या गुरु राम दास जी महाराज के जीवन में आई तो वे बहुत खुश होते थे, और कहते थे कि "अब वह दयालु गुरु मेरे बारे में सोच रहा है और उसने ये चीज़ें केवल मेरी बेहतरी के लिए भेजी हैं"।

गुरु प्यारी साध संगत जी यदि आप अपना जीवन इस तरीके से, जैसा कि सतगुरु कहते हैं, और चाहते हैं, जीते हो, तो तुम्हारा सिमरन कम नहीं हो सकता। आप समय आने पर उस सतगुरु से अंदर मिलाप कर लोगे। किरपाल महाराज जी कहते थे - इंसान का बनना मुश्किल है, लेकिन प्रभु से मिलना इतना कठिन नहीं है। हमें पहले सच्चे इंसान बनना है, तभी वह परमात्मा हमें मिलेंगे।

आपके जोड़े झाड़ने वाला

साधु राम

पहला संस्करण - २०२१